

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

श्री छत्तीसबोल संग्रह

द्वितीय भाग

संग्रहकर्ता—

धर्मचन्दजी तत्पुत्र भैरोंदान
तत्पुत्र जेठमल सेठिया,
मोहल्ला मरोटियोंकी गवाड़,
बीकानेर राजपूताना (देश मारवाड़) ।

Bhairodan Sethia,
MOHALLA MAROTIAN
Bikaner Rajputana
MARWAR J B Ry

कीमत अमोल (अमूल्य)	वीर संवत् २४४८
	विक्रम संवत् १९७९
प्रथमावृत्ति १००० प्रत	ई० १९२२

PRINTED AT THE
"CHITRAGUPTA PRESS,"
BY RAMSAHAI VARMA
147, Cotton Street, Calcutta.

॥ अनुक्रमणिका ॥

	पृष्ठ (पन्ना)

पृष्ठ (पत्रा)





॥ पाठन्तर ॥

॥ अनुक्रमणिका ॥



पृष्ठ (५५१)

पृष्ठ (पन्ना)

पृष्ठ (पन्ना)

सबला दोष किणने कहीजे, जैसा निबला आदमीके उपर सबला बोझ आय पड़े तो उण आदमीका नाश हो जाता है इण दृष्टांते साधु मुनीराज यह इकिस दोस मजे

पथ्या प-यके निग्रय क्रियाके गणके पन्ने मे ।



॥ श्री ॥

॥ शुद्धिपत्र ॥

हेडींग छोड़कर पंक्ति (ओली) गिणीजें ।

कीतनेक भूल उपयोगमें आई सो अनुक्रमणिकामें जणायदि है सो शुद्धिपत्रमें नहीं लिखी है ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
भ	१५	ढफके	डंफके
ट	१	उपना	उतना
ध	४	सुंभावे	मुभावे
ल	१	सुघना	सुंघना
व	६	काणोंसे	कानोंसे
श	३	मिश्र	मिश्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
ज्ञ	१३	सभ्यक्त	सम्यक्त
ज्ञ	१७	च्यूं	ज्यु (ज्युं)
झे	७	घणे	घणो
झे	७ बाद हेडींगमें	छतीमा	छतीसी
ढे	११	जाणो	जाण
धे	३	मास	मास
ने	४	आगे	आगो
फे	२	पानीमें	पाणीमें
बे	२	बीज	बीज
हे	१५	उपाड़ाने	उपाडीने
त्रे	१२	(विसोहीकरणेणं)	(विसोहिकरणेणं)
जु	४	मडिक्कमामि	पडिक्कमामि
टु	११	मांटे	माटे
डु	१५	नामधय	नामधेय
मु	३	गोचरादिकमें	गोचागदिकमें
८	७	बोले	दूजे बोले

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२	३	कोघ	क्रोध
१३	५	उद्म	उद्यम
१४	४	१०८	१०६
१५	६	दीजे	कीजे
१६	६	दशमा	१२ में
१६	७	बारमा देवलोक	नव नवग्रीवेक
१६	६	मुक्ति	५ अनुत्तर विमाण
२३	५	लीलड़ले	लीलाड़ने
२३	७	पराय	पराये
२४	१६	नोचो	नीचो
४०	१६-१७	कुंड	कांड
५४	७	भव्य जीवने,	भव्य जीवनें
५८	१२	दुसरेने वेदावा,	दुसरो वेंचावा (वेंटावा) समर्थ नहीं
६०	६	जाने	जाणे
६३	८	धम	धर्म

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६६	७	त्रीने	वाणीयेरे (वैश्यरे)
६८	१	जवारी	जुवारी
६६	४	वीसरो	विपरो
७३	५	नारेलरो	नाचने भोपेरो
७३	१३	घर्म	धर्म
७५	२	ठवा	ठाव
७७	८	विन्न	विघ्न
७७	११	उठा भी	उठाय
७६	१६	धातर्क	धातकी
८०	३	पुष्करार्ध	पुष्करार्द्ध
८०	५	,,	,
८०	१०	शिष्यनी	नये दिक्षितरी
८२	८	दानवत	दानव्रत
८७	११	पुत्रक	पुत्रका
६०	५	अधक विश्नु	अधक विष्णु
६०	८	गजसूकुमारजी	गजसुकमालजी

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८६	५	प्रशिंनिय	प्रशंसनिय
१८८	१	सम्यत्वी	सम्यकत्वी (समकति)
१८६	१०	सचेत	सचित
१६१	५	निरसइ	निस्सरड़
१६३	१५	सोगनल्ल	सोगमल्ल
१६३	८	अक्रोस	आक्रोश
१६४	१३	सभाले	संभाले
१६६	१२	मल	जलमैल
१६६	१५	निषेध	निसीया
२०३	१३	सत्त	सत्तत्र
२०४	४	सत्य	सत्तत्र
२०४	५	पृथ्वीपांणी तेईसरी आगतमें २३	पृथ्वीपाणीरी आगतमें २३
२०४	७	द्रव्यथकी	द्रव्यमें
२०४	८	क्षेत्रथकी	क्षेत्रमें

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०४	१०	कालथकी	कालमे
२०४	११	भावथकी	भावमे
२०४	११	पुन दव्यथकी,	द्रव्यथकी
२०६	१४	यर्थात्	अर्थात्
२०७	६	विनयवानका	विनयवानकी
२०८	११	आवो	आवे
२१६	६	अद्दता दान थी	अदतादान थी
२१६	८	चचुधेनिद्रय	चक्षुइन्द्रिय
२१७	४	भरण	मरण
२१७	१२	मनसमाधेणिया	मनसमाधारणीया
२१७	१४	कायसमाधरणिया	कायसमाधारणिया
२१८	१६	चितावना	चितवना
२२०	६	असाभई	असभाई
२२०	१७	सपन्न	सपन्न
२२१	१४	चरित्रयुक्त	चारित्रयुक्त
२२८	८	प्रमाणसे	प्रणामसे

॥ श्रीगौतमाय नमः ॥

सूचना ।

यह पुस्तक यत्नसे रक्खे । शुद्धिपत्रसे अशुद्धि निकालकर आदिसे अन्त तकवाचे ।

इसका प्रथम भाग छपाहुवा वंटगया है, त्यार नहीं है, कितनेक बोल प्रथम भागका इसमें छपा है ।

उघाड़े मूख तथा चिरागके चानणमें नहीं वाचै; पद, अक्षर, ओछो, अधिको, आगो, पाछो, तथा कानो, मात, मिंडी, ह्रस्व, दीर्घ, अशुद्ध, टूटी भाषामें लिख्यो हुयो विद्वान कृपाकर शुधार लेवें संग्रह-कर्ताकी यही नम्र विनती है ।

॥ श्री ॥

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

अथ मंगलाचरण

नाभेया जितवासुपूज्य सुविधि श्रेयासपद्म· प्रभात् श्री शांतिशशी संभवार सुमती प्रभिनमिशीतलं धर्मपार्श्व सुपार्श्व वीर निमला· नतास्तथासुनन्त कुंथुमल्ल्यभिनंदनौनुत जिना· नेताश्चतुर्विंशतिं ।

॥ दोहा ॥

आदि देव अरिहंतजी, भवभंजन भगवन्त ।
केवल कमला धारजे, पायो भवजल अन्त ॥१॥

तास चरणमें शिर धरी, प्रणमुं पर्म उल्लास ।
गुरु गिरवा ज्ञान निधि,सफल करो मम आस ॥२॥
कई ग्रंथ कई नीति में, कई सूत्र अर्थमें जोय ।
कई सज्जनसे धारिया, बोल छत्तीस होय ॥३॥
स्थिर चित्त विवेकसे, वांचे तो फल होय ।
नहीं पूर्णता यहां की, दोष न दीजो कोय ॥४॥

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥ अथ मतीज्ञानके २८ भेद लिखते हैं ॥



(१) उत्पातीया बुद्धि—तत्काल बात उपजे (२) विनया बुद्धि—विनयसे आवे (३) कम्मया बुद्धि—काम करते २ सुधरे (४) प्रणामिया बुद्धि—वय प्रमाणे बुद्धि होवे यह चार बुद्धि—और श्रोतेन्द्रीकी अवग्रह सो शब्दको ग्रहण करना, श्रोतेन्द्रीकी इहा सो सुणे हुये शब्दका विचार श्रोतेन्द्रीकी अवाय सो सुणे शब्दका

निश्चय करना, श्रोतेन्द्रीकी धारणा जो बहुतकाल तक धार याद रखना जैसे १ श्रोतेन्द्री पर ४ बोल कहे ऐसे ही २ चक्षुइन्द्रीसे देखनेका, ३ घ्राणेन्द्रीसे सूघनेका, ४ रसेन्द्रीसे स्वाद लेनेका, ५ स्पर्श इन्द्रीसे स्पर्शका ६ मनसे विचारका यो ६ पर चार २ बोल कहनेसे ६×४=२४ बोल हुवे, और ४ बुद्धि मिलकर मतीज्ञानके अठावीस भेद हुवे यह २८ मतिज्ञानके भेद है। इनमेंसे एकेक के बारे २ भेद होते है, जैसे—अनेक जीव अनेक बाजिनरोंके शब्द सुनते है, उनमें मतिज्ञानकी क्षयोपशमतासे १ कोई एक वस्तमें बहुत शब्दोंको ग्रहण करते है सो बहु, २ कोई थोड़े शब्द ग्रहण करते है सो अबहु, ३ कोई भेद भाव सहित ग्रहण करे सो बहुविध, ४ कोई भेद भाव नहीं समझे या थोड़ा समझ सो अबहुविध, ५ कोई शीघ्र समझ जाय सो क्षिप्र, ६ कोई विलंब (देर) से समझे सो अक्षिप्र, ७

कोई अनुमानसे समझे सो सलिंग, ८ कोई विना अनुमान से समझे सो अलिंग, ६ कोई शंकायुक्त अच्छे सो संदिग्ध, १० कोई शंका-रहित अच्छे सो असंदिग्ध, ११ कोई एकही वख्तमें सब समझ जाय सो ध्रुव और १२ कोई वारंवार जाणनेसे समझें सो अध्रुव; इन १२ भेदोंसे पूर्वोक्त २८ भेदोंको गुणा करनेसे २८×१२=३३६ मतिज्ञानके भेद होते हैं।

॥ श्रुतज्ञानके १४ भेद ॥



१ अक्षर श्रुत—क, ख प्रमुख अक्षर तथा संस्कृत, प्राकृत, हिंदी, इंग्लिश, फारसी आदिक से जाणे सो, २ अनक्षर श्रुत—अक्षर उच्चार विना खांसी, छींक प्रमुखसे ज्ञान होवे सो, ३ सन्नीश्रुत—विचारना, निर्णय करणा, समुचय अर्थ करना, विशेष अर्थ करना, चिंतवना और निश्चय करना यह छव बोल सन्नीमें मिलते हैं।

इन छव वोलसे सूत्रधार रखे सो सन्नीश्रुत, ४ असन्नीश्रुत—यह छव वोल रहित होवे तथा भावार्थशून्य, उपयोगशून्य, पूर्वापर आलोच्च निर्णय रहित पढे, पढावे, सुणे सो अशन्नीश्रुत, ५ सम्यक्श्रुत, अरिहंतदेवके परुपे, गणधरदेवके गूथे तथा कम तो दश पूर्वधारीके फरमाये सूत्र सो सम्यक्श्रुत, दश पूर्वसे कमीज्ञानवालेका निश्चय नहीं उनके रचे ग्रंथ सम० श्रुत भी होवे और मिथ्याश्रुत भी होवे इसलिये दश पूर्वधारीके कीये हुये ग्रंथ ही सम्यक्श्रुत है, ६ मिथ्याश्रुत अपनी इच्छासे कल्पित रचे हुये ग्रंथ जिसमे हिंसादिक पचाश्रवका उपदेश होवे, वैदिक, ज्योतिष, कामशास्त्र इत्यादि मिथ्याश्रुत, ७ सादिश्रुत—आदिसहित, ८ अनादिश्रुत—आदिरहित, ९ सपज्जवश्रुत अन्तसहित, १० अपज्जवश्रुत—अन्तरहित, १ सआदि, २ अनादि, ३ सपज्जव, ४ अपज्जव, इन ४ का

खुलाशा द्रव्यसे एक जीवआश्री आदि अन्त सहित पढने वैठा सो पूराकरे, वहुत जीवआश्री आदि अन्त रहित वहुत पढे है और पढेंगे, २ क्षेत्रसे भरत ऐरवर्त आदि—अन्त सहित और महाविदेह आश्री आदि अन्तरहित, ३ कालसे उत्सर्पिणी उवसर्पिणी आश्री आदि अन्त सहित और नोउत्सर्पिणी उवसर्पिणी आश्री आदिअन्त रहित, ४ भावसे तीर्थंकर भाव प्रकाशे सो, आदि अन्त सहित और क्षयोपशम भाव आश्री आदि अन्त रहित, ११ गमिक श्रुत दृष्टिवाद १२ मां अंग, १२ अगमिक श्रुत आचारांगादिक कालिक सूत्र, १३ अंगप्रविठ सूत्र जिनभाषित द्वादशांगीवाणी, १४ अंगवाहिर वारे अंगके वाहिरके सूत्रके दो भेद—१ आवश्यक सामायिकादि छे और २ आवश्यक वितिरिक्त सो कालिक उत्कालिकादिक जानना, यह मतीश्रुत ज्ञानका आपशमें

खीरनीर जैसा सयोग है, इन दोनो ज्ञान विना कोई जीव नही है, सम्यक दृष्टिके ज्ञानको ज्ञान कहते हैं और मिथ्यादृष्टिके ज्ञानको अ-ज्ञान कहते है, उत्कृष्ट मतीश्रुत ज्ञानवाले केवलीकी तरह सर्व द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावकी बात ज्ञान सकते है, इसलिये श्रुतकेवली कहे है। जातिस्मरण ज्ञान भी श्रुत ज्ञानके पेटेमें है जातिस्मरणसे ९०० भव पिछले किये हुये जान सकते हैं। जो लगोलग सन्नीके किये हुये तो नर्कके जीव जातिस्मरण ज्ञानसे पूर्वभवकी वात जान सकते हैं, परंतु देख सकते नहीं है, क्योकि यह परोक्ष ज्ञान है। महावेदनाके अनु-भवसे और परमाधामियोके कहनेसे जाति-स्मरण ज्ञान हो जाता है।

॥ अवधिज्ञानके ८ भेद ॥



१ भेद—दो तरह अवधी ज्ञान होते हैं, १

भव जन्मसे सो नारकी, देवता और तीर्थंकरको होवे, २ क्षयोपशम करणी करनेसे सो मनुष्य तिर्यंचको होवे, २ विषय सातमी नरकवाले जघन्य आधा कोस उत्कृष्ट एक कोस, छठीवाले जघन्य एक कोस उत्कृष्ट १॥ कोस, पंचमीवाले जघन्य देढ कोस उत्कृष्ट दो कोस, चोथीवाले जघन्य दो कोस उत्कृष्ट २॥ कोस, तीसरीवाले जघन्य २॥ कोस उत्कृष्ट तीन कोस, दूसरीवाले जघन्य ३ कोस उत्कृष्ट ३॥ कोस, और पहली-वाले जघन्य ३॥ कोस, उत्कृष्ट ४ कोस अवधी ज्ञानसे देखते हैं। असुरकुमारदेव जघन्य २५ योजन उत्कृष्ट असंख्याते द्वीप समुद्र, बाकीके नवनीकायदेव और वाणव्यंतरदेव जघन्य २५ योजन उत्कृष्ट संख्याते द्वीप समुद्र, ज्योतिषीदेव जघन्य उत्कृष्ट संख्याते द्वीप समुद्र, ऊपरके सब-देव ऊंचा अपने २ देवलोककी धजातक देखे और तिरछा पहिले दूसरे देवलोकमें पल्यके

आयुष्य है वो ग्रीश्रा असंख्याते द्वीप समुद्र देखते हे और सब असंख्याता द्वीप समुद्र देखते हे नीचे १-२ देवलाकवाले पहिली नर्क, ३-४ वाले दूसरी नर्क, ५-६ वाले तीसरी नर्क, ७-८ चौथी नर्क, ९-१०-११-१२ वाले पाचमी नर्क, नव ग्रीवकवाले छठी नर्क च्यार अनुत्तर विमानवासी देव सातमी नर्क, सर्वार्थ सिद्ध विमानवासी सपूर्ण लोकमे कुछ कमी संज्ञी तिर्यंच पचेंद्री जघन्य अगुलके असंख्यातमें भाग उत्कृष्ट असंख्याते द्वीप समुद्र मन्नी मनुष्य जघन्य अगुलके असंख्यातमे भाग उत्कृष्ट सपूर्णलोक और लोक जैसे अलोकमे असंख्याते खड देखे मद्दाग अवधि ज्ञानमे नर्कके जीव त्रिपाडके आकार देखे. भवनपती वाला टोपलेके आकार देखे, व्यतर पड़ा हके आकार, ज्योतिषी झालर घटाके आकार, वारह देवलाकके देव मृदगके आकार ग्रीवेकके देव

फुलचंगेरीके आकार. अनुत्तर विमानके देव कुमारीके कंचुके कांचलीके आकार देखे, मनुष्य तिर्यंच जालीके आकारसे अनेक प्रकारसे देखे, ४ बाह्याभ्यंतर नर्कके जीव और देवताके जीवको आभ्यंतरिक ज्ञान तिर्यंच बाह्य प्रगट ज्ञान और मनुष्य बाह्य अभ्यंतर दोनों होवे, ५ अणुगासी अणाणुगामी, अणुगामी उसे कहते है एक वस्तुसे दूसरी तीसरी यों सर्व अनुक्रमें देखे और सर्व ठिकाणे साथ रहे देख सके, अणाणुगासी जहां उपज्या वहां देखे दूसरे ठिकाणे न देख सके, नारकी देवताके अणुगासी अवधिज्ञान और मनुष्य तिर्यंचके अणुगासी अणाणुगामी दोनुं. ६ देशसे सर्वसे नारकी देवता तिर्यंचको देशसे थोड़ा ज्ञान होय और मनुष्य को देशसे व संपूर्ण दोनों अवधि ज्ञान होय, ७ हाय मान वर्द्धमान अनुठीए हायमान उपजे पीछे कमी होता जाय, वृद्धिमान वृद्धि

ज्यादा होता जाय, अवस्थित उपजा उपना ही घना रहै, नारकी देवको अवस्थित और मनुष्य तिर्यचको तीन ही तरहका होना है, ८ पडवाड, अपढ़वाइ, आकर चला जाय सो पढ़वाड ज्ञान और आकर नही जाय सो अपढ़वाइ ज्ञान नर्क देवको अपढ़वाड और मनुष्य तिर्यचको पढ़वाइ अपढाइ दोनो अवधि ज्ञान होते हैं।

मन पर्यव ज्ञानके दो भेद।



१ ऋजुमती और २ विपुलमती मनपर्यव ज्ञानी द्रव्यसे रूपी पदार्थ देखे चंद्रसे नीचे १ हजार योजन ऊचा नवसे योजन तिरछा, अढाइ द्वीप ऋजुमतीवाला अढाइ अगुल कमी देखे तथा खुला खुला नही देखे, विपुलमतीवाला अढाइ द्वीप पूरा देखे और खुला देखे कालसे पल्यके असख्यातमे भाग गये कालकी और आवने कालकी वात देखे, भावसे

सर्वसन्नीके मनकी वात जाणे, देखे, यह मन-पर्यव ज्ञान मनुष्य सन्नी कर्मभूमी संख्यात वर्षके आयुष्यवाले पर्याप्ता समदृष्टी संजती अप्रमादी लब्धिवंत इतने गुणयुक्त होवे उन मनुष्यको उपजता है। दृष्टांत, जैसे—किसीने अपने मनमें घड़ा धारण किया तो ऋजुमतिवाले तो फक्त घड़ाही देखेंगे और विपूल मतिवाले विशेष देख सकते हैं कि इसने मृत्तिका (मट्टी) या धातुका घड़ा घृत या दुग्धादि अर्थ धारण किया वगैरा. ऋजुमतिवाले पडिवाइ हो जाते हैं, अर्थात् ज्ञान चला जाता है और विपुलमति मन-पर्यव ज्ञान हुये बाद केवलज्ञान जरूर ही उत्पन्न होता है, अवधी ज्ञानसे मन-पर्यवज्ञानके १ क्षेत्र थोडा है, परन्तु विशुद्धता निर्मलता अधिक है, २ अवधिज्ञान चार ही गतीके जीवोंको होता है और मनः-पर्यवज्ञान फक्त मनुष्यगतिमें साधुको ही होता है, ३ अवधिज्ञान तो अंगुलके

असख्यातमें भाग क्षेत्र देखे वा अधिक भी होता है और मन पर्यवज्ञान एकही वक्तमें अढाई द्वीप देखे जितना ऊपजता हे, ४ और अवधिज्ञानसे भी जो रूपी सुक्ष्म द्रव्य दृष्टि नहीं आवे वो मन पर्यववाले देख सकते हैं यह चार विशेषत्व है, यह देशसे नो इन्द्रि प्रत्यक्ष मतिज्ञानके भेद हुये।

॥ ५ केवलज्ञान ॥



सर्व द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावको जाने, अपडवाइ सपूर्ण होता हे। यह ऊपरके गुणयुक्त मनुष्य अवेदी अकषाइ तेरमे गुणठाणवर्त्तिको होता हे। यह आये पिछे निश्चय मोक्ष जावे।

इति ज्ञानभेद सपूर्णम् ।

॥ अहिंसा परमो धर्मः ॥

श्री धर्म परीक्षा संक्षेप हितकारण लिखिए छै ।



कोई भलो शिष्य श्री गुरुने पुछे छै, श्री गुरु म्हारो वचन सांभलो, जे संसार मध्ये जितना जीव छै ते सर्व जीवने धर्म एहवो शब्द घणु वाहलो लागे छै, हवे गुरु कहे एह वातनो शुं अचरज तीहारे वले श्री गुरुने शिष्य पुछे हे स्वामी हुं एटले माटे पुछुं छुं के जो सर्व जीव जेहवो धर्म छै तेहवो जानता नथी अने धर्म शब्द तो वाहलो घणु लागे छै, तिहारे श्री गुरु उत्तर दहे छै के जे धर्म छै ते जीवरो स्वरूप छै, जीवरो निज लक्षण छै, ते माटे शब्द पण घणु वाहलो लागे छै, तेहनो दृष्टांत देखाडे छे जिमके नागनो मंत्र कहता नाग घणु खुसी थाय छै अने विषपण पाछु वाले छै ते नागना मंत्र

मध्ये नागनों कुल नामा वखाणं छे ते माटे नागनु मन घणो खुसी थाय छे, तिम इण दृष्टांते जीव पण धर्म शब्द साभल्या थी खुसी थाय छे, तिवारे फिर शिष्य बोल्योके हे स्वामी ससार मध्ये तो सहुलोग कहे छे के देहथी नीपजे ते धर्म छे अने श्री गुरुजी तमे तो जीवनो निज लक्षण ने धर्म कह्यो छे तेहनो प्रकाश करो, तिहारे श्री गुरु कहे जे जीवने चेतना छे ते जीवनो धर्म छे त चेतना मध्ये गुण अन ता छे ते मध्ये गुण तीन मुख्य छे तेहना नाम— ज्ञान गुण (१) दर्शन गुण (२) चारित्र गुण (३) ये तीन गुणने आददेइ अन ता गुण छे ते सर्व चेतना धर्म छ ते चेतना धर्म जीवने पासे छे ते जीव निगोद माहे गया पण चेतना धर्म टले नहीं पण ते मध्ये एटलो विशेष छ के धर्म पोताने पासे छे पण विसर गयो छे ते सभाल ता नथी, तहना दृष्टात लिखिए छे—

जिम कोइ बालकने बाल अवस्था मध्ये तेने तेहना माता पिताए चिन्तामणि रतन ते बालक ने गले बांध्यो ते (बालक) कालांतर मोटो थयो तेने दालिद्र अवस्था आवी छै पण पोताने गले चिन्तामण रतन छै ते जाणतो नथी, तेहने कोई कहे तुझ पासे भली वस्तु छै ते माने नहीं क्युं माने नहीं के ते पुरुषने दालिद्र रेहण हार छै (अंतराय तुटी नहीं) तिण वास्ते माने नहीं ज्युं जीव पण पोताने बहुल संसार ने उदय चेतना धर्म विसर गयो छै बीजो दृष्टांत जे कोईके घरमें भुंय (भवरे) मांहे निधांन छै पण ते जाणतो नथी तेहने कोई एक जाण पुरुष कहे के थारे घर मांहे निधान छै तेहनी दालिद्र दिसा मिटन हार छै ते कह्यो वचन मान्यो, निधांन काढ्यो संतोष ऊपन्यो इम बहु दृष्टांते जीव जिन भाख्यो धर्म जाणे पोतानो धर्म पोताने पास छै चेतना

धर्म टले नहीं, तेवारे वले शिष्य वोल्यो हे स्वामी पोतानी वस्तु पोताने पासे छे विसारी गयो ते सुं कारण, तिहारे श्रीगुरू कहे छे जे अनादि कालनो जीव छे ते राग द्वेष रूप फेरीटीयो छे ते ऊपर दृष्टांत लिखिए छे, जिमके एक पाणीनो द्रह भरीयो छ ते पाणी मध्ये गुण घणा छे ने मध्ये गुण तीन मुख्य छे ते किसा गुण —(१) पहिलो निर्मलताइ (२) वीजो रस, मधुरताइ (३) तीजो शीतलताइ ए तीनो गुण आदि देइने पाणी माहे गुण घणा छे ते पाणीरा द्रह मध्ये कालन्तर किसी ही जोगताइ करीने पाणी माहे सेवाल ऊपना तें पाणी मध्ये गुण तीन (३) निकमा गया शीतलताइ तेहवी नथी, रस मधुरताइ पण तेहनी नथी अने वले निर्मलताइ तो पुरी गई ए दृष्टांते जीव नो स्वरूप जाणवा, जिम पाणी थी सेवाल ऊपनो छे तिणहीज पाणी अवस्था फेरी दिदे जिम

४ अनुकपा कहता—परजीवने दुखी देखने करूणा (अनुकंपा) करे।

५ आसता कहता—जीवादिक द्रव्यना सुक्षम भाव सुणकर मुझावे नहीं श्रीजिन वचन ऊपर आसता रखे।

॥ विस्तार ॥

॥ अथ संवेग स्वरूप लिख्यते ॥

सम्यक्त सदा अन्त करणमें संवेग-- वैराग्य भाव रखे।

श्लोक—शरीर मनसागतु वेदना प्रभवान्नयात्।
स्वप्नेंद्रजालसंकल्पाद्भीति संवेगमुच्यते ॥

अर्थात् संवेगी ऐसा विचारेकि "ससारमी दु खपउरय" यह ससार शारीरिक देह सम्बन्धी रोगादिक और मानसिक मन स बन्धि चिता इन दोनों दु खो करके प्रतिपूर्ण भरा है, किंचित

ही खाली नहीं है, इसमें तूं सुखकी अभिलाषा करे सो तेरेको सुख कहांसे प्राप्त होवे तथा जो पुद्गलोंका संयोग मिला है, सो भी कैसा है कि यथा दृष्टान्त किसी क्षुधापीड़ित भिक्षुक बजारमें हलवाईकी दुकानपर अनेक पक्वान देख विचार करता २ रसोई बनाने कंडे छाणे लाया था उसको सिर नीचे दे सो गया। उसे स्वप्न आया कि इस ग्रामका राजा मरनेसे मैं राजा बन ऊँचा सिंहासन पर बैठ छतर चमर धराने लगा और मिजवानीमें घेवर प्रमुख अत्युत्तम पक्वान जीम शयन किया इतनेमें ही कुछ आवाज होनेसे जाग्रत हो देख २ रोने लगा ग्रामके लोग पूछनेसे उत्तर दिया कि मेरा राज परिवार सुखसाहबी कहां गया और अभी मैंने इच्छित भोजन किये थे सो भी कहां गये यह कंडेही रह गये, लोग कहने लगे यह दिवाना हो गया सो बकता है। ऐसेही यह मनुष्यजन्म-

रुप सायभी स्वप्नके सम्पत्ति मिली है। इसको गमादेनेसे दिवानाकी तरह रोना पड़ता है, मतलब यह सम्पत्ति सब स्वप्न या इन्द्रजाल गारुडीके ग्याल जैसी प्रत्यच्च दीखती है ऐसे दु खसागर अथिर ससामें लुब्ध न होवें। सदा कर्म बधके कारणोसे डरता है ससारको छोडनेकी सदा अभिलाषा रखे सो सवेगी जाणना। इतिसवेग सरूपम्।

अथ अनुकम्पा संक्षेप स्वरूप लिख्यते।



सम्यक्ती प्राणी दु खी जीवोको देख अनुकम्पा करें।

श्लोक

सत्व सर्वत्र चित्तस्य दयार्द्रत्व दया नर।
धर्मस्य परममूलमनुकम्पा प्रवचने॥

अर्थात्—जगतवासी सर्व जीव सुखसे जीवितव्यके अभिलाषी हैं, दुःख प्राप्त होनेसे घबराते हैं और दुःख प्राप्त हुए उस दुःखमेंसे कोई छुड़ानेवाला मिल जाय तो वो हर्ष मानते हैं। इसलिये समदृष्टि प्राणी दुःखी जीवोंकी अनुकम्पा लाकर उनको उस दुःखसे अवश्य छुडावे यह अनुकम्पा ही धर्म का मूल है।

॥ दोहा ॥

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोडिये, जबलग घटमें प्राण ॥

॥ अथ आसता स्वरूप लिख्यते ॥



श्री जिनेश्वरके मार्गपर या वचन पर पक्की आस्ता रखे, एक जिनेश्वरके मार्गको सच्चा जानना, दृढ़ श्रद्धा रखना, देवादिक कोई धर्मसे

चलाय मान करे तो चलायमान न होवे, अरणीकजी कामदेवजी की तरह दृढ़ता रखे, देहका विनाश होते भी धर्मको सुठाए जाने क्योंकि देहादिक अनंत वरुत मिली है ।

॥ दोहा ॥

धन देकर तन राखिये, तन दे रखिये लाज ।
धन दे, तन दे, लाज दे, एक धर्मके काज ॥

परन्तु धर्म मिलना मुशकिल है इसीलिये शरीरसे ज्यादा धर्मका यत्न करना बोलते हैं ।

"आसता सुख सासता"

आस्तासे ही मंत्र जंत्र औषध फलीभूत होते हैं, इस वख्त दान-धर्म-क्रिया-कष्ट करनेवाले बहुत हैं, परन्तु दृढ़ आसतावाले बहुत थोड़े हैं, जिससे ही महा प्रभाविक नवकार तथा क्रिया का प्रत्यक्ष फल किंचित दृष्टी आता है । बहुत धर्मीजन तो गोनरके ग्विले जैसे जिधर नमावे उधर नम जाते हैं और नग्वटाके गांटे जैसे

जिधर मुड़ावे उधर मुड़ जाते है ऐसे बहुत हे, इस लिये धर्मी होकर दुःख पाते हैं। बहुत धर्मकर यथा तथा फल प्राप्त नहीं कर सकते हैं; ऐसा जान समदृष्टी प्राणी यथा शक्ति करणी करे; परन्तु पूर्ण आसता रखकर पूर्ण फल लेवे। इति आसना स्वरूप ॥

॥ इन्द्रियोंके विषय स्वरूप लिख्यते ॥



॥ श्रोतेन्द्री ॥

१ श्रोतेंद्री—कानके तीन विषय, १ जीव शब्द जीव बोले सो, २ अजीव शब्द भींतादिक पड़नेसे शब्द होवे सो, ३ मिश्र शब्द वाजिंत्र वांसरी प्रमुख अजीव, वजानेवाला जीव दोनों मिलकर शब्द होवे सो मिश्र शब्द; इसके बारह बिकार पहिले तीन विषय कही उसको दो गुणा करना शुभ-अशुभ जैसे पुण्यवान प्राणी वोले तो अच्छा लगे और पापी वोले तो

खोटा लगे यह जीव शब्द हुये, रुपये पड़े तो उसका शब्द अच्छा लगे, भींत पड़े तो उसका शब्द खोटा लगे ये अजीव शब्द हुये, उत्सवका वाजिन्त्र अच्छा लगे और मृत्युका और समाम का वाजिन्त्र खराब लगे यह मिश्र शब्द हुये, यो तीनके दो भेद करनेसे छव भेद हुये। इन छव पर कभी राग प्रेम और कभो द्वेष उत्पन्न होता है, अच्छे शब्द पर भी किसी समय द्वेष आ जाता है, जैसे लग्न होता है तब कहे कि "रामनाम सत्य है"- तो खोटा लगे और कभी खोटा शब्द अच्छा लगता है जैसे सासरे में गालियो, यो छव के दो गुणे करनेसे श्रोतेन्द्रीके बारह विकार हुये। इस इन्द्रीके वशमें होकर मृग, सर्प इत्यादि पशु मारे जाते हैं, ऐसा जान कभी राग द्वेष उत्पन्न होवे ऐसा शब्द सुनना नहीं और कभी कानमें आय जाय तो उसपर राग द्वेष करना नहीं, क्योंकि

राग द्वेष ही कर्मके बंधका मुख्य कारण है। इस भवमें या आगेके जन्ममें बहिरापणा या कानके अनेक रोग प्राप्त होते हैं और इसको वशमें करता है. वह श्रोतेन्द्रीकी निरोगता पाता है और अनुक्रमे मोक्षमें जाता है।

॥ चक्षुइन्द्री ॥



२ चक्षुइन्द्री—आंखकी पांच विषय १ काला, २ नीला, ३ लाल, ४ पीला, ५ श्वेत, इनके साठ विकार, पांच वर्णकी वस्तुमें कितनी सचित (सजीव) कितनी अचित (निर्जीव) और कितनी मिश्र (सचित अचित दोनों भेली) होती हैं, यों ५ × ३ = १५ होये, यह १५ कभी शुभ होता है और कभी अशुभ होता है, यों १५ × २ = ३० हुये, इन तीस पर कभी राग और द्वेष पैदा होता है, यों ३० × २ = ६० चक्षु इन्द्रीके विकार हुये। इस इन्द्रीके

वशमें पड़कर पतगिया दीवेमें झपापात ले मरण पाता है। ऐसा जान राग द्वेष उत्पन्न होवे ऐसा रूप देखना नहीं और देखनेमे आवे तो राग द्वेष करना नहीं। जो राग द्वेष करता है वह इस भव परभवमें चक्षु इन्द्रीकी हीनता पाता है और वशमें करता है सो चक्षु इन्द्री निरोगी पाकर अनुक्रमे मोक्ष पाता है।

॥ घ्राणेन्द्री ॥



३ घ्राणेन्द्री—नाक इसकी दो विषय, १ (पहलो) सुर्भीगन्ध सुगन्ध और २ (दुजो) दुर्भीगन्ध दुर्गन्ध। इसके बारह विकार, यह दो सचित और दो अचित और दो मिश्र यों ६, इन छव पर राग और छव पर द्वेष यो बारह विकार हुये, इस इन्द्रीके वशमें पड़कर भ्रमर (भमरे) फुलमें मारा जाता है। ऐसा जाणकर

राग पैदा होवे ऐसा सुगन्ध सुघना नहीं और दुर्गन्ध आजावे तो द्वेष करणा नहीं क्योंकि राग द्वेष करनेसे घ्राणेन्द्री की हीनता पाता है और वशमें करनेसे घ्राणेन्द्री निरोगी पाकर अनुक्रमें मोक्ष पाता है।

॥ रसेन्द्री ॥



४ रसेन्द्री—जीभको पांच विषय, १ खट्टा, २ मीठा, ३ तीखा, ४ कडुवा, ५ कसायला। इसका साठ विकार, यह पांच सचित, पांच अचित और ५ मिश्र यों तिन गुणे करनेसे १५ हुये, ये १५ शुभ और १५ अशुभ यों ३० हुये, यह ३० पर राग और ३० पर द्वेष यों साठ विकार हुये। इसके वशमें पड़कर मच्छी मारी जाती है। ऐसा जान कर किसी रस पर राग द्वेष करना नहीं, क्योंकि राग द्वेषसे रसेन्द्रीकी हीनता प्राप्त होती है और

वशमें करनेसे निरोगीपणा पाकर अनुक्रमें मोक्ष प्राप्त होता है। यह रसेन्द्री वशमें करनेसे पाचही इन्द्री सहजमें वशमें हो जाती है। कहा है कि "एक धापी तो चार भूखि एक भूखि तो चार धापी" जो रसेन्द्री पेट भरा हुवे तो काणोसे राग रागिणी सुनने की, आखोसे रूप देखनेकी, नाकसे सुगन्ध लेनेकी और शरीरसे भोग भोगनेकी इच्छा उत्पन्न होती है और जो रसेन्द्री भूखी होवे तो कुछ भी इच्छा होती नहीं है। उल्टा चार ही कामोका तिरस्कार होता है। शान्त आत्मा रहती है। इसलिये आत्मा वशमे करनेका एक यहही उपाय है कि वस्तु खानेका नियम रखना।

॥ स्पर्शेन्द्री ॥



५ स्पर्शेन्द्री शरीर इसकी आठ विषय—१ हलका, २ भारी, ३ ठण्डा, ४ उष्ण (गरम) ५

राखीजै, ८ राजा डंडे जिका, चोरकी वस्तु मोल न लीजै, ९ राजाडंडे लोकभंडे एसा काम न कीजै, १० पराई वस्तु दिये विना न लीजै, चोरी लागे, ११ अनीतीसे धन भेलो न करीजै, १२ अक्कलसे काम नीकलता होय तो धन न खरचिजै, १३ गुरुके पास राज सभामें तथा मोटी सभामें झुठ न बोलीजै, १४ घर सारु दान दीजै, झूठी साख न भरीजै, १५ गुणवान पंडितासुं प्रीत राखीजै, जो बुद्धि वधै, १६ कीणरी जामनीमें न आईजौ, १७ किसीका दिल दुखे एसा कड़वा वचन न बोलीजै, १८ अजाणी वस्तु न खाइजै, नंदी फलवत्, १९ बिना आकब कीणीरी वातमें हुकारो न दीजै, २० घररी दुखरी बात चोवड़े किणहीने न कहीजै, २१ सूति गायने, सपने, नाहारने न जगाइजै, २२ आपरा मित्रने पूछकर काम कीजै, २३ बिना पिछाण्यां किणरोही साथ न कीजै,

२४ पांच आदमी मिलके कहवे सो मान लीजे, २५ चाकरसुं कपट दगो न कीजे, २६ वही खातामें, खत पात्रमे झूठो नामो न लिखीजे, २७ बड़ा मनुष्यने आछो आखर न कहीजे, २८ घणो लोभ हाणी जाणीजे, २९ नियावनसु पंडितसुं वाद न कीजे, ३० द्रव्य फजुल न खरचीजे, ३१ खर्च आमदानी रोज संभालीजे, ३२ भोजन तैयार हुवा पाछे जिमणरी जेज न कीजे, ३३ औषध खाइजे तो पथ्य राखीजे, आने लीजे, ३४ मसकरीमे किणरी वस्तु न उठाइजे, ३५ तोला मापा घटता वढ़ता न राखीजे, ३६ नामो ठामो तैयार राखीजे, ३७ पुंजी सारू काम करीजे, ३८ भोजन वेला झगडो नहीं कीजे ३९ माथे वर उधार न दीजे, ४० अण भावतो भोजन न कीजे, अजीर्ण होय ४१ गलि विचे परस्त्री लुगाईसु धात न कीजे, ४२ ज्याति लोहार

सिलावटेरे सामो न वेसीजे, ४३ जुवे सट्टे फाटकेका काम न कीजै, करेतो प्रतीत घटे, ४४ चोर, कसाई, वेश्या, नीच, दूष्ट मनुष्यके साथ लेन देन वेपार न करीजै, ४५ जावते विछु सर्पने छेडणो नहीं, ४६ वात करतां गाल काढणी नहीं, ४७ वात करतां आपने हसणो नहीं, मूर्ख दीसे, ४८ वरजतां चालिजे नहीं, अगाड़ी काम सिद्ध होवे नहीं, ४६ अंगतासुं राड न कीजे, लोकमें भुंडो दीसे, ५० टाबररो लाड वरस सात तांई राखीजे, पाछे विद्या पढ़ाईजे, ५१ पशुरे चोट न दीजे, मर्मरी लागे जीवसुं जावे, ५२ लिखतां बात न कीजे, बात करे तो खोट आवे, ५३ सर्व जीव, सतब, प्राण, भूत, न हणीजै, दया राखीजै, ५४ स्त्रीसुं रोस न कीजै, करे तो मूर्ख वाजे, ५५ वेला बिना घरबारे न जाइजे, ५६ पढ़तां, गावतां, नाचतां, व्यवहारमें लाज न राखिजे, ५७ बिना विचार्‌यां

मु ढावाहरे वात न काढीजे, ५८ ढोय जणा वात करता हुवे जठे न जाइजे, ५६ हालता फिरता उभा न खाइजै, ६० कुवा ऊपर न वेसीजे, ६१ दान देईने न पोमाइजै, ६२ गावरा धणीसु वेर भाव न राखीजे, ६३ मित्रता होये जठे कर्ज न मागीजे, माग्या-लिया न दरीज्यां रज होवें प्रीति टुटे, ६४ लेने देने में साहुकारी राखीजे, जो साख सोभा इजत आवरु वधे, ६५ सदा निशक पण न रहीजै, ससारको भय राखीजे, ६६ मोटो देख किणरी खुसामदी न करीजे ।

॥ इति शिखा वाक्य ॥

॥ शिखावनरा वोल ॥

१ सदहणा शुद्धहुवे तिणरो उपदेश सुणीजे, २ व्रत मर्यादा किधा होय तिणनु प्यार कीजे, ३ सज्जन दुश्मन जोइने परखीज ४ एकली

स्त्री कनै उभा न रहीजे, ५ कांड लाल पालकीयां न पतीजै, ६ भलो चात्रे तिणारी सीख मानीजै, ७ वोल्यां वंध नहीं होय तिणारो संघ न कीजै, ८ परवश पड्या सील दृढ राखीजै, ९ सटल. विटलसुं प्रेम न कीजै, १० सज्जन मित्रने छेह न दीजै, ११ कुमती हिंसा कारक संग न कीजै, १२ चुकानै वार वार न पूछीजै १३ उलटी बुद्धिवालेने वारवार सीख न दीजै, १४ घणोमान बधायो तोही विनो न छोडीजै, १५ सुखदुखमें पिण भली मर्यादा न छोडीजै, १६ आपणां गुण आपईज न बखाणीजै, १७ आपना औगुण पराये पर मत डालीजै १८ पूठ पाछै ओगुण न बोलीजे, १९ सम्यक्त शील दृढ़ राखीजै, २० बुरीगारने न छेड़ीजै, २१ हीयारी बात जिणतिणनै न कहीजै, २२ रीस चड़ै तो क्षमा कीजै, २३ विण विच्यारां दाय आवै च्यूं न बोलीजै, २४ धर्म आचार्यरे

हुकममे रहीजें, २५ पर उपगार भूलीजे नहीं, २६ निर्गुण देवगुरु धर्म सेवीजे नहीं, २७ गुणवंत देवगुरु धर्म सेवीजें २८ निश्चय व्यवहारना जाण हुइजें, २९ चतुर्विध सघरा निंदकने दुर्लभ बोधी जाणीजें, ३० चतुर्विध सघने वखाणें ते सुलभ बोधी जाणीजे, ३१ आवश्यक उपयोग सहित कीजे, ३२ भणने गुणनेमे वाद न कीजें, ३३ सशय उपजे तो सदगुरुने पुछीजे, ३४ दोष आलोयने निशल हुईजें, ३५ गुरुके, वड़ाके सामो न बोलीजे, ३६ गुरुनो काज हित सु कीजें, ३७ किसी को आतमा न दुखाइजें, ३८ धर्मरे ठिकाणे विकथा न कीजें, ३९ धर्मरे ठिकाणे झूठ न बोलीजें, ४० छन काय बचें जठे धर्म जाणीजे, ४१ गुण उपजें जिणने भणाईजें, ४२ निर्गुण, सुगुणरी परीक्षा कीजे, ४३ कुड़ारी पत्र न म्राचीजें, ४४ सत्यवादीरी प्रतीत आणीजें,

४५ कृतघ्नने अगुणग्राही जाणीजै, ४६ कपटीरो विश्वास न कीजै, ४७ पाप कर्मसे डरता रहीजै, ४८ किणही वस्तुरो गर्व न कीजै, ४९ धर्म कार्यपर ततपर रहीजै, ५० अति लोभ तृष्णा न कीजै, ५१ किणहीसुं डंस राखने दुख न दीजै, ५२ पारकी चाड़ी न कीजै, ५३ पर उपकार करता ढील न कीजै, ५४ कड़वा, कठोर, निर्लज्ज न बोलीजै, ५५ मीठो अमृत, सत्य, निरवद बोलीजै, ५६ धर्मरी बात उगाड़े मुंढे न कहीजै, ५७ अविनीतरी बुद्धि गुण नासती जाणीजै, ५८ विनैवंतरी बुद्धि गुण वधती जाणीजै, ५९ पांच सुमती तिन गुप्ती चोखी पालीजै, ६० लीधा व्रत पच्चखाण में दोष न लगाइजै, ६१ घणे कारणे पिण अधीरा न हुइजै, ६२ रोग कष्ट पड़्या धर्म न छोड़ीजै, ६३ पांच इन्द्रीरी विषयरे वश न पड़ीजै, ६४ खांण भोग, कर्म

रोग जाणीजे, ६५ ससाररो सगपण काचो जाणीजे, ६६ धर्म रो सगपण साचो जाणीजे, ६७ पापडी, लोभी, कुगुरुरो सग न कीजे, ६८ निर्लोभी सदगुरुनी सगत कीजे, ६६ सात विसन न सेवीजे, ७० पाप अठारह पर हरीजे, ७१ कोई वाको वर्ते तो ही द्वेष न कीजे, ७२ खोटे हाण, खरे वरकत जाणीजे ७३ पापसु दुखफल धर्मसु सुखफल जाणीजे, ७४ गुरुसु वाको वहे सो वड़ो अभाग्यो जाणीजे, ७५ गुरुसु सन्मुख वहे तो वडो भाग्य खुलया जाणीजे, ७६ सीख उधीमाने तो हीन पुण्यो जाणीजे, ७७ जो झूठ न बोले और सच बोले सो साहूकार कहीजे, ७८ घणी बोली हासी करीने गुण न खोईजे, ७६ ओछो वचन न काढ़े ते गभीर आदमी जाणीजे, ८० ओछो वचन काढ़े ते हलको आदमी जाणीजे, ८१ न्याय पक्ष स्वीकार कीजे, अन्याय पक्षमें

कभी न जाईजै, ८२ सुदेव, सुगुरु धर्म की विनय भगती कीजे, ८३ देव गुरु धर्मकी असातना न कीजै, ८४ पराइ स्त्री वडी है,:सो माता छोटी है, सो बेहन भाणजी सामान जानीजै, ८५ संपत, त्रिपत, सुख, दुख, मुढ, चतुर, कर्मारा नाटक जाणीजै, ८६ आरंभ, परिग्रह, विषय कषाय थोड़ो अने घणे दुखरो कारण जाणीजै ।

इति छयासी बोल समाप्त ।

॥ श्रीरस्तु कल्याण मस्तु ॥

॥ अथ कर्म छतीसा लिख्यते ॥



परम निरंजण परम गुरु परम पुरुष परधान । वंदो परम समाधि गत भयभंजण भगवान ।१। जिनवांन करि सुगुरु शिष मनि आनि । किछुक जीव अरु कर्मको निरने कहु वखानि ।२। अगम अनंत अलोक नभ तामें

लोक आकाश । सदा काल ताके उदर जीव अजीव निवाश ।३। जीव दरवकी द्वै दसा ससारी अरु सिद्ध । पाच विकल्प अजीवके अये अनादि अकिद्ध ।४। गगन काल पुद्गल धरम अरु अधर्म अभिधान । अब किछु पुद्गल दरवको कहु विशेप वखान ।५। धरम दृष्टी सो प्रगट है पुद्गल दरव अनत । जड लक्षण निरजीव दलरूपी मूरतिव त ।६। जो त्रिभुवन थिति देखिये थिर जगम आकार । सो पुद्गल करवानको है अनाद विस्तार ।७। अव पुद्गलके वीश गुण कहो प्रगट समझाय । गरभित और अनत गुण अरु अनत परजाय ।८। श्याम, पीत उज्जल अरुन हरित मिश्र वहु भाति । विविध वरण जो देखिये सो पुद्गलकी काति ।९। आमल तिक्त कपाय कटुखार मधुर रस भोग । ए पुद्गलके पाच गुण पटमा नहिं सव लोग ।१०। तातो शिरो चीकनो रुखो नरम

कठोर। हरवो अरु भारी सहज आठ फरस गुण जोर ।११। जो सुगन्ध दुरगन्ध गुण सो पुद्गलको रूप। अव पुद्गल परजायकी महिमा कहो अनूप ।१२। सवदबंध सूछिम सरल लंब वक्र लघू थूल। विथरनि भेद उदोत तम दुहुको पुद्गल मूल ।१३। छाया आकृति तेज दुति इत्यादिक वहु भेद। ए पुद्गल परजाय सव प्रगट होहि उछेद ।१४। केइ शुभ केइ अशुभ रुचिर भयानक भेष। सहज सुभाउ विभाउ गति अरु सामान विशेष ।१५। गरभित पुद्गल पिंडमें अलस अमूरति देव। फिरै सहज भव चक्रमें यह अनादिकी टेव ।१६। पुद्गलकी संगत करै पुद्गल हीसो प्रीति। पुद्गलको आपा गनै यह भरमकी रीति ।१७। जेजे पुद्गलकी दशा ते निज मांने हंस। यही भरम विभाउसो बढ़े करमको वंश ।१८। ज्यो ज्यो कर्म्म विपाक

वसिवाने भ्रमकी मोज। त्योंत्यो निज सपति दूरे जरे परिग्रह फोज ।१६। ज्यो वानर मदिरा पीवै विछु डकत गात। भूत लगे कोतु करै त्या भ्रमको उतपात ।२०। भ्रम ससैकी भूलसौ लखेन सहज स्वकीऊ। करम रोग समभ्के नहीं यह ससारी जीऊ ।२१। करम रोगके द्वै चरण विषम दुहुकी चाल। कम्प परकिती लिये एक अेवी असराल ।२२। कम्प रोग है पापपद अकर रोगहै पुन्नत्र। ज्ञान रूप है आतमा दुहु रोग सो सूत्र ।२३। मूरख मिथ्या दृष्टि सो निरखै जगकी रोस। डरहि जीव सब पापसो करही पुण्यकी होस।२४। उपजे पाप विकारसो भयता-पादिक रोग। चिन्ता खेद वृथा वड़े दुख माने सुख माने सब लोग ।२५। उपजे पुन्न विकारसो निपे रोग विस्तार। आरति रूद्र वृथा चढ़े सुख-माने ससार।२६। दोउ रोग समान हैं मूढ़ न जाने रीति। कप रोगसे भय करे अकर रोगसो

अन्धकार कुल जानिये,
जिमि निशि विना मयङ्क ।२।

जिसका पुत्र न तो पण्डित है, न भक्ति करनेवाला है और न निष्कलङ्क (कलङ्क रहित) ही है, उसके कुलमें अन्धेरा ही जानना चाहिये, जैसे चन्द्रमाके विना रात्रिमें अन्धेरा रहता है । २ ।

निशि दीपक शशि जानिये,
रवि दिन दीपक जान ।
तीन भुवन दीपक धरम,
कुल दीपक सुत मान । ३ ।

रात्रिका दीपक चन्द्रमा है, दिनका दीपक सूर्य है, तीनों लोकोंका दीपक धर्म है और कुलका दीपक सपूत लड़का है । ३ ।

एकहि अक्षर शिष्य कों,
जो गुरु देत बताय ।
धरती पर वह द्रव्य नहिँ,
जिहिँ दै ऋण उतराय ।४।

गुरु कृपा करके चाहें एक ही अक्षर शिष्यको सिखलावे, तो भी उसके उपकारका बदला उतारनेके लिये कोई धन संसारमें नहीं है, अर्थात् गुरुके उपकारके बदलेमें शिष्य किसी भी वस्तुको देकर उऋण नहीं हो सकता है । ४ ।

पुस्तक पर आप हि पढ्यो,
गुरु समीप नहिँ जाय ।
सभा न शोभे जार में,
ज्यो तिय गर्भ धराय । ५ ।

जिस पुरुषने गुरुके पास जाकर विद्याका अभ्यास नहीं किया, किन्तु अपनी ही बुद्धिसे पुस्तक पर आप ही अभ्यास किया है, वह पुरुष सभा में शोभाको नहीं पा सकता है, जैसे—जार पुरुषसे उत्पन्न हुआ लडका शोभाको नहीं पाता है क्योंकि जारसे गर्भ धारण का हुइ स्त्री तथा उसका लडका अपनी जातिवालोंकी सभामें शोभा नहीं पाते हैं, क्योंकि—लज्जाके कारण बापका नाम नहीं बतला सकते हैं । ५ ।

वन में सुख से हरिण जिमि,
तृण भोजन भल जान ।
देहु हमें यह दीन वच,
भाषण नहिँ मन आन । ६ ।

जङ्गलमें जाकर हिरणके समान सुख पूर्वक घास खाना अच्छा है परन्तु दीनताके साथ किसी सूम (कजूस) से यह कहना कि "हमको देओ" अच्छा नहीं है । ६ ।

नहीं मान जिस देश में,
वृत्ति न बान्धव होय ।

नहिँ विद्या प्रापति तहाँ,

वसिय न सज्जन कोय । ७ ।

जिस देशमें न तो मान हो, न जीविका हो, न भाई बन्धु हों और न विद्याकी ही प्राप्ति हो, उस देशमें सज्जनोंको कभी नहीं रहना चाहिये । ७ ।

पण्डित राजा अरु नदी,

वैद्यराज धनवान ।

पांच नहीं जिस देश में,

वसिये नाहिँ सुजान । ८ ।

सब विद्याओंका जाननेवाला पण्डित, राजा, नदी (कुआ आदि जलका स्थान), रोगोंको मिटानेवाला उत्तम वैद्य और धनवान, वे पांच जिस देशमे न हो उसमे बुद्धिमान् पुरुषको नही रहना चाहिये । ८ ।

भय लज्जा अरु लोकगति,

चतुराई दातार ।

जिसमें नहिँ ये पांच गुण,

संग न कीजै यार । ९ ।

हे मित्र ! जिस मनुष्यमे भय, लज्जा, लौकिक व्यवहार अर्थात् चालचलन, चतुराई और दानशीनलता, ये पांच गुण न हो, उसकी संगति नहीं करनी चाहिये । ९ ।

[ओ]

काम भेज चाकर परख,
बन्धु दुःख मे काम ।
मित्र परख आपद पड़े,
तिमव छीन लख बाम ।१०।

कामकाज करनेके लिये भेजने पर नौकर चाकरोंकी परीक्षा हो जाती है, अपने पर दुःख पड़ने पर भाइयोंकी परीक्षा हो जाती है, आपत्ति आने पर मित्रकी परीक्षा हो जाती है और पासमें धन न रहने पर स्त्रीकी परीक्षा हो जाती है । १० ।

पीछे काज नसावहीं,
मुख पर मीठी बात ।
परिहरु ऐसे मित्र को,
मुख पय विष घट जान ।११।

पीछे निन्दा करे और काम को बिगाड़ दे तथा सामने मीठी २ बातें बनावे, ऐसे मित्र को अन्दर विष भरे हुए तथा मुख पर दूध भरे हुए घड़े के समान छोड़ देना चाहिये । ११ ।

रूप भयो, यौवन भयो,
कुल हू मे अनुकूल ।
विना विद्या शोभे नहीं
गन्धहीन ज्यों फूल ।१२।

रूप तथा यौवनवाला हो और बड़े कुल में उत्पन्न भी हुआ हो तथापि विद्यारहित पुरुष शोभा नहीं पाता है, जैसे—गन्ध से हीन होने से टेसू (केसूल) का फूल । १२ ।

कौन काल को मित्र है,
देश खरच क्या आय ।
को मैं मेरी शक्ति क्या,
नित उठि नर चित ध्याय ।१३।

यह कौन सा काल है, कौन मेरा मित्र है, कौन सा देश है, मेरे आमदनी कितनी है और खर्च कितना है, मैं कौन जाति का हूँ और क्या मेरी शक्ति है, इन बातों को मनुष्य को प्रतिदिन विचारते रहना चाहिये क्योंकि जो मनुष्य इन बातों को विचार कर चलेगा वह अपने जीवन में कभी दुःख नहीं पावेगा । १३ ।

तीन थान सन्तोष कर,
धन भोजन अरु दार ।
तीन सँतोष न कीजिये,
दान पठन तपचार ।१४।

मनुष्य को तीन स्थानों में सन्तोष रखना चाहिये—अपनी स्त्री में, भोजन में और धन में, किन्तु तीन स्थानों में सन्तोष नहीं रखना चाहिये—सुपात्रों को दान देने में, विद्याध्ययन करने में और तप करने में । १४ ।

मित्र दार सुत सुहृद हू,
निरधन को तज देत ।
पुनि धन लखि आश्रित हुवैं,
धन बान्धव करि देत ।१५।

जिस के पास धन नहीं है उस पुरुष को मित्र, स्त्री पुत्र और भाई बन्धु भी छोड़ देते हैं और धन होने पर ये ही सब आकर इकट्ठे होकर उस के आश्रित हो जाते हैं इस से सिद्ध है कि—जगत् में धन ही सब को बान्धव बना देता है । १५ ।

नेत्र कुटिल जो नारि है,
कष्ट कलह से प्यार ।
वचन भड़कि उत्तर करै,
जरा वहै निरधार ।१६।

खराब नेत्रवाला, पापिनी कलह करने वाली और क्रोध में भर कर पीछा जवाब देने वाला जो स्त्री है—उसी को जरा अर्थात् बुढ़ापा समझना चाहिये किन्तु बुढ़ापे की अवस्था को बुढ़ापा नहीं समझना चाहिये । १६ ।

जो नारी शुचि चातुर अरु,
स्वामी के अनुसार ।

नित्य मधुर बोलै सरस,
लक्ष्मी सोइ निहार ।१७।

जो स्त्री पवित्र, चतुर, पति की आज्ञा में चलने वाली और नित्य रसीले मीठे वचन बोलने वाली है, वही लक्ष्मी है दूसरी कोई लक्ष्मी नहीं है । १७ ।

लिखी पढ़ी अरु धर्मवित,
पतिसेवा में लीन ।
अल्प सँतोषिनि यश सहित,
नारिहिँ लक्ष्मी चीन ।१८।

विद्या पढ़ी हुई, धर्म के तत्व को समझने वाली, पति की सेवा में तत्पर रहने वाली, जैसा अन्न वस्त्र मिल जाय उसी में सन्तोष रखने वाली तथा संसार मे जिस का यश प्रसिद्ध हो, उसी स्त्री को लक्ष्मी जानना चाहिये, दूसरी को नहीं । १८ ।



॥ शुद्धि पत्र ॥



१०६ आहार रा दोप ।

१६ उदगमनरा —

१ आहार कम्मे कहता—समचे साधुरे अर्थ करे ते दोप ।

२ उदेसिय कहता---एक साधुरो नाम ले कर बनावै--ते दोप ।

३ पुईकम कहता---आधाकर्म्मी आहार १००० घर आंतरे ताइ लै ते दोप ।

१६ उत्पातरा —

११ क्रुक तुछा सथिय ।

१० एपणारा —

४ पेईए ।

६ मीसे कहता---मिश्र मोरण अत्यादि ।

७ अपरणीत कहता-- शस्त्र प्रगम्यो नहीं होवे (थोड़े कालरो) तो नहीं लेवै लेवै तो दोप ।

८ डायवा कहता--- आंधो, लुलो, लंगड़ो अजीर्णा करतो वेहरावे ते दोप ।

९ लंते कहता---तुरंतरी जागा लिप्योड़ी होवे उपर कर उलंघ (डाक) कर आहार ले ते दोप ।

१० छंदे कहता--दुध, दही, रावरा छांटा पड़ता होवे तो लेवै नहीं लेवै तो दोप ।

५ आवशकरा:---

५ वो परिठावर्णीया कहता--परठरा निमत ले तो दोष ।

२३ दशमी कालकरा:---

१ दानठा कहता---कीरती रो दान ।

१० उजाए (वहु अभ्कोधम्म) अपसीय भवर्णीश्का ।

११ पडिकुटं कुलंग कहता---निषेद कुलरो

१२ अचित कुलंग ।

१५ सुई'पे (सूरा)

६ आचारगजीरा।
१२ भगवतीजी सुत्ररा।
५ प्रश्न व्याकरणरा ।
६ नसीत सुत्र रा।
२ उत्तराध्ययन रा ।
२ दश श्रुत स्कद रा ।
२ ठाणगजी रा ।
१ वेदकल्प रो ।
१ प्रिहासीयेरूपे कहता --वासी राखीने
खावे तो दोष ।

१०६

---

६ तिगंछे कहता—चिकित्सा अर्थात् वैद्यकी करके दवाई प्रमुख देयकर आहार लेवे नहीं ।

७ कोहे कहता—क्रोध करके आहार लेवे नहीं ।

८ माने कहत—मान करके आहार लेवे नहीं ।

९ माए कहता—कपटाई करके आहार लेवे नहीं ।

१० लोभे कहता—लोभ करके आहार लेवे नहीं ।

११ संथिये कहता—पहिले या पीछे दातारके गुणके प्रसंशा करके आहार लेवे नहीं ।

१२ विद्या कहता---विद्या पढ़ाय कर आहार लेवे नहीं ।

१३ मंत्र कहता---मंत्र जंत्रादिक करके आहार लेवे नहीं ।

१४ चूर्ण कहता---चूर्ण गोली इत्यादि वताय कर आहार लेवे नहीं ।

१५ जोगे कहता-- वशीकरणादि करके आहार लेवे नही ।

१६ मूलकरण दोष कहता—गर्भपातन आदि कर्म करके आहार लेवे नही ।



१६ दोष उदगमनरा ।

दातारनु लागे अर्थात् श्रावक लगावे ।



१ आहार कम्मे कहता-- साधुरे अर्थ भाव भलायकर आहार बणावे ते आधा कर्मी दोष ।

२ उद्देसिय कहता---सगलो आहार दर्शणी निमित्त बनाया हो तो उद्देसियं दोष किंचित ठामरे लागो भी लेणो कल्पे नही ।

३ सुजना आहार मांही आधा कर्म्मी अंश मात्र भी भेल करे तो दोष ।

४ मिसीजाय कहता---आपरे वास्ते तथा साधुरे वास्ते भेला रांधे तो दोष ।

५ ठवणा कहता---साधु निमित्त थापणा राखे तो दोष ।

६ पाहुडियाए कहता---साधु अर्थे पावना आगा पाछा करने आहार देवे तो दोष ।

७ पाऊरे कहता---अंधारे मांहि सुं उजास करके देवे तो दोष ।

८ कीय कहता---साधु निमित्त आहार तथा वस्त्र मोल लायकर देवे तो दोष ।

९ पामिचे कहता---उधार लायकर देवे तो दोष ।

१० परियठे कहता---साधु निमित्त आपनी वस्तु दे कर बदलेसें दूजी वस्तु लायकर वेहरावे तो दोष ।

११ अभिहय कहता---आपणे घरसे जो साधुके पास साम्हा जायके देवे तो दोष ।

१२ भिन्न कहता---लेपनादिक छादो खोलके देवे तो दोप ।

१३ मालोहय कहता---ऊचासे उतार कर देवे तो दोप ।

१४ अछिजे कहता---दूजेके पाससे खोसकर देवे तो दोप ।

१५ अणिसट्ठे य कहता---दोयके सीरकी वस्तु (एक दूसरेकी बिना रजावदी) देवे तो दोप ।

१६ अजोयरे कहता---आगाड़ो आधण मांहि साधु आया जाणी इधको ऊरे देवे तो दोप ।

---

१० दोष एषणारा ।

गृहस्थ तथा साधु दानु सुं लागे ।

१ शंकीए कहता---गृहस्थीने तथा साधुने

शंका पड़जाय तो साधु आहार लेवे नहीं।

२ मंखीए कहता---हाथरी रेखा तथा मूंछ रा वाल भीना हुवे तो आहार लेवे नहीं।

३ निखिते कहता---असुजती वस्तु ऊपर सुजती वस्तु हुवे तो आहार लेवे नहीं।

४ सुजती वस्तु ऊपर असुजती वस्तु हुवे तो आहार लेवे नहीं।

५ सायरे कहता---अप्रतीतकारी घरमें तथा अनेरा भाजनमें घालकर देवे तो आहार लेवे नहीं।

६ मीसे कहता---मिश्र चीज सुजती असुजती लेवे नहीं।

७ अपरणीते कहता---शस्त्र प्रणम्यो नहीं हुवे तो लेवे नहीं।

८ अंधेसे आहार लेवे नहीं।

९ लंते कहता—तुरंत री जागा लिप्योड़ी हुवे तो वहां लेवे नहीं।

१० छंदे कहता—छींटा पड़ता हुवे तो लेवे नहीं।

दशमी कालमे आहारका २३ दोष ।

१ दानठा कहता—दानरे अर्थे किनो हुयो जैसे—डाकोत विगेरहके वास्ते किनो हुयो आहार लेवणो कल्पे नहीं ।

२ पुण्यठा कहता—पुण्यरे अर्थे किनो हुयो, दूकानमें धरमादे रो निकालो हुयो तथा मुवे रे लारे पुण्य रो कियो हुयो कल्पे नहीं ।

३ वाणीमगठा कहता—राक भिखारीरे अर्थे कीन्यो हुयो आहार लेनो कल्पे नहीं ।

४ समणठा—बावा, योगी, सन्यासीके अर्थे कियो लेनो कल्पे नहीं ।

५ नियाग कहता—नित्य प्रत्य एक घर रो आहार कल्पे नहीं ।

६ सज्झाएपिंड कहता—सज्झातर रो आहर लेनो कल्पे नहीं ।

७ रायपिंड कहता—राजपिंड आहर न कल्पे, जैसे—राजारे विवाहरो भोजन, राजारे थाल रो भोजन ।

८ किमछिये कहता—बताय बताय नामसे मांग मांग आहर लेवो तो दोष ।

९ संगट (संगटिये) कहता—सचितरे संगटरो आहर लेवे तो दोष ।

१० बहु उजाए (बहु अज्झोधम्म) कहता—थोडो खाणीमें आवे घणो नाखणीमें आवे ऐसो आहार लेवे ते दोष ।

११ पडिकुटं कुलंग कहता—नीच कुल रे घर रो, जैसे-धोबी विगेरह अणाकल्पनिक घररो आहर लेवे तो दोष।

१२ मामगं कहता—वर्ज्यो हुये घर रो आहर लेवे तो दोष; जैसे--कोई कहे म्हारे घर

मत आवो तो उस घर जाणो कल्पे नहीं उसको वर्ज्यो घर जाणीजे।

१३ अचियत कहता—अप्रतीतकारी कुल रो आहर लेवे तो दोष।

१४ पूव्वकम्मे, पच्छाकम्मे कहता—पहिला दोष लगावे तथा पीछे दोष लगावे सो आहर कल्पे नहीं, जैसे--आहर वेहराया पहले आगा पाछा साधु आया जाणके करदे तथा वेहराया पाछे फिर वणायले या काचे पानीसु ठाव या हाथ धोवे तो दोष।

१५ सुर (सुरा) कहता—नशे रो आहर तथा कलाल (सूडी) रे घर रो आहार लेवणो कल्पे नहीं।

१६ अंलग कहता—वकरो घर आगे वैठो होवे तो उल्लघ कर (डाककर) आहार लेवणो कल्पे नहीं।

१७ दारग कहता—वालक रमतो हूवे या आडो

बैठो हुवे तो उल्लंघ कर आहर लेवणो कल्पे नहीं।

१८ साणगं कहता—सवान (कुत्तो) बैठो होय तो उल्लंघ कर (डाककर) आहार लेवणो कल्पे नहीं ।

१६ बच्छगं कहता—गाय रो बाछड़ो बारने आगे बैठो होय तो उल्लंघ कर आहार लेवणो कल्पे नहीं।

२० अगाईता चलाईता कहता—आगो पाछो होयजाय जैसे---काचे पानीको लोटो हाथमें है, साधु, साधवी पधारयां देख, जाव तो पाछो धीर जाय या कोई सचित्त वस्तु हाथमें है साधु आया देख रख दे तो आहार लेणो कल्पे नहीं ।

२१ गोवणीकाल मासणी कहता—गर्भवती स्त्रीसे सातमें महीने पीछे आहार लेवे नहीं ।

२२ थाण पेजमाणी कहता—बालक चुघते जैसे---बालक चुघरहा है उस वक्त चुघते छोड़ाय कर आहार वेहरावें तो लेवे नहीं ।

२३ नीयेदवार तमस कहता—कोठी ओवरी जो नीचो बारणो भीतर अधेरो पडतो होय तो ऐसे जागारो आहार लेवणो कल्पे नहीं ।

---

१ श्री भगवती सूत्र माहे १२ दोष अहार का ।

१ खेनाइकने—जा खेत्रमें रहे वहा सूर्य्य उगे (उदे) सु पहले अहार लेवे तो दोष ।

२ कालाइकते—पहले पोहरको लियो अहार चौथे पोहरसे भागे तो दोष ।

३ मगाइकंते—दोय कोस उपरांत अहार लेय जाय भोगे तो दोष।

४ पमाणाइकंते—प्रमाणसुं अधिक आहार लेवे तो दोप।

५ आउए—गृहस्थ आयने नेत जाय, नेतियां आहार लेवे तो दोष ।

६ कंतारभतं—अटवीमें पो वगेरह होवे उठे चीणा वगेरह वेंटता हुवे सो लेवे तो दोष।

७ दुभिखभतं---दुकालके समय दानशाला कीनी होय वहां आहार लेवे तो दोष ।

८ वद्लीयाभतं---बरसाद आया कोई दातार भिखारीने कोई जागा आहार बांटतो होय वहां आहार धामे और लेवे तो दोष।

९ गिलाणभतं---रोगी गिलाणीरे अर्थे कियो हुयो आहार लेवे तो दोष।

१० सजोयणा---संयोग मिलाय कर आहार लेवे तो दोष।

११-अगारेय--- सराइ सराइ आहार लेवे तो दोष राग सहित लेवे तो चारित्रका कोयला हो जाय।

१२ धुमे---मस्तक (माथा) धुणी धुणी कुसराय कुसराय आहार भोगे तो दोष, द्वेष सहित आहार करे तो चारित्रको धुंवो होय।

श्री आवशकमे पांच दोष आहारका।

१ ऊघाड़ किवाड़ उघाड़नीया कहता—किवाड उघड़ाय कर आहार लेवे तो दोष।

२ मडी पाहुडीया—शेष निकाल कर रखा है वह शेष लेवे तो दोष।

३ बलीपाहुडीया----बल बाकुलादिक आहार लेवे तो दोष।

४ अदिठ्ठाए---देखनेमें ना आवे याने अण दीसतो आहार लेवे तो दोष ।

५ परिठावणियां---नरम आहार आयां पर-ठावे तो दोष तथा नाखे जेसो अन्न लेवे नहीं ।

श्रीअचारंग सूत्रमें आहाररा ८ दोष ।



१ नीयपिंड—नित्य आहार वेंटणे सारू त्यार करे मापसे तौलसे वेंटे वह आहर लेवे तो दोष ।

२ सखंडीयं कहता—न्यात जिमणवारमें सेर सारणी आदिकमें आहार लेणो कल्पे नहीं ।

३ कायार्य (आगरणं) कहता--जाचकरे अंतराय देके आहार लेणो कल्पे नहीं ।

४ सथारवेणो कहता--गमना कथावार्त्ता कह कर रिंझाय कर आहार लेणो कल्पे नहीं।

५ फमेभवा वीएजवा कहता--फुक देतां पलीसु ठारता ठारकर देता आहार लेणो कल्पे नहीं।

६ भुमालुहड कहता----भवरेंसें तथा भूमीमें नीची जागासे काढ़कर आहार देवे तो लेणो कल्पे नहीं।

श्री पर्शन व्याकरणरा ५ दोष।

१ रहग कहता---चुरमेरो त्याग है और लाड़ बाधकर वेंहरावे तो लेणो कल्पे नहीं।

२ पजुजाय कहता---दहीरा त्याग होवे और

दहीमें चडुआ मिलाय कर देवे तो लेवे नहीं याने पर्याय पलटाय कर देवे तो लेवे नहीं।

३ सहयागयं कहता—साधु आपरे हाथसुं औषध पाणी अलावे आहार लेवे तो दोष।

४ अनुत्तर बाहसमणठा कहता---भीतर सुं तीन वारना उपरांत को या अण दोसतो आहार लेवे तो दोष।

५ मोहरंच कहता---चारन, भाटरी तरह वरदावली करके आहार लेवे तो दोष।

श्री नसीयत सूत्रमें आहारना ६ दोष।



१ पुजारिायं कहता---बहुतसे मनुष्योंमें से पुकार करके कहे कि "कोई यहां

दातार है" ऐसो कह कर आहार लेणो कल्पे नहीं।

२ अडवीभत (अटवीभत) कहता---"ए ठाम मे काई, ए ठाममे काई" ऐसो पुछ पुछ आहार लेणो कल्पे नहीं या मजुरादिक रे भात रो आहार लेणो कल्पे नहीं।

३ पासठाभत कहता---ढीला पासथा क्रिया रहित ऐसेका आहार लेणो कल्पे नहीं।

४ दुगछा कुलग कहता—नखेध कुल लोग दुगछा करे ऐसे निदनीक (ढेढ चमरादि) कुल रा आहार लेणो कल्पे नहीं।

५ सभाए निसीए कहता—सिभातररो नेस-राय रो तथा दलाली रो आहार लेणो कल्पे नहीं।

६ अनोथीयाभते कहता—अतिथी रोटी

टुकड़ा मांग कर लावे वह आहार लेणो कल्पे नहीं ।

श्री उत्तराध्ययनजीमें आहाररा दोय दोष ।

१ सनएपिंड कहता---नातीला गौतीला रो समएपिंड दोष ।

२ मकारण (अकारण) कहता---विनाकारण चीज मांगकर लावे तो दोष ।

श्री ठणांगजीमें आहाररा दोय दोष ।

१ पावणा कहता---पावणारे अर्थ कियो पावणा जीम्या पहिला लेवै तो दोष तथा

पावणा आगा पाछा किया आहार लेवै तो दोष ।

२ मसारे कहता---अभक्ष मास आहार इत्यादि लेणो कल्पे नहीं ।

श्री दशाश्रुतस्कंधमें आहाररा दोय दोष ।

---

१ बलअठा कहता---बालकरे अर्थ कियो हुयो आहार बालक जीम्या पहिला लेवं तो दोष ।

२ गोत्रणठा कहता---गर्भवती स्त्रीके अर्थ कियो गर्भवती स्त्री जीमणे पहिला आहार लेवै तो दोष ।

श्री वेदकल्पमें आहाररो एक दोष ।

१ ग्रासिया कहता---काल प्रमाण ऊपरको बासी आहार तथा अति स्निग्ध चीकना झरझरता आहार लेनो कल्पे नहीं ।

॥ इति शुभम् ॥

अधिको ओछो आगे पाछो लिख्यो होय तो मिच्छामि दुक्कडं ।

नोट—धारया हुवा उपयोगमे रहा सो लिख दिया है । आगम प्रमाणे श्री गुरु पासे धार शुद्ध करीजो ।



अथ साधुको वावन अणाचार लिख्यते ।

(अण आचरण कहता आचरवा योग नहीं)



१ उदेशिक आहार भोगवे तो अणाचार, २ मोलरो लियो भोगवे तो अणाचार, ३ नित्य पिड आहार भोगवे तो अणा०४ साहमो लायो भोगवे तो अणाचार, ५ रात्रि भोजन करे तो अणाचार, ६ स्नान करे तो अणाचार, ७ गन्ध कपुरादिक भोगवे तो अणाचार, ८ फूलारी माला भोगवे तो अणाचार, ९ विजणासु वायरो लेवे तो अणाचार, १० स्निग्धवासि राखे तो अणाचार, ११ गृहस्थीरा भाजन में जीमे तो अणाचार, १२ राजपिड भोगवे तो अणा०, १३ सत्रूकार (दान साला) रो भोगवे तो अणा०, १४ मरदन करे तो अणा०, १५ दांत पखाले मसी लगावे तो अणाचार, १६

गृहस्थीरी साता पूछै तो अणा०, १७ काच, पानीमें मूंढो देखे तो अणा०, १८ सत्रंजादिक रमत रमे तो अणा०, १९ जूवे रमे तो अणा०, २० छत्र माथे धारे तो अणा०, २१ सावद्य औषध तथा वैदगी करे तो अणा०, २२ पगरखी मोजा आदि पहरे तो अणा०, २३ अग्नि रो आरंभ करे तो अणा०, २४ पल्यंग मांचे ढोलिये पर बैठे तो अणा०, २५ गृहस्थरे घरे बैठे तो अणा०, २६ पिठी उगटणो करे तो अणा०, २७ गृहस्थ कनेसु वयावच्च करावे तो अणा०, २८ जात जणायने आहार भोगवे तो अणा०, २९ मिश्र पाणी भोगवे तो अणा०, ३० गृहस्थरो सरणो बांछे तो अणा०, ३१ मूलो काचो भोगवे तो अणा०, ३२ आदो काचो भोगवे तो अणा०, ३३ सेलड़ी रा खंड भोगवे तो अणा०, ३४ कंदमूलादिक भोगवे तो अणा०, ३५ मूल वृक्षादिक भोगवे तो अणा०,

३६ सय्यातरपिंड भोगवे तो अणा०, ३७ फल दाडिमादि भोगवे तो अणा०, ३८ बीजतिलादि भोगवे तो अणा०, ३६ सचित्तलूण भोगवे तो अणा०, ४० सिंधो लूण भोगवे तो अणा०, ४१ समुद्रनो लूण काचो भोगवे तो अणा०, ४२ आगरनो लूण काचो भोगवे तो अणा०,४३ खारी लूण काचो भोगवे तो अणा०, ४४ कालो लूण काचो भोगवे तो अणा०,४५ वस्त्रने धूप देवे तो अणा०, ४६ वमन करे तो अणा०, ४७ गला हेठला केश लेवे तो अणा०, ४८ विरेचन करे (खाय पीय कर उलटी करे) तो अणा०, ४६ आखमें अंजन घाले तो अणा०, ५० दातण करे तो अणाचार, ५१ शरीरमे तेलादि चोपड़े तो अणाचार, ५२ शरीरकी विभूषा करे तो अणाचार।

॥ इति बावन अणाचार संपूर्णम् ॥

॥ दसवीकाल अध्यायने ३ में जाणो ॥

---

७० गुण करण सित्तरीके ।

गाथा--पिंड विसोही समिइ भावणा पढि-माय इन्द्रिय निरोहो पड़िलेहणगुत्तीओ अभिग्गाहचेव करणतु १ ।

पिंडविशुद्धिके ४ भेद—१ आहार पाणी सुंखड़ी सोपारी आदि फासुक निर्जीव विधि-युक्त लेवे, २ वस्त्र सूत ऊनके सफेद रंगके मानोपेत (साधुको ७२ हाथ और साध्वीको ९६ हाथ) निर्दोष ग्रहण करे, ३ काष्ठ, तुम्बे प्रमुखका पात्र यथा विधि लेवे, ४ अठारे प्रकारके निर्दोष स्थानक मालिककी आज्ञासे लेवे यह चार शुद्धि साचवे ।

५ सुमति युक्त सदा रहे, १२ भावना भावे, १२ पड़िमा धारे, ५ इन्द्री वसमें करे, २५ पड़िलेहणा, ३ गुप्ती, ४ अभिग्रह

द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव सब मिलके ७० गुण करण सित्तरीके हुये।

---

७० गुण चरण सित्तरीके।

गाथा---वयसमण धम्मसयम वेयावच्च च बभ गुत्तीओ नाणाइ तीयतव कोहोनिग्गहाइ चरणमेय १।

५ महाव्रत १० प्रकारका साधु धर्म १७ सयम, १० वेयावच्चकरे, ९ वाड शुद्ध ब्रह्म चर्य पाले, ३ ज्ञान दर्शन चारित्र रत्नत्रयी आराधे, १२ भेदे तप करे, ४ कषाय निग्रह करे यह सर्व ७० चरण सित्तरीके गुण जाणना।

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

अथ सामाईककी पाटीयां तथा अर्थ ।

॥ अथ श्री नवकार मंत्र प्रारंभ ॥



णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवझ्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं। एसो पंच णमुक्कारो; सव्व पावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ इति नमस्कारः ॥ १ ॥

अर्थः---(अरिहंताणं) अरि एटले कर्म-रूप शत्रु तेने हंताणं एटले हणनार, अर्थात् जेणें चार घनघाती कर्मरूप शत्रुनो नाश करयो अने जे चोत्रीश अतिशयोयें करी शोभित तथा वाणीना पांत्रीस गुणोयें करी बिराजमान एहवा विहरमान श्रीअरिहंतने

म्हारो (णमो) नमस्कार हो, (सिद्धाण) जेणे सकल कार्य साध्या, अने जे आठ कर्म खपावी मोक्ष नगरें पहोता अने एकत्रीश गुणोयें करी सहित एवा श्रीसिद्ध भगवानने म्हारो (णमो) नमस्कार हो, (आयरियाण) जे पोते पाच आचार पाले अने बीजाने पलावे छत्रीश गुणें करी सहित एहवा श्रीआचार्यजीने म्हारो (णमो) नमस्कार हो, (उवझ्झायण) जे शुद्ध सूत्राक्षर पोते भने, अणे बीजाने भणावे तथा पच्चिश गुणें करी सहित एहवा श्री उपाध्याय-जीने म्हारो (णमो) नमस्कार हो, (लोए) अढीद्वीपरूप मनुष्य लोकने विषे, (सव्वसा-हूण) थिविर कल्पादिक भेदोवाला सर्व साधु जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तपना साधनार तथा जे सत्तावीश गुणें करीने सहित छे तेहवोने म्हारो (णमो) नमस्कार हो, (एसो) ए जे अरिहतादिक सवधी, (पच णमुक्कारो)

पांच प्रकारनो नमस्कार छे, ते केहवो छे ? तो के (सव्वपाव) ज्ञानावरणादिक सर्व पाप तेहनो, (प्पणासणो) प्रकर्षे करी विनाशनो करणहार छे, वली ते केहवो छे ? तो के (मंगलाणांच सव्वेसिं) सर्व मंगलमांहे (पढमं) प्रथम एटले मुख्य, (मंगलं) मंगल (हवइ) छे ॥ १ ॥



॥ अथ तिख्खुत्तारी पाटी प्रारंभः ॥

॥ श्री मुनिराजकों वंदना करनेका पाठ ॥



तिख्खुत्तो, आयाहिणं, पयाहिणं करेमी, वंदामि, णमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं पज्जुवासामि, मत्थएण वंदामि ।

अर्थ—(तिख्खुत्तो) त्रण वार, (आयाहिणं) आदक्षिणतः, एटले बे हाथ जोडीने जीमणा-

पासा थकी प्रारभीने, (पयाहिणा करेमी) प्रदक्षिणा प्रत्ये करु छुं, (वदामि) वादु छु, पगे लागुं छु, (नमसामि) मस्तक नमाडीने नमस्कार करु छु, (सक्कारेमि) सत्कार देवुं छुं, (सम्माणेमि) सन्मान देउं छु, (कल्याण) कल्याणकारी, (मगल) मगलकारी, (देवय) धर्मदेव समान, (चेइयं) छकायना जीवने सुखदायक एवा ज्ञानवंत प्रत्ये, (पज्जुवासामि) पर्युपासु छुं एटले मन वचन कायाए करीने सेवा करु छु, (मत्थएण वदामि) मस्तके करी वादु छु ॥ २ ॥

॥ इति तिक्खुत्तारो अर्थ समाप्तम् ॥

सूचना—पूर्व तथा उत्तर दिशाकी तर्फ मुह करके तिक्खुत्ताके पाठसे पचाग नमाय ३ वखत् विधियुक्त वदना नमस्कार करके श्रीमहावीर स्वामीजीकी तथा अपने धर्माचार्य (गुरुदेव) की तथा वखतपर जो कोई मुनिराज होवे उनके पाससे सामाईकका चोविसमत्र करनेकी आज्ञा लेना, फिर निम्नोक्त (नीचे लिखा) पाठ बोलना।

॥ अथ इरियावहीयानी पाटी प्रारंभ ॥



इच्छाकारेण संदिसह भगवन्. इरियावहियं पडिक्कमामि, इच्छं, इच्छामि, पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसाउत्तिंग, पणग दग, मट्टीमक्कडा, संताणासंकमणे, जेमे जीवा, विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया. ठाणाउठाणं, संकामिया, जीवियाउं, ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ३ ॥

अर्थ—(इच्छाकारेण) तुमारी इच्छा-पूर्वक, (संदिसह) आज्ञा करो तो, (भगवन्) हे महाभाग्य ज्ञानवंत ! (इरियावहियं) चालवानो जे मार्ग तेमांहे थइ एवी जे जीवबाधादिक

सपाप क्रिया ते थकी हु (पडिक्कमामि) पडिक्कमु निवर्तु ? इहा गुरु कह, (पडिक्कमह) पडिक्कमो निवर्त्तो, पाप टालो. तेवारे शिष्य कहे, (इच्छं) प्रमाण छे, हु पण (इच्छामि) इच्छु छु, (पडिक्कमिउ) पाप कर्मसु निवर्तण वास्ते, (इरियावहियाए) गमन छे प्रधान मुख्य जेमा एवो जे मार्ग तेने विषे थती एवी जे (विराहणाए) जंतुओनी विराधना ते थकी, (गमणागमणे) जाताने आवता, (पाण) प्राणीने, (क्कमणे) पगे करी चाप्या थकी, (बीय) बीजने, (क्कमणे) पगे करी चाप्या थकी, (हरिय) नीलवर्णवाली वनस्पति तेने, (क्कमणे) पगे करी चाप्या थकी, (ओसा) ठार ओस एटले सूक्ष्म अपकाय आकाशथकी पडे ते, (उत्तिङ्ग) कीडीयोनां नागरा कहता कीडी नगरा (पणग) पाचवर्णी नीलण फूलण, (दग) पाणी, (मट्टी) काची माटी, (मक्कडा) मर्कट, एटले कोलिआवडाना (संताण) संतान,

ए सर्व्वने (संकमणा) पगे करी पीड़याथकी अथवा मसलयाथकी, घणुं सुं कहुं ? (जे) जे कोई, (मे) में (जीवा) जीवो, (विराहिया) विराध्या होय दुःखमांहे पाड्या होय,(एगिंदिया) जेहने शरीर रूप एकज इन्द्री होय ते, पृथ्वी, पाणी, अग्नि,वायु,वनस्पतिना जीव, (बेइन्द्रिया) शरीर तथा मुख ए दोय इन्द्रीवाला जे शंख, शीप,गंडोला,अलसीया,एहवा जेहने पग न होय ते बेन्द्रि, (तेइंदिया) तीन इन्द्रीवाला ते जेने शरीर, मुख, नाक होय ते, कुंथुवा, जु, लीख, मांकड़, कीड़ी प्रमुख जेहना मुख ऊपरे शिंग होय ते, (चउरिंदिया) चार इन्द्रीवाला ते जेने शरीर, मुख, नाकने आंख होय ते, माखी, मच्छर, डांस, वींछी, भमरी, टीडी जे उड़णेरा, जीव जेने आठ पग तथा मस्तके शिंग होय ते, (पंचिन्दिया) पांच इन्द्रीवाला जेने शरीर, मुख, नाक, आंख अने कान

होय ते जलचर, खेचर, ए सर्वतिर्यंच जाणवा तथा मनुष्य, देव, नारकी ए सर्व पचेन्द्रिय जीव कहिये, हवे ए सर्व जीवोने केवी रीते विराध्या होय? तेना प्रकार कहे छे, (अभिहया) सामा आवता हण्या, (वत्तिया) एक ठिगले कर्या तथा धुलें करी ढाक्या, (लेसिया) भूमीमें घस्या तथा लगारेक मसल्या, (संघाइया) माहोमाहे शरीरने मेलववे करी एकठा कीधा, (संघट्टिया) थोडो स्पर्श करवे करी दुहव्या (परियाविया) समस्त प्रकारे परिताप पमाड्या पाड्या, (किलामिया) गाढी किलामणा उपजावीने मार्या नहीं, पण मृतप्राय कीधा, (उद्दविया) त्रास पमाडीने हाली चाली शके नहीं एहवा कीधा, (ठाणाओ) एक स्थानक थकी उपाड़ाने, (ठाण) बिजे ठेकाण, (संकामिया) सक्रमाव्या मूक्या, (जीवियाओ) [जीवित थकी, (ववरोविया) चूकाव्या, मार्या,

नाश कीधा. (तस्स) ते संबन्धी जे अतीचार लाग्या ते, (मिच्छामि) म्हारुं मिथ्या पाप कहीये ते, (दुक्कडं) दुष्कृत एटले निष्फल थाओ ॥ ३ ॥

॥ इति इरियावहियाकी पाटी समाप्तम् ॥

॥ अथ तस्सउत्तरीनी पाटी प्रारंभ ॥



तस्सउत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं णिग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं, अन्नत्थ, ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचा-

लेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्जमेकाउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, णमुक्कारेणं, नपारेमि, तावकाय ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४ ॥

अर्थ—(तस्स) ते पापनीज, (उत्तरीकरणेणं) वली विशेष करी शुद्ध करवुं अर्थात् जे अतिचारोनुं आलोयण प्रमुख पूर्वे कीधुं छे, तेनी वली विशेष शुद्धिने अर्थे कायोत्सर्ग करुं छु, ते कायोत्सर्गनो (पायच्छित करणेणं) शुद्ध प्रायश्चित्त ते पापनी आलोयणा, करवा थकी, (विसोहीकरणेणं) विशुद्ध, निर्मलता करवामाटे, (विसल्लीकरणेणं) माया शल्य, नियाणा शल्य, मिथ्यात्व शल्य, ए तीन शल्य टालवा थकी, (पावाणकम्माणं) संसार हेतुरूप जे पाप कर्म तेने, (निग्घायणट्ठाए) निर्घातन एटले उच्छेदन करवाने अर्थे,

(ठामि) कायाने एक ठामे करूं छुं, (काउ-स्सग्गं) कायाने हलाववी नहीं ते रूप काउ-स्सग्गप्रत्ये करुं छुं, हवे इहां काया हलाववी नहीं, एवी प्रतिज्ञा करी छै, माटे शरीरनुं कांइ पण हालवुं थवाथी प्रतिज्ञानो भंग थाय तेथी कउस्सग्गमा वार आगार मोकला राख्या छे, (अन्नत्थ) उच्छ्वासादिक जे आगारो कहता अगार कहेसे, ते आगारो वर्जीने वीजे स्थानके कायाने हलाववानो नियम करुं छुं, तेना नाम कहे छे, (उससिएणं) ऊंचो श्वास लेवाथी, (निससिएणं) नीचो श्वास मूकवाथी, (खासिएणं) खासी आवे एटले खोखलो आव्या थकी, (छीएणं) छींक आया थकी, (जंभाइएणं) जाभली ते वगासू लेवा थकी, (उड्डुएणं) ओडकार आया थकां, (वायनिसग्गेणं) वायु निकलतां थकां, (भम लिए) भ्रमरी चक्री आववाथी, (पित्तमुंच्छाए)

पित्तरा कोपसूं मूर्छा आया थकां (सुहुमेहिं) सूक्ष्म थोड़ोक, (अंगसंचालेहिं) शरीर हलाववाथी, (सुहुमेहिं) थोड़ो, (खेलसंचालेहिं) श्लेष्म तथा मुखना थू कनु चालववु करवा थकी, कफ गिलवा थकी, (सुहुमेहिं) सूक्ष्म थोडी, (दिट्ठिसंचालेहिं) चक्षु दृष्टी हलाववा थकी, (एवमाइएहिं) ए आदि करीने बीजा, (आगारेहिं) आगार लेता थका (अभग्गो) भागे नहीं, खडित हुवे नहीं, (अविराहिओ) हानी पहोंचे नहीं, (हुज्ज) होजो, (मे) म्हारो, (काउस्सग्गो) काया स्थिर राखवी, (जाव) ज्यां सुधी, (अरिहंताणं भगवंताणं) अरिहंत भगवानने,(नमुक्कारेणं) नमस्कार करूं त्यांसुधी, (नपारेमि) पाडु नहीं ध्यान संपूर्ण न करूं, (ताव) त्यांसुधी, (कायं) म्हारी कायाने, शरीरने, (ठाणेणं) एक ठिकाणे स्थीरपणे राखीने, (मोणेणं) अबोलो रहीने, (झाणेणं)

एकाग्र ध्यान तेणों करीने, (अप्पाणं) म्हारी काया ते प्रत्ये, (वोसिरामि) हुं तजुं छुं, ।

॥ इति तस्सउत्तरीकी पाटी संपूर्णम् ॥

सूचना—इतना बोलके कायोत्सर्ग (काउसग) करणा, काउसगमें हाथ पैर मुंह शरीर वगेरे हलन चलन करणा नहीं, अपने शरीरको स्थिर रखना, काउस्सग्गमे इरियावहियाएकी पाटी, जीवियाउ ववरोविया तक मनमें गुणना फिर नमोअरिहंताणं, ऐसा प्रगट मुंढसे बोलके काउस्सग्ग पाड़णा, फिर निचेकी पाटीयां प्रकट बोलना ।

अथ चार ध्यानकी पाटी ।

काउस्सग्गमें आर्तध्यान, रूद्रध्यान ध्यायो होय, धर्मध्यान, शुक्लध्यान नहीं ध्यायो होय तथा काउस्सग्गमें मन चल्यो होय, वचन चल्यो होय काया चली होय तो तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

अथ लोगस्सकी पाटी।

लोगस्सउज्जोयगरे, धम्मतित्थयरेजिणे, अरिहंते, कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली। १। उसभ १ मजिय २ च वंदे, संभव ३ अभिनंदणं ४ च सुमइ च ५। पउमप्पहं ६ सूपासं ७ जिणंच चंदप्पहं ८ वंदे ।२। सुविहिंच ६ पुप्फदंत, सीयल १०, सिज्जंस ११, वासुपुज्जं च १२। विमल १३ मणंत १४, च जिणं धम्मं १५ संतिं १६ च वंदामि। ३। कुंथुं १७ अरं १८ च मल्लिं १६, वंदेमुणि सुव्वयं २० नमिजिणं च। २१ वंदामि रिट्ठनेमिं २२, पासं तह २३ वद्धमाणं च २४। ४। एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला, पहीण जरमरणा, चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु। ५। कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभं समा-

हिवर मुत्तमं दिंतु । ६ । चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु । ७ ।

अर्थ—(लोगस्स) पंचास्तिकायात्मक लोक ने विषे, (उज्जोयगरे) उद्योतना करणाहार, (धम्म) धर्म (तित्थयरे) तीर्थना करनार, (जिणे) रागद्वेषना जितनार एहवा, (अरिहंते) अरिहंतने, (कित्तइस्सं) कीर्ति करुं छुं, (चउवीसंपि) ऋषभादिक चोवीस परमेश्वर तथा अन्यनी, (केवली) केवलज्ञानी तीर्थंकरना नाम कहे छे, (उसभ) श्रीऋषभदेव स्वामी, (मजियंच) श्री अजितनाथ प्रत्ये, (वंदे) वांदुं छुं, (संभव) श्री संभवनाथ प्रत्ये, (मभिणंदणं) श्री अभिनंदन नाथ प्रत्ये, (च) वली, (सुमइं) श्री सुमतिनाथने, (च) वली (पउमप्पहं) श्री पद्मप्रभू स्वामी प्रत्ये, (सुपासं) श्री सुपार्श्वनाथजीने, (जिणं) रागद्वेषना

जितनार, (च) वली, (चदप्पह) श्री चन्द्र-प्रभजीने, (वंदे) वांदु छु, (सुविहिं) श्री सुविधिनाथजीने, (च) वली, (पुप्फदंत) श्री पुप्पदंतजी प्रत्ये, (सीयल) श्री शीतल नाथजीने, (सिज्जंस) श्री श्रेयांसनाथजीने, (वासुपुज्ज) श्री वासुपूज्य स्वामी प्रत्ये, (च) वली, (विमल) श्रीविमलनाथजीने, (मणंत) श्री अनंतनाथजीने, (च) वली, (जिण) रागद्वेपना जीतनार, एहवा (धम्म) श्री धर्म-नाथजीने, (संति) श्री शांतिनाथजीने (च) वली, (वंदामि) वांदुं छुं, (कुंथु) श्री कुंथु-नाथजीने, (अर) श्री अरनाथजीने, (च) वली, (मल्लि) श्री मल्लिनाथजीने, (वंदे) वांदु छु, (मुणिसुव्वयं) श्री मुणीसुव्रतस्वामी प्रत्ये, (नमिजिण) श्री नमिजिणने (च) वली, (वंदामि) नमस्कार करुं छु, (रिट्ठनेमि) श्री अरिष्टनेमिजी प्रत्ये, (पास) श्री पार्श्व-

नाथस्वामी प्रत्ये, (तह) तथा, (वद्धमाणं) श्री वर्द्धमान स्वामी प्रत्ये, हुं वांदु छुं, (च) वली, (एवं) ए प्रकारे, (मए) म्हारे जीवे जे, (अभिथुआ) नामपूर्वकस्तव्या छे ते चोवीस परमेश्वर कहवा छे? तो के (विहुय) टाल्या छे, (रयमला) कर्मरूपी रज तथा मैल, (पहीन) अतिशय करीने, (जरमरणा) जरा तथा मरणने जेणे क्षय कर्या छे, (चउवीसंपि) चोवीस तीर्थंकर तथा अन्य, (जिणवरा) जिनवर, (तित्थयरा) तर्थंकर ते, (मे) म्हारा ऊपर, (पसीयंतु) प्रसन्न होवो, (कित्तिय) कीर्तित छे, (वंदिय) वंदित छे, (महिय) पुज्य छे, इन्द्रादिक पूजे छे एहवा, (जे) जे तीर्थंकर, (ए) ए प्रत्यक्ष (लोगस्स) लोकने विषे, (उत्तमा) उत्तम एहवा, (सिद्धा) सिद्ध भगवन्त! तमे मुझने, (आरुग्ग) द्रव्य तथा भाव रोग रहित, (बोहिलाभं) श्री

जिनधर्मनी प्राप्तिनो लाभ थवाने अर्थे, (समाहिवर) प्रधान समाधि, उत्तम उत्कृष्ट ऊची एहवी, (दितु) देवो, (चदेसु) चद्रमा थी अधिक, (निम्मलयरा) अत्यत निर्मल, (आइश्चेसु) सूर्यसमुदाय थकी पण (अहिय) अधिक, (पयासयरा) प्रकाशना करणहार (सागरवर) प्रधान, छेल्लो स्वयभुरमण नामा समुद्र तेनी परे (गभीरा) गुणे करी गभीर, (सिद्धा) एहवा जे सिद्धो ते, (सिद्धि) मुक्ति ते, (मम) मुझने, (दिसतु) देवो ।

॥ इति लोगस्सकी पाटी सपूर्णम् ॥

सूचना — तिक्खुत्ताके पाठसे विधियुत वदना करके गुरु माहाराजके पाससे सामाईक पच्चक्खणकी आज्ञा मागना फेर निचेका पाठ बोलना ।

॥ अथ सामायिक लेवानी पाटी प्रारंभ ॥



करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्च-क्खामि, जाव नियमं, *मांहूर्तं, पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते, पडिक्क-मामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

अर्थ—(करेमि) हुं करूं छुं (भंते) हे पूज्य! (सामाइयं) समता परिणामरूप सामायिकने, (सावज्जं) सावद्य काम, पाप, तेने (जोगं) मन वचन कायाना योग, करी (पच्चक्खामि) हुं निषेध करूं छुं, (जाव) ज्यां सुधी, (नियमं) सामायिक व्रतना नियमने (पज्जुवासामि) हूं

---

* महुर्त्त जितना करना होवे उतना बोलना, १ महुर्त्त ४८ मिनिटका समझना, ज्यादा बैठे तो लाभ है, मगर ४८ मिनिटसे कमी तो सामायिक करना नहीं, कमी करनेसे ममायिकमे दोष लगता है ।

सेवु, त्यांसुधी, (दुविह) दोय करनसुं (तिविहेणं) तीन जोगसू (नकरेमि) हु करूं नहीं (नकारवेमि) हु दुजापासे न करावु (मणसा) मने करी, (वयसा) वचने करी, (कायसा) कायाए करीने (तस्स) ते सावद्य व्यापाररूप पापने, (भंते) हे भगवत। (पडिक्कमामि) निवर्तु छु, (निंदामि) हुं आत्मानी साखें निंदु छुं, (गरिहामि) गुरुनी साखे हु विशेष निंदु छु, (अप्पाणं) म्हारी आत्माने, ते दुष्ट क्रिया थकी (वोसिरामि) वोसिरावुछु विशेषे करीने तजु छुं।

सूचना—यहां डावा गोडा ऊंचा रखके बैठना और दोनु हाथ जोडकर हाथ गोडेपर रखके नमुत्थुणका पाट या वक्त बोलना।

अथ श्री नमुत्थुणंनी पाटी प्रारंभ।

नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं,

पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोग-हियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं, अ-भयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरण-दयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, दिवोत्ताणं सरण-गइपइट्ठाणं, अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहियाणं, मुत्ताणं मोय-गाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणांत मक्खय मव्वावाह मपुणरावित्ति, सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं, संपत्ताणं, नमो जि-णाणं, जियभयाणं ॥ १ ॥ इति ॥ ७ ॥

अर्थ :—(नमुत्थुणं) नमस्कार होवो, (अरिहंताणं) श्री अरिहंत देवने, (भगवं-ताणं) भगवंतने, (आइ गराणं) धर्मना

आदिना करनारने, (तित्थगराण) तीर्थना स्थापणार एटले साधु, साध्वी, श्रावक, अने श्राविका, ए चार जातना तीर्थना स्थापनार, (सयसबुद्धाण) पोते सम्यक प्रकारे तत्वना जाण थया, (पुरिसुत्तमाण) पुरुष माहे उत्तम, (पुरिससीहाण) पुरुष माहे सिंह समान, (पुरिसवरपुंडरीयाण) पुरुष माहे पुंडरीक कमल समान, (पुरिस) पुरुष माहे, (वर) प्रधान, (गंधहत्थीण) गन्ध हस्ती समान, (लोगुत्तमाण) लोक माहे उत्तम, (लोगनाहाण) लोकना नाथ, (लोगहियाण) लोकना हितकारी, (लोगपईवाण) लोकने विषे दीपक समान (लोगपज्जोयगराण) लोकमाहे उद्योतना करणार (अभयदयाण) अभय दानना देणार (चक्खुदयाण) ज्ञानरूप चक्षुना देणार, (मग्गदयाण) मोक्ष मार्गना देणार, (सरणदयाणं) सरणना देणार,

(जीवदयाणं) संयम जितव-जिवतरना देणार, (बोहिदयाणं) समकित रूप बोधना देणार, (धम्मदयाणं) धर्मना देणार, (धम्मदेसियाणं) धर्मना उपदेशना देणार, (धम्मनायगाणं) धर्मना नायक, (धम्मसारहीणं) धर्मरूप रथना सारथी, (धम्म) धर्मने विषे, (वर) प्रधान (चाउरंत) चारगतिनो अंत करवा माटे, (चक्कवट्टीणं) चक्रवर्ति समान, (दिवोत्ताणं) संसार समुद्रमा द्वीप समान, दुःखना निवारण करनार, (सरणगइपइट्ठाणं) सरण गतिना स्थानक भूत शरणागत वत्सल, (अप्पडिहय) नहीं हणाय एवुं, (वर) प्रधान, (नाण) ज्ञान, (दंसण) दर्शन (धराणं) धरणार, (विअट्टछउमाणं) छद्मस्तपणु गयुं छे, एटले कर्मरूपी आवरण, क्षयकीधा (जिणाणं) राग द्वेषने जीत्या छे, (जावियाणं) बिजाने राग द्वेष थकी जिताव्या छे, (तिन्नाणं)

ससाररूपी समुद्र तर्या छे, (तारयाणं) बिजाने ससार समुद्र थी तारे छे, (बुद्धाण) पोते तत्व ज्ञानने समज्या, (बोहियाणं) बिजाने तत्वज्ञान समजावणार, (मुत्ताण) पोते चातुर्गतिक विपाक विचित्र कर्मथकी मुकाणा तथा (मोयगाण) बीजा भव्य प्राणीने कर्म थकी मुकावणार छे, (सव्वन्नूण) सर्व ज्ञानी छे, (सव्वदरिसिण) सर्व पदार्थना देखणार छे, (सिव) सर्व उपद्रव रहित (मयल) अचल (मरुए) रोग रहित, (मण त) अनत ज्ञानादि चतुष्टये करी युक्त छे, माटे अनत छे, (मक्खय) सर्व काल निश्चल, (मव्वबाह) बाधा पीडारहित, (मपुणरावित्ति) जे गति थकी फरी ससारने विषे अवतार लेवो नथी, एहवी (सिद्धिगई) सिद्ध गति छे, (नामधय) एवु नाम. (टाण) एवु स्थानक (सपत्ताण) मोक्ष नगर प्रत्ये पाम्या छे, एहवा अरिहत

भणी (नमो) नमस्कार होजो, (जिणाणं) कर्मरूपी शत्रुने जीतणार, तथा (जियभयाणं) इहलोकादिक सात भय प्रत्ये जीतणार ने ।

सूचना—इस तरहसे विद्धियुक्त सामायिक करके सामायिकका काल पूरा न होवे जहां तक ज्ञान ध्यान करणा व सिखा हुवा ज्ञान पिछा परियट्टण (याद) करणा व नवीन बोलचाल सीखना व चितारणा और धर्म सबंधी पुस्तक वगेरे पढ़नेका अभ्यास करना, इस तरहसे धर्म सबंधी ज्ञान-ध्यान करके सामायिकका काल पूर्ण करना, सामायिकका काल पूर्ण होनेसे चोविसस्तव करना, चोविसस्तवमें पहेली-इरियावहियाकी पाटी फिर तस्मउत्तरीकी पाटी गुणके १ लोगस्सकी पाटीका काउस्सग करके १ नमुकारमंत्र बोलके काउस्सग पारना, फेर चार ध्यानकी पाटी बोलना फेर १ प्रगट लोगस्स बोलना, फिर निचे बैठेके ऊपर बताया उस तरहसे दो बखत् नमुत्थुणंका पाठ बोलना, दूसरे नमुत्थुणंका अन्तमें जहां ठाणं संपत्ताणं आवे उस स्थानपर ठाणं संपावियो कामस्स ऐसा बोलना, फेर निचे लिखी हुई पाटी बोलना ।

अथ सामायिक पारवानी पाटी प्रारभ ।

नवमा सामायिक व्रतना, पच अइआग, जाणियवा, न समायरियव्वा, तंजहा ते आलाउ ,, मण दुप्पणिहाणे, वय दुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, सामाइयस्स अकरणयाए, सामाइयस्स अणवुट्ठियस्स करणयाए, तस्स मिच्छामि दुक्कड, सामायिकने विषे दस मनना, दस वचनना, बार कायाना, ए, बत्रीश दोष माहेला कोई दोष लाग्या होय तो मिच्छामि दुक्कड, आहारसज्ञा भयसज्ञा, मिहुणसज्ञा, प रिग्गहसज्ञा, ए चार सज्ञामाहेली कोई सज्ञा करी होय तो मिच्छामि दुक्कड, स्त्री कथा, राज कथा, भत्तकथा, देशकथा, ए माहेली कोई कथा करी होय तो मिच्छामि दुक्कड, सामायिक समकाएण, फासिय पालिय, सोहिय, तिरिय

कित्तियं, आराहियं, आणाए अणुपालियं, न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥८॥

अर्थः—नवमा सामायक व्रतना, (पंच अइयारा) पांच अतीचार, (जाणियवा) जाणवा, (नसमायरियवा) आचरवा नहीं, (तंजहा) जेम छे तेम (ते आलोउं) ते कहुं छुं, मणदुप्पणिहाणे) मनमाठो वर्त्युं होय, (वयदुप्पणिहाणे) वचन माठुं वर्त्युं होय, (कायदुप्पणिहाणे) काया माठी प्रवर्तावी होय, (सामाइयस्स) सामायकने (अकरणयाए) बराबर कीधीके नही तेनो बराबर खबर न रही होय, (सामाइयस्स) सामायकने (अणवुट्ठियस्सकरणयाए) पुरी थया विना पारी होय, तो (तस्स) तेनुं (मि०) खोटो किधो ते निष्फल थावो (आहारसंज्ञा) खावानी इच्छा, (भयसंज्ञा) भय लागो होय, (मिहुणसंज्ञा) मैथूननी संज्ञा करी होय, (परिग्गहसंज्ञा)

धन द्रव्यनी इच्छा करी होय ए चार संज्ञा माहेली कोई संज्ञा करी होय, तो (मि०) ए खोटो कीधेलु निष्फल थाजो, (सामायिक समकाएख) सामायक कायाए बराबर रीते, (फासियं) स्पर्श करियो, अंगीकार करियो, (पालिय) तेवोज पाल्यो, (सोहियं) शुद्ध कर्यो, (तिरियं) पार उतारियो, (कित्तय) कीर्ति कीधी, (आराहिय) आराधना किधी (आणाए) विनराग देवनी आज्ञा ने, (अणु- पालीय) पाली, (नभवइ) न होय (तस्स मिच्छामि दुक्कडं) खोटा कीधानुं फल निष्फल थाजो, इति सामायक संपूर्ण ॥

॥ पाठन्तर ॥

॥ सामायिककी विधि ॥

॥ प्रथम श्री सीमंधर स्वामीजीनी आज्ञा

लेइने एक नवकार गुणीने "इरियावहियानी" पाटी भणवी; पछी तस्स उत्तरीनी पाटी भणी ने काउस्सग्ग करवो, काउस्सग्गमांहि "इरि-यावहियाएथी मांडीने जीवियाऊ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं" सुधीनो पाठ मनमां बोलीने एक नवकार मनमां कहीने काउस्सग्ग पारवो, पछी प्रगट "लोगस्सकी" पाटी कहीने सामायिकनी आज्ञा लेईने "करेमि भंतेनी" पाटी "जावनियमं" सुधी कहीने आगल मुहूर्त्त (घालणो हुवे तिके) घालणो, पछी "पज्जु-वासामि" थकी "अप्पाणं वोसिरामि" सुधी पाठ कहीने सामायिक पच्चक्खवो, पछी डावो गोडो उभो करीने दोयवार "नमुत्थुणं" नी पाटी केहवी, दुजा नमुत्थुणंने छेहडे "ठाणं संपाविउ कामस्स "नमो जिणाणं" एम केहवुं, अने सामायिक पारती वेला "इरियावहीया,तस्स उत्तरी" नी पाटी भणीने काउस्सग्ग करवो,

पछी काउस्सग्गमांहे इरियावहियानी पाटी कहिने एक नवकार गणीने काउस्सग्ग पारवो, पछी "लोगस्स" भणी "नमुत्थु णं" होय वार ऊपर लिख्या मुजब कहीने नवमा सामायिक-व्रतनी पाटी "अणुपालियं न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं" सुधी कहीने तीन नवकार गणीने सामायिक पारवुं ।

❀ विशेष गुरु गम्यसे धारे ❀

॥ इति श्री सामायिक अर्थ विधि समाप्त ॥

नोट —पूर्व तथा उत्तर दिशाकी तर्फ मुह करके सामायिक करे और श्री गुरु महाराजके पास बैठा होय तो मुह श्री गुरु महाराजकी तर्फ रखे श्री गुरु महाराजकी व्याख्यान (वखाण) वाणी सुणे श्री गुरु महाराज फरमावे जसमें उपयोग रखे और धारे ।

॥ अथ प्रश्नोत्तर वाक्य संग्रह ॥

प्रश्न	उत्तर
१ भणनो कांई ?	गुरु पासे ज्ञान,

२ तजणो कांई ?	संसार कार्य,
३ सुणीये कांई ?	सद्गुपदेश,
४ पारनहीं पाय एसो कांई ?	स्त्री चरित्र, तृष्णा,
५ लघु छोटी कांई ?	याचना करणीसो,
६ निद्रा कांई ?	मूढ पणो,
७ चन्द्र तुल्य शीतल कांई ?	सुजनरो समागम,
८ सुख कांई ?	आत्म विरति, संतोष,
९ सत्य सार कांई ?	उपकार, सर्व प्राणीको हित करणोसो,
१० जीवने वल्लभ कांई ?	प्राण,
११ अनर्थ फलदायक कांई ?	चंचल मन,
१२ मरण कांई ?	अति मूर्खपणो,
१२ अमूल्य कांई ?	मोकेमें काम आवै सो,
१४ सर्व गुणाको मूल कांई ?	विनय,
१५ सर्व धर्मको मूल कांई ?	दया,

१६ कलहरो मूल काई ? हासि,
१७ सर्व रोगरो मूल काई ? अजिर्ण,
१८ सर्व बधणरो मूल काई ? स्नेह राग,
१९ सर्व पापरो मूल काई ? लोभ, परिग्रह,
२० पवित्र जन कोण ? शुद्ध मनवालो,
२१ निन्द्रावान कोण ? अविवेकी, शून्य चित्तजन,
२२ चोर कोण ? पचेन्द्रिका विषय,
२३ वैरी कोण ? मान, अनुयोग,
२४ घणो अन्धो कोण ? ससार रागी,
२५ चतुर कोण ? स्त्री चरित्रसे अखडित रहे सो,
२६ जाग्रत कोण ? विवेकी जन,
२७ मित्र कोण ? पापसे निवृत्तावेसो
२८ आधो, बहेरो अने मूर्ख कोण ? अकृतकार्य करनेवालो, हित वचन सुणने वालो अने समय अनुकूल न बोलने वालो,

२६ डाह्यो कोण ?	संसार घटावैं सो,
३० यौवन, धन, आयु कैसा ?	कमल पत्रपर पाणी री बुंद जैसा,
३१ अप्रीति कहां रखणी ?	पर स्त्रीमें, पर धनमें, कपटमें,
३२ जगत कोण जित्यो छे ?	सत्य तितिक्षावान-वैराग्यवंत पुरुषे,
३३ बुद्धिमान कीणसे भय पावे ?	संसार सागरसे,
३४ प्राणी वश केने रहे ?	सत्य, प्रिय वचन तथा विनयवानके,
३५ स्नेह किसका जाणीजे ?	सुधर्मनें स्नेह होय उसका,
३६ सुजनको कहां ऊभो रहेणो ?	पक्षपात टालके न्याय मार्गमें,

पाच व्यवहार श्रीभगवती सूत्रमे कहे सो लिख्यते ।

पंच व्यवहार पणते तजहा आगमो सुय आणा धारणा जीए ।

(१) पहलो आगमो व्यवहार ।

श्रीतीर्थंकर केवलज्ञानी चौदह पूर्व ज्ञानके धारक जावत् दश पूर्वधारी प्रवर्तते होए उनकी आज्ञामें प्रवर्ते सो आगम व्यवहार ।

(२) दुजो सुय व्यवहार ।

आचारंगादिक सूत्रोमें कहे मुजब प्रवर्ते सो सूत्र व्यवहार ।

(३) तीजो आणा व्यवहार ।

जिस वक्त जो आचार्य प्रवर्ते होए उनकी आज्ञामें प्रवर्ते चले अथवा आचार्य दूर देशावरमें विचरते होए वह पत्र द्वारा गुह्यार्थादी कर जो आज्ञा देवे उसमे प्रवर्ते सो आणा व्यवहार ।

(४) चौथो धारणा व्यवहार ।

पूर्व परम्परासे चलता आता आचार गोचरादिकमें प्रवर्ते तथा गुरुवादिकसे धारणा कर रखी होवे उस मुजब प्रायश्चित देवे सो धारणा व्यवहार ।

(५) पांचमो जीए व्यवहार ।

द्रव्यक्षेत्र काल भावमें फरक पड़ा देख या संघयणादिककी हीणता देख आचार्य और चतुर्विध संघ मिलकर जो निर्वद्य मर्यादा वांधे उस मुजब प्रवर्ते—चले सो जीए (जित) व्यवहार । इन पंच प्रकारके व्यवहार मुजब प्रवर्तता हुवा भगवंतकी आज्ञाका उल्लंघन नहीं करता है ।

॥ इति ॥

॥ शुभं भवन्तु ॥

ओछो अधिको आगो पाछो लिख्यो होय तो

तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

सेवं भंते सेवं भंते ।



ॐकारसिद्ध

॥ श्रीवीतरागदेव ऋषभ जिनेश्वराय नमः ॥

श्री छत्तीस बोल संग्रह

द्वितीय भाग

॥ मङ्गलाचरण ॥

ओंकार उदार अगम्य अपार संसारमें सार पदारथ नामी। सिद्धि समृद्धि सरूप अनूप भयो सबही सिर भूप सुधामी॥ मन्त्रमें यन्त्रमें ग्रन्थके पन्थमें जास कियो धुर अन्तरजामी। पञ्चहि इष्ट बसे परमिष्ट सदा प्रणमी को ताहि नमामी॥१॥

॥ दोहा ॥

बोल छतीस नाम है, कीना भवि उपकार ।
गुरु मुखसे धारजो, द्वितीय भाग सुजाण ॥१॥
गुरु समीपे जायने, लीजो अर्थ विचार ।
भणीगुणीने सिखजो, जिन आज्ञा अनुसार ॥२॥
भैरोदान अर्ज करे, मत कीजो कोई ताण ।
सूत्रार्थ जाणुं नहीं, केवली भाषित परमाण ॥३॥
बहु ग्रन्थे संचै कीयो, अल्प बुद्धि अनुसार ।
भूल चुक दृष्टि पड़े, लीज्यो विद्वान सुधार ॥४॥

॥ उपदेशी दोहा ॥



समझ ज्ञान अंकुर है, समझु टाले दोष ।
समझ समझ संसारमें, गया अनंता मोक्ष ॥१॥
समझु संके पापसुं, अण समझु हरखंत ।
वह लुखा वह चिकणा, इण विध कर्मबंधंत॥२॥
ज्ञानी, गरीब, गुरु बचन, नरम बचन निरदोष ।

इतरा कदे न छोडिये, श्रधा शील संतोष ॥३॥
खरो मारग वीतरागरो, सूक्षम जेहना भेद ।
सेंठा होयकर श्रधजो, मनमें राखी उमेद ॥४॥
जबर चुड़ेलों, आयफल, साधणीने सेंग ।
इतरा तो भारी भला, वलेज मुखरा वेंण ॥५॥
जलकी शोभा कमल है, दलकी शोभा पील ।
धनकी शोभा धर्म है,ज्यु कुलकी शोभा शील॥६॥
साध साध सब नाम है, आप आपकी दोड़ ।
पाचु इन्द्री वस करे, तो माथेका मोड़ ॥७॥
कृपा करता साधजी, विचरे देश प्रदेश ।
भवि जीवाने तारता, दे दे धर्म उपदेश ॥८॥
साधु बड़े परमारथी, मोटो जिनको मन ।
भर भर मुष्टी देत हैं धर्मरुपी धो धन ॥ ६ ॥
साधु सगत जब हुवे, जागे पुण्य अंकुर ।
काईक रसायण उपजे, सो जाय दलद्र दूर ॥१०॥
साधु सतका सुपड़ा सतको सत्त भापत ।
छाड़ पछाड़ तुलड़ा, कणाँ कण राखत ॥११॥

साधु चन्दन बावना, शीतल जाको अंग ।
लेहर उतारे भुजंकी, दे दे ज्ञानको रंग ॥१२॥
ढील न कीजे धर्मकी, तप जप लिजे लूंट ।
जैसी शीशी काचकी, जाय पलकमें फूट ॥१३॥
जीणकी भवथती पकगई, तिणको लागे उपदेश ।
खरो मारग वीतरागरो, कुंड़ नहीं लवलेश ॥१४॥

॥ प्रथम बोल ॥



१ चेतना लक्षण करके सर्व जीव एक प्रकारका है—जैसे कीडी कुंजर सर्वमें चेतन्यता समान है ।

॥ दूजो बोल ॥



२ बंध दोय प्रकारे—रागबन्ध १ द्वेषबन्ध २ ।

२ दोय प्रकारसु जीव ससारमे भव करे—आर-
भसु १ परिग्रहसु २ ।
२ जोतिषीके दो इन्द्र—चन्द्रमा १ सूर्य २ ।
२ दोय प्रकारे धर्म—यतिधर्म १ श्रावकधर्म २ ।
२ सर्वजीव दोय प्रकारे--सिद्धगामि१ ससारी २ ।
२ सर्व जीव दोय प्रकारे--आहारी१अणाहारी २ ।
२ सर्व जीव दोय प्रकारे--साता वेदी १ असाता
वेदी २ ।
२ दोय चन्द्रमा दोय सूर्य जबुद्वीपमे ।

॥ तीजो बोल ॥

३ तीन तत्व—देवतत्व१ गुरुतत्व२ धर्मतत्व३ ।
३ पल्योपम तीन भेदे—उद्धार पल्योपम १ अद्धा
पल्योपम २ क्षेत्र पल्योपम ३ ।
३ उद्धार पल्योपम केने कहिये ? उछेदा गुलेकरी

एक योजन प्रमाण कूवो तेमां बालकना केश एक आंगुलनां वीसलाख सत्ताणुं हजार एकसो बावन खण्ड कीजै तेह संघाते १ योजन लांबो १ योजन चौड़ो कूवो भरीजै पाछै एक एक समय प्रत्ये एक एक खण्ड काढीजे ते कूवो खाली हुवे तेतलै कालै संख्यात कोटि वर्ष प्रमाणे एक उद्धार पल्योपम होवें एहवा दश कोडा कोडि पल्योपममें एक उद्धार सागरोपम होवे, अढाई उद्धार सागरोपमना जितना समय होवे तितना हीं द्वीप समुद्र जाणवा ॥ १ ॥ अद्धा पल्योपम केने कहिये? पूर्वोक्त कूवाका बालाग्र एकसो वरसे काढीये इम करतां कूवो खाली होवे तिवारे असंख्याता कोडी वर्ष प्रमाणे अद्धा पल्योपम होवे, दश कोडा कोड़ि अद्धा पल्योपममें एक अद्धा सागरोपम होवें इण पल्योपममें सागरोपममें करी

सर्व जीवनो आऊखो मणीजे (नापीजे) ॥२॥
तीजो क्षेत्र पल्योपम केने कहिये ? पूर्वोक्त
कूआना वालाग्र तेणे स्पष्टे तथा अस्पष्टे जे
आकाश प्रदेश प्रत्ये समय समय काढीये
इम करता-करता कूवो खाली हुवे तिवारे अस-
ख्याती अवसर्प्पिणी उत्सर्प्पिणी प्रमाण एक
क्षेत्र पल्योपम थाय दश कोडा कोडि क्षेत्र
पल्योपममें एक क्षेत्र सागरोपम होवे एणे
करी त्रश थावर जीवनी सख्या मिणवी ए
तीन प्रकारनो पल्योपम सागरोपमनो विस्तार
सूक्ष्म बादर आदि देई श्रीअनुयोग द्वार
मध्ये घणे विस्तारें कह्यो छे ॥ ३ ॥

३ तीन ऊसीगण, (उरण) माता पितासुं बेटा
बेटी ऊसीगण न थावें, तिके बेटा तथा
बेटी मातापितानु शतपाक, सहस्रपाक तेलें
करीने हाथसें मर्दन करे तिको मर्दन हाडनें
सुखकारी होवे, त्वचाने सुखकारी होवे,

रोमने सुखकारी होवे, इसो मर्दन करे पीछे ऊनो शीतल सुगंधी ए तीन पाणीसुं स्नान करावें, चौसठ तरकारी बत्तीस पकवान हाथे जीमावे, पीछे कांधे लेइने फिरे, तो पिण भगवंते कह्यो के मातापितासुं ऊरण न थावे, परं केवली परूप्या धर्मने प्रवर्त्तावे तिवारे उसरावण थावे १, बोले गुरुसें शिष्य उसरावण न थावे, अक्षर पिण जिका गुरां पासें शिख्यो हुवै, जिकांरो विनय करे घणी सेवा भक्ति करे उपगार मेटे नहीं। धर्मरे प्रभावे गुरांरे प्रभावे मरी देवता हुवे घणी रिद्धि पामे एक प्रस्तावे तेहीज गुरु विहार करता अटवी उजाडमांहि भूल्याथका देवता आवीने वसतीमांहि मेले, पछे रोग कोढ आय ऊपनाथका दुःखी छे, आपदा भोगवे छे, ते देवता आवीने रोग उपसमावे, सुखसाता करे तो पिण गुरु तथा गुरुणीसुं

उसरावण नहीं थावे, तिवारे गुरुरी तथा गुरु-णीरी धर्म ऊपरसुं आस्ता ऊतरी जाणीने ते देवता हेतयुक्त करीने केवली परूप्या धर्ममें प्रवर्त्तावे तिवारे ते देवता गुरुसु तथा गुरुणीसु उसरावण थावे २, तीजे बोले वाणोतर (गुमास्ता) शेठसुं उसरावण नहीं थावे, शेठने आपदा पड़ी हुवे वाणोतररी पुण्याइ वधी छे, शेठरी पुण्याइ हीणी छे, तिवारे वाणोतर शेठसुं पाछो उपगार करे तो पिण उसरावण नहीं थावे, केवली परूप्या धर्ममें प्रवर्त्तावे तिवारे उसरावण थावे 'शेठसुं वाणोतर" ३।

३ तीन गारव, इड्डिगारव कहता—रिद्धिरो गारव पाना, पुस्तक, शिष्य साथ्या, भंडोप-गरण, जेहनो अहंकार करे ते इड्डिगारव १ बीजो रसगारव आहार सरस मिले तेहनो अभिमान करे पहवा सरस आहार हमने

मिले छे बीजाने मिले नहीं ते रसगारव २, तीजो सातागारव—सुखसातारो गारव अभिमान करे हमने सुखशाता छे इसी दूजा केहने नहीं ते सातागारव ३ ।

३ तीन शल्य—मायाशल्य १, नियाणाशल्य २, मिथ्यात्वदर्शणशल्य ३ ।

३ तीन विराधना—ज्ञान अकालने विषे भणे, ज्ञानरो विनय न करे, ज्ञानवंतनी असातना करे, ज्ञान भणतां गुणतां आलस मोडे अडषला (ओटो) लेवे, जिणरे पासे ज्ञान भणीयो हुवे तेहनो उपगार मेटे तिणारा अवगुणवाद बोले ते नाणविराधना १, बीजी दर्शन विराधना, समक्त पर शंका कंखा आवे, समक्तीसुं द्वेष करे, मिथ्यात्वीनी प्रशंसा करे, साधुसुं द्वेष करे, तेहनी निंदा करे, दर्शण विराधक सिजै नहीं ते दर्शनविराधना २, तीजी चारित्रविराधना

उत्तरगुणनु दोष लगावे शरीरनी सुश्रूषा करे ते चारित्रविराधना ३ ।

॥ चौथो बोल ॥



४ केवलीने इन्द्रिनो विषय न होय केवलज्ञाने सर्व जाणे, सिद्ध केवलीने दश प्राण हुवे नहीं भाव प्राण च्यार होवे ते अनतो ज्ञान १, अनतो दर्शण २, अनता सुख ३, अनत शक्ति ४ ।

४ च्यारपात्र—अरिहत १, साधु २, देशव्रती ३, सम्यगदृष्टी ४ ।

४ च्यार अजीर्ण—तपस्यारो अजीर्ण क्रोध १, भणीयेरो अजीर्ण अहकार २, कार्यरो अजीर्ण विकथा ३ लोकमें अन्नरा अजीर्ण वमन ४ ।

४ च्यार प्रकारे क्रोध उपजे—क्षेत्र निमित्त

क्रोध उपजे १, वस्त्र निमित्ते क्रोध उपजे २, शरीर निमित्ते क्रोध उपजे ३, उपगरण निमित्ते क्रोध उपजे ४।

४ च्यार बोल जीपतां (जीतणा) घणा दोहीला छे, व्रतमांही शीलव्रत पालनो दोहिलो १, आठ कर्ममांही मोहनी कर्म जीतणो दोहिलो २, पांच इन्द्रियमाहीं रसेन्द्रिय जीतणो दोहिलो ३, तीनुं योगांमांही मनरो योग जीतणो दोहिलो ४।

४ च्यार बोल पावणा दोहिला छे, पांच ज्ञानमांही केवलज्ञान पावणो दोहिलो छे १, लेश्या छव मांही शुक्ललेश्या पावणी दोहिली छे २, च्यार ध्यानमांही धर्मध्यान शुक्लध्यान पावणां दोहिला छै ३, भरयोवनमांही शील पालनो दोहिलो छे ४।

४ च्यार बोल करवा महादोहिला (दुर्लभ) तरुणवयमें शील पालनो दोहिलो १, छता

भोग छांडीने दिक्षा लेवणी दोहिली २, क्षमाकरणी दोहिली ३, कृपणने दान देवणो दोहिलो ४ ।

४ च्यार बात अक्कलदारीकी, जागता तो चोर नासे १, क्षमा करता कलह नासे २, उद्धम करता दारिद्र नासे ३, भगवन्तरी वाणी सुनता पाप नासे ४ ।

॥ अथ पाचमो बोल ॥

५ पांच बोल दुर्लभ —शास्त्रका अर्थ समझणा दुर्लभ १, भेदानुभेदकी शंका निकालनी दुर्लभ २, तत्व सरदहणा दुर्लभ ३, परीसह सहणो दुर्लभ ४, चारित्र पालणो दुर्लभ ५ ।

५ पांच प्रकारके साधु अवंदनीक---पासत्था १, उसन्ना २ कुशीलीया ३ संसत्ता ४ अह-

च्छंदा ५, ॥१॥ पासत्थाके दोय भेद (१) सर्वता पासत्था सो ज्ञान दर्शन चारित्रसे भ्रष्ट, फक्त वेश मात्र, (२) देशवृती पासत्था १०८ दोष युक्त आहारले, लोच नहीं करे, ॥२॥ उसन्नाके दोय भेद (१) सर्व उसन्ना साधुके निमित्त निपजाये हुये स्थानक पाट भोगवे (२) देश उसन्ना दो वख्त प्रतिक्रमण पडिले-हण आदि न करे तथा अस्थान छोड़ घरो-घर फिरता फिरे, अयोग्य ठिकाणे गृहस्थके घरमें विना कारण बैठे, ॥३॥ कुशिलियाके ३ भेद नाणकुशिलिया, (१) ज्ञानके आठ अतिचार, (२) दंशणकुशिलीया सम्यक्तके ८ अतिचार, (३) चारित्र कुशिलीया चारित्र के ८ अतिचार यों २४ अतिचार लगावे, ॥४॥ संसत्ता जैसे गायके वांटेमें अच्छा बुरा सब भेला कर देवे तैसे उसकी आत्मामें गुण अवगुण सड़बड़ होवे उसे अपणे गुण

अवगुणकी कुछ खबर नही, इसके दो भेद (१) सक्लिष्ट-क्लेशयुक्त, (२) असक्लिष्ट क्लेश-रहित, ॥५॥ अहच्छदा (अपच्छदा) गुरुकी, तीर्थंकरकी, शास्त्रकी आज्ञाका भगकर अपनेही इच्छानुसार चलै जैसे ऋद्धिका, रसका, साताका यह तीन ही का गर्व करे, उत्सूत्र मनमाना परुपे सो अपच्छदा, यह पाच वदनाके अयोग्य है।

५ पाच ठामें गुरुने वदना दीजै—प्रसन्नचित्त गुरुको होय तो वदना कीजै १, आसन बैठा होय तो वदना कीजै २, उपशात होय तो वदना कीजै ३, उठता न होय तो वदना कीजै ४, आज्ञा होय तो वदना कीजै, ५।

५ पाच प्रकारे सिज्झाय—वाचना १, पृछ्ना २, परिअठना ३, अनुप्रेक्षा ४, धर्म कथा ५।

५ पाच प्रकारे अचित्त वायरो उपजे तिण करी सचित्त वायरो हणीजे, पहिले दबके

ना कठे जसा करे जठे २, धर्मरी वधोतरी कठे तपस्या करे, दान देवे जठे ३, धर्मरी पुष्टाइ कठे उपसर्ग ऊपजते चढ़ता परिणाम राखे जठे ४, धर्मरो विनाश कठे क्रोध मान माया लोभ व्यापे जठे ५ ।

५ पांच पडिलेहणारी वेदका जाणवी, पहिली गोडारे ऊपरे हाथ राखीने पडिलेहण न करे १, बीजी गोडारे नीचे हाथ राखीने पडिलेहण न करे २, तीजे गोडारे पाखती हाथ राखीने पडिलेहण न करे ३, चौथे गोडारे विचे हाथ राखीने पडिलेहण न करे ४, पांचमी एक हाथ गोडारे विचाले अने एक हाथ गोडा ऊपरे इसी तरह पडिलेहण न करे ५ ।

५ पांच गुणारा धणीने भणावो आवे, बिनीत हुवे ते भणे १, उद्यमवन्त भणे २, निर्मल बुद्धिरो धणी भणे ३, उपयोगवंत भणे ४, आजीविका हुवे तो भणे ५ ।

॥ छठो बोल ॥

८ संघेण छव धरनेवालोकी गति---छेवट्ठा संघेणको धणी चौथा देवलोक उपरान्त न जावे १, कीलका सघेणवाला छट्ठा देवलोक तक जावे २, अर्द्धनाराच सघयणवाला आठमा देवलोक तक जावे ३, नाराच सघयणवाला दशमा देवलोक तक जावे ४, ऋषभनाराच सघयणवाला बारमा देवलोक तक जावे ५, वज्रऋषभनाराच संघयणवाला मुक्ति तक जावे ६।

६ छेवट्ठा संघयणवाला पहिली दूजी नारकी तक जावे १, कीलका सघयणवाला तीजी नारकी तक जावे २, अर्द्धनाराच सघयणवाला चौथी नारकी तक जावे ३, नाराच संघयणवाला पांचमी नारकी तक जावे ४, ऋषभ नाराच सघयणवाला छट्ठी नारकी

तक जावे ५, वज्रऋषभ नाराच संघयणवाला सातमी नारकी तक जावे ६ ।

६ बोल छव, बादर पृथ्वीकाय सात नरक बारह देवलोक नवग्रेवयक पांच अनुत्तर विमान सिद्धसिला लग छै १, बादर अपकाय सात नरक बारह देवलोक लग लाभे २, बादर तेऊकाय अढाई द्वीप सीम लाभे, नदी, मेह, मनुष्यना जन्म मरण प्रमुख अढाई द्वीप माहें हुवे आगल नहीं ३, बादर वायुकाय सगलै लोक माहें लाभै ४, बादर वनस्पति-काय सात नरक बारह देवलोक सीम लाभे ५, बेइन्द्री १, तेइन्द्री २, चौइन्द्री ३, जीव त्रीछै लोक माहें लाभै, ऊर्द्ध लोके मेरु पर्वतनी बावडी प्रमुषे लाभे, अधोलोके मेरु पर्वतथी पछिम दिसे छेहली दोय विजय अधोभूमी ग्रामने विषे लाभे, त्रस जीव लोकने मध्यवर्त्ती एक राज प्रमाण त्रस नाडि लाभे, सूक्ष्म

प्रथ्वीकाय आदि देइ पच थावर सगले लोक माहे लाभे ६, इति षट्काय विचार ।

६ बोल छव, भाव श्रावकके लक्षण- -जिन्होंने व्रत आदि किये हे १, जिनके शीलादि गुण सत्य हे २, सत्य न्यायके पक्षी हे ३, निष्कपटी सरल व्यवहार साधन करते हे ४, विधि सहित गुरुकी सेवा करते हे ५, जिन शासनका अभ्यास करके कुशल हे ६ ।

६ बोल छव गुणठाणेका, चौदह गुणठाणामें १ पहिलो तथा चौदमो छोड कर बाकी १२ गुणठाणा सजोगी नियमा भव्यमें पावे १, पहिलो दूजो तेरमो चौदमो गुणठाणो छोड कर बाकी १० गुणठाणा नियमा रुक्षीमें पावे २, पहिलेसु तीजो बारहमें सु चौदमो छोडकर ८ गुणठाणा उपशमसम्यक्तमें पावे ३, पहिलेसु चौथो इग्यारमेंसु चौदमो छोडकर छव गुणठाणा सकषाइ व्रतीमें पावे

४, पहिलेसुं पांचमो दसमेंसुं चौदमो छोडकर ४ गुणठाणा सामायिक छेदोपस्थापनीय चारित्रमें पावे ५, पहिलेसुं छठो नवमेंसुं चौदमो छोडकर २ गुणठाणा अप्रमादि हास्यादिक नोकषाईमें पावे ६ ।

६ छकायना जीव किहां घणा किहां थोड़ा ते कहै छै---पुढवीकायना जीव पूर्व दिसै घणा ते स्यां माटे ? गौतम द्वीप छै ते माटे १, अप्पकायना जीव उत्तर दिसै घणा ते स्यां माटे ? मान सरोवर छै ते माटे २, तेऊ-कायना जीव पछिम घणा ते स्यां माटे ? मनुष्य घणा छै ते माटै ३, वायुकायना जीव दक्षिण दिशि घणा ते स्यां माटे ? तिहां पोलाड घणी छै ते माटे ४, वनस्पतिना जीव उत्तर घणा छै ते स्यां माटे ? जेमां मानसरोवर मध्ये कमल छे ते माटे ५, मनुष्य उत्तर अने दक्षिणे थोड़ा छै तेहथकी

पूर्वे सख्यात गुणा अधिक तेह थी पश्चिममें पिण घणा ते स्या माटे ? विजयकुडी मनुष्य घणा ते माटे ६।

६ छव बोल नटनेरा याने नेकारो करणेरा लक्षण—लीलड़में सल घाले १, आख्या मीचले, आधो देखे २, ऊंचो देखे, निची दृष्टि घाले ३, पराय से बात करणे लग-जाय ४, मौन पकड़ले ५, काल विलव करे ६, ॥ गाथा ॥ भिउड़े आधा लोचण ऊँची परमुहवयण मौन कालविलबो नाकारे छवी होय ॥ १ ॥

६ छव प्रकाररा जवुद्वीवमें खेत्र, हेमवय १, एरणयवय २, हरिवास ३, रम्यकवास ४, देवकुरु ५, उत्तरकुरु ६।

६ छव पलिमथ ते विपरीत फल पावे, कुचेष्टा कुतुहल करे ते सयमरो पलिमथ १, अलिक झूठ कहे ते सयमनो पलिमथ २, आघो

पाछो दृष्टि देखे ते इर्यासुमतिरो पलिमंथ ३, तणातणाट गोचरीने विषे करे तो एषणा-सुमतिनो पलिमंथ ४, इच्छारो निरोधन करे तो निर्लोभीपणानो पलिमंथ ५, तप करीने नियाणो करे तो मोक्षनो पलिमंथ ६।

६ छव प्रकारे कुपडिलेहण करता जीव जन्म मरण वधारे, उतावली घणी करे १, अण पडिलेह्यां ऊपरे बेसे २, पडिलेह्यां अणपडि-लेह्यां भेगा करे ३, वारंवार झाटकने जोवे नहीं ४, पडिलेहणा करीने वस्त्र आदि विखेर राखे ५, वेदिका रहित पडिलेहणा करे ६।

६ छव प्रकारे पडिलेहणा करतो जीव जन्म मरण टाले (घटावे), पडिलेहणा करतो शरीर वस्त्र नचावे नहीं १, पडिलेह्यां अणपडिलेह्यां भेला न करे २, ऊंची छातसे लगावे नहीं, नीचो धरतीसुं लगावे नहीं तिरछो भींतसुं वस्त्र लगावे नहीं, मर्यादा सहित पडिलेहणा

करे ३, छव प्रकारनी कुपडिलेहणा कही ते न करे ४, नव अखोडा नव पखोडा करे ५, प्राणी जीवने देखे दयारे निमित्त पडिलेहणा करे ६ ।

॥ सातमो बोल ॥

७ सात नारकीना नाम, गोत्र, आऊखो विस्तार पणें कहे छै, पहली घमा---रत्नप्रभा पृथ्वी नारकीनो आउखो जघन्य १० हजार वर्षनो उत्कृष्टो १ सागर, दूजी वशा---शर्कराप्रभा पृथ्वीनु आउखो जघन्य १ सागरोपम उत्कृष्टो ३ सागर, त्रिजी शला---वालूका प्रभानो आउखो जघन्य ३ सागर उत्कृष्टो ७ सागर, चौथी अंजना—पकप्रभा पृथ्वी नारकीनो आउखो जघन्य ७ सागर उत्कृष्टो १० सागर, पाचमी अरिष्टा (रिट्ठा)—धूमप्रभा

आपतमें आंतरो ११५८३ योजन एक योजन रा तीन भाग तिकेरो १ भाग अधिक जाणीजो पत्र ४० ।

चोथी नारकीमें ७ पाथड़ा—आपतमें पाथड़े पाथड़े आंतरो १६१६६ योजन रा ३ भाग तीकेरा २ भाग अधिक जाणीजो पत्र ४० ।

पत्र ३० ओली आठवी अवधि ज्ञान जघन्य २॥ गाउ "अवधि ज्ञान कहणो" पत्र ३५

ओली नवमी वेहु पासै छै तिको चहु पासे कहणो पत्र ३८ ।

ओली छठी तथा इग्यारमी मधे वभ्मर छै तिको वज्जर कहणो ।

१३ एक एक पाथडानु पिड तीन सहस्र योजन, लावा पहुला रत्नप्रभा प्रमाण, तेरह पाथडामे तीस लाख नरकावासा छै कितना एक नरकावासा असख्याता योजनरा छै और कितनाएक नरकावासा सख्याता योजनना छै, जिहा असख्याता नरकावासा छै तिहां असख्याता नारकी छै, जिहा सख्याता नरकावासा छै तिहा सख्याता नारकी छै, तेहनी अवगाहना उत्कृष्टी पृणी आठ धनूष ६ अगुल, तेहनो आऊखो पूर्वोक्त, ते नारकीने कापोत लेश्या छै तिण (उस) नरकावासै उष्णवेदना छै ते नारकीने अवधि ज्ञान जघन्य ३॥ (साढा तीन) गाऊ उत्कृष्टो चार गाऊ रत्नप्रभा हेठल वीस सहस्र योजन घनोदधिनृ पिड छै ते हेठल असख्याता योजननो घणवातनो पिड छै ते हेठल असख्यता योजननो तणुवातनो पिड छै ए,

तिनो लांबा पहुला रत्नप्रभाप्रमाणे छे ते हेठल असंख्याता योजननुं आकाश छै ए रत्नप्रभानो विचार कह्यौ १ ।

दूजी शर्कराप्रभा पृथ्वी—असंख्याता योजनना सहस्र लांबी पहुली असंख्याता योजनना सहस्र परिधि, जाडपणे एक लाख वत्तीस सहस्र योजन प्रमाण छै, तिहां पाथडा इग्यारे एक एक पाथडानो पिंड जाडपणे तीन सहस्र योजन, लांबा पहुला शर्कराप्रभा प्रमाणे छै तिणे नरके इग्यारे पाथडे पचवीस लाख नरकावासा छै केटला एक नरकावासा संख्याता योजनना छै तिहां संख्याता नारकी छै केटला एक नरकावासा असंख्याता योजनना छै तिहां असंख्याता नारकी छै तेहनो शरीर उत्कृष्टो साढापनर धनुष, अंगुल १२ ते नारकी ने कापोत, लेश्या छै तिणे नरकावासे ऊष्ण वेदना छै ते नारकी ने, अवधि ज्ञान जघन्य

तीन गाऊ उत्कृष्टो साढा तीन गाऊ शर्कराप्रभा. हेठल वीस हजार योजननो घणोदधिनो पिड छै ते हेठल असख्याता योजननो घणवात छै ते हेठल असख्याता योजननु तनु वातनु पिड छै ए तीने लावा पहुला शर्करा प्रभा प्रमाणे छै ते हेठल असख्याता योजननु आकाश छै इनि दूजी शर्कराप्रभा विचार २।

तीजी वालूका प्रभा पृथ्वी—असख्याता योजनना लावी पहुली असख्याता योजननी सहस्र परिधि, जाड पणे एक लाख अट्ठाइस सहस्र योजन प्रमाण छै तिहा पाथडा नव एक एक पाथडानो पिड योजन सहस्र तीन, लावीपहुली वालूका प्रमाण छै तिहा नव पाथडा पनरे लाख नरकावासा छै, केतला एक नरकावासा सख्याता योजनना छै तिहा सख्याता नारकी छै, केतलाएक

नरकावासा असंख्याता योजनना छै तिहां असंख्याता नारकी छै तेहनो शरीर उत्कृष्टो सवाएकतीस धनुष प्रमाण छै तेहनो आउखो जघन्य तीन सागर उत्कृष्टो सात सागरोपम तिणौ (उस) नरके लेश्या २ कापोत लेश्या, नील लेश्या छै कापोत लेश्याना धणी घणा नील लेश्याना धणी थोडा तिणै नरकावासे ऊष्णवेदना छै ते नारकी ने, अवधि जघन्य अढाईगाउं, वालूका प्रभा हेठल वीस हजार योजननु घनोदधिनो पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननु घनवातनो पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननो तनु वातनो पिंड छै, ए तीनुं लांवा पहुला वालूका प्रभाप्रमाण छै ते हेठल असंख्याता योजननो आकाश छै इति त्रीजी पृथ्वी।

चौथी पंक प्रभा पृथ्वी—असंख्याता योजनना सहस्र लांवी पहुली असंख्याता

योजननी परिधि, जाडपणे एक लाख वीस हजार योजन प्रमाण छै तिहा पाथडा सात छै एक एक पाथडानो पिड तीन हजार योजन, लाबा पहुला पकप्रभा प्रमाण छै तिणे नरके सातेइ पाथडाइ दश लाख नरकावासा छै केतला एक नरकावासा असख्याता योजनना छै तिहा असख्याता नारकी छै केई-एक नरकावासा सख्याता योजनना छै तिहा सख्याता नारकी छै वेदना २ वेदै, शीतवेदना, ऊष्ण वेदना तिण माहीं ऊष्ण वेदना घणी छै शीत वेदना थोडी छै ते नारकीने अवधि ज्ञान जघन्य बे गाऊ उत्कृष्टो अढाई गाऊ, पकप्रभा हेठल वीस हजार यो-जननो घनोदधिनो पिड छै ते हेठल अस-ख्याता योजननो घनवातनो पिड छै ते हेठल असख्याता योजननो तनुवातनो पिड छै ए तीनु लाबा पहुला पकप्रभा प्रमाण छै ते

हेठल असंख्याता योजननो आकाश छे
इति पंकप्रभा विचार ४ ।

पांचमो धूमप्रभा पृथ्वी—असंख्याता योजनना सहस्र लांबी पहुली असंख्याता योजननी परिधि, जाडपणे एक लाख अढार सहस्र योजन प्रमाण छे तिहां पाथडा पांच, एक एक पाथडानो पिंड योजन सहस्र तीन, लांबा पहुला धूमप्रभा प्रमाण छे तिहां पांचेइ पाथड़े तीन लाख नरकावासा छे कितनाएक नरका वासा संख्याता योजनना छे तिहां संख्याता नारकी केतनाएक नरकावासा असंख्याता योजनना छे तिहां असंख्याता नारकी छे तेहनो शरीर एकसो पचवीस धनूष प्रमाण, ते नारकीने २ लेश्या, नीललेश्या, कृष्णलेश्या, ते मांही नीललेश्याना घणा कृष्णलेश्याना थोड़ा वेदना २, शीतवेदना, ऊष्णवेदना २, ते मांही

शीतवेदना घणी ऊष्णवेदना थोडी ते नारकीने अवधि ज्ञान जघन्य दोढगाऊ उत्कृष्ट बे गाउ, धूमप्रभा हेठल वीशहजार योजननु घणोदधिनु पिड छे ने हेठल असख्याता योजननु घनवातनु पिड छे ते हेठल असख्याता योजननो तनुवातनु पिड छे ए तीनु लाबा पहुला धूमप्रभा प्रमाणे छे हेठल असख्याता योजननु आकाश छे इति पाचमी पृथ्वी धूमप्रभानो विचार।

छठी तमप्रभा पृथ्वी --असख्याता योजननु सहस्र लाबी पहुली असख्याता योजनना सहस्र परिधि, जाडपणे, एकलाख सोले हजार योजन प्रमाण छे तिहा पाथडा तीन, एक एक पाथडानु पिड तीन हजार योजन, लाबा पहुला तम प्रभा प्रमाणे छे तिनु पाथडे, पाच ऊणा एक लाख नरका वासा छे कितना एक नरका वासा संख्याता

योजनरा छै तिहां संख्याता नारकी छै, कितना एक नरका वासा असंख्याता योजनना छै, तिहां असंख्याता नारकी छै, तेहनो शरीर उत्कृष्टो अढाइसौ धनूप प्रमाण छै तेहनो आउखो जघन्य सतरं सागरोपम उत्कृष्टो बावीस सागरोपम, तिहां कृष्णलेश्या छै, ते नरका वासे शीतवेदना छै ते नारकीने अवधिज्ञान जघन्य एक गाऊ उत्कृष्टो दोढ गाऊ, तमःप्रभा हेठल वीस सहस्र योजननुं घनोदधिनुं पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननुं घनंवात नो पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननूं तनंवातनो पिंड छै ए तिनुं लांबा पहुला तमःप्रभा प्रमाणे छै ते हेठल असंख्याता योजननुं आकाश छै इति तमःप्रभा ६ ।

सातमी तमतमा पृथ्वी—असंख्याता योजनना सहस्र लांबी पहुली असंख्याता

योजननी परिधि, जाडपणे एक लाख आठ हजार योजन प्रमाण छे तेमाहीं साढावावन हजार योजन ऊपर मूकीए, साढा बावन योजन हेठल मूकीए, विचाले एक पाथड़ो ते पाथड़ानुं पिंड तीन हजार योजन जाड़ पणे छे लांबा पहुला तमतमा प्रमाणे छे ते पाथड़े पाच नरका वासा छे काल १ महाकाल २, रुरु ३, महारूरू ४, अपैठान ५, चार नरकावासा येहुपासे असंख्याता योजनना छे तिणे असंख्याता नारकी छे तेहनो शरीर उत्कृष्टो पाचसो धनुष प्रमाणे छे तेहनु आऊखो जघन्य बावीस सागरोपम उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपम अपैठाणे तेत्रीस सागरोपमनु आउखो ते नारकी कृष्णलेश्या छे तिणे नरका वासे शीत वेदना छे ते नारकी ने अवधि ज्ञान जघन्य अर्द्ध गाऊ उत्कृष्टो एक गाऊ, तमतमा हेठल वीस हजार

योजननुं घणोदधिनुं पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननुं घनवातनुं पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननुं तणु वातनुं पिंड छै ए तीनूं लांबा पहुला तमतमा प्रमाण छै ते हेठल असंख्याता योजननुं आकाश छै, सातै नरके शरीर जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग जाणवो ; सात नरक पृथ्वी ए सम्यक दृष्टी. मिथ्या दृष्टी, मिश्रदृष्टी, ए तीन दृष्टी छै रत्नप्रभा पृथ्वी थकी वारै योजने अलोक छै बारह योजन मांहि तीन वलया छै पहिलो वलय घणोदधिनुं छव योजननुं छै बीजो वलय घनवातनुं साढा च्यार योजननुं छै त्रीजो वलय तनुवातनुं दोढ योजननुं छै, दूजी शर्करा प्रभा ऐ बारह योजने दोय भाग तीरछो अलोक छै तिण मध्ये त्रिण वलय पूर्वोक्त रीते कुछै जाभेरा २, तीजी वालूका-प्रभाथी तेरह

योजन एकभाग तीरछो अलोक छे ते मध्ये त्रिणवलय , ३ , चौथी पक-प्रभाथी चौदे योजन अलोक छे ते मध्ये त्रिण वलय छे ४, पाचमी धूम-प्रभाथी चौदे योजने दो भाग तीरछो अलोक छे ते माहि त्रिण-वलय ५, छट्ठी तम प्रभा थी पन्दरह योजने एकभाग तीरछो अलोक छे ते माहि त्रिण घलय ६, सातमी तमतमाथी सोलै योजने तीरछो अलोक छे तिहा सोलै योजनमांहे आठ योजननु घनोदधिनु घलय छे छव योजननु घन वातनु वलय छे देढ़ योजन छव भाग तनुवातनु घलय छे ७।

नारकी नीचे घणो दधि समुद्र आवे घणोदधि नीचे जावे तो घणवाय आवे घणवाय नीचे तणवाय आवे तणवाय नीचे आकाश आवे आकाश थकी तीरछो आलोक छे ते माहे तीन वला (वलय) छे ।

बला (वलय) कैसो छै ?

आडे लकड़े, लांबे डोरेकी परै झालरीरे आकार छै ।

घणो दधि केने कहीजे ?

असंख्याता योजन लांबो चौड़ो छे २० हजार योजन जाड पणे पाणी छे ते बभ्मर मांही बंधाणो छे ।

घणवाय केने कहीजे ?

असंख्याता योजन लांबी चौड़ी छे असंख्याता योजन जाड पणे छे जाडो वायरो छे वायरो बभ्मर मांही बंधाणो छे ।

॥ विशेष विस्तार ॥

नारकी अलोक बीच आंतरा।

वला (वलय)

नारकीसे अलोक	घणो दधि,	घणवाय,	तणवाय,
पहली नारकी १२योजन २ भाग	६ योजन	४॥ योजन	१॥ योजन
दूजी , १२ ,, २ ,	६ ,, १ भाग	४॥। ,,	१॥। , १ भाग
तीजी ,, १३ , १ ,,	६ , २ भाग	५ ,,	१॥। २ भाग
चौथी ,, १४ ,	७ ,,	५ , १ भाग	१॥। ३ भाग
पंचमी , १४ ,, २	७ ,, १ भाग	५ ,, २ भाग	१॥। , ४ भाग
छठी ,, १५ ,, १	७ ,, २ भाग	५ ,, ३ भाग	१॥। ५ भाग
सातमी . १६ .	८ ,,	६ ,	१॥। , ६ भाग

पहली नारकीमें १३ पाथड़ा—पाथड़े पाथड़े आपतमें आंतरो ११५८३ योजन।

दूजी नारकीमें ११ पाथड़ा—आपतमां पाथड़े पाथड़े आंतरो ६७०० योजन।

तीजी नारकीमें ६ पाथड़ा—आपतमें पाथड़े पाथड़े १२३७५ योजनरो आंतरो।

चौथी नारकीमें ७ पाथड़ा—आपतमें पाथड़े पाथड़े आंतरो १६१६६ योजनरो।

पांचमी नारकीमें ५ पाथड़ा—आपतमें पाथड़े पाथड़े आंतरो २५२५० योजनरो।

छठी नारकीमें ३ पाथड़ा—आपतमें पाथड़े पाथड़े ५२॥ हजार योजनरो आंतरो।

सातमी नारकीमें एकसे दूजो पाथड़ो नहीं ते भणी आंतरो नथी।

पहली नारकीमें तीन कुंड उसका नाम रक्त कुंड (१) आउबोहल कुंड (उसभपाणी) (२) पंक बहल कुंड (उसभ कीचड़) (३)।

सात नारकीमें ७ घणो दधि, ७ घणवाय, ७ तणवाय, ४६ पाथड़ा, ८४ लाख नरकवासा।

नारकी सासती छे जीव असासता छे।

(१) रत्नप्रभा नारकीमें रत्नकीसी प्रभा छै (भुडी प्रभा छे) (२) शर्कराप्रभामें काकरा छे (३) बालुप्रभामे वलवलती वालू छै (४) पंकप्रभामें कादो छे (५) धूमप्रभामें धुंवो छे (६) तम प्रभामे अन्धारो छे (७) तमतमाप्रभामें माहा अन्धारो छे।

हिवे नारकीनी भूख तृषानी वेदना कहे छे, जितने जगतमे पुद्गल आहार का छै ते सर्व लेईने नारकीना मुख माहि एकेवारे क्षेपे तो ही नारकीनी भूख वेदना उपशमे नहीं और सगला समुद्रना पाणी एकेवारे नारकीना मुख माहि क्षेपे तो ही नारकीनी तृषा नहीं भाजे नारकी उण वेदना केहवी वेदे छे ते कहिये छे, जैसे यहा मनुष्य

लोकमें कोई लोहारनी कलानै विषै चतुर छै ते मासअर्द्ध लगै लोहनो गोलो घड़ी घड़ी तपाय तपाय मोटो करै ते गोलो ऊष्णकरी नरकावासा मांहि मूके ते बलतो बलतो ते नारकी गली जाय एहवी ऊष्ण-वेदना नारकीने तिहां वेदे छै, छट्ठी तथा सातमीमें एक शीत वेदना वेदे छै, एतलो विशेष जाणवो, इम किणही कीधा नहीं करस्यै नहीं, भगवंत केवली भाव देख्या छै सातुंही नारकी में पांच कोड अड़सट्ठि लाख निनाणु हजार पांचसौ चौरासी एतला रोग सात नारकीना जीवनै सदाई शरीरे होवे छै वर्णकाला, कांतिकाली, ए आदि देइने वर्णकरी गाढा पांडूया छै हिवै नारकी में गन्ध कहे छै जेहवा मनुष्यना मड़ा, गाय ना मड़ा, सर्पना मड़ा, स्वानना मड़ा (कलेवर), मंजार ना मड़ा, महिशना मड़ा, चित्राना मड़ा,

मू आ कुहिया विणठा घणा कालना सड्या क्रुमी जालेकरी सहित देखता दुगंध माहे महा पाडुआ, गणधर देवे प्रश्न कीधो, स्वामी केवली कह्यो ए गन्ध थकी पिण अनिष्ट पाडुओ गन्ध छै, हिवे फरस कहै छै जेहवी तिख्ण खड्गनी धारा, छुरीनी धारा, जेहवो त्रिशूलनो अग्र, जेहवो बाणनो अग्र शूलनो अग्रभाग, जेहवा किवचना रोम, जेहवो अ-ग्निनो फरस एहथी अधिक वखाणया गणधर देवे प्रश्न कीधा, भगवत देवे कह्या कौन कौन जीव, किसी किसी नारकी उपजे, अ-सन्नि सरीसृप पखी पहली नरके तिर्यंच पचेंद्री असन्नी आवी उपजै उपरान्त नहीं १, बीजै नारके सरीसृप कहता गोह, गिरोली, खिरोजी विसोरा, बभणी, उदरा, नोलीयादिक आवी उपजे उपरान्त न उपजै, तीजी नारके पंखी उडणा जीव सिकरा, सामली सिचाण,

चिड़कला, मोर, बुगला, लावा, कुही, बाज, जुररा, आदि देई मांस भक्षी उपजै, उपरान्त न ऊपजे ३ : चौथे नरके गाय, भैंस, वाघ, सिंह, चित्ता, ससा, स्याल, रोज, रींछ, हिरण, स्वान, सूअर, सांभर, वलद, हाथी, घोडा, ऊंठ, महिष, मंजार, वेसरी आदि देई चोपदनी जाती पापी जीव उपजै ४ ; पांचमें नारके उरपरिसर्प आदि देई जे हीएचालै ते उपजैं उपरान्त न उपजैं ५ ; छट्ठिनारके मनुष्यणी (स्त्री) अने माछली उपजें उपरान्त न उपजैं ६ ; सातमी नारके मनुष्य अने माछला उपजैं ७ ।

रत्नप्रभा नारकी सबसे छोटी छै तो पण घणी मोटी छे बाहरसुं चोखुणी छे मांहे गोल छे कुंभीरे आकार छे गौतम स्वामीजी पूछ्यो कि देवता नारकीरो पार पामे कि नहीं ? एक देवता चपल गतीरो चालणहार, नरकावासाको

पार पामें ? बले गौतम स्वामी बढ़णा नमस्कार करीने पुछ्यो, हे भगवान पुज्य। यो देवता छव महीना ताइ चाल्या नरकावासारो पार पामे ? हे गौतम नो इठे समठे, (पार पमवा समर्थ नही) बले गौतम स्वामी वद्णा नमस्कार करके पूछ्यो तो स्वामी केतलो एक पारपाम्यो ? हे गौतम सख्याता योजनका नरकावासा जिणरो पारपाम्यो, असरख्याता योजनका नरकावासारो पार न पाम्यो।

गौतम स्वामी पुछ्यो हे भगवान पुज्य भवनपती देवता कठे रहे छे ? रत्नप्रभा नारकी मांहे १३ पाथड़ा छे १२ आतरा छे तेमा एक पहलो एक छेलो=२ आतरा खाली छे बीचे १० आतरा छे तिहा भवणपतीरा भवण छे जिहा दस प्रकार भवणपती देवता रहे छे।

ए साते नारकीनु स्वरूप कह्यो।

७ सात ठामे गुरुवंदणा निषेध—विग्रह चित्त होय १, उपराठा होय २, निद्रा आवती होय ३, निषेध (मना) करता होय ४, आहार करता होय ५, नीहार करता होय ६, काम-काज करता होय ७।

७ सात प्रकृति क्षय कीधां क्षायक सम्यक्त उपजै—अनंतानुबन्धी क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, सम्यक्त मोहनी ५, मिथ्यात्व मोहनी ६, मिश्र मोहनी ७।

७ व्यवहारमें सात प्रकारे सोपकर्मी आउखो घटे (घणो आउखो बांध्यो छे पिण घट जावे) धसको खायने मरे १, कुवा, वावड़ी, तलावमें पड़कर तथा तरवार, कटारी, फांसी सुं मरे २, मंत्रने जोगे आगलो मुंठ वावे तथा डाकिनी साकिनीरे मंत्रथकी (प्राघाते) मरे ३, आहाररे अजीर्णसुं मरे ४, शूलादिक मोटी वेदना उपज्यां मरे ५, सर्प, विछु इत्यादिक

स्पर्श डक लाग्या मरे ६, आपणा श्वासोश्वास रोकीने मरे ७।

७ सात भय, इहलोक भय, ते जातिसु जातिने भय उपजे, मनुष्यसु मनुष्य डरे, देवतासु देवता डरे, तीर्यंचथी तिर्यंच डरे, नारकीथी नारकी डरे, आप आपरी जातिसु डरे ते इहलोकभय १, परलोकभय, परजातिसु भय उपजे, देवतासु मनुष्यने भय उपजे अथवा तिर्यंचसु मनुष्यने भय उपजे अथवा परलोकना दु ख सुणीने भय उपजे ते परलोकभय २, आदान भय ते परिग्रहथी भय उपजे ते धन राखवा निमित्त चोरादिकनो भय उपजे ते आदानभय ३, अकस्मात् भय, अजाण गोली तोपना शब्द सुणीने भय उपजे ते अकस्मात् भय ४, आजीविका भय ५, मरण भय ते आउखानो भय ६, अपयश भय ते अयश अकीर्त्ति रो भय ७।

७ सात प्रकारे साधुजीनी भाषा, थोडो बोले १, मोठो मधुरो बोले २, विचारीने बोले ३, कार्य पड्या बोले ४, निरवद्य वाणी बोले ५, मायारहित बोले ६, सूत्र सिद्धांतरे अनुसारे बोले ७।

७ सात प्रकारे धनने भय, राजारो भय १, चोररो भय २, कुटुंबरो भय ३, अग्निरो भय ४, पाणीरो भय ५, पृथ्वीमें नासण भागणरो भय ६, विनाशरो भय ७।

७ सात प्रकारसु ज्ञान घटे, आलस १, निद्रा २, क्लेश ३, शोक ४, सोच ५, रोग ६, कुटुम्बसु मोह करे तो ज्ञान घटे ७।

७ सात बैरी, मनबैरी १; शैतान २, भूख ३, धन ४, कुटुम्ब ५, निद्रा ६, काल ७।

॥ आठमो बोल ॥

८ सिद्धभगवानके आठगुण—ज्ञानावरनीय कर्मके क्षय होणेसे अनंतज्ञानी हुये १, दर्शनावरणीय कर्मके क्षय होणेसे अनंतदर्शणी हुये २, वेदनीय कर्मके क्षय होनेसे अव्यावाध, गुण वेदना रहित हुये ३, मोहनीय कर्मके क्षय होणेसे क्षायकगुण प्रगटे ४, आयुष्य कर्मक्षय होणेसे अजरामरगुण अर्थात् वृद्धपणो और मृत्यु रहित हुये ५, नाम कर्मके क्षय होणेसे अमूर्त्ति निराकार हुये ६, गोत्र कर्मके क्षय होणेसे अगुरु लघुगुण प्रगटे ७, अंतरायकर्मके क्षय होणेसे अनंत शक्तिवंत स्वामी रहित हुये ८।

८ पुन अष्टगुण अनेक वस्तु स्वभाव लिये हुवे सो आस्तित्व कहिये १, अनेक वस्तु स्वभाव सहित हुवे सो वस्तुत्व कहिये २,

अपनी मर्यादलिये हुवे सो प्रमेयत्व कहिये ३, न भांरी और न हल्के होय सो अगुरू लघुत्व कहिये ४, अपणो गुणपर्याय लिये हुवे सो द्रव्य कहिये ५, अपनी सत्तामेंही रहे सो प्रदेशी कहिये ६, अपना चैतन्य स्वभाव ज्ञान लिये होवे सो चैतन्य कहिये ७, चैतन्य स्वभाव ज्ञान दर्शण सहित और पुद्गलके वर्ण, गंध, रस, स्पर्श रहित होय सो अमूर्ति कहिये यह ८ गुण निर्मल है और चैतन्य द्रव्यके स्वभाविक है ८।

८ आठ जणांको शिक्षा लगे, थोड़ा हंसे १, सदा दमितात्मा २, निरभीमानी ३, परमार्थगवेषी ४, देशसे और सर्वसे चारित्रकी विराधना नहीं करने वाला ५, रसनाका (जीभ) अलोलूपी ६, क्षमावंत ७, सत्यवादी ८।

८ आठबोल अचित भूमीके—राजपथ (रस्ता) की जमीन आंगुल ५ अचित १, सेरीकी

जमीन आंगुल ७ अचित २, घरकी भूमी आगुल १० अचित ३, मल मूत्रकी भूमी आगुल १५ अचित ४, गाय, भैंस, ऊठ, वकरी प्रमुष बेंठे वह भूमी आगुल २१ अचित ५, चूल्हाहेठे आगुल ३२ अचित ६, निवाहकी धरती आंगुल ७२ अचित ७, इ टपजावकी भूमी आगुल १०१ अचित ८, नीचे सचित होवे ऐसा सूगडाग वृत्तिमाहि कह्यो छै ।

८ उत्तराध्ययणजीका २४ मा अध्ययनमें साधूकु आठ प्रकाररी भाषा बोलणी वर्जी—कर्कश कारी १, कठोरकारी २, खेदकारी ३, भेद-कारी ४, सावद्यकारी ५, मिश्रकारी ६, मर्म-कारी ७, मोसाकारी ८ ।

८ आठ प्रवचन माताना नाम—इर्यासुमति १, भाषा सुमति २, एषणा सुमति ३, आदान-निक्षेपणा सुमति ४, पारिष्ठापनिका (उच्चार

पाशवण खेल जल्ल संघान परिठावनिया सुमति) ५, मनगुप्ति ६, वचनगुप्ति ७, कायगुप्ति ८।

८ आठ आत्माका नाम—द्रव्यआत्मा १, ज्ञानआत्मा २, चारित्र आत्मा ३, योग आत्मा ४, कपाय आत्मा ५, उपयोग आत्मा ६, दर्शन आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८ ।

८ आठ मदना नाम—कुलमद महावीरवत् १, बलमद दुर्योधनवत् २, जातिमद मेतार्य-ऋषीवत् ३, श्रुतमद थूलिभद्रवत् ४, ठकु-राईमद रावणांरावणवत् ५, रूपमद सन्त् कुमारवत् ६, तपमद द्रुपदीवत् ७, लब्धिमद अषाढभूतवत् ८ ।

८ आठ योगरा नाम—यम १, नियम २, आसन ३, प्राणायाम ४, प्रत्याहार ५, धारणा ६, ध्यान ७, समाधि ८ ।

८ आठ गण नाम—मगण १, नगण २, भगण

३, सगण ४, यगण ५, रगण ६, तगण ७ जगण ८ ।

८ भरतना आठ पाट—आरीसाभवन माहे केवली हुआ आदित्यजसा १. अतिवल २, महाजस ३, वलभद्र ४, वलवीर्य ५, कीर्त्तिवीर्य ६, जलवीर्य ७, डडवीर्य ८ ।

८ श्री सिघरूपी नगरको आठ ओपमा—सम्यक्तरूपी नींव १, क्षमारूपी कोट २, ज्ञानसिज्झायरूपी भूजा ३, जयणारूपी कागरा ४, ध्यानरूपी दरवाजो (पोल) ५, तपरूपी किवाड़ ६, सवररूपी भोगल ७, तीन गुप्तिरूपी खाई ८ ।

८ आठ वोल सीखामण—दान देवे दया पाले ते दानेश्वर १, धर्मरो आचार पाले ते ज्ञानी २, पापसे डरे ते पडित ३, पाच इन्द्री दमे ते शूरवीर ४, कुलन्तण छोड़े ते चतुर ५, सत्तवचन बोले ते सिह ६, परउपकार करे ते

धनेश्वर ७, निर्धनसुं नेह करे ते अखंडित (अखी) ८।

८ दयाधर्मने आठ ओपमा—पहिले डरताने सरणानो आधार तिम भव्यजीवने दयानो आधार १, बीजे चौपदने खुंटानु आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार २, तीजे पंखीने आकाशनो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ३, चौथे तरसीयाने (तृषातुरने) पाणीनो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ४, पांचमे भूखाने अन्नरो आधार, तिम भव्य जीवने दयानो आधार ५, छट्ठे रोगीने औषधीनो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ६, सातमे भूल्याने साथरो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ७ आठमे डुबताने पाटीयानो आधार तिम भव्यजीवने दयानो आधार ८।

८ आठ प्रकाररी लोकरी स्थिति,—आकाश

प्रतिष्ठित वायु १, वायु प्रतिष्ठित उदही (पाणी) २, उदही प्रतिष्ठित पृथिवी ३, पृथिवी प्रतिष्ठित त्रस थावर प्राणी ४, अजीव प्रतिष्ठित जीव ५, कर्म प्रतिष्ठित जीव ६, अजीव जीव सग्रहीत ७, जीव कर्म सग्रहीत ८।

८ आठ बोले जीव धर्म नही पावे, घणो हसे तिको धर्म नहीं पावे १, इन्द्री नोइन्द्री दमें नही तिको धर्म नहीं पावे २, मर्म मोसो बोले तिको धर्म नही पावे ३, श्रावकरा व्रत पच्च-क्खाण निर्मला नहीं पाले तिको जीव धर्म नहीं पावे ४, साधुरा व्रत पच्चक्खाण निर्मल नहीं पाले तिको जीव धर्म नहीं पावे ५, रसरो लोलूपी हुवे तिको जीव धर्म नहीं पावे ६, क्रोधी हुवे तिको जीव धर्म नहीं पावे ७, झूठा बोलो हुवे तिको जीव धर्म नहीं पावे ८।

८ आठांरे विषे उद्यमरो करवो ते भलो छे—आगला पापकर्म खपावाने अर्थ उद्यम करे १, नया पापकर्म नहीं उपार्जे एहवो उद्यम करे २, आगलो सूत्र भणीयो तेहने चितारवारो उद्यम करे ३, नया सूत्र भणावावाने अर्थे उद्यम करे ४, नया शिष्य साखा करवाने अर्थे उद्यम करे ५, छठे आगला शिष्य साखा भणावाने अर्थे उद्यम करे ६, चतुर्विध संघनो कलह मेटवाने अर्थे उद्यम करे ७, तप संयमने विषे वीर्य फोरवाने अर्थे उद्यम करे ८।

८ क्रोध जैसो जहर नहीं १, मान जैसो वैरी नहीं २, माया जैसो भय नहीं ३, लोभ जैसो दुःख नहीं ४, संतोष जैसो सुख नहीं ५, पच्चक्खाण जैसो हेतु नहीं ६, दया जैसो अमृत नहीं ७, साच तथा शील जैसो शरणो नहीं ८।

८ आठ मित्र—जन्मका मित्र माता पिता १, घरमे मित्र धन तथा स्त्री २, देहका मित्र अन्न ३, आत्माका मित्र कर्म ४, रोगिका मित्र औषध ५, संग्राममें मित्र भुजा ६, परदेशमे मित्र विद्या ७, अंतकाल जीवको मित्र श्री भगवान जिनेश्वरदेवरो धर्म ८।

८ आठ बोल श्रावकरा—थोडा बोले १, विचारी ने बोले अथवा काम पड्या बोले २, मीठा बोले ३, चतुराइसु बोले ४, मर्मकारी भाषा न बोले ५, अहंकाररहित बोले ६, सूत्रके न्याय बोले ७, सर्व जीवने संतोषकारी बोले ८।

८ आठ बोल प्रस्तावीक, पापसुं डरे सो पंडित १, दया पाले सो दानेश्वर २, कुलक्षण छोडे सो चतुर ३, धर्म करे सो ज्ञानी ४, इन्द्री दमे सो सूरा ५, परउपकार करे सो पूरा ६, सत्य वचन बोले सो सिंह समान ७ निर्धनसु नेह राखे सो धनवन्त ८।

८ आठ बोल सिखामणका—भगवन्तरो जाप जपीजे १, दया पालीजे २, सत्य वचन बोलीजे ३, शील पालीजे ४, संतोष राखीजे ५, क्षमा कीजे ६, परने दगो न दीजे ७, गुरुके अंकुसमें रहीजे ८।

८ जीवरो अजीव करवा समर्थ नहीं १, अजीवरो जीव करवा समर्थ नहीं २, भव्यजीवको अभव्य करवा समर्थ नहीं ३, अभव्यी जीवको भव्यी करवा समर्थ नहीं ४, एक परमाणुका दो खंड करवा समर्थ नहीं ५, उदय आयां कर्म कोई टालवा समर्थ नहीं आपरा किया आपही भोगवे दूसरे ने वेदावा समर्थ नहीं ६, लोकरी वस्तु अलोकमें जावा समर्थ नहीं ७, एक समय दो क्रिया करवा समर्थ नहीं ८।

८ आठ बोल जीवने उद्यम करवा—भणवारो उद्यम करनो १, सिखो हुवो चितारनेरो

उद्यम करनो २, पाप कर्म खपावनेरो उद्यम करनो ३, पूर्वला कर्म काटनेरो उद्यम करनो ४, अबुझ जीवने प्रतिबोध देवारो उद्यम करनो ५, नव-दिक्षित साधने सिखावनेरो उद्यम करनो ६, तपस्वी बुढा गरडा ग्लानीरी वयापच करनेरो उद्यम करनो ७, चतुर्विध सघमाही क्लेश पड्या मिटानेरो उद्यम करनो ८।

८ आठ बोल धर्मकी शिक्षा—पहले बोले हिंसा न करे, दूजे बोले मर्म छेदन न करे, तीजे बोले पाचों इन्द्रीयाने दमे, चौथे बोले मूल गुण पच्चखान माही दोष न लगावे, पांचमे बोले उत्तरगुण पच्चखान माहे दोष न लगावे, छठे बोले जीभरा रसरो लोलूपी न होवे, सातमे बोले क्रोध न करे, क्षमा करे, आठमे बोले सत्य वचन बोले झूठ न बोले।

८ आठ बोल श्रावकका—पहले बोले श्रावकजी खावे तो गम पीवे भगवतरी वाणी, दूजे

बोले श्रावकजी मारे तो क्रोध, मेले मान, तीजे बोले श्रावक जी देवे तो दान, लेवे भगवंतरो नाम, चौथे बोले श्रावकजी पहरे तो शील, ओढे लज्जा, पांचमे बोले श्रावकजीने आवणो तो साधपणो, जावणो मोक्ष, छठे बोले श्रावकजी छोड़े तो मिथ्यात्व, आदरे सम्यक्त, सातमे बोले श्रावकजी छोड़े तो पाप, लेवे धर्म, आठमे बोले श्रावकजी जाने तो संसारनो स्वरूप आदरे सत्य गुरुरो मार्ग ।

८ आठ प्रकारके श्रावक, अम्मापिइ समाणे— साधुओंके सर्वकार्य आहार पाणी वस्त्र पात्र औषधि प्रमुखकी चिंता रख साता उपजावे और कदाचित् प्रमादवश होकर साधु समाचारीसे चूक जाय तो आंखोंसे देखकर भी, स्नेह रहित न होवे यथा उचित विनय सहित हित शिक्षण देवे सो माता पिता

समान श्रावक १, नाय समाणे—हृदयमे तो साधुओ पर वहुत स्नेह रखे परन्तु विनय भक्तिमे आलस करे और सकट समय यथा योग्य प्राण भोकके साहायता करे सो भाई समान श्रावक २, मित्र समाणे—कोई कारण सर साधुओसे रूस जावे परन्तु अपने स्वजनोसे भी साधुओको अधिक समझे सो मित्र समान श्रावक ३, सव्वति समाणे—अभिमानी, कठिण हृदयी, छिद्र गवेषि, कदास प्रमादवश साधु चूक जाय तो उस दोषको प्रगट करे सो शौक तुल्य श्रावक ४, आय समाणे—साधुओका प्रकाश्या सूत्रार्थ जिसके हृदयमे यथार्थवन्त होवे भूले नहीं सो आदर्श आरीसे काच जैसा श्रावक ५, पडाग समाणे—साधुओके वचनका जिसको निश्चय भरोसा नहीं मूर्खों पाषडियोंके भर-मानेसे जिसका चित्त पताकाकी (ध्वजा)

तरह फिर जावे सो पताका समान श्रावक ६, खाणु समाणे—साधुओंका सद्बोध श्रवण करके भी अपना असत्य आग्रह पकड़ी हुई बातका त्याग न करे सो खीला समान श्रावक ७, खरंट समाणे—हितशिक्षा देनेवाले साधुओंकी निन्दा करे तथा अयोग्य शब्दोंसे अपमान करे कलंक चढावे सो अशुची विष्टा जैसा श्रावक इन ८ में शौक समान और खरंट समान श्रावक मिथ्या दृष्टि है परन्तु साधुके दर्शनको आते हैं इसलिये श्रावक कहे जाते हैं।

॥ इति आठ प्रकारके श्रावक ॥

८ बोल सर्व गुणारो मूल विनय १, सर्व रसरो मूल पाणी २, सर्व धर्मरो मूल दया ३, सर्व कलहरो मूल हांसी ४, सर्व पापरो मल लोभ ५, सर्व रोगरो मूल अजीर्ण ६, सर्व बंधणारो मूल स्नेह राग ७, सर्व मरणारो मल देह ८ ।

८ बोले वीतरागरो धर्म पामें मिथ्यात्व मोहनी पतलि पाडे तो धर्म पामें १, पाच इन्द्री बस करे तो धर्म पामें २, कोईने मर्म मोसो न बोले तो धर्म पामें ३, देसथी व्रत न खडे तो धर्म पामें ४, सर्वथी व्रत न खडे तो धर्म पामे ५, रसरो लोलूपी न हुवे तो धर्म पामे ६, शत्रु मित्र ऊपर समता (सम) भाव राखे तो धम पामें ७, सत्य वचनको सूर वीर हुवे तो धर्म पामे ८।

८ बोले मुक्तिरी प्राप्ति हुवे बारबार सूत्र भणे तो १, भणियोड़ो भूले नहीं तो २, निरतिचार सजम पाले तो ३, आशा रहित तप करे तो ४, धर्मथी डिगताने थीर करे तो ५, नव-दिक्षितने क्रिया सिखावे तो ६, गरडा वुढारी व्यावच करे तो ७, अगिलाण पणे सघ विषे कलह उपसमावे तो ८।

॥ नवमो बोल ॥



६ नव ब्रह्मचर्यनी वाड़--स्त्री, पशु पिंडक(नपुंसक) सहित थानक न भोगवे, जो भोगवे तो मुसा विल्लीको दृष्टांत १, स्त्री कथा करे नहीं, करे तो नींवुको दृष्टांत २, स्त्रीके आसण ऊपर वेसे नहीं, जो वेसे तो पेठने आटा काचरीको दृष्टांत ३, स्त्रीना अंगोपांग निरखे नहीं, जो निरखे तो सूर्य्यको दृष्टांत ४, स्त्री पुरुष विषयादि करता होय उस भींत टाटीके पास नहीं रहे, जो रहे तो मोर गाजरो दृष्टांत ५, पूर्वला काम भोग चितारे नहीं, जो चितारे तो बुढीयाकी छाछको दृष्टांत ६, रस प्रणीत पुष्ट आहार करे नहीं, जो करे तो सन्निपात रोगकुं दूध मिसरीको दृष्टांत ७, मर्यादाथी अधिको आहार करे नहीं, जो करे तो वोदिकोथलीको दृष्टांत ८,

शरीरकी विभूषा करे नहीं, जो करे तो राक हाथे रत्नको दृष्टांत ६।

६ नव प्रकारे रोग ऊपजे--घणो खावे तो रोग ऊपजे १ अजीर्ण ऊपरे खावे तो तथा घणो बैठे तो रोग ऊपजे २, घणो सूवे तो रोग ऊपजे ३, घणो जागे तो रोग ऊपज ४, घणी बडीनीति बाधा रोके तो रोग ऊपजे ५, छोटीनीतिनी घणी बाधा रोके तो रोग उपजे ६, घणो चाले तो रोग ऊपजे ७, अणगमते आसणे बेसे तो रोग ऊपजे ८, वार वार विषय सेवे तो रोग उपजे ६।

६ बोल—कालरो जाण १, बलरो जाण २, खेदरो जाण ३, जातरा मातरारो जाण (यात्रा कहता---सयमरूपी जातरा मातरा कहता -- आहार परमाण) ४, अवसररो जाण५,विनयरो जाण ६, स्वमतरो जाण ७, परमतरो जाण ८, अभिमतरो तथा अभिप्रायरो जाण ६।

९ बोल---मेरुपर्वतसुं मोटो अभयदान १, स्वयं-भूरमणसमुद्रसुं मोटो सत्यवचन २, मीसरी सुं मीठो धर्म ३, चंद्रमासुं निर्मल तपस्या ४, पवनसुं वत्तो मन ५, अग्निसुं मोटी मोहनी ६, तरवारसुं तीखो कडवो वचन ७, धनसुं मोटो संतोष ८, देवलोकसुं मोटो मोक्ष ९ ।

९ बोल--रजपूतने क्रोध घणो १, क्षत्रीने मान घणुं २, गणिकाने (वेश्याने) माया घणी ३, ब्राह्मणने लोभ घणो ४, मित्रने स्नेह राग तथा हेतु घणो ५, शौकने द्वेष घणो ६, जुवारीने शौक घणो ७, चोरनी माताने चिंता घणी ८, कायरने भय घणो ९ ।

९ नव अनंता सिद्धांत मांहे पहिले अनंते अभव्य १, दूजे अनंते पडिवत्तीया २, तीजें अनंते सिद्धनाजीव ३, चौथे अनंते बादर वनस्पती ४, पांचमें अनंते सूक्ष्मवनस्पती ५ छठै अनंते बादरनिगोद ६, सातमें अनंते

सूक्ष्मनिगोद ७, आठमें अनते ससारी जीव ८, नवमें अनते सिद्धिसहित सर्व जीव कर्म ग्र थे मतातर प्ररूपणा छै ६।

॥ दशमो बोल ॥



दश जातरी नारकी क्षेत्रमें वेदना --अनंती-भूख १, अनंती तृषा २, अनती शीत ३, अनती गरमी ४, अनतो रोग (१६ प्रकार मोटा रोग ५, ६८, ६६, ५८४ छोटे रोग) ५, अनतो शोग ६, अनंतो भय ७, अनतो दाघ (दाह ज्वर) ८ अनती खाज ६, अनंतो परवशपणो १०।

दश ठिकाणे दश वाना पाईजे---क्रोध घणो दोय स्त्रीना भर्त्तारने गृह मध्ये १, मान घणो रजपूतरे २, माया घणी भेखधारीने ३, कपट घणो वेश्याने ४, लोभ घणो ब्राह्मणने ५,

शौक घणो जुवारीने ६, सोच घणो चोररी मातारे ७, साच घणो सम्यग दृष्टिने ८, निद्रा घणी धर्मथानके ६; संतोष घणो साधुने १० ।

१० दश प्रकारे बुद्धि वधे---दीर्घ आउखो निर्मल बुद्धियो तेहनी बुद्धि वधे १, वीनीत पुरुषरी बुद्धिवधे २, उद्यमवंतरी बुद्धि वधे ३, इन्द्रियनो-इन्द्रियरा दमणहाररी बुद्धि वधे ४, सूत्र ऊपर अंतरंग राग हुवे तेहनी बुद्धि वधे ५, सखरा कार्यमांहि सावधान थावे तेहनी बुद्धि वधे ६, शंकारहित हुवे तेहनी बुद्धि वधे ७, गुरुनो प्रशंसा करे तेहनी बुद्धि वधे ८, बालभावथी मुकावे तेहनी बुद्धि वधे ६, धर्मने ऊपरे दृढ़ रहे तेहनी बुद्धि वधे १० ।

१० दश जणासुं वाद नहीं कीजे---राजासे १, धनवन्तसे २, बलवन्तसे ३, पक्षपूरारे धणीसे

४, क्रोधीसे ५, नीचसे ६, तपस्वीसे ७, कडावालासे ८ माता पितासे ६ गुरु गुरुणी से १०।

दश प्रकाररा शस्त्र--अग्निरो शस्त्र १, विसरो शस्त्र २ लूणरो शस्त्र ३ खटाईरो शस्त्र ४, चीगटरो शस्त्र ५ ग्वाररो शस्त्र ६, मनरो शस्त्र ७ वचनरो शस्त्र ८, कायारो शस्त्र ६, अव्रतीरो शस्त्र १०।

दश प्रकारे आगे भवने विषे सातावेदनीय शुभ कर्म बांधे---सम्यक्त शुद्ध मन पाले तो साता शुभ कर्म बांधे १, मन वचन कायाना जोग रोके (रु धे) तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे २, इन्द्रिया दमे तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ३ क्षमा करे तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ४, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यावे तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ५, वैयावच्च करे तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ६,

वैरागभाव आणे तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ७, दान शील तप भावना भावे तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ८, सिद्धांत सांभले (सुने) तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ६, समभाव प्रवर्त्ते तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे १०।

१० दश गुरु भक्ति---गुरु आया उभो थावे १, आसण आमंत्रे २, आसण बिछाय देवे ३, कीर्त्ति गुणग्राम करे ४, हाथ जोड़के खड़ा रहे ५, सत्कार दे ६, सन्मान दे ७, आवतांकु लेणे जाय ८, रहियांरी सेवा करे ६, जावे तो पोंचावण जाय १०।

१० दस बोल प्रस्ताविक---एक बालके अग्रभाग मांहि आकास्तिकायकी असंख्याती श्रेणी छे १, एकेक श्रेणी मांहि असंख्याती प्रतर २, एकेक प्रतर मांहि असंख्याता गोला ३, एकेक गोलामांहि असंख्याता शरीर ४,

एकेक शरीरमाहि अनता जीव ५, एकेक जीवमांहि असख्याता प्रदेश ६, एकेक प्रदेश माहि अनती कर्म वर्गणा ७, एकेक कर्म वर्गणामाहि अनता परमाणु ८, एकेक परमाणु माहि अनती वर्ण गध रस फरसनी पर्याय ९, एकेक पुद्गल पर्यायमें अनती अनती केवल ज्ञानकी पर्याय १० ।

० दश बोल पावणा दुर्लभ—मनुष्य अवतार १, आर्यदेश २, उत्तमकुल ३, पाच इन्द्रिय सपूर्ण ४, निरोगीकाया ५, दीर्घआऊखो ६, साधु साधवीकी जोगवाइ ७, धर्मका सुणणा ८, धर्मकी श्रद्धा ९, उद्यमका करणा १० ।

० दशोकी सगती वरजवी—पासत्थाकी १, उसनाकी २, कुसीलियाकी ३, ससत्ताकी ४, आपच्छदाकी ५, नीन्नवकी ६, कदाग्रहीकी ७, अन्य मारगीकी ८, अनीतियाकी ९, वमनगाकी १० ।

० दश बोल महा पापीरा कहीजे--आपरे जीवरी घात करे सो महा पापी कहीजे १, विश्वास दे घात करे सो महा पापी कहीजे २, कीनोड़ा गुण विसरेसो महा पापी कहीजे ३, सुंख लेने कुडी साख भरे सो महा पापी कहीजे ४, हिंसामें धर्म परुपे सो महा पापी कहीजे ५, भरी सभामें झुठ बोले सो महापापी कहीजे ६, रोहीमें दाव लगावे सो महा पापी कहीजे ७, वनस्पती काटे सो महा पापी कहीजे ८, तलावरी पाल काटे सो महा पापी कहीजे ९, गरभ पड़ावे सो महा पापी कहीजे, ए दश मोटा पाप छे १० ।

१० दश बोल वधायां वधे घटायां घटे---क्रोध १, हास्य २, रमत ३, खुराक ४, शोग ५, बुध ६, भय ७, निद्रा ८, अहंकार ९, पंचेन्द्रि विषय सेवन १० ।

१० संठाणके दश बोल भाषानो संठाण वज्रा-

कार सरीखो १, ऊर्द्ध लोकको सठाण उभो मादल सरीखो २, त्रीच्छा लोकनो सठाण झालर सरीखो ३, नीचा लोकनो सठाण त्रापानो ४, आखे लोकनो सठाण नारेलनो ५, अढाई द्वीपनो सठाण कदव वृक्षना फूलनो आकार ६, अढाई द्वीप माहि लातावडानो सठाण पाकी इटनो ७, बाहर लातावडानो संठाण सगडनो ऊर्द्ध भागनो ८, दिशिनो तथा विदिशिनो सठाण मोतीनी माला जेसो ६, रात्रिको संठाण मजुसनो १०।

दसे बोले देवतानो आऊखो बांधे---अल्प कषाय होवे १, विनाशभयाको सोग न करे २, सम्यक्त व्रत होवे ३, धर्मनो रागी होवे व्रतपाले ४, निश्चे दातार होवे ५, महा धर्म-ध्यानी होवे ६, बाल तपस्वी होवे ७, महा कष्ट करे ८, देवगुरुनी भक्तिवन्त होवे ६, सदा धर्मवन्त होवे १०।

१० ज्ञानी पुरुषके १० लक्षण---क्रोध रहित १, वैराग्यवान् २, जितेंद्रिय ३, क्षमावान् ४, दयालु ५, सर्वका प्रिय ६, निर्लोभी ७, दातार ८, भय रहित ९. शोक चिंता रहित १०।

१० दर्शना वरणीय कर्मबंधणके १० कारण---कुदेव १, कुगुरु २, कुधर्म ३, कुशास्त्रकी प्रशंसा करे ४, धर्म निमित्त हिंसा करे ५, मिथ्या बुद्धि रखे ६, चिन्ता अधिक करे ७, सम्यक्तमें दोष लगावें ८, मिथ्याचार धारण करे ९, जानकर अन्यायीकी रक्षा करे १०।

१०. सत्य भाषा १० बोल, १ जणवय सच्चे कहता—जिस देशमें जैसी बोली है वोही सत्य है जैसे पांणीकु पय किसी देशमें कहैं २, समय सच्चे कहता—अनेक शास्त्रोंमें आचार्योंने कही बात—जैसे कादे तथा जलसे उत्पन्न मेंडक सैवाल और कमल

इणोंमें पकज कमल ही माना है यह समय सच है ३, ठवाना सच्चे कहता—स्थापना सत्यका २ भेद है सत्यभाव थापना, असत्यभाव थापना, सत्यभाव थापना चार भुजारी मूरती, चार भुजारो आकार हुवे जिसकी चार भुजा मूरती कहे असत्यभाव थापना गोलमाल पत्थरके तेल सिंदूर लगाय भैरु जी इत्यादि नाम रखे ४, नाम सच्चे कहता—नामादि करके वस्तु जाणनेमें आवे चाहे गुण नहीं हुवे जैसे नाम तो कुलवर्द्धन पर कुलरी वृद्धि करे नहीं ५, रूप सच्चे कहता—रूप है साधूरा पर गुण साधूरा नहीं ६, पडुचीया सच्चे कहता—अनामीका आगुलीकी अपेक्षा मध्यमा बड़ी, बेटेकी अपेक्षा बाप बड़ो बाप की अपेक्षा बेटा छोटा ७, व्यवहार सच्चे कहता—जैसे चूवे पाणी और कहे छत चूवे है गिरता है जल कहे पडनाल पड़ती है ८,

भाव सच्चे कहता—कोयल काली है सूवा हरा है बगुला सफेद है परं निश्चयमें वर्ण पांचही होता है ९, जोग सच्चे कहता—हाथीवाला, पखालवाला, खुमचेवाला इत्यादिक है १०, उपमा सच्चे कहता—उपमा सत्यके चार भेद छती वस्तुने छती उपमा (१), छतीने अछती उपमा (२), अछतीने छती उपमा (३), अछतीने अछती उपमा (४), जैसे पद्मनाभ भगवान्, महावीर, भगवान् सरीखा हुवेगा (१), छतेमें अछती उपमा जैसे नारकी देवतारो आउखो छतो है उस तिणकुं पल तथा सागरकी उपमा अछती है (२), अछतीने छती उपमा ॥ दोहा ॥

पान पड़ंतो इम कहे, सुण तरुवर वनराय।
अबके बीछड़े कब मिलेंगे, दूर पड़ेंगा जाय ॥
तब तरुवर उत्तर दियो, सुन पत्र एक बात।
इस घर एही रीत है, एक आवत एक जात ॥

कब तरुवर मुख बोलीयो, कब पत्र दियो जवाब ।
वीर वखाणी ओपमा, अणुयोग द्वार मझार ॥
अछतेने अछती उपमा घोड़ारा सिग गधे सरीखा गधेरा सिग घोड़े सरीखा ।

मिश्र भापारा दश बोल—उपनमिसीया कहता—आज सहरमें १० जन्म्या १, विघ्नमिसीया कहता—आज सहरमें दश मरया २, ऊपनविघ्नमिसीया कहता—आज सहरमें दश जन्म्या दश मरया ३, जीवमिसीया कहता—लाया तो जीव, उसमाहे अजीव है और कहे कि केवल जीवही जीव उठा भी लाया ४, अजीवमिसीया कहता—लाया तो अजीव उस माहि जीवभी है और कहे केवल अजीवही अजीव उठा लाया ५, जीवाजीव मिसिया कहता—लाया तो जीव अजीव दोनुही उसमे एक ज्यादा वा कम है और कहे कि आधो आध उठा लाया ६,

अंतमिसिया कहता---लाया तो अंत उस मांहि पडत भी है कहै कि केवल अंतही अंत उठा लाया ७, पडतमिसीया कहता---लाया तो पडत उस मांहि अंत भी है और कहै कि केवल पड़तही पडत उठा लाया ८, अथा कहता---दिन तो उग्योही है और कहै कि घड़ी दीन आया या दोय घड़ी दिन आया है संभ्भा तो पड़ी है कहै कि दोय घड़ीरात आय गई है ९, अथवा कहता---दिन तो उग्योही है और कहै कि पहर दिन आया दो पहर दिन आया है संभ्भा तो हुई है और कहै कि पहर रात या दो पहर रात आगई है १०।

१० उत्तराध्ययन सूत्र २४ मां अध्ययनमें उच्चार पासवण खेल जल्ल परिठावणीया सुमतिका दश बोल कहते हैं---उच्चार पासवण कहता द्रव्यथकी जहां कोई आवे नहीं जावे नहीं

शुद्धि पत्र ॥ पाठान्तर ॥

परठागीया सुमतिरा १० बोल ।

१ कोई आवेइ नहीं कोई देखेइ नहीं उठे परठे ।

२ आपरो आत्मा परायेरो आत्मा उपाघात नहीं पामे उठे परठे ।

३ ऊची नीची, तिरछी भोमकामें नहीं परठे ।

४ पोली भोमिकामें नहीं परठे ।

५ तुरतरी अचित भोमकामें परठे ।

६ च्यार अगुल उन्डी अचित भोमकामें परठे ।

७ एक हाथ लम्बी एक चवड़ी अचित भोमकामें परठे ।

८ उन्द्रादिकरा बिल हुवे उठे नहीं परठे ।

९ शहरके नजीक गृहस्थोने दुगन्छा आवे उठे नहीं परठे ।

१० हरा अकुरा वनास्पति, लीलण, फूलण विगेरह हुवे उठे नहीं परठे ।

देखे नहीं वहा परठे १, अपनी आत्मा और दूजाकी आत्मा दुखे नहीं वहा परठे २, पोली जगामें परठे नहीं ३, उची नीची जगामें परठे नहीं ४, चार चार आगुल अचित्त भूमिमें परठे नहीं ५, दो दो हाथ समभूमिमे परठे नहीं ६, ऊन्दरादिकका बिल होवे वहा परठे नहीं ७, त्रस जीवकी उत्पत्ती होवे वहा परठे नहीं ८, हरि वनस्पती और हरा अकुरा होवे वहा परठे नहीं ६, पाच प्रकाररी फूलण होवे वहा परठे नहीं १०।

१० उत्कृष्टा १७० तीर्थंकर होवे जिसमें पाच भरत पाच ऐरवत क्षेत्रमें तीर्थंकर १० होवे तिणके नाम---जम्बूद्वीपके भरत क्षेत्रमे श्री अजीतनाथजी १, ऐरवत क्षेत्रमें श्रीचन्द्रनाथजी २, धातर्क खडके पहिले भरत क्षेत्रमें श्रीसिद्धान्तनाथजी ३ ऐरवत क्षेत्रमें श्रीजय-

नाथजी ४, धातकी खंडके दूसरे भरत क्षेत्रमें श्रीकर्पठनाथजी ५, ऐरवत क्षेत्रमें श्रीपुष्प दंतजी ६, पुष्करार्थ द्वीपके पहिले भरत क्षेत्रमें श्रीप्रभासनाथजी ७, ऐरवत क्षेत्रमें श्रीजयनाथजी ८, पुष्करार्थ द्वीपके दूसरे भरत क्षेत्रमें श्रीप्रभावकनाथजी ६, ऐरवत क्षेत्रमें श्रीबलभद्रस्वामीजी १०।

१० बोल वैयावच्चका---आचार्यनी वैयावच्च १, उपाध्यायनी वैयावच्च २, स्थिवरनी वैयावच्च ३, तपस्वीनी वैयावच्च ४, शिष्यनी वैयावच ५, गीलाणीनी वैयावच्च ६, कुलनी वैयावच्च ७, गणनी—समुदायनी वैयावच्च ८, चउविध सिंघनी वैयावच्च ६, साधर्म्मिनी वैयावच्च १०।

१० दश बोल अढाई द्वीप बाहरे नहीं ते कहे छै--तिर्थंकर नहीं १, काल नहीं २, बादर अग्नि नहीं ३, गाज नहीं ४. विजली नहीं

५, मेह (मेघ) नहीं ६, नटी नहीं ७, सोना रूपारा आगर नहीं ८, नव निधान नहीं ९, चन्द्रमा सूर्यका ग्रहण नहीं १०।

दशविध यति धर्म, खति कहता—क्षमा १, मुत्ति कहता—निलोभी, लोभका त्यागी २, अज्जव कहता—सरलता, कपटाइ रहित ३, मद्दव कहता—मानका त्याग ४, लाघव कहता—हलका ५, सच्च कहता—सत्य बोले ६, सयमे कहता—सयम पाले ७, तप कहता—तपस्याकरे ८, चइए कहता—द्रव्यका त्याग ९, बंभच कहता—ब्रह्मचर्य पाले, १०।

दश बोल असत्य भाषारा—क्रोधरे वश बोले तो असत्य १, मानरे वश बोले तो असत्य २, मायारे वश बोले तो असत्य ३, लोभरे वश बोले ता असत्य ४, रागरे वश बोले तो असत्य ५, द्वेषरे वश बोले तो असत्य ६, हास्यरे वश बोले तो असत्य ७,

भयरे वश बोले तो असत्य ८, मुखरी वचन बोले तो असत्य ९, विकथाकारी वचन बोले तो असत्य १० ।

॥ इग्यारमा बोल ॥

११ मनुष्यका आयुष्य ११ बोले करी बांधे गुरुदेवनी भक्ति करे १, मिथ्यात कर्म न समाचरे २, चाडी चुगली न करे ३, कुकर्मनो उपदेश न देवे ४, जीवनो बंधन न करे ५, दांनवंत होवे ६, घणो आहर न करे ७, सूत्र सिद्धांत भणे भणावै ८, न्याय धर्मेकरी लक्ष्मी मेलवे ९, पर जीवने पीड़ा न करे १०, पर जीवने हित उपगार करे ११ ।

११ इग्यार बोल प्रस्तावीक, समकितरूपी मूल १. धीरजकंद २. विनय वेदिका (चोकी)

॥ शुद्धि पत्र ॥

द्दष्टान्त On Tree

॥ ११ बोल प्रस्तावीकका ॥

१ समकित रूपी – मुल ।
२ धीर्य रूपी – कद ।
३ विन्य रूपी – वेटका (चोकी) ।
४ जस (यस) रूपी – खध (पेड़) ।
५ पाच महाव्रत रूपी – डाला ।
६ भावना रूपी – तचा (छाल) ।
७ अनेक ज्ञान, ध्यान रूपी – कुपल पान
८ अनेक गुण रूपी – फुल ।
९ सील रूपी – सुगध ।
१० अनुना (आश्रव निरोधन) रूपी--फल
११ मोक्ष रूपी – बीज ।

३, जस ४, खंद पाच महाव्रत ५, डा भावना ६, त्वचा न्हाल ज्ञान ध्यान ७, कु सपान अनेक गुण ८, फूल शील ६, सुग उपयोग १०, फल मोक्ष ११, बीज ।

११ इग्यार बोले करी ज्ञान वधे, उद्यम कर १, निद्रा तजे तो २, उणोदरी करे तो अल्प बोले तो ४, पडितरो सग करे तो विनय करे तो ६, कपटरहित तप करे तो संसार असार जाणे तो ८, चोलणा पचोल करे तो ६, ज्ञानवंतने पास भणे तो १ इन्द्रियोना विषय त्यागे तो ज्ञान वधे ११

॥ बारहमो बोल ॥

१२ बारे अङ्गका वर्णन, १ आचारागजी—जिस २ श्रु तस्कध है, प्रथम श्रु तस्कधरा आठ

महा प्रज्ञा नामक अध्ययनका तो साफ विच्छेद हो गया है और बाकीके ८ अध्यायमें छव कायकी हिंसाके कारण और फल लोकका स्वरूप, सम्यक्तका स्वरूप, साधूको परिसह सहन करनेका साहस वगैरा बहुत ही बातों का वर्णन-विस्तारसे किया है दूसरे श्रुत-स्कंधमें साधूको आहार, वस्त्र, पात्र, मकान इत्यादि, लेनेकी विधि, बोलनेकी विधि इत्यादिक साधूका आचार तथा श्रीमान् महावीर स्वामीका जीवन चरित्र है, आचारांगजीके तो १८०० पद थे पदस्वरूप यथा ३२ अक्षर का १ श्लोक, १५०८८६८४० श्लोकका १ पद गिना जाता है अब तो मूलके २५०० श्लोक है; २ सूयगडांगजी—जिसके २ श्रुत-स्कंध है पहिले श्रुतस्कंध १६ अध्ययन है इसमें ३६३ पाखंडियों कुवादियोंका स्वरूप बताकर समाधान किया गया है

श्रीऋषभदेव स्वामीके ९८ पुत्रको उपदेश साधुका आचार नरकके दुःख प्रभूके गुण वगैरा बहुत बातोका वर्णन है दूसरे श्रुतस्कंधके ७ अध्ययन है जिसमें पुष्करणीके कमल पुष्पके दृष्टांतसे मोक्ष ग्रहण करणेकी व्याख्या साधूको आहार लेनेकी बोलनेकी रीति आर्द्रकुमार और गोशालेकी चर्चा गौतमस्वामी और उदक पेढाल पुत्रका संवाद इत्यादिक बातें है सूयगडांगजीके पहिले तो ३६००० पद थे अब तो २१०० श्लोकही रह गये हैं, ३ ठाणांगजी—जिसमें १ ही श्रुतस्कंध हैं और १० ठाणे अध्याय है पहिलेमें एकेक बोल श्रष्टीमें कौन कौनसे हैं और दूसरेमें दो दो यावत् दशमे ठाणेमें दश दश बोलकी व्याख्या है; इसकी चौभंगियोको विद्वान जमाते हैं, तब बहुतही ज्ञानरस पैदा होता है ठाणांगजीके पहिले तो ४२०००

पद थे जिसमेंसे अब सिर्फ ३७७० श्लोक रह गया है; ४ समवायांगजी—जिसमें एक ही श्रुतस्कंध है अध्याय नहीं है इसमें सलंग बंध अनुक्रमें एक दो यावत संख्याते असंख्याते अनंते बोलकी व्याख्या है और ५४ उत्तम पुरुष इत्यादिक अधिकार है १६४००० पदमेंसे अधुना सिर्फ १६६७ श्लोक विद्यमान है; ५ विवहापन्नती भगवतीजी—जिसमें १४० शतक है १००० उद्देशे है इसमें विविध प्रकारके श्रीगौतमस्वामीके पुछे हुवे ३६००० प्रश्न है श्रीगौतमस्वामी स्कंधक सन्यासी ऋषभदत्त मुनि सुदर्शन सेठ शिवराज ऋषि गंगीयाजी, गंगदत्तजी, आनंदजी, कुशलजी, रोहाजी, सुनक्षत्रजी, सर्वानुभूतिजी, सिंहामुनीजी, इत्यादि साधुयोंका और देवानंदाजी, जायवतीजी, सुदर्शनाजी इत्यादि साध्वीयों का, संखजी, पोखलजी, कार्तिकजी सेठ

इत्यादि श्रावकोका, रेवतीजी, सुलसाजी इत्यादि श्राविकायोका तामली गोशाला प्रमुख अन्यमतियोका और सूक्ष्म भगजाल जीव विचार लब्धि विचार इत्यादि बहुत बाबतोका विवेचन है २२८८००० पदमेंसे अयतो फक्त १५७५६ श्लोक विद्यमान है, ६ ज्ञाताजी— जिसके दो श्रुतस्कध हैं पहिले श्रुतस्कधके १६ अध्ययन है जिसमें मेघकुमारका मोरके-इडें का धनासार्थवाहका काछवेका कुवडीका चन्द्रमाका अकिरण देशके घोड़ेका जिन-रक्षित जिनपालका थावचा पुत्रक खधक सन्यासीकी चर्चाका मल्लीनाथ भगवानके छव मित्रोका अरणक श्रावकका रोहिणीका वृत्तका द्रोपदीका कुडरीक पुडरीकका वगैरा दृष्टांतोसे दया सत्य शीलकी पुष्टीकी गई है, दूसरे श्रुतस्कधके २०६ अध्यायमें पुरुषा दाणी श्रीपार्श्वनाथजीकी २०६ पासच्छी

ढीली साध्वीयोंकी कथा है ५५५६००० पदमें साढे तीनक्रोड़ धर्म कथायों इस सूत्रमें पहिले थी जिसमेंसे अब तो फक्त ५५०० श्लोक विद्यमान है ; ७ उपासक दशांगजी— जिसका १ श्रुतस्कंध और १० अध्ययन है इस सूत्रमें १० श्रावकोंका अधिकार है ये १० ही श्रावक श्रीमहावीरस्वामीके शिष्य थे २० वर्ष श्रावक धर्म पालकर जिसमें ५॥ वर्ष घर छोड़ पोषधशालामें श्रावककी ११ पडिमावही है वहां देवताका महाउपसर्ग सहा परंतु धर्मसे चले नहीं प्रथम देवलोकके अरुण विमानमें ४ पल्योपमका आयुष्य भोगवकर एकभवकर मोक्ष पधारेंगे ।

नं०	श्रावकके नाम	गाम	भार्या स्त्री	धन संख्या	गौकुल संख्या
१	आनंदजी	वाणीय ग्राम	शिवानंदा	१२ क्रोड सोनैया	४००००
२	कामदेवजी	चंपानगरी	भद्रा स्त्री	१८ क्रोड सोनैया	६००००
३	चुलणी पीया	बनारसी	सोमा स्त्री	२४ क्रोड „	८००००
४	सुरदेवजी	बनारसी	धन्ना स्त्री	१८ क्रोड „	६००००
५	चूलशतकजी	अलभाया	बहुला स्त्री	१८ क्रोड „	६००००
६	कुंडकोलिया	कंपीलपुरी	पुसा स्त्री	१८ क्रोड „	६००००
७	सकडालपुत्र	पोलासपुर	अग्गामित्ता	३ क्रोड „	१००००
८	महाशतकजी	राजगृही	रेवती आदि १३	२४ क्रोड „	८००००
९	नंदनपीयाजी	सावत्थी	अश्विनी स्त्री	१२ क्रोड „	४००००
१०	तेतली पीया	सावत्थी	फाल्गुनी स्त्री	१२ क्रोड „	४००००

इसके प्रथम तो ११७०००० पद्द थे जिसमें से अब तो फक्त ८१२ श्लोक हैं; ८ अंतगडदशांगजी—जिसका एक श्रुतस्कंघ ८ वर्गके ६० अध्ययन है, पहले वर्गके १० अध्ययनमें अंधकविश्नुजीके १० पुत्रोंका अधिकार है, दूसरे ८ अध्ययनमें वासुदेवजी अक्षोभादिक ८ का अधिकार है, तीसरे वर्ग के १३ अध्ययनमें वासुदेवजीके गजसूकुमारजी प्रमुख ८ पुत्र पांच वासुदेवजीके पुत्रकायों १३ का अधिकार है, चौथे वर्ग के १० अध्ययनमें वासुदेवजीके मयाली आदि ५ पुत्रोंका अधिकार है, ६ सात ७ प्रद्युम्न कृष्णजीके पुत्रोंका ८ प्रद्युम्नजीके अनुरूद्ध कुमारका और समुद्र विजयजीके ६ सत्यनेमी १० द्रढनेमी पुत्रका अधिकार है, ५ वे वर्ग के १० अध्ययनमें कृष्णजीकी सत्यभामा रुक्मिणी प्रमुख ८१ पट्टराणियोंका अधिकार है और

जबकुमारकी मूलश्री मूलदत्ता राणीका अधिकार है, छट्ठे वर्ग के १६ अध्ययनमें मकाइ प्रमुख १३ गाथा पतीयोंका तथा अर्जुनमाली अतिमुक्त एवंता कुमारने गुणरत्न सवच्छर तप किया उनका और अलखराजा का अधिकार है, सातमें वर्ग के १३ अध्ययनमें श्रेणिक राजाकी नन्दाराणी प्रमुख तेरे पट्टराणियोका अधिकार है, आठमें वर्ग के १० अध्ययनमें श्रेणिक राजाकी कालीराणी ने रत्नावली तप किया, सुकाली राणीने कनकावली तप किया, महाकाली राणीने लघुसिंह क्रिडित तप किया, कृष्णराणीने वृद्धसिंह क्रीडित तप किया सुकृष्णा राणी इत्यादिक दश राणियोकी तपस्याका अधिकार है, यों अंतगड सूत्रमें सर्व ६० मोक्षगामी जीवोंका अधिकार है इसके पहिले तो तेइस लाख अट्ठावीस हजार पद थे, जिसमेसे अब

तो सिर्फ ९०० श्लोक रह गये हैं ९ अनुत्त-रोववाइ जिसके तीन वर्ग है, पहले वर्ग के १० अध्ययनमें और दूसरे वर्ग के १३ अध्ययन में श्रेणिक राजाके जालियादिक तेवीस पुत्रोंका अधिकार है. तीसरे वर्गके १० अध्य-यनमें काकंदी नगरीके धनाजी सेठने ३२ स्त्री और ३२ क्रोड सोनेयेका धन छोड़ दिक्षा ले अति दुष्कर तपस्या कर शरीरका दमन किया, ऐसे दश जीवोंका अधिकार है यह तेतीस जणे अनुत्तर विमानमें गये एकभव करके मोक्ष पधारेंगे इस सूत्रके पहले तो चौराणुलक्ष चार हजार पद थे जिसमेंसे अब तो फक्त २९२ श्लोक ही रह गये हैं १० प्रश्न व्याकरणजी जिसके दो श्रुतस्कंध है, प्रथम श्रुतस्कंधमें आश्रव द्वारमें पांच अध्ययनमें हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परीग्रह ये पांच आश्रव निपजनेके कारण

और उनके फलका अधिकार है, दूसरे श्रुत-स्कधके सवर द्वारके ५ अध्ययनमें दयाके ६० नाम सत्य अदत्त ब्रह्मचर्य अममत्व इन पाचोंके भेद और गुण बताये है इसके पहले तो ६३११६०००=पद थे जिसमेंसे १२५० श्लोक ही रह गये हैं ११ विपाकजी जिसके दो श्रुतस्कध है---पहले श्रुतस्कंध दुःख विपाक जिसमें मृगालोढा प्रमुख दश महापापी जीव पाप कर घोर दुःख पाये जिसका अधिकार है और दूसरा सुख वि-पाक जिसमें सुबाहु प्रमुख दश जीव दान, पुण्य, तप, सयम, कर आगे अत्यंत सुखपाये जिसका अधिकार है, इसके पहले तो एक क्रोड़ चौरासीलाख पद थे और एकसोदश अध्ययन थे अबतो १२१६ श्लोक ही है यह ११ सूत्र तो यत्किञ्चित भी विद्यमान है कितनेक ऐसा कहते हैं कि इग्यारे अग

पहिले थे जितनेही अब है जिस जिस ठिकाण जाव शब्दसे अन्य शास्त्रोंकी भलामणादी है वो समास सब मिलावो तो बराबर हो जावे, १२ दृष्टीवादजी जिसमें पांच वत्थु वस्तु थी पहिली वत्थुके ८८ लाख पद थे दूसरीके एक क्रोड़ ८१ लाख ५ हजार पद थे तीसरी वत्थुमें चौदह पूर्वकी समावेस होता था, सो चौदह पूर्वका ज्ञान १ उत्पाद पूर्व---इसमें षट् द्रव्यका ज्ञान था इसकी दश वत्थु और ११ लाख पद थे २ अगणीय पूर्व—इसमें द्रव्यगुण पर्यायका वर्णन था इसकी चार वत्थु और बाइस लाख पद थे, ३ वीर्यप्रवाद पूर्व—इसमें सर्व जीवके बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रमका वर्णन था इसके आठ वत्थु और चौवालीस लाख पद थे, ४ आस्ती नास्ती प्रवाद पूर्व---इसमें शास्वती अशास्वती वस्तु का स्वरूप था इसकी सोले वत्थु और अठास

॥ शुद्धि पत्र ॥

१४ पूर्वके ज्ञानकी पद सख्या लिखते ।

१ उत्पाद पूर्व १ कोड़ पद ।
२ अग्राणीय पूर्व ६६ लाख पद
३ वीर्य प्रवाद पूर्व ७० लाख पद
४ अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व ६० लाख पद
५ ज्ञान प्रवाद पूर्व १ कोड पदमें १ पद उणो ।
६ सत्य प्रवाद पूर्व १ कोड़ ६ पद ऊपर
७ आत्म प्रवाद पूर्व २६ कोड पद
८ कर्म प्रवाद पूर्व १ कोड ८० हजार पद
९ विद्या प्रवाद पूर्व १ कोड १५ हजार पद
१० प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व ८४ लाख पद
११ प्राण प्रवाद पूर्व १ कोड ५६ लाख पद
१२ अवझाण (अवध्य) प्रवाद पूर्व २६ कोड पद ।
१३ क्रिया विशाल पूर्व ९ कोड पद

प्रवाद पूर्व—इसमें आत्माके कल्याण होणकी तप संयमकी वातें थी इसको दश वच्छू और अडतालीस क्रोड़ चौसठ लाख पद थे, १२ प्राण प्रवाद पूर्व---इसमें चारसे लगाकर दश प्राणके धरणहार प्राणियोंका वर्णन था इसकी दश वच्छू और सत्ताणु क्रोड़ अठाइस लाख पद थे, १३ क्रियाविशाल पूर्व—इसमें साधु श्रावकका आचार तथा पच्चीस क्रियाका वर्णन है दश वच्छू और एक कोड़ा कोड़ी और एक क्रोड़ पद थे, १४ लोकविंदूसार पूर्व---इसमें सर्व अक्षरोंका सन्नीपात उत्पत्ति और सर्व लोकके सार सार पदार्थोंका वर्णन था इसकी १० वच्छू और दो क्रोड़ा कोड तीन क्रोड़ दशलाख पद थे ऐसा कहा जाता है कि पहिला पूर्व एक हाथी डुबे जितनी स्याईसे दूसरा दो हाथी डुबे जितनी स्याईसे तीसरा चार हाथी डुबे

जितनी स्पाईसे यों दूणे करते करते चौदवां पूर्व ८१९२ हाथी डुबे जिननी स्पाईसे लिखा जाता था चौदह पूर्वका ज्ञान लिखने में १६३८२ हाथी डूबे जितनी स्पाई लगती है दृष्टिवादागकी चौथी वच्छूमे छव वाते हैं पहिली बातके ५ हजार पद और दूसरी, तीसरी, चौथी, पाचमी, और छट्ठीके जुदे जुदे वीस क्रोड़ इठाणुलाख नव हजार दोसौ पद थे, दृष्टिवादकी पाचमी वच्छूको चुलका कहते हैं जिसके दशक्रोड़ उगणसठलाख छियालीस हजार पद थे, इतना वड़ा दृष्टि-वाद अगका विच्छेद होनेसे जैन धर्ममे ज्ञानको बड़ा जबर धक्का लगा है, जिस वक्त ये वारे अग पूर्ण थे उस वक्त उपाध्यायजी इनके पुर्ण जाण होते थे अब इग्यारह अग जितने रहे हैं उणके जाण हुवे उनको उपाध्यायजी कहना इति अगविचार सपूर्णम्।

साधूजीकी औपमा, गाथा---

उरगगिरी जलनसागर नहतल तरुगण समोय जो होइ, अमरमिय धरणिजलरुह रविपवन समोय तोसमणो ।

अर्थः—१ उरग कहतां, सर्प जैसा साधू गृहस्थने अपने निमित निपजाया स्थानक, स्त्री, पशु, पिंडक रहित होवे उसमें मालिककी आज्ञासे रहै, २ गिरी कहता, पर्वत जैसे साधु हुवे जैसे पर्वत हवाकरके कंपायमान न हुवे तैसे साधु परीसह उपसर्गे कंपायमान न हुवे धूजै नहीं, ३ जलण कहता, अग्नि जैसे साधु होवे जैसे अग्नि इन्धन तृण काष्ठादि करके तृप्त न हुवे तैसे साधु ज्ञानादि गुण ग्रहण करते तृप्त न हुवे, ४ सागर कहता, समुद्र जैसे साधु होवे समुद्र की तरह गंभीर समुद्र मर्यादा उल्लंघे नहीं ऐसे साधु तीर्थंकरकी आज्ञा उल्लंघे नहीं, ५

महतल कहता, आकाश जैसे साधु होवे आकाशकी तरह निर्मल है जैसे आकाश स्तंभादि आधार रहित तैसे साधु भी गृहस्थादिकका आश्रय रहित हुवे,६ तरुगण कहता, वृक्ष जैसे साधु होवे जैसे वृक्ष शीत तापादि दुःख सहकर आश्रितों (मनुष्य, पशु, पक्षी यादि) को शीतल छायासे आराम सुख देवे तैसे साधु छवकाय जीवको आश्रयभूत सद्बोधादिसें सुख दाता होवे, ७ भ्रमर जैसे साधु होवे जैसे भमरा रस ग्रहण करता हुवा फुलको पीड़ा दुःख न ऊपजावे तैसे साधु आहार आदि ग्रहण करते दातारको पीडा कष्ट न देवे, ८ मिय कहता हिरण जैसे साधु होवे जैसे हिरण सिंहसे डरे तैसे साधु पापसे डरे, ९ धरणी कहता पृथ्वी जैसे साधु होवे जैसे पृथ्वी शीत ताप छेदन भेदनादि-स्पर्श-समभावसे सहे तैसे साधुजी परिसह उपसर्ग

समभावसे सहे १० जलरुह कहता, कमल पुष्प जैसे साधु होवे जैसे कमल कादवसे उत्पन्न हुवा और पाणी करके वृद्धिपाया परंतु पुनः उसे लेपाय नहीं तैसे साधु काम करके उत्पन्न हुवे और भोग करके बड़े हुये परंतु पीछे काम भोगकर लेपाय नहीं, ११ रवि कहता, सूर्य्य जैसे साधु हुवे जैसे सूर्य्य अपने तेज करके जगतके सर्व पदार्थोंको प्रकाशे, प्रगटकरे तैसे साधु जीवादि नव पदार्थोंका यथार्थ स्वरूप भव्योंके हृदयमें प्रकाश करे, १२ पवन कहता, हवा जैसे साधु होवे हवा माफिक सर्व स्थान गमन है और वायुकी गति खलायमान (खंडन) न होवे तैसे साधु सर्व स्थान विहार करे तथा स्वइच्छाचार विहार करे।

२ श्रीअरिहंतजीके १२ गुण—१ अनंतज्ञान, २ अनंत दर्शन, ३ अनंत चारित्र, ४ अनंत

तप, ५ अनत बलवीर्य, ६ अनत चायर्क सम्यक्त, ७ वज्र ऋषभ नाराच सघयण, ८ समचो रस सस्थान, ६ चौतीस अतिशय, १० पैंतीस वाणी गुण, ११ एक हजार आठ उत्तम लचण, १२ चौसठ इन्द्रके पूज्यनीक।

उपयोग बारे कहा कहा पावे--उपयोग सिद्धा में पावे १, दोय उपयोग तेरमें चवदमें गुण ठाणे पावे २, तीन उपयोग पाच स्थावरमें पावे ३,चार उपयोग चोरेंद्री पर्याप्ता पावे ४, पाच उपयोग बेरेंद्री तेरेंद्रीमे पावे ५, छव उपयोग चोरेन्द्रीमें तथा श्रावकमें पावे ६, सात उपयोग सामायिक छेदोपस्थापनीय परिहार विशुद्ध सुक्ष्म सपराय चारित्रमें पावे ७, आठ उपयोग बाटेवहता सिद्ध गतियामें नारकी जीवमें अथवा अचर्ममें पावे ८, नव उपयोग देवता यथाख्यात चारित्रमें पावे ६,

दश उपयोग छद्मस्थमें पावे १०, इग्यारे उपयोग संयत्तीरे अलद्धीयेमें पावे ११, बारे उपयोग समुच्चय जीवमें पावे १२ ।

२ बोल बलरो प्रमाण—बारह पुरखारो बल एक गधामें १, दश बलदांरो बल एक घोड़ामें २, बारह घोड़ारो बल एक भैंसामें ३, पांचसो भैंसारो बल एक हाथीमें ४, पांचसो हाथीरो बल एक सिंहमें ५, पांचसो सिंहरो बल एक अष्टापदमें ६, दश अष्टापदरो बल एक बलदेवमें ७, दो बलदेवरो बल एक वासुदेवमें ८, दो वासुदेवरो बल एक चक्रवर्त्तीमें ९, एक करोड़ चक्रवर्तिरो बल एक सामानिक देवतामें १०, एक कोरोड़ सामानिक देवतारो बल एक इन्द्रमें ११, अनंता इन्द्ररोबल भगवंतनी चिटुली अंगुलीमें १२ ।

॥ अथ बारे भावना भाषामें कहते है ॥

पहेली अनित्य भावना ।

राजा राणा छत्रपति, हाथिनके असवार ।
मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी बार ॥

ऐसा विचार करे कि इस जगतमें ग्राम, नगर, पुर, पैठाण कोट, खाई, बाग, बगीचे निवाण, महेल, हवेली, दूकान, मनुष्य, कुटुंब, परिवार, न्याती, गोती, पशु, पक्षी, धन, धान्य, आभूषण, इत्यादिक सर्व वस्तु अनित्य असाश्वती है, परन्तु हे जीव ! तु मुढपणेसे इनको नित्य साश्वती मान बैठा है, पर पुद्गलोसें शरीरकी घरकी शोभा बनाके तुं खुशी मानता है, सो यह शोभा कभी एकसी रहनेवाली नहीं है। (ऐसी अनित्य भावना, श्री भरतेश्वर चक्रवर्त्तीने भाइथी) ॥१॥

दूसरी अशरण भावना ।



दल बल देई देवता, मात पिता परिवार ।
मरती बिरियां जीवको, कोइ न राखन हार ॥

ऐसा विचार करै कि, रे जीव ! इस जगत में तेरेको शरण (आधार) का देनेवाला कोई नहीं है, सब स्वजन स्वार्थके सगे हैं, जब तेरे अशुभ कर्म उदय होंगे तेरे पर दुःख आके पड़ेगा तब तुझको सहायकर्त्ता कोई भी नहीं होगा (ऐसी अशरण भावना, अनाथी निग्रंथ ने भाईथी) ॥२॥



तीसरी संसार भावना ।



दाम विना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान ।
कहूँ न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान ॥

ऐसा विचार करे कि, रे जीव। तु अनत जन्म मरण कर सर्व ससारमे फिरा, बालाग्र जितना भी ठिकाणा खाली नहीं रखा, सर्व जीवोंके साथ सगपण (सवध) कर चुका माता मरके स्त्री, और स्त्री मरके माता पिता के पुत्र और पुत्रके पिता ऐसे आपसमें अनत वखत सवध हो गया, सर्व जगत्वासी जीव स्वजन है, परन्तु शत्रु कोई नहीं है इस लिये सबके साथ तु मित्रता रख (ऐसी ससार भावन मल्लिनाथजीके ६ मत्रियोने तथा धन्ना शाली भद्रजीने भाई थी) ॥३॥

॥ चौथी एकत्व भावना ॥

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
यों कबहूँ या जीव को, साथी सगा न कोय।

ऐसा विचार करे कि रे जीव। इस जगतमें

कोई किसीका सोबती नहीं है, अकेला आया और अकेलाही जायगा, जो पाप करके तेने धन कुटुंबका संग्रह किया है, सो मरेगा जब धन धरतिमें, पशु घरमें रह जायगा, स्त्री दरवाजे तक, और कुटुंब श्मशान तक ही आयगा, अत्यंत प्रिय यह शरीर चित्ता (अग्नि) में जलके भस्म हो जायगा, ऐसा जाण तु एकांतपणा धारण कर, (ऐसी एकांतभावना, नमीराय ऋषिने भाई थी) ॥४॥

॥ पांचमी परपंख भावना ॥

जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपना कोय ।
घर संपति पर प्रकट ये, पर हैं परिजन लोय ॥

ऐसा विचार करे कि, रे जीव ! इस जगतमें सब स्वार्थी (मुतलबी) है, उनका मुतलब होता है, वहां तक, सब जी जी, खमा

खमा, करते हैं, हुकम उठाते (मानते) हैं, मुतलब पूरा हुवे बाद सब सज्जन दूर भग जाते हैं, परन्तु कोई किसीका नहीं होता है (ऐसी परपख भावना मृगापुत्रने भाई थी) ॥५॥

छठी अशुची भावना।

दिपे चाम चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह।
भीतर या सम जगतमे, और नहीं घिन गेह ॥

ऐसा विचार करे कि, रे जीव ! तूं तेरे शरीरको स्नान मज्जनादिकसे शुद्ध करनेको चाहता है, लेकिन यह शरीर कभी शुद्ध नहीं होगा, क्योंकि इसकी उत्पतिका जरा विचार करके देख कि अव्वल माताका रक्त और पिताका शुक्र (वीर्य) का आहार कर यह शरीर बना था, अशुची (विष्टा) के स्थानमें

वृद्धि पाकर रक्तके नालेमेंसे बाहिर पड़ा, और माताका दूध पीकर बड़ा हुआ। सो दूध भी जैसे रक्त (लोही) मास शरीरमें रहता है, तैसाही ये दूध है, और अभी अनाज खाता है सो भी अशुचीके खातेमें पैदा होता है।

अब तेरे शरीरके अन्दरके पदार्थोंका जरा विचार कर, इस शरीरमें ७ कला हैं :—१ मांस, २ लोही, ३ मेद, इन तीनोंके बीचमें तीन भिली है सो, ४ कृतफिये के वीच एक भिल्ली, ५ आंतोके बीच एक भिली, ६ पेटमें जठराग्नि को धरनेवाली एक भिली, ७ वीर्यको धरनेवाली एक भिली। इस शरीरमें सात आसय (स्थान) हैं। १ हृदयमें कफका स्थान, २ हृदयके नीचे आमका स्थान, ३ नाभी उपर डावी बाजु जठराग्निका स्थान (अग्नि पर तिल है,) ४ नाभीके नीचे पवनका स्थान, ५ पवनके स्थानके नीचे पेडुमें मल (विष्ठा) का स्थान,

६ पेडु के जरासा नीचे मुत्रका स्थान (इसे वस्ती कहते हैं,) ७ हृदयके कुछ उपर जीवका और रक्त (लोही) का स्थान, स्त्रीको ३ स्थान जास्ती है —१ गर्भस्थान और २ दूधस्थान (स्तन)-३ यों स्त्रीके १० स्थान हुए।

इस शरीरमें ७ धातु है, १ रस, २ लोही, ३ मास, ४ मेद, ५ हाड, ६ मींजी, ७ शुक्र, जो आहार करता है सो पित्तके तेजसे पककर पहिले चार दिनमें उसका रस होता है, फिर चार दिनमें उस रसका लोही होता है, यों चार चार दिनके अंतर से एकेक धातूपणे प्रगमता प्रगमता एक महीनेके अंदर शुक्र होता है।

सात उपधातू —(१—२—३) जीभका, नेत्रका, और गलेकामेल रस की उपधातू, ४ कानका मेल मांसकी उपधातू, ५ वीस ही नख हाडकी उपधातू, ६ आखका गीड मींजी

की उपधातु, ७ मुखके उपरकी चिकणाइ शुक्रकी उपधातू ।

मांस रुप जो धातु है उसे 'वसा' तथा 'ओज' कहते हैं, यह घृत जैसा चिकणा होता है, सर्व शरीरमें रम रहता है, यह शीतल और पूष्टीका कर्ता बलवान है ।

७ त्वचा (चमडी) १ भामनी नामे उपर की त्वचा चिकणी है, सो शरीरकी विभूषा (शोभा) करनेवाली है, २ लालरंगकी त्वचा उसमें तिल आर्य पैदा होता है, ३ श्वेत त्वचा उसमें चर्म दल रोग पैदा होता है, ४ तांबेके रंग जैसी त्वचा उसमें कोढ रोग पैदा होता है, ५ छेदनी त्वचा उसमें अठारह प्रकारके कोढ पैदा होता है, ६ रोहणी नाये त्वचा उसमें गुमड़े गंडमाला प्रमुख रोग पैदा होता है, ७ स्थुल त्वचा, उसमें बीद्रधी रहते हैं।

तीन दोषका स्वरुप—१ वात (वायू), २

पित्त, ३ कफ, इन तीनोको कोई तीन दोष और कोई तीन मेल कहते हैं।

१ वायू शरीरमें सर्व ठिकाणे वस्तुओंका विभाग करता रहता है। यह सुक्ष्म, शीतल, हलका और चञ्चल होता है, यह नसे रुप नल करके जो वस्तु खानेमें आती है,उसको ठिकाने पहुचाता है, इसके पाच स्थान हैं—१ मलका स्थान २ कोठा (पेट) ३ अग्नि स्थान ४ हृदय ५ (पाचवा) कंठ, इन पाच ठिकाने रहता है। १ गुदामें रहता है उसे अपान वायू कहते हैं, २ नाभीमें रहता है उसे सामान्य वायू कहते हैं, ३ हृदयमें रहता है उसे प्राणवायू कहता है, ४ कंठमें रहता है उसे उदान वायू कहते हैं, ५ (पाचवा) सर्व शरीरमें रहना है उसे व्यान वायू कहते हैं। इस प्रकृति वालेके लक्षण—केश छोटे, शरीर दुर्बल सुवास लिये होता है, इसका मन चञ्चल

रहता है, वाचाल होता है, और इसको आकाशमें उड़ने के स्पन्न आते हैं इसे रजोगुणी कहते हैं।

२ पित्त गरम, पतला, पीला, कड़वा, तीखा, दग्ध होनेसे खट्टा हो जाता है, यह पांच ठिकाणे रहके पांच गुण करता है, १ आसयमें तिल जितना अग्निरूप होकर रहता है यह अग्नि पांच प्रकारकी, १ मंदाग्निसे कफ, २ तिच्चणाग्निसे पित्त, ३ विषमाग्निसे वात, ४ समाग्नि श्रेष्ट, ५ विगमाग्नि नेष्ट, २ त्वचासे रहकर कांती करता है, ३ नेत्रमें रहकर वस्तुको देखाता है, ४ प्रकृतिमें रहकर वस्तुको पाचन कर खाये हुयेका रस लोही बनाता है, ५ हृदयमें रह बुद्धि उत्पन्न करता है, इसके ५ नाम हैं—१ पाचक, २ भ्रंजक, ३ रंजक, ४ अलोचक, ५ साधक इसकी प्रकृतिवालेके लक्षण जवानीमें श्वेत बाल होवे बुद्धिमान

होवे, पसीना बहुत आवे क्रोधी होवे, और स्वप्नमें तेज देखे, इसे तमोगुण कहते हैं ।

कफ चिकणा, भारी, श्वेत, शीतल, मीठा होता है, दग्ध हुए खरा हो जाता है,-इसके पाच स्थान—१ आसयमें, २ मस्तकमें, ३ कंठमें, ४ हृदयमें, ५ सन्धीमें, यह पाच ठिकाने रह स्थिरता कोमलता करता है, इसके पाच नाम—१ क्लेदन, २ स्नेहन, ३ रसन, ४ अवलबन, ५ गुरुत्व, कफकी प्रकृतिवालेके लक्षण गभीर, मद बुद्धि होता है, शरीर चिकणा, केश बलवान, और स्वप्नमें पाणी देखे, इसे तमो गुण कहते हैं ।

और भी इस शरीरमें मांस, हाड, मेद, इनको बाधनेवाली जो नसे हैं उनको स्नायु कहते हैं, यह शरीर हड्डीयोके आधारसे खड़ा है जिसको आधार इनका ही हैं, इस देहमें सबसे बड़ी सोलह नसे हैं, उनको करड कहते

हैं, यह शरीरको संकोचन प्रसारन शक्ति देते हैं।

संरंधाका स्वरूप—कानके दो, नाकके दो, आंखके दो, यह ६, ७ जनेन्द्रि, ८ गुदा, ९ मुख यों ९ छिद्र पुरुषके और स्त्रीके १ गर्भाशय, और दो स्तन, यह ३ जास्ती, यों ११ छिद्र हैं और छोटे छिद्र तो अनेक हैं। नाभीके डावी तरफ जो आशयके ऊपर तिल है सो पाणीको ग्रहण करनेवाली नसका मूल है, इससे ही प्यास (तृषा) शांत होती है, और कूंख (पेट) में जो दो गोले हैं, व जठरके मंदको तेज करते हैं, इस शरीरमें सर्व कोठे ७२ हैं, जिसमें छव कोठे बड़े हैं, जिसमेंसे शीतकाल (सियाले) में तीन कोठे आहारके, दो कोठे पाणीके और एक कोठा खाली श्वासो श्वासको रहता है। ऐसेही ग्रीष्म ऋतुमें दो आहारके तीन पाणीके एक श्वासो श्वासका खाली रहता है, ऐसेही

चौमासे (वर्षाऋतु) में अढाइ कोठे आहार के, अढाइ पाणीके, एक खाली रहना है।

इस शरीरमें संधी साठ है, पच्चीस पल प्रमाणे कालजो हैं। दो पल प्रमाणे आख है, तीस टाग प्रमाणे शुक्र है, एक आढा लोही है, आधा आढा चर्बी है, सिर (मस्तक) की भेजी एक पाथा, मूत्र एक आढा, विष्ठा एक पाथा, पित्त एक कलव, और श्लेष्म एक कलव, इस प्रमाणे शरीरमे है * जो इससे ज्यादा हो जाय तो रोग पैदा होवे, और कमी होवे जाय तो मृत्यु निपजे।

एकसो साठ नाड़ी नाभीके उपर यह रसको धरनेवाली है, एकसो साठ नाड़ी नाभीके नीचे एकसो साठ त्रीछी, हाथ प्रमुखमें

---

* ८ सरसवका १ जव, ४ जवकी १ रत्ती, ६ रत्तीका १ मासा, ४ मासामी १ टाक, ८ टाकका १ पैसा, २ पैसको १ पल, ४ पलका १ पाव, ४ पावका १ सेर, ४ सेरको १ पाथा, ४ पाथा की १ द्रोण।

लपटी, एकसो साठ नाड़ी नाभीके नीचे गुदेको वींट रही है, पच्चीस नड़ी श्लेष्मको पच्चीस पित्तको, दश शुक्रको धरनेवाली है, यों सर्व नाड़ी ७०० हैं ।

इस शरीरके दो हाथ दो पग, यों चार शाखा एकेक शाखामें तीस तीस हड्डी, यह १२० हुई, ५ जीमणी कमरमें और ५ डाबी कमरमें, चार भग (योनी) में और चार गुदामें, एक त्रीकनमें, वहत्तर दोनों पसवाड़े में , तीस पीठमें, आठ हृदयमें, दो आंखमें नव ग्रिवामें चार गलेमें, दो हडवचीमें, ३२ दांत, एक नाकमें, एक तालुवेमें सर्व ३०० हड्डी हुई ।

इस शरीरमें साढ़े तीन क्रोड़ रोम हैं जिसमेंसे दो क्रोड़ एकावन लाख रोम गलेके नीचे, और निन्याणव लाख गलेके ऊपर है, और एक एक रोममें पौणी दो दो रोग माठरे

(कुछ कम) भरे हुए हैं, जिसमें भी जलधर भगदरादिक १६ रोग मोटके (वड़े) भरे हुए हैं, इत्यादि अशुची (अपवित्रता) से और आधी (चिंता) व्याधी (रोग) उपाधी (काम कार्य) करके यह शरीर पूर्णभरा है, जहां तक पूर्ण पुण्य है वहां तक सर्व अपवित्रता छिपी हुई है, इसे गोरी काली चमडी ढाक रही है, जब अशुभ पाप कर्म उदय (प्रगट) होवेगा तब विगड़ते किंचित् ही देर नहीं लगेगी (ऐसी भावना सनतकुमार चक्रवर्तीने भाईथी) ॥६॥

॥ सातमी आश्रव भावना ॥

मोह नींद के जोर, जगवासी घूमें सदा ।
कर्म चोर चहुँ ओर, सब लूटे नहीं दिशता ॥

ऐसा विचारे कि, रे- जीव । तेने अनत

संसार परिभ्रमण किया, इसका मुख्य हेतु आश्रव ही है, क्योंकि पाप तो इस जीवने अनंत वस्त छोड़ा, परन्तु आश्रव छोड़े विन धर्म पूर्ण फल नहीं दे सकता । आश्रव २० प्रकारके हैं परन्तु यहां मुख्यमें अव्रतका अर्थात् उपभोग (जो एक वस्त भोगनेमें आवे आहार पाणी प्रमुख) परिभोग (एक वस्तु वारम्बार भोगनेमें आवे, वस्त्र भूषण प्रमुख) और भी धन, धान्य, भूमि इत्यादिककी मर्यादा नहीं करना, इच्छाका निरुंधन नहीं करना, सोही आश्रव इस भवमें महा तृष्णा रूप सागरमें गोते खिलाता है, और आगे भी दुर्गतिमें अनंत काल विटंवणा देनेवाला होता है, ऐसा जाण रे जीव! अब तो आश्रव छोड़ और व्रत अंगिकार जरूर कर, (यह आश्रव भावना समुद्रपालजी ने भाईथी) ॥ ७॥

॥ आठमी सवर भावना ॥



सतगुरु देव जगाय, मोह नींद जब उपशमे ।
तब कुछ बनै उपाय, कर्म चोर आवत रुकें ॥



ऐसा विचार करे कि रे जीव। ससारमें रुलानेवाला आश्रव है, जिसको रोकनेका उपाय एक संवर ही है, इस लिये अब तो कायिक (काया) वाचित (वचन) मानसिक (मन) की इच्छाको रुधन कर एकान्त समता रूप धर्ममें लीन हो, अर्थात् जीवरूप तलावमें कर्मरूप नालेसे, अव्रत रूप पाणी आ रहा है, उसको सवर (व्रत) रुप पाल बाधके आश्रवको रोक ले (यह सवर भावना हरिकेशीजी महाऋषि ने भाई थी) ॥ ८ ॥



॥ नवमी निर्जरा भावना ॥



ज्ञान दीप तप तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर।
या विधि विन निकसे नहीं, पैठे पूरब चोर॥
पंच महा व्रत संचरण, समिति पंच परकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार॥



ऐसा विचार करे कि रे जीव! संवरसे तो आते पापको रोक (बंध कर) दिया, परन्तु पहले किये हुए पापको खपाने वाली तो एक निर्जरा (तपश्चर्या) ही है, छव बाह्य, छव अभ्यन्तर, बारह प्रकारका तप, इसलोक पर-लोकके सुखके रूपकी या कीर्तिकी बांच्छा रहित एकांत मोक्षार्थी हो कर करे तो तेरा कल्याण होवे अर्थात् जीवरूप कपड़ेको कर्म्मरूप मैल लगा हुवा है, इनको संवररूप साबुन लेकर तपरूप पाणीसे धो, सो तेरेको मोक्षरूप

अविचल सुखकी प्राप्ति हो जावे, (यह निर्जरा भावना अर्जुन माली ने भाई थी) ॥६॥

दसमी लोकसंठाण भावना।

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान।
तामें जीव अनादितें, भरमत है बिन ज्ञान ॥

ऐसा विचार करे कि रे जीव। इस लोकका संठाण कैसा है, जिसका तू विचार करके देख तीन दीवे जैसा इस लोकका संठाण (आकार) है। जैसा कि एक दीवा उलटा जिसपर दूसरा दीवा सीधा। और उसपर तीसरा दीवा उलटा रखनेसे जैसा आकार होता है, वैसा इस लोकका आकार है, सर्व लोकका घनाकार ३४३ राजुका है, इस लोकके मध्य भागमें

(जैसा मकानके बीचमें एक पोकल स्थंभ होता है तैसा) एक राजुकी चौडी और १४ राजुकी लंबी एक ऐसी त्रस नाल है, उसके अंदर त्रस और स्थावर जीव भेले भरे हुवे हैं, और इसके बाहिर बाकी सब लोकमें स्थावर जीव ही खिंचोखिंच भरे हुए हैं, तो रे जीव! तुं अनंत बखत् इस लोकके विषे त्रस थावरपणे, सूक्ष्म बादरपणे, सन्नी असन्नीपणे पर्याप्ता अपर्याप्तापणे, नारकी तिर्यंचपणे मनुष्य देवतापणे, जन्म मरण करके सब लोक फरस लिया, ऐसी कोई जगह लोकके अन्दर नहीं रही कि जिस ठिकाणे तूं जन्म मरण नहीं किया हो, अर्थात् (एक बालाग्रह रखे उतनी जगा लोक में खाली नहीं रखी) ऐसा जानकर रे जीव— अब तो ऐसी जगा देखनेकी इच्छा कर के जहां जन्म मरणादि कष्टकी उत्पत्ति न होवे, और पुनर्पि संसारसागरमें परिभ्रमण करनेका काम

न पड़े, ऐसा स्थान (ठिकाणा) कहा है कि, लोकके अग्रभागके ऊपर अर्थात् स्वार्थसिद्ध विमानसे बारह योजन ऊपर ४५ लाख योजन की पूर्ण चक्राकार समान गोल और छत्राकार, मध्यमें ८ योजनकी जाडी, और आखरी किनारे पर मक्खिके पखसे भी पतली, मख्खनवत् चीकनी, अर्जुन स्वर्णमय सफेद, ऐसी सिद्धसिला है। जहा एक कोसके छट्ठे भागके ऊपर-अनते सिद्ध भगवत विराजते हैं, वहा कोई प्रकारका कष्ट नहीं है, इस लिये वहा जानेकी तु भी इच्छा कर, और ज्ञान दर्शन चारित्र तप अगिकार करनेका उद्यम कर, तो वो मुक्ति स्थान तेरे को शीघ्र मिल जायगा, (यह लोक सठाणभावना शिवराजकापिने भाईथी) ॥ १० ॥

ग्यारहमी बोधबीज भावना।



धन कन कंचनराज सुख,सबहि सुलभ कर जान
दुर्लभ है संसार में, एक यथारथ ज्ञान ॥



ऐसा विचार करे कि रे जीव ! तेरा निस्तारा किस करणीसे होगा, इस जीवको मोक्ष देनेका मुख्य हेतु सम्यक्त्व हैं,सम्यक्त्व बिन उतकृष्ट करणी कर नवग्रीवेग तक जा आया, परन्तु कुछ कल्याण न हुवा तो अब सम्यक्त्व फरसनेका अवसर (मोका) आया है, सो अब प्रमादको मेट सम्यक्त्व रत्न प्राप्त कर, और देव अरिहन्त,गुरू निग्रन्थ, केवली परुप्यो दया धर्म यह तीन तत्व शुद्ध अंगिकार कर, और कुदेव, कुगुरु, कुधर्मको त्यागन कर श्री वीतराग प्रणित वाणी (वचनो) की आस्ता (श्रद्धा) पूर्ण रख सो येही एक सम्यक्त्व है,

जैसे डोरा पोई हुई सुई कचरेमें खोई नहीं जाती है तैसे सम्यक्त्व पाया हुवा प्राणी ससार समुद्रमें बहुत परिभ्रमण नहीं करते हैं। ऐसा समझ कर रे जीव। तू बोधबीज सम्यक्त्वकी प्राप्ति कर, कि जिससे मोक्षकी प्राप्ति होवे (यह बोधबीज भावना, कृष्ण वासुदेव, श्रेणिक राजा, और ऋषभदेवजीके अठाणुं पुत्रोने भाईथी) ॥११॥

॥ बारमी धर्म भावना ॥

जाचे सुरतरु देय सुख, चिंतत चिंतारेन।
विन जाचे विन चितये, धर्म सकल सुखदेन॥

ऐसा विचारे कि रे जीव। यह नरभव है सो निर्वाण (मोक्ष) प्राप्ति करनेका कारण है, और मोक्ष धर्म करणीसे प्राप्ति होती है, यह

जन्म धर्म करनेको ही पाया है, कारणकी मनुष्य जन्म सिवाय धर्मकरणी बण नहीं सकती है, और धर्म विन मनुष्य पशुतुल्य है, इस लिये अवश्य धर्म कर, धर्म तो इस संसारमें बहोत प्रकारसे लोक मान बैठे हैं, परन्तु सच्चा धर्मका मर्म (स्वरूप) कुछ नहीं समझते हैं फक्त अपना अपना मत पक्ष ताणतें हैं, इस लिये सच्चा धर्म वोही है, की जिस धर्ममें किसी जीवको मन वचन काया करके बिलकुल तकलीफ नहीं देते हैं, अर्थात् (अहिंसा परमो धर्मः) इति वचनात् जहां दया है सो ही परम (उत्कृष्ट) धर्म है, इस लिये दया धर्म अंगिकार कर, (यह धर्म भावना धर्मरुची मुनीने भाइथी) ॥१२॥

१२ बारह प्रकारनो आहार पाणी परिठवे पिण भोगवे नहीं—आधाकर्मि १, उद्देशिक २, सूतीकर्म ३, मिश्र ४, सचित्त अचित्त मिश्या

५, अजोयरे ६, सिन्कातरनो ७, सचित्त पाणीनी बुंद पड़े तो ८, खेताइ कते ६, कालाइ कते १०, मगाइ कते ११, पमाणाइ कते १२।

१२ बारह सभोग—उपधि वस्त्र पात्रनो लेवो १, सूत्र सिद्धांत लेवो वाचणी लेवी देवी २, आहार पाणी लेवो ३, माहोमाहि नमस्कार नो करवो ४, शिष्यादिकनो देवो ५, निमत्रणा करवी ६, माहोमाहि खडा होणा ७, कीर्त्ति गुणग्राम करे ८, वेयावच्च करणी ६, एकठा मिलनो १०, एक आसण बेसवो ११, कथा प्रबधनो कहिवो १२।

१२ बारे बोल करी भव्य जीवकुं पछतावणो पड़े—छती योगवाइ साधु साधवीको १४ प्रकारको दान नही देवे तो पछतावणो पड़े १, दान देइने पोमावे तो पछतावणो पड़े २, दान देता वर्जतो पछतावणो पड़े ३, छती

योगवाइ सामायक नित नेम संवर न करे तो पछतावणो पड़े ४, सामायक नित नेम करतांने वर्जे तो पछतावणो पड़े ५, छती शक्ति १२ प्रकारकी तपस्या न करे तो पछतावणो पड़े ६, बारह प्रकारकी तपस्या करतांने वर्जे तो पछतावणो पड़े ७, साधु साधवी आया तेहनी वख्याण वाणी न सुणे तो पछतावणो पड़े ८, साधु साधवीकी निंदा करे तो पछतावणो पड़े ९, पांच महाव्रत धारी साधु साधवीको वंदणा नहीं करे तो पछतावणो पड़े १०, छती योगवाइ भणे गुणे नहीं तो पछतावणो पड़े ११, छती योगवाइ मकान (थान) पाट पाटला प्रमुख नहीं देवे तो पछतावणो पड़े १२।

॥ तेरमो बोल ॥



१३ तेरे काठीयाका नाम १, आलस काठीयो ते साधू समीपे आवतां धर्म साभलता आलस ल्यावे २, मोह काठीयो ते सजन उपरा स्नेह राखे ३, अग्याकाठीयो ते एह क्या जांणे है इनसे हमही ज्यादा समझते है ४, मान काठीयो ते मुझ समान दूसरा कोई नही है ५, क्रोधकाठीयो ते गुरु हमसे तो बोलते ही नहीं ६, प्रमाद काठीयो ते रात दिन निन्द्रा सेवे गुरुवादिकरी वाणी नहीं सुणे ७, कृपण काठीयो ते व्याख्यानादि सुण्या दानादिक देणो पडसी एसो वीचारे ८, भय काठीयो ते नारकीरा दुःख सुणावसी ६, शोक काठीयो ते धर्म समय शोकादिक अतराय दे १०, अज्ञान काठीयो ते धर्म तत्व सरदे नहीं ११, सूम काठीयो धर्मका फल होवेगा या नहीं

१२, कुतोहल काठीयो ते कोतुक खेल तमासादिमें रहै १३, विषय काठीयो ते इन्द्रीयोंके काम भोगमें मग्न रहै ए तेरह काठीया दूर करे तब धर्म पामें और आत्माका कल्याण करे।

१३ तेरे क्रिया साधूने लागे यथा स्वभावें अथवा गिलाणादिकने काजे आहार असूझतो लेवो ते अर्थ क्रिया १, देवगुरु संघनो प्रत्यनीक तथा धर्मनो हिंसक ते संघातें वोलवुं ते हिंसकी क्रिया २, वस्तु पूंजी मूकता कोई जीवने विराधना हुवे ते अकस्मात् क्रिया ३, सापराध निपराध भमता मरण पामें ते दृष्टि विपर्यासि की क्रिया ४, कुडो वोलै ते मृखावादकी क्रिया ५, अणदीधे लेवे ते अदत्तादानकी क्रिया ६, हीयामें फोकट उचाट धरै ते अधात्मकी क्रिया ७, कारण पाखें असूजतो लेवो ते अनर्थकी क्रिया ८, अहंकार

अभिमान करे ते मानकी क्रिया ९, अल्प अपराध हुवे ने घणु दंडे ते अमित्रकी क्रिया १०, कुटिलपणोकरवु ते कुटिलकी क्रिया ११, कामादिकनो आसक्त थको औराने वधवधनादिक करवो ते लोभकी क्रिया १२, इर्यापथकी क्रियानो असाचहवो ते इर्यापथकी क्रिया १३,

१३ तेरे बोल हुवे जिहा साधु चोमासो करे— बेन्द्रियादिक जीव थोडा होय १, कीचड़ कादो थोडो होय २, उच्चार पासवणकी जागा निरवद्य होय ३, थानक साताकारी होय ४, छाछ दहि दूध घृत घणो होय ५, बस्ती घणी होय ६, राजवैद्य होय ७, औषध दवा चाहिजे सो मिले ८ श्रावक कोठे धान घणो होय ९, गामरो ठाकुर धर्मरो रागी होय १०, पाखडीयोका जोर थोड़ा होय ११ आहार पाणीनी साता

होय १२, सिझाय करणेकी जागा जुदी होय १३।

३ तेरे तिणगां जन्म रूपणी रूई मरण रूपीया--तिणगा १, संयोगरूपणी रूई वियोगरूपीया तिणगा २, साता रूपणी रूई असाता रूपीया तिणगा ३, संपदा रूपणी रूई आपदा रूपीया तिणगा ४, हरख रूपणी रूई सोच रूपया तिणगा ५, सिल रूपणी रूई कुसील रूपीया तिणगा ६, ज्ञानरूपी रूई अज्ञान-रूपी तिणगा ७, सम्यक्त रूपी रूई मिथ्यात्व रूपी तिणगा ८, संयमरूपी रूई असंयम-रूपी तिणगा ९, तपस्यारूपी रूई क्रोधरूपी तिणगा १०, विवेकरूपी रूई अविवेकरूपी तिणगा ११ सनेहरूपी रूई मायारूपी ति-णगा १२, संतोष रूपणी रूई लोभ रूपीया तिणगा १३।

॥ महानुभाव वन्दनाका १२ बोल ॥

धन्न श्री ऋषभदेवजी अनत बल रा धणी काया ने कापसी धन वा पुरुषा ने वरसी तप चौविहार कियो, हे जीव, छमछरीरो उपवास तु ही चौविहार कर थारे कायारी गरज सरसे, च्यार हजार साधांरे परिवार सु दिक्षा लीधी, दश हजार साधांरे परिवार सु छव दिनारे सथारे सु मुक्ति पहु ता वाने म्हारी वंदणा नमस्कार होयजो ॥ १ ॥

धन श्री महावीर स्वामी अनंत बलरा धणी कर्म काटया, धन उत्तम पुरुषां ने बाहरे मास तेरे पक्ष चौविहार किया, छव मासी चौविहार किया, पचमासी चौविहार किया, चौमासी चौविहार किया, तीमासी चौविहार किया, दो मासी, डेढ मासी चौविहार किया, बहोत्तर पक्ष चौविहार किया, २२६ बेला चौविहार किया,

२ दिन सुदि पड़िमा वह्या २ दिन वदि पड़िमा वह्या इसी तपस्या करीने कर्म खपाइने दोय दिनांरो संथारो करीने आधी रात मोक्ष पहुंता वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होयजो ॥ २ ॥

धन श्री गणधर गौतम स्वामी तीन आखरा उपर, ईगन देवा विगन देवा गुण देवा गुणतप कीधा पहिले पहोर ध्यान करे दूजे पहोर सज्झाय करे तीजे पहोर गोचरी करे चौथे पहोर पांचसो साधांने वांचणी देइने गुण रयण छमछरी तप करीने मोक्ष पहुंता वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होयजो ॥ ३ ॥

धन श्री धन्नोजी अणगार समीपे आइने भगवानरी वाणी सुणीने दिक्षा लेइने गोचरीमें अरस निरस विरस कागा कुत्ता नहीं बंछे इसो अहार लेइने बेले बेले पारणो करीने सर्वार्थ सिद्ध विमानमें पहुंता, वांने म्हारी वंदणा नमस्कार हुइजो ॥ ४ ॥

धन श्री एवंता अणगार भगवान समीपे आइने भगवानरी वाणी सुणीने दिक्षा लेइने साधारे परिवार सु थंडिले गया पाणी रो नालो देख्यो माटी री पाल बांधी पातरी तिराई आओ देखो साधा मारी न्याव तिरे जे साधा मन मे जाणयो भगवान महावीर स्वामी मु डीने क्या कियो पृथ्वी पाणी आदि छकाय जीवांने ओलखेइ नही साधु टली अलगा नीकल गया ओएवतोजी मारकयडो साधाने पुगा भगवानरे समोसरण मे आया भगवान फुरमाई प्रकृति इयरी भद्रिक छे हलुकर्मी जीव छे इण भवसें ही मोक्ष जासी, वाने म्हारी वदणा नमस्कार होइजो॥ ५॥

धन श्री अर्जुनमालीजी भगवान समीपे आइने भगवानरी वाणी सुणी ने दिक्षा लेइने राजग्रीह नगरीमे सुद्ध परिणामे गोचरी उठ्या कोई भाठा मारे, कोई सोटा मारे, केई कुत्ता

लगावे, केई धूड़ फेंके. केई कहे म्हारो बाप मार्यो, केई कहे म्हारी मा मारी, केई कहे म्हारी बेन (भगनी) मारी, केइ कहे म्हारो भाई मार्यो, केइ कहे म्हारी भार्या मारी, केइ कहे म्हारो धणी मार्यो. केइ कहे म्हारो बेटो मार्यो अर्जुन मालीजी मनमें चिंतावना करी. हे जीव तें घणा जीवांरी जीव काया न्यारी न्यारी करी दीसे छे तने तो थोड़ा ही संतावे छे इसो खमा करीने बेले बेले पारणो छव महिना तांई फिर्या. राजग्रीह नगरीमें अहार पाणी कीण ही वेरायो नहीं छव महीना में हीं कर्म खपावी पनरे दिनांरो संथारो करीने मोक्ष पहुंता वांने म्हारी वंदणा नमस्कार हुइजो ॥ ६ ॥

धन श्री मेघकुमारजी भगवान समीपे आइने भगवानरी वाणी सुणीने दिक्षा लीनी, चउदे हजार मुनिराजांरे परिवार सुं रात ने सूता रातरा मुनिराज केइ तो मातरो परठण ने उठ्या

केइ खेखारो थुकणने उव्या, कइ नाकरो मेल परिठावण ने उव्या, ज्यु मेघकुमारजीरे ठोकरा री लागी, मेघकुमारजी मनमे रातरा चितावना करी सदाइ तो हु भगवानरे समीपे आवतो जब भगवान मेघजी मेघजी कहकर बतलावता आज कीणही मने मेघलो कहकर वतलायो नहीं मे काइ भगवान रो खायो नही, पीयो नहीं, लीयो नहीं, दीयो नही, ओघो पातरा सु हपत्ति देइने परभाते म्हारे घरे जासु, मेघकुमारजी भगवान रे समोसरणमे आया जब भगवान मेघकुमारजी ने वतलायो आवो मेघ आओ मेघ रात तो तुम्हे दुखे दुखे काढी एक रात्रि छव महिना जीसी काढो, भगवान मेघकवररे पुर्वले भवरो वृतान्त वतायो, के तें हाथीरे भवमें ससियेरी दया पाली, श्रेणिक राजारे घरिपर बेटो थयो, हे मेघकुमार तिर्यंचरे भवमें इतनो वेदना सही तीण आगे इया

वेदना तो कीतिक है, मेघकुमारजी मनमें चिंतवना करीके आज पीछे दोय नेत्र की सार असु और शरीरकी सुश्रषा नहीं करु इसी समा करीनें विजय विमाने गया, वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होयजो ॥ ७ ॥

धन श्री सुबाहु स्वामी सात भवतो तिर्यंचरा किया, सात भव मनुष्य रा किया, सात भव नारकी रा किया सात भव देवतारा करीने सुखे सुखे भोगवीने मुक्ति पधारसे वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होइजो ॥ ८ ॥

धन श्री खंधकजी, जीणांने काया असासती जाणी, सासती जाणीं नहीं, दुक्कर दुक्कर परिसह सहिने अच्यूत (बारमां) देवलोक पहुंता, चवीने मनुष्य होकर मुक्ति जासी, वांने म्हारी वंदना नमस्कार होइजो ॥ ९ ॥

धन श्री गजसुकमालजी भगवान समीपे आइने दीचा लेइने मसाण भूमिका जाइ उभा

काउसग्ग कियो सोमल ब्राह्मण (सुसरे) गज-सुकमालजीने देख पुर्वलो क्रोप जाग्यो, म्हारी बेटीने दु ख थासी सो हु इयरो वैर काढ्सु, भीनी माटी लेइने पाल बांधी शिर अंगार-धर्या, मुनि माथो धूण्यो नहीं नाके सल घाल्यो नहीं, सगपण दाख्यो नहीं, इसी समता करीने केवलज्ञान उपजाइने मुक्ति पहु ता याने म्हारी वदणा नमस्कार होइजो ।१०।

धन श्री खधक कुमारजी दीक्षा लेइने विचर्या वेनोइरी नगरीमे गोचरी उठ्या, वेनोइ, खधकमुनीने देख दाचर रे भवरो द्वेष जाग्यो, एडीसु लगाइने चोटी ताई खाल उतारी, मुनि सगपणदाख्यो नहीं, माथो धूण्यो नहीं, नाके सल घाल्यो नहीं, इमा दुक्कर दुक्कर परिसा सहिने केवल ज्ञान उपजाइने मुक्ति पहु ता याने म्हारी वदणा नमस्कार होइजो ॥ ११ ॥

धन श्रीकृष्ण महाराजरी आठ पट

महिष्या, ओपमावइ १, गौरी २, गंधारी ३, लक्ष्मणा ४, सूसमा ५, जंबुवती ६, सतभोमा ७, रुक्मणी ८, आठों राणयां आइने भगवान समीपे हाथ जोड़ मानमोड़ पूज्य भगवानने नमस्कार करीने चंदनबाला पासे दीक्षा लेइने संजम पालीने मुक्ति पहुंता वांने म्हारी वंदना नमस्कार होइजो ॥१२॥

धन श्री श्रेणिक महाराजरी दस अग्र महिष्या—कालि १, सुकालि २, महाकालि ३, किन्हा ४, सुकिन्हा ५, महाकिन्हा ६, वीर किन्हा ७, रामकिन्हा ८, पीउसेण किन्हा ९, महासेण किन्हा १० दसों राणयां हाथजोड़ मानमोड़ पूज्य भगवान समीपे आइने भगवान ने पूछयो कि अहो भगवान काली आदि कुमारों कोणक और चेड़ाराजारी लड़ाईमां गया छे, जीत्या के हारया, भगवान पीछी फुरमाइ (लट्ठी झूमठी चंपलेरी डाल परे कमलाइने हेठे पड़ीया)

दसुइ कवराने चेडेराजाजीव काया रहीत कीया दसुइ राणया सुणीने कह्यो अहो भगवान म्हाने ससाररे अलिते पलितेसुं काढो, भगवान दसो राणयाने संजम देइने चदनवालाने सुपी, चदन वालानी आज्ञा लेइने काली आर्या रत्नावली तप कियो, दुजी सुकाली आर्या कनकावली तप अगीकार कियो, तीजी महाकाली लघुसिघ तप कियो, चौथी किन्हा आर्या महासेन सिघ तप कियो,पाचमी सुकिन्हा आर्याने सातमीसे दसमी भिख्रुनी पड़िमा तप कियो, छट्टी महा किन्हा आर्या ने लघु सर्वतोभद्र तप कियो, सातमी वीर किन्हा वृद्ध सर्वतोभद्र तप करीने विचरी, आठमी राम किन्हा महोत्तर तप करीने विचरी नवमी पीयुसेण कन्हा मुक्तावली तप करीने विचरी, दसमी महासेण कन्हा आबिल वृद्ध माण तप करीने विचरी, इसी इसी तपस्या करीने मुक्ति पहुता,वाने म्हारी वदणा नमस्कार होइजो॥१३॥

१३ तेरमो बोल जाणपणेका—धर्मका जाणपणा होय तो जीवदया पाले १, ज्ञानका बल होय तो थोड़ा बोलें २, बुद्धिवन्त होय तो सभा जीतें ३, साधुकी संगत होय तो संतोष ऊपजें ४, वैराग्य होय तो पांच इन्द्रि दमें ५, सूत्र सिद्धांत सुणता रहे तो धर्म विषे प्रणाम चढता रहे ६, प्राणी जीवकी रखा करे तो निर्भयपणो पामें ७, मोह मछरपणो छोड़े तो देवताको पूजनीक हुवें ८, न्याय-मार्गमें चालें तो शोभा पावें ९, सर्व जीवकुं खमत खामणा करे तो साता पावें १०, गुरुरी सेवा भगती करे, विन्य करे तो ज्ञान पामें ११, विद्वानरो संगत करे, विनो करे तो बुद्धि वधे १२, भगवानकी आज्ञासहित क्रिया करे तो मोख पामें १३ ।

॥ चौदहमो बोल ॥



१४ श्रीनन्दजी सूत्रमें १४ प्रकारके श्रोता कहा है १, चालणी जैसे—जैसे चालणी सार सार पदार्थ अनाजको छोड़ असार तुस कङ्कर वगैरहको धारण करती है तैसे ही कितने ही श्रोता सद्बोधका सार गुण ग्रहणता छोड़ अवगुण ही धारण करते है २, मजार जैसे—जैसे बिल्ली पहले दूधको जमीन पर ढोल देती है और फिर चाट चाट कर पीती है तैसेही कितने ही श्रोता प्रथम वक्ताका मन दुखायके फिर उपदेश श्रवण करते हैं ३, बुगले जैसे—जैसा बुगला ऊपरसे तो स्वेत अच्छा दिखता है और अन्दरमे दगा रखता है तैसे ही कितने ही श्रोता ऊपरसे तो बुगला भक्ति करते हैं परन्तु अन्तकरणमें मलीन होते हैं जिनसे ज्ञान ग्रहण किया

उनके साथही दगा करते हैं ४, पाषाण जैसे—जैसे पाषाण पर वृष्टी होनेसे ऊपरसे तो तरोतर भीज जाता है परन्तु अन्दर पाणी भेदता नहीं है तैसे कितनेक श्रोता सद्बोध सुणते तो बड़ाही बैराग्य भाव दरसाते हैं और अकृत्य करते बिलकुल ही डर नहीं लाते हैं ५, सर्प जैसे—जैसे सर्पकु पिलाया दूध ;जेहर होजाता है तैसे कितनेक श्रोता जिनके पास ज्ञान ग्रहण किया उनकी तथा उनके धर्मकी निन्दा उथापना करने लग जाते हैं ज़ैसे भैंसा जैसे—पाणीमें पड़कर हंग मूत पाणीको गुदला देते हैं फिर आप पीता है तैसेही कितनेक श्रोता सभामें अनेक वीकथा कदाग्रह क्लेशकर गड़बड़ मचा देते हैं फिर सुणता है ७, फूटेघट जैसे ज्यों फूटे घड़ेमें पांणी ठहरता नहीं है त्यों कितनेक श्रोता उपदेश सुन कर वहांही भूल

जाते हैं विलकुल याद रखते नहीं हैं ८, डास जैसे—जैसे डास डंश कर रक्त ग्रहण करता है तैसे कितनेक श्रोता ज्ञानीको कोचवाकर ज्ञान ग्रहण करते हैं ६, जलोक जसे जोक निरोगी रक्तको छोड विगडे हुवे रक्त ग्रहण करती है त्यों कितनेक श्रोता सद्बोधको वो सद्बोधकके सद्गुणोंका त्याग न कर दुर्गुणो को ग्रहण करे यह नव प्रकारके अधम पापचारी (खराब) श्रोता कहे जाते हैं १०, पृथ्वी जैसे, ज्यों पृथ्वीको ज्यादा खोदें त्यो त्यों ज्यादा कोमलता आवे और बीजकी ज्यादा उत्पत्ती हुवे त्यो कितनेक श्रोता बहुत परिश्रम देकर ज्ञान ग्रहण करे परन्तु फिर गुणवत हो ज्ञानादि गुणोंका परिश्रम भी अच्छा करे ११, अतर जैसे, ज्यो ज्यो अतर मसले त्यो त्यो ज्यादा सुगन्ध देवे तैसे कितनेक श्रोता बहुत प्रेरणासे बहुत होसियार होवे

और जहां जावे वहां धर्मरूप
यह दोय मध्य श्रोता १२,
जैसे बकरी नितरा नितरा अधर
पी लेवे परन्तु पाणीको गुदोले नहीं
नेक श्रोता वक्ता को बिलकुल ही
न देते और उनके अल्पज्ञाता रूप
सन्मुख ही देखते गुण ही गुणको
करके तृप्त होवे। १३ गौ जैसे—जैसे
निसार माल खाकर भी दूध जैसा
पदार्थ देवै तैसे कितनेक श्रोता
ज्ञान ग्रहण कर ज्ञानदाताको आहार
पात्र शास्त्र औषध इत्यादि इच्छत दान
सत्कार सन्मान कर बहुत शाता
१४ हंस जैसे—जैसे हंस पवित्र
(मोती) को चुगलेते हैं तैसेही श्रोता
बचनोंका ग्रहण कर सबको सुखदाता हुवे
यह उत्तम श्रोता होता है।

१४ जीवरा १४ भेद कहा कहा पावे ?—जीवरो भेद नारकी देवतारे प्रयासे मे पावे १, जीवरा भेद सन्नीपचेन्द्रिमें पावे २, जीवरा भेद समुच्चय नारकीमें देवतामें पावे ३, जीवरा भेद एकेन्द्रिमें पावे ४, जीवरा भेद भापकमें पावे ५, जीवरा भेद समदृष्टिमें पावे ६, जीवरा भेद र्यासामें पावे ७, जीवरा भेद अणाहारिकमें पावे ८, जीवरा भेद उदारीकरे मिश्रमें पावे ६, जीवरा भेदत्रसमे पावे १०, जीवरा भेद श्रुतइन्द्रिरे अलद्धीयेमे पावे ११, जीवरा भेद बादरमे पावे १२, जीवरा भेद सासता पावे १३, जीवरा भेद समुच्चय जीवमें पावे १४ ।

१४ गुणठाणा चौदह कठे कठे लाधे, १ गुणठाणो मिथ्यात्वीमे, २ गुणठा० विकलेन्द्रिमें ३ गुणठा० विनयवादीके समोसरणमें, ४ गुणठा० नारकीमें देवतामे, ५ गुणठा०

तिर्यंचमें, ६ गुणठा० तीन माठी ..
७ गुणठा० तेजुपद्मलेश्यमें, ८ गुणठा०
हास्यादिकमें, ६ गुणठा०
१० गुणठा० संजलरेलोभमें, ११
मोहनीमें, १२ गुणठा० छदमस्थमें, १३
गुणठा० सयोगीमें, १४ गुणठा० समुच्चय
जीवनें।

२४ पहिलो गुणठाणो वर्जीनें, १३ गुणठाणा
नियमाभव्यीमें, २ गुणठाणा वर्जीनें, १२
गुणठाणा नियमा छव पर्यायमें, मनयोगीमें,
३ गुणठाणा वर्जीनें, ११ गुणठाणा क्षायक
समकितमें, ४ गुणठाणा वर्जीनें, १० गुण-
ठाणा व्रतीमें, ५ गुणठाणा वर्जीनें, ६
गुणठाणा संजतीमें ६ गुणठाणा वर्जीनें, ८
गुणठाणा अप्रमादीमें, ७ गुणठाणा वर्जीनें,
७ गुणठाणा शुक्ल ध्यानमें, ८ गुणठाणा
वर्जीनें छव गुणठा० हास्यादिकरे अबन्धीयेमें,

६ गुण ठाणा वर्जीने, ५ गुणठाणा अवेदी में, १० दस गुणठाणा वर्जीनें, ४ गुणठाणा अकषाइमें, ११ गुणठाणा वर्जीने, ३ गुणठाणा खिण वीतरागीमें, १२ गुणठाणा वर्जीनें, २ गुणठाणा केवलीमें १३ गुणठाणा वर्जीनें, १ गुणठाणो अजोगीमें ।

१४ प्रस्ताविक १४ बोल—धर्मरो परिवार काई सम्यक्त १, धर्मरो बाप काई आगा पणो २, धर्मरी माता काई दया ३, धर्मरो भाई काई सत ४, धर्मरी बेन काई सुमती ५, धर्मरी स्त्री काई क्षमा ६, धर्मरो बेटो काइ सतोष ७, धर्मरी बेटी काई सुबुद्धि ८, धर्मरी पोसाग काई शील ९, धर्मरो गन्तो (गलनो) काई तपस्या १०, धर्मरो खजानो काई सूत्र ११, धर्मरो प्रकाशक कुण साधुजी १२, अमर कुण, तीर्थंकरदेव १३, धर्मरो वासो कठे मोक्षमें १४ ।

१४ साता वेदनी बंधणोके १४ कारण—दया १, दान २, क्षमा ३, सत्यव्रत ४, शील ५, इन्द्रिय दमन ६, संयम ७, ज्ञान ८, भक्ति ९, वंदना १०, शास्त्र विचार ११, सद्बोध १२, अनुकंपा १३, सत्य बचन १४ ।

१४ विद्याचवदे लोकोत्तर—गणितानुयोग १, करणानुयोग २, चरणानुयोग ३, द्रव्यानुयोग ४, शिक्षाकल्प ५, व्याकरण ६, छंदविद्या ७, अलंकार ८, ज्योतिष ९, निर्युक्ती १०, इतिहास ११, शास्त्र १२, मिमांस १३, न्याय १४ ।

१४ लोकिक चवदह विद्या—ब्रह्म १, चातुरी २, बल ३, वाहन ४, देशना ५, वाहु ६, जल-तरण ७, रसायन ८, गायन ९, वाद्य १०, व्या-करण ११, वेद १२, ज्योतिष १३, वैद्यक १४ ।

१४ अवनीतके १४ बोल—वार बार क्रोध करे ते अवनीत १, प्रतिबंधका क्रोध करे ते अव-

नीत २, मित्रकी मित्राई छाड़े तो अवनीत ३, सूत्र भणी मद करे तो अवनीत ४, आपके ओगुण पारके माथे देवे तो अवनीत ५, मित्र उपरी कोप करे तो अवनीत ६, मित्रकी पूठ पाछे निन्दा करे तो अवनीत ७, असमदकारी भाषा बोले तो अवनीत ८, द्रोही होय तो अवनीत ६, अहकारी होय तो अवनीत १०, सविभागी किसीकू नहीं हुवे तो अवनीत ११, अप्रितीकारीयो होय तो अवनीत १२, लोभी होयतो अवनीत १३, इन्द्रियो मोकली मेले-विषय लालची ते अवनीत १४ ।

१४ सातावेदनी १४ बोल करी बाधे—दयावन्त होय तो साता वेदनी बाधे १, हर्पसु दान देवे तो साता वेदनी बाधे २, कपाय घटावे—खमा करे तो सातावेदनी बाधे ३, व्रत-पचखाण शुद्ध पाले तो सातावेदनी बान्धे ४,

आरंभ परिग्रह घटावे—पांच इन्द्रि करे तो सातावेदनी बांधे ५, छकाय रक्षा करे तो सातावेदनी बांधे ६, शुद्ध मन शील पाले सो सातावेदनी बांधे ७, ज्ञानवन्त होय—ज्ञानरो उधम करे तो सातावेदनी बांधे ८, साधुको वंदणा नमस्कार करे तो सातावेदनी बांधे ९, सूत्र सिद्धांत भणे तो सातावेदनी बांधे १०, तिर्थंकरजीने वंदना नमस्कार करे तो सातावेदनी बांधे ११, अनुकंपा करे तो सातावेदनी बांधे १२, धर्मोपदेश देवे तो सातावेदनी बांधे १३, सत्यवचन बोले तो सातावेदनी बांधे १४ ।

१४ वक्तना चौदह गुण लिखते हैं—प्रश्नव्याकरणोक्त शील बोलनो जाण पंडित होय १, शास्त्रथी विचार जाणे २, वाणीमांही मिठाश होय ३, प्रस्तावअवसर ओलखे ४, सत्य बोले ५, सांभलने वालाका संशय दूर करे

६, अनेक शास्त्रवेत्ता गीतार्थ उपयोगी होय ७, अर्थने विस्तारी तथा सवरी जाणे ८, व्याकरणरहित छता कठनी भाषामें पिण अपशब्द न बोले ९, वचनसे सभाजनने हर्ष करे १०, प्रश्नार्थ ग्राहक ११, अभिमान रहित १२, धर्मवन्त १३, संतोषवन्त १४, ए चौदह बोलका जाणकार होय सो वक्ता जाणना।

१४ श्रोताका १४ गुण—भक्तिवन्त १, मिठाबोला २, गर्वरहित ३, सांभलवा उपर रुचि ४, चचलतारहित एकाग्रचित्ते सुणे और धारे ५, जैसा सुणे वैसा प्रगट अन्तर कहे ६, प्रश्नका जाण ७, घणा शास्त्र सुणया तिणके रहस्य जाणे ८, धर्मके कार्य आलस्य न करे ९, धर्म सुणता निन्द्रा न लेवे १०, बुद्धिवन्त होय ११, दातार रूप गुण होय १२, जिसके पास धर्म सुणे उसका पिछाड़ी गुण वर्णवे

होते होते परम अवधि ज्ञान पाय तुरंत घन-
घाति कर्मखपाय केवली होय मोक्ष पधारै जो
आयुष्य जास्ती होता तो लिंग भेष बदलते
यह अन्य लिंग सिद्धा, १३ गृहलिंग सिद्धा
गृहस्थी धर्म क्रिया करते प्रणामकी विशुद्धता
हुवे तुरंत केवल ले मोक्ष पधारै आयुष्य
थोड़के कारण भेपलिंग नहीं बदल सके सो
गृहलिंग सिद्धा, १४ एक सिद्धा एक समय
में एक ही सिद्ध होवे सो एक सिद्ध, १५
अनेक सिद्ध एक समयमें दो से लगाकर
एक सो आठतक सिद्ध होवे सो अनेक
सिद्धः ।

१५ वीनयवानके १५ लक्षण, १ गतिस्थानक
भाषा और भाव इन चारों चपता रहित
अर्थात स्थिरस्वभावी, २ सरल, ३ अकुतु-
हली (अकतोली), ४ किसीका अपमान व
तिरस्कार नहीं करे, ५ विशेष काल क्रोध न

रखे, ६ मित्रोंसे हिल मिल चले, ७ ज्ञानका अभिमान न करे, ८ अपनेसे हुआ अपराध स्वीकार करे परन्तु दूसरेपर नहीं डाले ६, स्वधर्मीयोंपर कोप नहीं करे, १० अप्रियकारीकेभी गुणानुवाद बोले ,११ रहस्य बात प्रगट नहीं करे, १२ विशेष आटम्बर नहीं करे, १३ तत्वज्ञ, १४ जातिवत, १५ लज्जावत जिते द्री।

१५ आसाता वेदनी वधणके १५ कारण, १ जीव घात करे, २ छेदन करे, ३ भेदन करे, ४ परिताप करें, ५ चुगली करे, ६ परायेकु दु ख देवे, ७ त्रास देवे, ८ आक्र द करावे, ६ स्वत. दु ख शोक करे, १० द्रोह करे, ११ असत्य बोलै, १२ विरोध करे, १३ क्रोध मान उपजावे, १४ युद्ध झगड़े करावे १५, पर निदा करे।

१५ योग १५ कहा कहा पावे, १ योग चार्टे वहता जीवमें, २ योग तीन विकलेन्द्रि पर्यासामें,

३ योग चार थावरमें, ४ योग बादर वायुकायरे पर्याप्तामें, ५ योग एकेन्द्रिमें, ६ योग असन्नीमें, ७ योग तेरमें गुणगणामें, ८ आठ योग सूंन (मोन) वाली आयामें अथवा पंचेन्द्रिरे अलब्धीये आहारीकमें, ९ योग परिहार विशुध सुक्ष्म संपराय चारित्रमें, १० योग मिश्रदृष्टिमें—वैक्रिय, आहारीक शरीरमें, ११ (इग्यारह) योग नारकी देवता यथाख्यात चारित्रमें, १२ योग श्रावकमें, १३ योग स्त्री वेदमें, १४ योग सामायिक छेदोपस्थापनीय चारित्रमें, १५ योग समुच्चय जीवमें पावे।

१५ सुविनीतका १५ बोल—नीचाप्रवर्त्ते १, चपलपणा रहित २, मायारहित ३, कतुहलपणारहित ४, कर्कश वचनरहित ५, दीर्घ रोष (रीस) न करे ६, मित्रसु मित्राइपणो सेवे ७, सूत्र भणी मद न करे ८, आचार्यादिकरी निन्दा न करे ९, मित्रके उपर कोप

न करे १० मित्रके पूठ पाछे गुण बोले ११, कलह ममतरहित १२, ज्ञानतत्त्व जाणे १३, अभिजात विनेवत १४, लज्यावत गुणइन्द्रि ।
१५ बोल १५ समुद्रनी उपमारा ससार वर्णव— पूज्य भगवान समुद्रमें पाणी छे, ससाररूपीये समुद्रमें कीसो पाणी छे ? उतर—जन्म जरा मरणरूपीयो तथा मोहरूपीयो पाणी छे १, पूज्य भगवान समुद्रमें कादो छे, ससाररूपीये समुद्रमें कीसो कादो छे ? उतर— कामभोग रूपीयो, राग द्वेष रूपीयो कादो छे २, पूज्य भगवान समुद्रमें तो फेन उठे छे, ससाररूपी समुद्रमें कीसा फेण उठे छे ? उतर—अहकाररूपी फेण उठे छे ३ पूज्य भगवान समुद्रमें तो दरड़ा छे, ससाररूपी समुद्रमें कीसा दरड़ा छे ? उतर--त्रसणारूपी दरड़ा छे ४, पूज्य भगवान समुद्रमें तो कलस उबके छे, ससररूपी समुद्रमें कीसा कलस

उवके छे ? उतर—नारकी तीर्यंच मनुष्य देवतारूपी कलस उवके छे ५. पूज्य भगवान समुद्रमें मगरमच्छ छे, संसाररूपी समुद्रमें किसा मगरमच्छ छे ? उतर--सबला निबला ने मारे छे ७. पूज्य भगवान समुद्रमें तो डुंगर छे, संसाररूपी समुद्रमें कीसा डुंगर छे ? उतर—आठ करमरूपीया डुंगर छे ८, पूज्य भगवान समुद्रमें तो भवरीया पड़े छे, संसाररूपी समुद्रमें कीसा भवरीया पड़े छे ? उतर—दगाबाजी कपटरूपी भवरीया पड़े छे ९. पूज्य भगवान समुद्रमें तो वायरो छे, संसार रूपी समद्रमें कीसो वायरो छे ? उतर—मिथ्यातरूपी वायरो छे १०, पूज्य भगवान समुद्रमें तो सींगोटीया छे, संसार-रूपी समुद्रमें कीसा सींगोटीया छे ? उतर—तीनसे तेसठ पाखंडरूपीया सींगो-टीया छे ११, पूज्य भगवान समुद्रमें तो

मोती नीकले छे संसाररूपी समुद्रमे कीसा मोती छे? उतर—साधु साधवी श्रावक श्राविकारूपीया रत्न पदार्थ मोती छे १२, पूज्य भगवान समुद्रमें कल्लोला छे, ससाररूपी समुद्रमें कीसा कल्लोला छे? उतर---लोभरूपी तथा स्नेहरूपी कल्लोला छे १३ पूज्य भगवान समुद्रमें तो अग्नि छे, ससाररूपी समुद्रमे कीसी अग्नि छे? उतर---क्रोधरूपी अग्नि छे १४, पूज्य भगवान समुद्रमे काठो छे, ससाररूपी समुद्रमे कीसो काठो छे? उतर---मोक्षरूपीयो काठो (कीनारो, छेडो) छे १५।

॥ सोलहमो बोल ॥

१६ भाषारा बोल—एक वखत भाषाबोले तब अनंता पुद्गल खेरुकरे १, असख्यात समा

मांहिला द्वीप समालागे २, लोकने अलोकरे छड़े तक ठहरे ३, तीन पुद्गल आहारी ४, तीन सरीरना साहारी ५, भाषा जीव ६, भाषा रुपी भाषा अजीव ८, भाषा जीवरे केड़ें ९, भाषा थितिया पुद्गल लेके वहता पुद्गल लै अर्थात् थितिया लै १०, भाषा आत्म प्रदेशनै बोले, ११, भाषा बोलता असंख्याता समय लागे १२, विचारने बोलेतो ५ बोलसुं बोले १३, विना विचारी बोलेतो १६ बोलसु बोले, १४ जीवसु उपनी भाषा छै १५, शरीरसु आद लोकने छेहड़ अंत १६ ।

१६ सोले शीलका गुण—शुद्ध शील पाले तो कलंक लागे नहीं १, शुद्ध शील पाले तो संसार समुद्र रहित हुवे २, शुद्ध शील पाले तो साचो धर्म पावे ३, शुद्ध शील पाले तो लौक में जस होय ४, शुद्ध शील पाले तो देवता

होय ५, शुद्ध शील पाले तो देवताका पूज-
नीक होय ६, शुद्ध शील पाले तो रूपवत होय,
सपदा पावे ७, शुद्ध शील पाले तो सर्प फूला
की माला होय ८, शुद्ध शील पाले तो अग्नि
शीतल होय ६, शुद्ध शील पाले तो विष
अमृत होय १०, शुद्ध शील पाले तो सिंह
मृग होय ११, शुद्ध शील पाले तो गज बकरी
होय १२, शुद्ध शील पाले तो आपदासुं सपदा
पावै १३, शुद्ध शील पाले तो टुणो टुमण
लागे नहीं १४, शुद्ध शील पाले तो समुद्र
मार्ग देवे १५, शुद्ध शील पाले तो मेरु पर्वत
टीबे सरीखो होवे १६,

॥ सतरहमो बोल ॥



१७ (सत्तदस) विहे मरणे पन्नते तजाह आविय-
मरणे कहता कल्लोलनीय परे मरण १, ओहि

मरणे अवधि मार्यादा पूर्ण करने मरे २, आतंतिक मरणे--नरकादिकना दुःख अत्यन्त भोगवीने मरे देवलोकना सुख अत्यंत भोगवीने मरे ३, वलाय मरणे--व्रतभांजीने मरे ४, वसट्ट मरणे---इन्द्रिने परवसथको मरणपामें ५, अंतोसल्ल मरणे---लज्जादिक आंणी अणआलोयां मरणपामें ६, तब्भव मरणे--जे भव मांहि हुवे तेहिज भवनो आउपो बांधी मरे ७, पंडिय मरणे---सर्वविरती ज्ञानी-थको मरण पामें ८, बाल मरणे---अविरतीनो अज्ञान मरण ९: बाल पंडिय मरणे—देश विरती श्रावकनुं मरण १०, छद्मस्थ मरणे—केवल ज्ञान पांम्या विना मरण ११, केवली मरणे—केवल ज्ञान पांमी मरे १२, विहायसि मरणे--आकासने विषै फांसी प्रमुखे (फांसीलगाकर) मरणपामें १३, गिद्ध मरणे—मोटा कोई कलेवर मां प्रवेशकर पंखी

तथा सियाल प्रमुख मरे १४, भत्त पच्चक्खाण मरणे---भात (आहार) रा पच्च खाण करी मरण पांमें १५, इ गिणी मरणे—अगनी प्रमुखे बली मरे पाउवगाम मरणे—पादोप-गमन सथारो हाथ पग हलावे नहीं १७, एव सप्तदश प्रकारा ।

१७ सम्यक्त रत्नको सभालकर रखनेके लिये हित शिक्षाके उपदेशक बोल—१ भूत भविष्यत वर्तमान कालके सर्व तिर्थंकरोका एक यह ही उपदेश है कि सर्व प्राण (बेंद्री तेंद्री चोरिन्द्रि) भूत (वनास्पति) जीव (पचेंद्री) सत्व (पृथ्वी पाणी अग्नि वायु) इनकी किंचित मात्र ही हिसा नहीं होती हो किंचित ही दु ख नहीं उपजाता हो येही सत्य सनातन पवित्र धर्म रागी त्यागी योगी और भोगी को एकसा अगीकार करने योग्य है, २ ऐसा धर्म ग्रहण कर प्रमादी (आलसी) नहीं

होना इसमें दृढ रहना, ३ त्तीयोंके ठाठ पाट पाखंड देखकर नहीं होना, ४ दुनियामें देखादेखी नहीं करनी, ५ जो देखादेखी करता है उससे कुमती दूर रहती है, ६ कहे धर्मपर जिनकी श्रद्धा नहीं है उस जैसा कुमति कोई नहीं है उपरोक्त धर्म प्रभूजीने देखकर सुणकर जाणकर और अनुभव करके फरमाया है ८ संसारमें मिथ्यात्वमें फंसे हुवे जीव अनंत संसार परिभ्रमण करे है, ९ तत्वदर्शी जीव सदा धर्ममें प्रमाद छोड़ कर सदा सावधान पणे विचरते हैं, १० जो कर्मबंधके हेतु हैं वो सम्पक्तिको कर्म तोड़ने के हेतू वक्तपर हो जाते हैं, ११ जो कर्म तोड़नेके हेतु हैं सो मिथ्यात्वियोंको कर्मबंध के हेतु हो जाते हैं, १२ जितने कर्मके हेतु है उतने ही कर्म खपानेके हेतु भी जानना,

१३ कर्मपिड़ित जगत जीवको देखकर कोण धर्मकरने सावधान न होयगा, १४ जिनेश्वरका धर्म विषयाशक्त प्रमादियो भी सुणकर तुरत ग्रहण कर लेते हे, १५ मृत्युके मुखमें रहे अज्ञानी आरभमे (तल्लालीन) होके भव भ्रमण बढाते हे, १६ कितनेक जीव नर्कके दु खके भी शोकीन होते हे वारवार जातेमे तृप्त नहीं होते हे, १७ कूकर्मी अती दु ख पाते हे और कुकर्म नहीं करे सो सुख पाते हे।

॥ अठारहमो बोल ॥

॥ अथ चोरकी १८ प्रसुतो लिख्यते ॥ १ चोर के साथ मिलके कहे डरो मत में तुमारे सामिल हूं काम पड़ेगा तब साज देउ गा, २ चोर मिले तब सुख समाधि पूछे, ३

चोरकुं अंगुली आदि संज्ञा करके कहे कि अमुक ठिकाने चोरी करने जावो, ४ आप प्रतीतद्वार साहूकार बनके पहिले राजा सेठ के धनादिकके ठिकाना देख आवे और फिर चोरको बतावे कि अमुक ठिकाने धन है, ५ चोरी करने जावो और कोई पकड़नेवाला मिल जाय तो पहिले उसे छिपनेका ठिकाना बतावै, ६ किसीको चोरकी खबर लगी और वो पकड़ने आवे चोर नहीं मिलनेसे उस जाणापुरुषको पूछे कि चोर किधर गये पूर्व गया होवे,तो पश्चिममें बतावे पश्चिम गये हुवे तो पूर्व बतावे, ७ चोरी करके आये हुये चोरोंको अपनें घरमें मांचा खाट देवे पलं-गादि आसन बेठने सोनेको देवे, ८ चोर चोरीकरते कहींसे पकड़ गये तथा शस्त्र गोली लगी जिससे अंग उपांगका भंग हुआ घाव लगा उसको घर पहुंचाने आप घोड़ा प्रमुख

वाहन देवे, ६ वाहनपर बैठकर जानेकी शक्ति न हुवे तो आप अपने घरमे गुप्त रखे, १० चोरका भारी भारी माल आप लेकर भरती करे, ११ चोरको ऊंचे आसन बैठावे, १२ चोर अपने घरमे है और उनको पकडनेवाले आवे तब आप उनको छिपा करके बोले इहा नहीं है, १३ चोरको खान पान माल मकान आदिक भोजन देकर साता उपजावे जाते वक्त आगे खानेका साता बधावे, १४ जिस जिस ठिकाणे उनको जो जो वस्तुकी चाहना होवे सो उन को गुप्तपणे पहोचावे, १५ चोर थकके आया होय उसको तेलादिक मर्दन करावे उष्णोदिक पाणीसे न्हवावे गुड प्रमुख खवावे अग्निसे तपावे घाव लगा होवे वहा मलहम पट्टी बाधे इत्यादि साता उपजावे, १६ रसोई निप जाने अग्नि पानी प्रमुख आप लाय देवे,

१७ घबराकर आये उसे हवा कर शांति
१८ चोर के लाये हुये धन धान पशु प्रमुखको अपने घरमें बंदोबस्तके साथ रखे जो चाहिये सो देवे यह १८ प्रकारसे चोरको साज (मदत) देनेसे चोर ही कहना यह अठारे काम करने वाला राज दरबारमें सजा पाता है और भी चोरको कहै कि बैठे बैठे क्या करते हो बहुत दिन हुवे चोरी करने क्यों नहीं जाते हो जावो अब तो कुछ माल लावो हम सब तुम्हारा माल खपाय देवेंगे कुछ फिकर मत करो तथा अमुक ठिकाणे कल गये थे कुछ हाथ लगा की नहीं बताइये और भी कूदाली कुस प्रमुख उनको चाहिये सो शस्त्रका साज देवे इत्यादि सब काम करनेवालेको चोर ही कहना यह काम श्रावकको करने उचित नहीं है इस लाल-चसे विवेकवंत अवश्य बचेंगे ॥ इति ॥

॥ उनैसमो बोल ॥



१६ ज्ञाता सूत्र का अध्ययन---१ मेघकुमारको, २ धना सार्थवाह अने विजय चोर को, ३ मोरड़ीके इ डेको, ४ काछवा (कुर्म काछवा) को, ५ शैलक राज ऋषिको (थावञ्चापुत्रको) ६ तुंबड़ीको, ७ रोहणीको (सार्थवाह अने-च्यार बहुको) ८ मल्ली भगवती (मल्लीनाथ)को ९ जिनपाल जिनऋपिको, १० चन्द्रमाकी कलाको, ११ दावानलको, १२ जितशत्रु राजा अने सुबुद्धि प्रधानको, १३ नंद मणि-कारको, १४ तेतली पुत्र प्रधान अने पोटला सोनारके पुत्रको, १५ नदी वन फलको, १६ द्रौपदी (आवर ककानगरी) को, १७ काली द्वीप घोड़े (समुद्र अश्व) को, १८ सुसमा दारिकाको, १९ पुंडरीक कुडरीकको।

१६ काचसग्गरा १६ दोष---गोडे उपर पग

राखे १, काया आघी पाछी डोलावे २, उठंगण लेवे ३, माथो नमाय उभो रहे ४, दोनुं हाथ ऊंचा राखे ५, घुंघटो काढ़े ६, पगरे उपर पग राखे ७, वांको आडो रहे ८, साधुनी बरोबर रहे ९, गाडीनी ओघणनी परे रहे १०, खड़ो वांको रहे ११, रजोहरण ऊंचो राखे १२, एक आसण न रहे १३, आंख एक ठाम न राखे १४, माथो हलावे १५, कुकुकार करे १६, डील चलावे १७, आलस मोड़े १८, सुन्य चित्त करे १९ ।

इये उगनीस दोष काउसग्गमें वर्ज्यां ।

॥ बीशमां बोल ॥

२० बीस असमाधिया दोष---दबदब करतो चाले तो १, विना पूंजे चाले तो २, पूंजै कहां पग धरे कहां तो ३, मर्यादासुं अधिका पाट पाटला

शज्या भोगवे ता ४, गुरुके, वडोके सामो बोले तो ५, बहुश्रुतिजीकी घात चिंतवे तो ६, एकेंद्रियादि जीवने शाता, रस, विभूपा निमत हण तो ७, वार वार क्रोध करे तो ८, पीठ पूठे गुणवन्तका अवगुणवाद बोले तो ६, निश्चकारी भापा बोले तो १०, नवो कलह करे तो ११, चमाया हुवे कलहकुं वार वार उधेडे (फिर फिर उदीरे) तो १२, अकाले सिझाय करे तो १३, सचित्त रजसुं खरड्यो होय विना पूजे उठे बैठे चले अने आहारादि लेणे जाय तो १४, पहर रात्री उपरात गाढे शब्दे बोले तो १५, वारवार च्यार तीर्थमे कलह करे, गच्छ माहि भेद उत्पन्न करे तो १६, रे तु बोले तो १७, छवकायके जीवाकु असमाधि उपजावे तो १८, सवेरेका आहार लावे सामताइ भोगवे तो १९, एपणा कुमती आहार भोगवे तो २० ।

२० वीस बोले करी जीव तीर्थंकर गोत्र कर्म बांधे, अरिहंतजीरो जाप करे तो जीव कर्मरी कोड खपावे उत्कृष्टी भावना आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे १, सिद्धारा गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे २, सूत्र सिद्धांतरा गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ३, गुरुना गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ४, थिवरना गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ५, बहुश्रुतीना गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ६, तपस्वीना गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ७, ज्ञान उपर उपयोग देतो थको तीर्थंकर गोत्र बांधे ८, सम्यक्त पालतो थको तीर्थंकर गोत्र बांधे ६, विनय करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १० दोय वेला आवसग्ग करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे ११, व्रत पच्चक्काण चोखा पालतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र

बांधे १२, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यावतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १३, बारे भेदे तपस्या करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १४, सुपात्रने दान देवतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १५, वेयावच्च करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १६, सर्व जीवाने सुख उपजावतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १७, अपूर्वज्ञान पढतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १८, सूत्रनी भक्ति करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १९, तीर्थंकरनो मार्ग दीपावतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

॥ एकईसमां बोल ॥



२१ इकवीस सबला दोष (सबल कर्म) हस्त कर्म करे तो सबलो दोष १, मैथुन सेवे तो २,

रात्री भोजन भोगवे तो ३, आधाकर्मी आहार भोगवे तो ४, राजपिंड आहार भोगवे तो ५. उद्देशी १, क्रीय २, पामीच्चे ३, अछिज ४ अणिसट्टेय ५, अभ्भायरे ६, उदगमनरा ए छव दोष आहार भोगवे तो ६, वारवार पच्च-क्खाण लेवे छोडे तो ७, छव महीनामांही नवो टोलो वदले तो ८, एक मासमें ३ नदीके पाणीरो लेप लगावे तो ६, एक मासमें ३ माया थानक सेवैं तो १०, सिभ्भातरनो आहार भोगवे तो ११. जाणपूछने प्राणातिपात सेवे तो १२, जाणपुछ मृषावाद बोले तो १३, जाण पुछ अदत्तादान लेवे तो १४, सचित्त उपरे ऊठै वैठै तो १५, सचित्त संनिग्ध माटी उपर ऊठै वैठै हले चले तो १६, इन्डा जाला सहित पाट पाटलाभोगवे तो १७, मूल १ कंद २ खंध ३ त्वचा ४ शाखा ५ पलव (प्रवालां) ६ फूल ७ फल ८ बीज ६

हरा पत्र १७ ए दश प्रकारनी हरिकाय भोगवे तो १८, एक सालमे दस नदीरो लेप लगावे तो १९, एक वर्ष मध्ये दश माया थानक सेवे तो २०, सचित सेती हाथ पग खरड्या होय जिसके हाथसु आहार पाणी वेहरवे साधु लेवे तो सबलो दोष लागे २१।

२१ श्रावकना इकवीस गुण—अक्षुद्र १, जसवत २, सोम प्रकृति ३, लोकप्रिय ४, अक्रूरो स्वभाव नहीं ५, पापसे डरे ६, श्रद्धावत ७, लज्जावत ८, दयावत ९, दयावत १०, मध्यस्थ ११, गभीर १२, सोमदृष्टि १३, गुण रागी १४, धर्मकथी १५, साचो पक्ष करे १६, शुद्ध विचारी १७, वृद्धोकी रीत चाले १८, विनयवन १९, किया गुण माने २०, परहितकारी २१।

२१ श्रावकके इकवीस गुण—नवतत्त्वका स्वरूप जाणे १, धर्म करणीमें सहाय (सहायता) वछे

नहीं २, धर्मथकी चलाया किसीका चले नहीं ३. जिनधर्ममें शंकादि आणे नहीं ४. जे सूत्रगो अर्थ ज्ञान धारे निरणो निर्णय करे प्रमाद करे नहीं ५. श्रावकरा हाड और हाडरी मींजी धर्ममें रंगायमान रहवे ६. म्हारो आउखो अथिर छै. जिनधर्म सार छै इसी चिंतवणा करे ७, श्रावकजी फटिकरत्न जैसा निर्मला होय कूड कपट राखे नहीं ८. श्रावक घरका द्वार सदा पोहर दिन चढे तांई दान सारु उघाड़ा राखे ९, श्रावक एक मासमें छव पोसा करे १०, श्रावक राजाके अंतेउर भंडार, शाहुकारकी दुकानमें जावे तो अप्रतीत ऊपजे ऐसे कार्य करे नहीं ११, लिया व्रत पच्चक्काण निर्मला पाले १२, चौदह प्रकारे दान सुझतो मुनिने देवे १३. धर्मको उपदेश देवे १४, तीन मनोरथ सदा चिंतवे १५, च्यार तीर्थरा गुणग्राम करे अन्याय करे नहीं

१६, नया नया सूत्र सिद्धात सुणे १७, कोइ नवो आदमी धर्म पायो हुवे जिणने साज देवे ज्ञान सिखावे १८, दो वख्त कालोकाल पडिकमणो करे १६, सर्व जीवासु हितपणो राखे वैरभाव राखे नहीं २०, छत्ती शक्ति तपस्या करे ज्ञान शिखणको उद्यम करे २१।

२१ बोल, श्रावकरा गुण २१---कुरणावत हुवे १, दयावन्त हुवे २, लज्यावन्त हुवे ३, शिलवन्त हुवे ४, विरतवन्त हुवे ५, आपरी आत्मारो कार्य सारे ६, पराई आत्मारो वाक नहीं काढ़े ७, आई वेदना सर्व सहनकरे ८, पुन्य पापरो निर्णय करे ६, मिथ्याति परीसह देवे तो समभावे वेदे १०, बहु सूत्ररो जाणहुवे ११, सर्व जीवारो हितकारी हुवे १२, धर्ममें रातो रहे १३, पापसु डरतो रहे १४, निर्लोभी हुवे १५, निरस्वादि हुवे १६, निगरभी हुवे १७, आठ कर्मरा जाण हुवे १८, छती सक्ती

पोसेमें निंद्रा न लेवे १६, दृढधर्मी होवे २०, दूध पाणी जैसो न्याय करे २१।

अथ इकवीस बोल टोटो पडनेरा--१ भणने गुणनेरो आलसकरे तो ज्ञानरो टोटो पड़े, २ साधु साध्वी होयने स्नान करे तो सम्यक्तरो टोटो पड़े, ३ दोयवार शुद्धपट् आवश्यक न करे तो व्रत पच्चखाणरो टोटो पड़े, ४ आहार पाणीरो लोलपी होवे तो तपस्यारो टोटो पड़े, ५. विना उप्योग, अजयणासुं चाले तो जीव दयारो टोटो पड़े, ६ धन योवन रूपरो मद-करे तो आछी आरोग्य (निरोग) देहरो टोटो पड़े, ७ वड़ानो विनय न करे तो जिन आज्ञानो टोटो पड़े, ८ क्रोध कलेश करे तथा मिटयो कलह उधेरे तो हेत मिला-परो टोटो पड़े, ९ पछलि रातरी धर्म जा-गरणा न करे तो धर्म ध्यानरो टोटो पड़े, १० माया कपटाई दगाबाजी करे तो जस

कीर्त्तिनो टोटो पड़े, ११ चिना उच्चाट सोग, सङ्कल्प विकल्प मन राखे तो अकल, वुद्धिको टोटो पड़े, १२ साधु साधवी ग्राम नगर विहार न करे तो धर्म कथारो टोटो पड़े, ज्ञान सीखे सिखावे नहीं तो जिन शासन तथा सिद्धातको टोटो पड़े, १४ कठिन, कुल्यभाव कठोर परणाम राखे तो शीतलता पणा, सरल पणाका टोटो पड़े, १५ स्त्रीरो लालची होय, स्त्री री अभीलापा वाच्छा करे, राग रागणी सुणे तो शील व्रत ब्रह्मचर्यरो टोटो पड़े, १६ साधु साधवी श्रावक श्राविका च्यार तीर्थ माहो माही हेत मिलाप न राखे तो जैनमार्गरो टोटो पड़े, १७ व्रत पच्चख्काणमें दोष लगावे, आलोवे नहीं, निंदे नहीं, प्राय-च्छित्त लेवे नहीं, तपस्या करे नहीं, सलेपणा करे नहीं तो मोक्ष मार्गनो टोटो पड़े, १८ श्री अरिहतजी रा तथा अरिहत भापा धर्मरा तथा

च्यार तीर्थ रा अवर्णवाद बोले तो सत्य धर्म पामणोको टोटो पड़े, १६ तपस्या, आचार, भावनाका चोर होवे तथा सद्गुरुरो वचन नहीं माने तो ऊंची गतिरो टोटो पड़े, २० साधु साधवी गुरु, गुरुणी री आज्ञा उलंघे तो आराधक पणा रो टोटो पड़े, २१ श्री भगवानरा वचन उपरांत तर्क उठायने कहे तो शुद्ध मार्गरो टोटो पड़े ।

२१ पोषेका दोष—१ पोषाके निमित्त (पोसेके पहले दिन) हजामत करावे, वस्त्र धुलावे, रंगावे और शरीरकी शुश्रता करे सो दोष ।

२ पोषाके अगले दिन विषय सेवे सो दोष,

३ अजीर्ण होवे इस प्रकार अधिक आहार उतर पारणेमें करे सो दोष,

४ विषय विकार बढ़े ऐसा मोदक पुष्ट, सरस आहार उतर पारणेमें करे सो दोष ।

५ पोषाके वस्त्र तथा उपकरण बराबर पुंजे पडि-

लेहे नहीं माठी रिते जोवे माठी रिते पुजे सो दोष।

६ उच्चारादिक भूमिका पडिलेहण किये विना परठवे थोड़ी जागा पुंजे घणी जागा परठे माठी रिते जोवे माठी रिते पुजे माठी रिते परठे सो दोष।

७ पोषधव्रत अविधिसे लेवे तथा पाड़े सो दोष।

८ प्रमाणसे अधिक वस्त्र रखे सो दोष।

९ धर्मकी हेलना होवे ऐसे गदे, अपवित्र या रग रगीला वस्त्र रखे तथा खोलकर रखणे जैसा (खुलसके वैसा) आभुषण (गेहणा) रखे सो दोष।

१० पुजे पडिलेहे विना हालचाल करे सो दोष।

११ सो हाथसे ऊपरात जानेके बाद ईरीयावही नहीं पडिक्कमे, परठण जाते वखत आवसही आवसही न कहे, आवतो वखत निशीही निशीही न कहे, आज्ञा लीया विन परठे,

ऊंचे से परठे, परठीने तीन बार वोसरे वोसरे नहीं कहै सो दोष।

१२ संसारकी चरचा, संसारको नातो करे तथा प्रमाद सेवे तो दोष।

१३ परठीने आयकर तथा निंद्रासे उठकर तथा पडिलेहणा कीये वाद चोविसस्तव (चोईस्थवो) न करे सो दोष।

१४ शरीरका मैल उतारे या पुंजे विना खाज खुने निंद्रा लेवे तो दोष।

१५ विकथा या पर निंदा करे सो दोष।

१६ कलह या मश्करी करे तो दोष।

१७ अव्रतीको आदर देवे और आसनका आमंत्रण करे तो दोष।

१८ भाषा सुमति रखे विना बोले खुले मुंढे बोले सो दोष।

१९ दो घड़ी व्यतीत होनेके पेश्तर स्त्रीके आसन पर (जिस जगह स्त्री बैठी हो उस जगहपर)

पुरुष और पुरुष के आसन पर स्त्री वैठे तो दोप,

२० पुरुप स्त्री को और स्त्री पुरुष को विपय दृष्टि से देखे तो दोप।

२१ अपनी मालकीयती (अपना रख्याहुआ) पोषा के उपकरण के सिवाय अन्य चीजें अव्रतीकी आज्ञा लिये विना लेवे या अव्रती (खुले आद-मी) के पास कोई भी चीज मगवावे तो दोप।

श्रावकके २१ लक्षण---१ 'अल्प इच्छा'-थोड़ी इच्छा-विषय तृष्णा शब्द रुपादिकका विषय कमी करे,विषयमें अत्यत ग्रधी न होवे लुख वृत्ति रहे।

२ 'अल्पारभ' छव कायका अरभ वढावे नहीं, अनर्था दड सेवन करे नहीं, जितना आरभ घटता हो उतना घटानेका उद्यम करे।

३ 'अल्पपरिग्रही' धनकी तृष्णा थोडी, कुकर्म कुव्यापारकी इच्छा नहीं, जितना प्राप्त हुवा

है, उतनेही पर संतोष रक्खे, मर्यादा संकोचे

४ 'सुशील' ब्रह्मचर्यवंत, तथा आचार ` . ९
प्रशंनिय रक्खे ।

५ 'सुवृत्ति' व्रत प्रत्याख्यान शुद्ध निरतीचार
चढते प्रणामसे पाले ।

६ 'धर्मिष्ठ' नित्यनियम प्रमाणे धर्म क्रिया करे।

७ 'धर्म वृत्ति' मन वचन कायाके योग सदा
धर्म मार्गमें प्रवृतता रहे।

८ 'कल्प उग्रविहारी' जो जो श्रावकके कल्प
(आचार) है उसमें उग्र विहार करनेवाले
अर्थात् उपसर्ग उत्पन्न हुये भी स्थिर प्रणाम
रक्खे।

९ 'महासंवेग विहारी' सदा निवृत्ति (निर्दोष)
मार्गमें तल्लीन रहे।

१० 'उदासी' संसारके कार्यमें सदा उदासीन
व्रत्ति यूक्त रहे।

११ 'वैराग्य वंत' सदा आरंभ परिग्रहसे निवर्तने

की अभीलाषा रक्खे ।

१२ एकांत आर्य' निष्कपटी सरल- बाह्याभ्यतर एक सरीखे रहे ।

१३ 'सम्यग मार्गी' सम्यक ज्ञान दर्शन चरीता चरीते में सदा प्रवृते ।

१४ 'सु साधु' धर्म मार्गमें नित्य वृद्धि करते आत्म साधन करे, प्रणामसे अवृत सर्वथा वध करदो है, फक्त ससार व्यावहार साधने द्रव्यसे हिशा करनी पडती है ※ इसलिये भाव श्रावकका लक्षण साधु जैसे ही हे।

१५ 'सुपात्र' ज्ञानादि वस्तुका विनाश न होवे तथा दान फली भूत होवे ।

※ हिशाकी चौभङ्गी—१ द्रवसे हिशा और भावसे हिशा, जो कषाइ आदिक जावका बधकरे सो २ द्रव्यसे हिशा और भावसे अहिशा जो हिशाके त्यागी मुनीराजको आहार विहार आदिकमें बिन उपयोग हिशा निपजे सो ३ भावसे हिशा और द्रवसे दया द्रव लिंगी तथा अभव्वी साधू करे, ४ और द्रवसे भावसे दोनोसे अहिशा जोके अप्रमादि तथा केवल ज्ञानी मुनिराज पालते है ।

१६ 'उत्तम' सम्यत्वी आदिकसे गुणाधिक श्रेष्ट है ।

१७ 'क्रिया वादी' पुन्य पापके फलको माननेवाले शुद्ध क्रिया करनेवाले ।

१८ 'आस्तिक्य' दृढ श्रद्धावंत जिनेश्वरके या साधुके वचनपर पूर्ण प्रतीतवंत आसतावंत ।

१६ 'आराधिक' जिन वचन अनुसार करणी करनेवाले, शुद्ध वृत्ति ।

२० 'जैन मार्ग प्रभावक' तन, मन, धन, करके धर्मकी उन्नती करे ।

२१ 'अर्हंतके शिष्य' साधु जेष्ट शिष्य, और श्रावक लघू शिष्य, ऐसे अनेक उत्तमोत्तम गुणके धरण हार श्रावक होते हैं ।

ऐसे अनेक गुणके धारक श्रावकजी बारह व्रत ग्रहण कर अव्रत को रोकते हैं ।

॥ बाइसमां बोल ॥

२२ परिसह —(१) "क्षुधा परिसह" क्षुधा उत्पन्न होनेसे मुनीश्वर भिक्षावृत्तीसे अपना निर्वाह करे, परन्तु जो कभी आहारका जोग न बने और मरणांत कष्ट आपड़े तो भी अन्न, हरीलीलोती प्रमुख सजीव पदार्थ लेवे नहीं, और पकानादिक क्रिया करके किंवा करायके ऐसा सदोष आहार भोगवनेकी इच्छा भी करे नहीं, (२) "पिवासा परिसह" प्यास लगे तो अचित जलको याचना करे परन्तु जोग न मिलनेसे सचेत जलकी इच्छा भी करे नहीं, (३) "सीय परिसह" शीत निवर्तन करनेके लिये अग्निसे शरीर तपाने की, या मर्यादा उपरांत वस्त्र भोगवनेकी, या मर्यादा के अंदर भी सदोप-अकल्पनीय वस्त्र ग्रहण करनेकी इच्छा करे नहीं, (४)

"उसिन (उष्ण) परिसह"—उष्णता तापसे आकूल व्याकुल होने पर भी साधु स्नान करे नहीं, और पंखा आदिसे हवा लेवे नहीं, (५) "दंश मस परिसह"--वर्षा ऋतुमें डांस--मच्छर खटमल इत्यादि जीवांकी पीड़ा होनेसे उनको समभावसे सहन करे (६) "अचेल परिसह"—वस्त्र फट जानेसे और जीर्ण होनेसे भी मुनीदीन--पणे वस्त्रकी याचना करे नहीं, तथा सदोप वस्त्र भोगवने की इच्छा करे नहीं, (७) "अरइ परिसह"-अन्न वस्त्रादिक का जोग नहीं बननेसे भी साधुको-अरति (चिंता) उत्पन्न नहीं होनी चाहिये, नरक तिर्यंचादि गतिमें जो दुःख परवश्य पणे सहे हैं उनको याद करके परिसह समभावसे सहन करे, (८) " इत्थी (स्त्री) परिसह" कोई दुष्टा (स्त्री) साधुको विषयकी आमंत्रणा करे, किंवा हाव-भाव-

कटाक्षसे मन खेंचनेकी युक्ती करे, तो भी
साधु अपने मनकी लगाम बराबर पकड
रख्खे और इस तरह विचार करे कि —

काव्य—समाइ पेहाए परिव्वयतो,
सियामणो निरसइ बहिद्धा।
न सा मह नोवि अहपितीसे,
इच्चेवताओ विणइज्ज राग॥

अर्थात्-- श्री दशवेकालीक सूत्रमे ऐसा
कहा है कि यदि स्त्री आदिकको देखनेसे
साधुका मन सयमसे भ्रमीत हो जावे तो,
ऐसा चितवन करना कि--ये स्त्री मेरी नहीं
हे, और मे उनका नहीं हू, ऐसा विचारके
स्नेह राग निवारना, ऐसा करने पर भी जो
मन शात न होवे तो —

आयाव्या ही चय सोगमल्ल,
कामे कमाही कमियखु दुख।
छिंदाहि दोस विणइज्ज राग,
एव सुही होइसि सपराए॥५॥

अर्थात्-शरीरका सुखमालपणा छोड़कर सूर्यकी आतापना लेना, उणोदरी प्रमुख बारह प्रकारके तप करना, आहार कमी करना जाना, चुधा सहन करना, ऐसा करनेसे शब्दादिक काम भोग और उनसे उत्पन्न होनेवाले राग द्वेप दूर रहेगा और जिवको सुख मिलेगा, (६) "चरिया (विहार) परिसह"—प्रेमफासनें नहीं फसनेके लिये साधूको ग्रामानुग्राम विचरना पड़ता है, नवकल्पी (८ महीनेके ८, और चौमासेका १, ऐसे ६ कल्पी) विहार करना पड़ता है, वृद्ध-थीवर-रोगी तपस्वी या उन्होंकी सेवा करनेवालेको तथा ज्ञाननिमित्त गुरुकी आज्ञासे एक ग्राम रहनेमें अटकै नहीं, (१०) "निसीया परिसह" चलते चलते साधूको रास्तेमें विश्रामके लिये एक ठिकाने बैठना पड़े और वहां समविषम भूमिका

मिले तो राग द्वेष नहीं करे (११) "निखा परिसह"—कहीं एक रात्री और कहीं चातुर्मासादिक अधिक काल रहना पड़े और वहा मनाज्ञ सेज्या (शय्या) स्थान (रहनेका मकान) नहीं मिले—टूटाफूटा इत्यादि, उपद्रवकारी मकानका संयोग बने तो मनमें किलामना नहीं पावे (१२) "अक्रोस (रोस) परिसह" ग्रामादिकमें रहते साधुका भेष—क्रिया अनुष्ट देखकर कोई ईर्षावन या मनाभिमानी मनुष्य कठोर वचन कहे-निंदा करे--अछूता आल देवे- ठग पाखंडी बतावे तो भी साधु समभावसे सहे (१३) "वध परिसह - कोई मनुष्य कोपाग्न होकर ताड़न कर बहे तो भी मुनी सम भावमें सहे (१४) 'याचना परिसह'—औषधादिक की जरूर पड़नेसे याचना करनी पड़े तो 'मै साधु घरका होकर कैसे मांग?

ऐसा अभिमान न लावे, साधुका तो निर्वाह याचनापर है, (१५) " अलाभ परिसह " याचना करने पर भी इच्छित वस्तु न मिले तो खेद नहीं लाना, (१६) "रोग परिसह" शरीरमें कोई प्रकारका रोग उत्पन्न होनेसे " हाय, हाय ! आह, आह ! " ऐसा न करे, (१७) " तृण फास परिसह " रोगसे दुर्बल हुवा शरीरको पृथ्वीका कठण स्पर्श सहन न होवे तब कुछ गादी तकीए तो साधूके कामको आवैहीं नहीं शाल (चावल) इत्यादिकका नरम पराल (घास) का विछाना उपर शयन करे जब उसका स्पर्श शरीरको कठिन (करड़ा) लगे तो गृहस्थावासको न सभाले, (१८) " जल मेल परिसह"—मेल और परसीनेसे घबराया हुवा साधु स्नानकी अभीलाषा न करे, (१६) "सत्कार परिसह"—साधुको सत्कार वंदना नमस्कार न करे तो

इससे साधुको बुरा न मानना चाहिये, (२०) "पन्ना परिसह"—साधुके पास ज्ञान ज्यादा होनेसे वहोत जणे सूत्रकी वाचना लेनेको आवे, कितनेक प्रश्न पूछनेके लिये आवे, तब कोचवाकर (कन्टाल कर) घबराकर ऐसा न चितवे कि मैं मूर्ख रहता तो ऐसी तकलीफ नही पड़ती, (२१) 'अन्नाण परिसह" बहुत परिश्रम उठाने पर भी ज्ञान न मिले तो खेदित नहीं होना चाहिये, अकेले ज्ञानसे मोक्ष नहीं है, ज्ञान और क्रिया दोनोकी जरुरत है, (२२) "दंशण परिसह"—ज्ञान थोड़ा होनेसे जिन वचनमें शंका आदि उत्पन्न हुवे तो समकितको दूषण (अनाचार) लगावे नहीं, परन्तु शास्त्र वचनपर पूर्ण श्रद्धा रक्खे।

२२ परीसह (परीषह) विचार—गाथा पन्ना अन्नाण परीसह नाणावरणम्मिहू ति दोचेव

एकोंअ अंतराए अलाभ परीसहोचेव, १
अचेल इंत्थी निसहीया-जायणाय उक्कोसा
सक्कार परीसहे एए चरित्तमोहम्मिसत्त व
दंसण मोहं दंसण परीसहो नियम सो हवइ
एक्को सेसा परीसाहा खलु एक्कारस वेय-
णिज्जम्मि, ३ वावीस परीसह चारकर्म थी
उपजै, ज्ञानावरणी थी बे परीसह उपजै,
तेहना नाम प्रज्ञा १ अज्ञान २ परीसह, वेदनी
थी ११ परीसह ते केहा (किसा) क्षुधा १, तृषा
२, शीत ३, उष्ण ४, डांस मसा ५, चर्या ६,
शिज्जा ७, वध ८, रोग ९, तृण स्पर्श १०,
मल ११, मोहनी थी ८ परीसह उपजै
दर्शन मोहनी थी दर्शन परीसह चरित्र
मोहनी थी सात उपजै ते केहा? १ अरति
२ अचेल ३ स्त्री ४ निषेध ५ याचना ६
आक्रोश ७ सत्कार अंतरायथी १ ऊपजै
अलाभ एवं २२ परीसह छद्मस्थ एकै समें

२० परीसह वेदे शीत अथवा उष्ण चालवो अथवा वेसवो केवलीने इग्यार परीसह होय तिणमें एके समय ६ वेदै शीत अथवा उष्ण चालवो तथा वेसवो वीयराग सयमे एके समय १२ परिसह वेदे द्वावि श तिरपि परीषहा वादर सपराय नाम्नि गुणस्थानके कोऽर्थोऽनिवृत्ति वादर सपराये नवमे गुण-स्थान यावत् सर्वेपि परीपहा भवति चतुर्दश सख्या एव क्षुत्पिपासा शीतोष्ण दशमसक चर्य्या शय्या वधा लाभ रोग तृण स्पर्शमल प्रज्ञा अज्ञान परीसहा सूक्ष्म सपराये उदय मासादयतीति तथा आठकर्मनो वधतेहनि २२ परिसह वीस एक समय व ध छव्विहवध सराग छद्मस्थने १४ परीसह उदय १२ नौ एकविहवधक वीतराग छद्मस्थने १४ उदय १२ नौ एकविह व धक सयोगीने ११ परीसह अयोगिने ११ परीसह उदये

६ होइ पूर्ववत् युग्म परीसहाभावः इति २२ परीषहाधिकारः।

२२ वाद, २२ जणासुं वाद न कीजे—१ धनवन्त सेती वाद न कीजे, २ बलवन्त सेती वाद न कीजे, ३ घणे परिवाररे धणीसुं वाद न कीजे, ४ तपस्वीसुं वाद न कीजे, ५ नीचसुं वाद न कीजे, ६ अहंकारीसुं वाद न कीजे, ७ गुरांसुं वाद न कीजे, ८ थिवरसुं वाद न कीजे, ९ चोरसुं वाद न कीजे, १० जुवारीसुं वाद न कीजे, ११ रोगीसुं वाद न कीजे, १२ क्रोधीसुं वाद न कीजे, १३ झुठबोले जिणसुं वाद न कीजे, १४ कुसंगतीसुं वाद न कीजे, १५ राजा सेती वाद न कीजे, १६ शीतल लेश्यारे धणीसुं वाद न कीजे, १७ तेजु लेश्यारे धणीसुं वाद न कीजे, १८ मुख मीठा पेटे दगो तिणसुं वाद न कीजे, १९ [illegible] वाद न

कीजे, २० ज्ञानीसु वाद न कीजे, २१ गणिकासु वाद न कीजे, २२ बालकसु वाद न कीजे ।

॥ तेइसमो बोल ॥

२३ तेवीस बोल वेगा (जल्दी) मोक्ष जाणेको, १ आकरो (कठिन) तप करे तो जीव वेगो (शिघ्र) मोक्ष (मुक्ति) जावे, (जाय) २ मोक्ष-कार्य करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ३ शुद्ध प्रणामसे सूत्र सिद्धात सुणे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ४ शुद्ध मनसु सूत्र ज्ञान भणे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ५ पाच इन्द्रीयोना विषय त्यागे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ६ छव काय जीवारी दया पाले तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ७ भण्या हुवा ज्ञान त्रार

वार चितारे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ८ साधु साधवीरी भक्तिभाव राखे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ९ तीन योगसे जैसे करणा करावणा अनुमोदनो यह नव कोटी शुद्ध पच्चक्खाण करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १० धर्मको संवन्ध साचो जाणे (सद्दहे) तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ११ कषायका त्याग करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १२ क्षमा करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १३ लाग्या दोष का प्रायश्चित लेवे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १४ लीये हुवे व्रत पच्चक्खाण निर्मला पाले तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १५ शुद्ध प्रणामसु शील पाले तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १६ च्यार तीर्थने साताउपजावे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १७ निरवद्य भाषा वोले तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १८ संजम लेकर अंत तक शुद्ध पाले

तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १९ धर्मध्यान शुक्ल ध्यान ध्यावे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, २० महीनेमें छव पोसा करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे २१ पाछली रात्रीरी धर्म जागरणा करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, २२ उभइ टंक कालो प्रतिक्रमण करे, सामाइक करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, २३ आलोयणा लेइ सथारा करी पंडित मरण हुवे तो जीव वेगो मोक्ष जावे।

॥ चौवीसमा बोल ॥

॥ वर्तमान चौवीसी ॥



२४ तिर्थंकराका नाम---१ श्री ऋषभदेवजी, २ श्री अजितनाथजी, ३ श्री सभवनाथजी, ४ श्री अभिनदनजी, ५ श्री सुमतिनाथजी, ६ श्री पद्मप्रभुजी, ७ श्री सुपार्श्वनाथजी, ८

श्री चंद्रप्रभुजी, ६ श्री सुविधिनाथजी, १ श्री शीतलनाथजी, ११ श्री श्रेयांसजी, १२ श्री वासपूज्यजी, १३ श्री विमलनाथजी, १४ श्री अनन्तनाथजी, १५ श्री धर्मनाथजी, १६ श्री शांतिनाथजी, १७ श्री कुंथुनाथजी, १८ श्री अरनाथजी, १६ श्री मल्लीनाथजी, २० श्री मुनि सुव्रतजी, २१ श्री नमिनाथजी, २२ श्री रिट्ठनेमिनाथजी, २३ श्री पार्श्वनाथजी, २४ श्री महावीर स्वामीजी।

२४ भगवती सूत्र शतक १६ उद्देसे नवमें बोल २४—मनुष्य तिर्यंचमें बैठा थकां नारकीमें जाणेवाले कुं भव द्रव्य नेरीया कहीजे १, भव द्रव्य नारकीयारी (नेरियारी) स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्तकी उत्कृष्टी कोड पूर्वकी मनुष्य तिर्यंचमें बैठा थकां देवतारो आउखो बांधे तिके भव द्रव्य देवकी स्थिति असुर-कुमारादि १० भवनपती, वाणव्यंतर, जोतषी,

वैमानीकरी स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृष्टी ३ पल्यकी मनुष्य तिर्यंच देवतामें बैठा थका पृथ्वी - १, पाणी २, वनस्पतीमें जाणेवालेकी स्थिति जघन्य अतर्मुहुर्त उत्कृष्टी २ सागर झाझेरी मनुष्यमे तिर्यंचमे बैठा थका तेऊ १ वायु १ तीन विकलेन्द्रिमें जाणेवालारी स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृष्टी कोडपूर्वकी च्यारु गतीमें बैठा थका मनुष्य १ तिर्यंचमे जाणेवालेकी स्थिति जघन्य अतर्मुहुर्त उत्कृष्टी ३३ सागरकी।

२४ दडकका बोल—साधु आर्याजीमे १ दडक पावे, सरावगमें २ दडक पावे, विकलेन्द्रिमें ३ दडक पावे, सत्तकहतापृथ्वीयादिकमे ४ दडक पावे, एकेन्द्रिमे ५ दडक पावे, घ्राणेन्द्रिके अलद्धियेमें ६, चक्षु इन्द्रिके अलद्धियेमे ७, असन्नीयेमें ८, तिर्यंचमे ९, भवन पतीमें १० नपुसकमें ११ तीरछेलोकमें

१२, देवतामें १३, नोगभंजरे
१४, पुरुषवेदमें १५, पंचेन्द्रिमें १६,
शरीरमें १७, तेजुलेश्यामें १८, त्रसकायेमें
१९, सत्यरे अलद्धियेमें २०, नीचे लोकमे
२१, माठीलेश्यामें २२, पृथ्वी पांणी तेईसरी
आगतमें २३, सिद्धांरे अलद्धियेमें दंडक
२४, पावे ।

॥ पचीसमो बोल ॥

२५ में बोले सामायिकरा २५ भेद—१ द्रव्यथकी निकट भवी, २ क्षेत्रथकी त्रसनाडी, ३ कालथकी देसउणो अर्द्ध पुद्गलीक, ४ भावथकी क्षय उपशम, ५ पुनःद्रव्यथकी ५ आश्रवरात्याग ६ खेत्रथकी आखेलोकमें, ७ कालथकी इतर आवत्, ८ भावथकी करण-

जोग ६ द्रव्यशुद्धि-भडउपगरणनिरविकार, १० क्षेत्र शुद्धि-चित्रामादिकरो मकान नहीं होवे अथवा राजादिकरो कोई काम नहीं हुवे, १२ भाव शुद्धि-शुद्ध श्रद्धा, १३ सामान्य-समभाव, १४ विशेष च्यार भेद-सूत्र सामायिक समकित सामायिक देशवृति सामायिक सर्ववृत्ति सामायिक १५ नाम निक्षेपाकरी किसी जीव अजीवरो नाम सामयिक देवे १६ स्थापना निक्षेपाकरी अक्षर लिख दीया--"सामायिक" अथवा पुतली रख दीवी १७ द्रव्य निक्षेपाकरी-सुन्यचित्त १८ भावनिक्षेपा उपयोग सहित १६ नेगमनय सामायिकरा भाव हुआ, २० सग्रह नय सामायिकरा भड उपगरणका समह किया, २१ व्यवहार नय सावद्य योगका त्याग करे २२ ऋजुसूत्र नय बत्तीस दोष टाले २३ शब्द नय आत्मा और जीवने मिश्र पणेमाने २४ समभिरूढ नय

श्रद्धा उपर आरुढ हो गया २५ एवंभूत नय-निज आत्मरूपकुं सामायिक माने अन्य नहीं(अन्यने नहीं माने),

२५ वक्ता उपदेशकके गुण—१ दृढ़ श्रद्धावंत होवे क्योंकि जो आप पक्के श्रद्धावंत होंगे वोही श्रोताकी श्रद्धाको निशंकितसे दृढ़ कर सकेंगे, २ वाचनाकलावंत हुवे किसी भी प्रकार के शास्त्रको पढते हुये जरा भी अटके नहीं शुद्धता और सरलतासे शास्त्र सुणावे, ३ निश्चय व्यवहारके जाण होवे जिस वक्त जैसी परषदा और जैसा अवसर देखे वैसा ही सद्बोध करे की जो श्रोता गुणधारण करे उनकी आत्मामें रुचे, ४ जिनाज्ञा भंगका डर होवे यथात् एक देशके राजाकी आज्ञाका भंग करनेसे सजा मिलती हैं तो त्रिलोकी नाथ तिर्थंकर भगवानकी आज्ञाका भंग करेगा उसका क्या हाल होवेगा ऐसा जाण

आज्ञाविरुद्ध विपरीत परुपणा न करे, ५ क्षमा वंत हुवे क्योंकि क्रोधी होवेगा वो अपणे दुर्गुणसे डरता क्षमादि धर्मकी यथातथ्य परुपणा नही कर सकेगा और वक्तपर क्रोध उत्पन्न होवेगा रगमे भग कर देवेगा इस लिये वक्ता क्षमावंत चाहिये, ६ निराभिमानी अर्थात् विनयवानका बुद्धि प्रबल रहती है वो यथातथ्य उपदेश कर सकते है और जो अभिमानी होता है वो सत्यासत्यका विचार नहीं करते अपने खोटी बातको भी अनेक कुहेतु करके सिद्ध करेंगे और दुसरेकी बात को भी उत्थापन करेंगे, ७ निष्कपटी होवेगा जो सरल होवेगा सोही यथातथ्य बात प्रकाशेगा कपटी तो अपणी दुर्गुण ढकनेके लिये बातको पलटावेगा ८, निर्लोभी होवे सो वेपरवाइ रहते है वो राजा रंक सबको एक सा सत्य उपदेश कर सकते है और

लोभी खुशामदी करनेवाले होते हैं वो श्रोताका मन दुःखा जानके बातको फिरा देते हैं, ९ श्रोताके अभिप्रायका जाण होवे अर्थात् जो जो प्रश्न श्रोताके मनमें उठें उनको मुखमुद्रासे जाण उनका आप ही समाधान कर देवे, १० धैर्यवंत होए कोईभी बात धीरजसे श्रोताके समझमें आवें वैसी ही करै तथा प्रश्नका उत्तर श्रोताके समझमें बैठे ऐसा मधुरतासे थोड़ेमें देवे, ११ हटग्राही नहीं होवे अर्थात् किसी प्रश्नका उत्तर आपको न आवो तो उसकी झुठी स्थापना नहीं करे नम्रतासे कहै कि मेरेको उत्तर नहीं आता है मैं किसी गुरुसे पूछकर निश्चय करूंगा १२ सद्गुणी-निंद्यकर्मसे बचा हुवा होवे सो अर्थात् राजारी विश्वास-घात इत्यादि कर्म जिसने नहीं किये होवे वो जो के किसीसे दबता नहीं है, १३

कुलहीण नहीं होवे क्योंकि कुल हीणकी श्रोता मर्यादा नहीं रख सकते हे, १४ अंग हीण न होवे क्योंकि अंगहीण शोभता नहीं है १५ कुस्वरी न होए क्योंकि खोटे स्वरवाले का वचन सुहाता नहीं हे १६ बुद्धिवंत होवे १७ मिष्टवचनी होवे, १८ कांतिवंत होवे, १६ समर्थ होवे उपदेश देता थके नहीं २० बहुत ग्रन्थ अवलोकन (देखे) हुए होय २१ अध्यात्म अर्थका जाण होवे, २२ शब्दका रहस्यका जाण होवे २३ अर्थ, नयोंसम विस्तार कर जाणे २४ अनेक युक्तियों, तर्कों का जाण होवे, २५ सर्वशुभ गुण, युक्त होवे --यह २५ गुण-युक्त होगा सोही असर कारक सद्उपदेश कर सकेंगे ।

२५ मे बोल—पांच महाव्रतकी पचीश भावना, पहिले महाव्रतकी पांच भावना --इर्याभावना १ मनभावना २ वचनभावना ३, एषणा-

भावना ४, अयाणभंडमत निखेवणा भावना ५, दूजे महाव्रतरी पांच भावना, झुठ न बोले ६, क्रोध करी न बोले ७, लोभ करी न बोले ८, भय करी न बोले ९, हास करी न बोले १०, तीजे महा व्रतरी पांच भावना, अठारे प्रकारना थानक न भोगवे ११, तृण मात्र पण जाचीने लेवे १२, थानक घटारे मठारे नहीं १३, साधर्मीका वस्त्र आज्ञा विना लेवे नहीं १४, साधुरी वेयावच्च करे १५, चोथे महाव्रतरी पांच भावना, स्त्री पशु पिंडगरहित थानक भोगवे १६, स्त्री की कथा न करे १७, स्त्रीका अंग उपांग न निरखे १८, पूर्वली क्रीडा भोग न संभारे (चितारे) १९, सरस आहार नित प्रते न करे २०, पांचमें महाव्रतरी पांच भावना, शब्द २१, रूप २२, गंध २३, रस २४, फरस २५, मनोगम उपर राग न करे अमनोगम उपरे द्वेष न करे ।

॥ २५॥ साढा पचीस आर्य देश ॥



१ मगध देश राजगृहीनगरी १ कोड़ ६६ लाख ग्राम ।
२ अग देश चपानगरी ५ लाख ग्राम ।
३ वग देश तामलिप्तीनगरी १८ लाख ग्राम ।
४ कलिग देश कचनपुर नगर २० लाख ग्राम ।
५ काशी देश वाणारसी नगरी १ लाख ६० हजार ग्राम ।
६ कोशल देश साकेत (अजोध्या) नगर ६६ हजार ग्राम ।
७ कूरू देश गजपुर नगर (हथीणापुर) ८ लाख २३ हजार ४२५ ग्राम ।
८ कूशार्त्त देश सोरीपुर नगर १ लाख ४३ हजार ग्राम ।
९ पाचाल देश कपिलपुर नगर ३ लाख ६३ हजार ग्राम ।

१० जंगल देश अहिच्छत्ता नगरी १
हजार ग्राम ।

११ सोरठ देश द्वारावती (द्वारका)
लाख ८० हजार ५२६ ग्राम ।

१२ विदेह देश मिथिला नगरी ८ हजार

१३ वत्स (कच्छ) देश कोशांवी नगरी २८
ग्राम ।

१४ शांडिल देश नंदीपुर नगरी २१ हजार ग्राम

१५ मलय देश भाद्दिलपुर नगरी ७० हजार ग्राम

१६ वच्छ देश वेराटपुरी (नगरी) २ लाख ८८
हजार ग्राम ।

१७ वरण देश अच्छापुरी (नगरी) २४ हजार
ग्राम ।

१८ दशार्ण देश मृतिकावती नगरी १८ हजार
ग्राम ।

१९ वेदर्क (वेदी) देश शौक्तिकावती नगरी ४२
हजार ग्राम ।

२० सिंधू देश वीतभय (पाटण) नगर ६ लाख ८० हजार ५०० ग्राम।
२१ सौवीर देश मथुरा नगरी ८ हजार ग्राम।
२२ सूरसेन देश पावा नगरी ३६ हजार ग्राम।
२३ भग देश मासपुरी नगरी ५२ हजार ४५० ग्राम।
२४ कुणाल देश सावत्थी नगरी ६३ हजार ग्राम।
२५ लाट देश कोटीवर्ष नगरी ७ लाख १३ हजार ग्राम।
२५॥ केकय (अर्द्ध कैंकेड) अर्द्ध देश श्वेतविका नगरी १ लाख २८ हजार ग्राम आर्य्य १ लाख २८ हजार ग्राम अनार्य्य ७ हजार ग्राम खालसे।

ग्राम संख्या श्रीपनणाजी सुत्रके अर्थमे है।



२५॥ (साढापचीस) आर्य देश १, मगध देश राजगृह नगरी १ कोड ६६ लाख गाम २, अगदेश चपानगरी ५, लाख गाम ३, बग देश तामलीसी नगरी १८ लाख गाम ४, कलिग देश कचणपूर नगर २० लाख गाम ५, काशी देश वाणारसी नगरी १ लाख ६० हजार गाम ६, कोसल देश साकेत नगर (अयोध्या नगरी) ६६ हजार गाम ७, कुरु देश गजपुर नगर (हथीनापुर नगर) ८ लाख २३ तेवीस हजार ४२५ गाम ८, कुशार्त्त (कुशावर्त्त) देश सोरीपुरी नगर १ लाख ४३ हजार गाम ६, पचाल देश कपिलपुर नगर तीन लाख ६३ हजार गाम १०, जगल देश अहिछत्ता नगरी ७ लाख ४५ हजार गाम ११, वत्थ (कछ) देश कोशम्बी नगरी २८ हजार गाम १२, साडिल देश नदीपुर नगरी २१ हजार गाम १३, मालय देश भद्दिलपुर

नगरी ७० हजार गाम १४, वच्छ
नगरी (वेराटदेश वच्छपुर) २
हजार गाम १५, दशार्ण देश
नगरी १८ हजार गाम १६,
अत्थापुर नगरी चोवीस २४ हजार
१७, विदेह (वेदि) देश
नगरी ४२ हजार गाम १८, सिंधू देश
भय पाटण (नगर) ६ लाख ८०
पांचसो गाम १६, सौवीर देश मथुरा
८ हजार गाम २०, विदेह देश
नगरी ८ हजार गाम २१, सुरसेन देश
नगरी (पावापुरी) ३६ हजार गाम २२,
देश मासपुर नगर ५२ हजार चार सो
पचास गाम २३, लाट देश कोटोवर्ष नगरी
(कादा वती नगरी) ७० लाख १३ हजार
गाम २४, कुणाल देश सावत्थी नगरी ६३
हजार गाम २५, सोरठ देश द्वारा नगरी ६८

हजार पाचसो २६ गाम २५॥, कैकेई अर्द्ध (केकेय) देश श्वेतविका नगरी १ लाख २६ हजार आर्य देश १ लाख २६ हजार अनार्य देश ७ हजार खालसे।

॥ पाठन्तर ॥

अथ आर्य देश १ मगध देश राजगृही नगरी पूर्व देश प्रसिद्ध मुनिसुव्रत जन्म २ अगदेश चंपा नगरी राजगृहीथकी पूर्वदेशे कोश ६० श्री वासुपूज्य पचकल्याणक वगदेश तामलिप्ता नगरी सम्मेत शिखरथी दक्षिण दिशे उड़ीसा जगन्नाथपुरी पासे ४ कालिंग देश कचणपुर नगरी हाजी पुर थी पूर्व दिशे ३० कोस, कोशलदेश अयोध्या नगरी खड़राबादथी कोश ६० उत्तर दिशे इस समय आहिज प्रसिद्ध छै ६ कुरुदेश हस्तिनापुर नगर दिल्लीथी

कोस ४० इशानकुणें शांति कुंथु अरि जन्म कल्पाणक ७ कुशावर्त्त देश सोरीपुर नगर आगराहूंती कोश १८ अग्निकूणें नेमिजिन जन्मकल्पाणक ८ पंचालदेश (पंजाब) कांपिल्यपुर नगर आगराहूंती कोश ५० उत्तर दिशैं श्री विमलनाथ जन्म ९ जंगलदेश अहिछत्ता नगरी सांभलि थको कोस ४० उत्तर दिशी १० सोरठ देश द्वारिका नगरि गुजरात परै प्रसिद्ध ११ काशी देश वणारसी नगरी जुणपुरथी कोश १८ अग्निकुणे १२ विदेह देश मिथिला नगरी हाजीपुरथी कोश ४० उत्तर दिशें गंगापार मल्लिनमि जन्मः १३ वच्छ (वत्स) देश कोशांबी नगरी जुणपुरथी कोस ५० पूर्व दिशें पद्म प्रभु जन्मः १४ शांडिल्य देश नंदिपुर झाड़ खंड मांहि १५ मलय देश भद्दिल पुर समेत शिखरथी कोश २५ उत्तर पासै शीतल जन्मः १६ वैराट देश वच्छपुर

सांभरपासें १७ वरण देश अच्छापुर (अस्था-पुर) १८ दशार्ण देश मृत्तिकावती नगरी गया थी २५ कोस १९ चेदीदेश शुक्ति नगरी हाजीपुरथी कोश ५० उत्तर दिसें २० सिधू देश वीतभय पाटण जेसल मेरथी पश्चिम दिशे २१ सोवीर देश मथुरा, राजगृही पासें २२ वगदेश पावापुरी राजगृही पासें २३ वर्त्त देश (भंगदेश) मासपुर ४२ कुणाल देश सावथी नगरी खेंरावादथी ६० कोस २५ लाट-देश कोडीवर्ष नगर उड़ीसा पासें २५॥ कैकेई देशार्द्ध श्वेताविका नगरी चत्रीकुडथी कोस ५० इति साडापच्चीस आर्य देश जाणना ॥

॥ छवीसमां बोल ॥

२६ प्रकारे दशाश्रुत स्कध, वृहत् कल्पने व्यव-हारना अध्ययन—(१) दस दशाश्रुत

स्कंधना, (२) छ वृहत् कल्पना, दश व्यवहारनां अध्ययन छे (१० १०=२६)।

॥ साताइसमां बोल ॥

२७ प्रकारे अणगारना गुण— (१) सर्व पातथी विराम, (निवर्ते) (२) सर्व मृषावा थी विराम, (३) सर्व अदत्तादानथी (४) सर्व मैथुनथी विराम (५) सर्व परिग्रहथी विराम, (६) श्रोत्रेन्द्रिय निग्रह, (७) चक्षु धेन्द्रिय निग्रह, (८) घ्राणेन्द्रिय निग्रह, (६) रसेन्द्रिय निग्रह, (१०) स्पर्शेन्द्रिय निग्रह, (११) क्रोध विजय, (१२) मान विजय, (१३) माया विजय, (१४) लोभविजय, (१५) भाव सत्य, (१६) करण सत्य, (१७) योग सत्य, (१८) क्षमा, (१६) वैराग्य, (२०) मनसमा-

धारणता, (२१) वचन समाधारणता, (२२) काय समाधारणता, (२३) ज्ञान, (२४) दर्शन (२५) चारित्र, (२६) वेदना सहिष्णुता, (२७) मरण सहिष्णुता,

---

॥ पाठन्तर ॥

पच महव्वय जुतो, पचि द्रिय समरणो ।
चउविह कषाय मुक्को, तउसमाधारणीया ॥
तिउसच्च सपन्न तिउ, खनी सवेगरउ ।
वेयणामच्चू भयगय, साधुगुण सत्तवीस ॥

अर्थ—५ महाव्रत (पचीस भावना युक्त) शुद्ध निर्दोष पाले, ५ इन्द्रियो २३ विषयसे निवर्ते, ४ क्रोधादि कषायसे निवर्ते ।
१५ 'मन समाधारणिया' पापसे मन निवर्ताके धर्म मार्गमें प्रवर्तावे, १६ 'वय समाधारणिया' निर्दोष कार्य उपने बोले १७ 'काय समाधर-

'क्रिया' कायाकी चपलता रुंधे १८ 'भाव
अंतःकरणके प्रणामकी धारा सदा
शुभ वर्धमान धर्मध्यान शुक्ल ध्यान युक्त
१६ 'करण सच्चे' करण सित्तरीके ७०
युक्त, तथा साधुको क्रिया करनेकी
शास्त्रमें फरमाइ है वैसी सदा योग्य
करें, पिछलि प्रहर रात बाकी रहे तब
होके आकाश दिशा प्रतिलेखे (देखे)
किसी प्रकारकी असझाइ तो नहीं है ? जो
निर्मल दिशा होय तो सास्त्रकी सज्झाय करे
फिर असझाइकी (लाल दिशा) हो तब
प्रतिक्रमण करे, सूर्योदय पीछे प्रतिलेहना
करे, अर्थात् वस्त्रादिक सर्व उपकरणको देखें,
फिर प्रहर दिन आवे वहां तक स्वाध्याय
करे तथा श्रोतागणको योग्य होय तो धर्मो
पदेश करे—व्याख्यान बांचे, फिर ध्यान करे
सूत्रके अर्थको चितावना करे, और जो

भिक्षाका काल हो तो गौचरी निमीत्त जा-
कर शुद्ध आहार विधियुक्त लाकर आत्माको
भाडा देवे, चौथे आरेमे तीसरा प्रहर भिक्षा
के लिये जाते थे क्योंकि उस वक्त सबलोग
एक * ही वक्त भोजन करते थे और एक
घर मे ३२ स्त्री और २८ पुरुष होते सो घर
गिणतीमे था इस लिये ६० मनुष्यका
भोजन निपजाते सहज दो प्रहर, दिन आ
जाता था, शास्त्रमे कहा है कि 'काल काल
समायरे,' अर्थात जिस क्षेत्रमे जो भिक्षा
का काल होय, उस वक्त गौचरी जाय जो
जलदी जाय अथवा देरसे जाय, तो बहुत
घूमना पड़े, इच्छित आहार न मिले, शरीर
को किलामना उपजे, लोकोमे निंदा होवे कि
वक्त वे वक्त साधू क्यो फिरता है? तथा

* पहिले आरेमे ३ दिनके अंतरे दूसरेमें २ दिनके अंतरे, तीसरेमे एक दिनके अंतरे, चौथेमे दिनमे एक वक्त भोजनकी इच्छा होती थी।

स्वाध्याय ध्यानकी अंतराय पड़े इत्यादि
दोष जाण कालोकाल भिक्षाके लिये जाय,
फिर शास्त्रोक्त विधीसे आहार करे, फिर
ध्यान करे, फिर चौथे प्रहर प्रति लेखन कर
स्वाध्याय करे, असभ्काइकी वक्त देवसी प्रति-
क्रमण करे असाभ्कइ निवर्तनेसे सभ्काय करे
दूसरे प्रहर ध्यान करे, तिसरे प्रहर निद्रामुक्त
होवे, ये दिनरात्रीकी साधूकी क्रिया श्री
उत्तराध्ययन सूत्रके २६ वे अध्ययनमें कही
है और भी अंतर विधि बहुत हे सो गुरू
आमनासे धारे) ।

२० 'जोग सचे'—मन-बचन-कायाके योगकी
सत्यता-सरलता रखे, योगाभ्यास-आत्म-
साधन-सम-दम उपसम इत्यादि, साधना
की प्रति दिन वृद्धि करे ।

'संपन्नतिउ'—साधु तीन वस्तु संपन्न है, नाण-
सपन्न, दंशण संपन, चारित्र संपन्न ।

२१ नाण सपन्न—मति, श्रुत, अ ग उपाग पूर्वादिक जिस कालमे जितना ज्ञान हाजिर होवे उतना उमग सहित अभ्यास करे, वाचना-पृच्छना-पर्यटना आदि करके, दृढ करे, अन्यको यथायोग्य ज्ञान दे वृद्धि करे।

२२ 'दशण सपन्न'—१ कषाय, २ नोकषाय, ३ मोहनीय इत्यादि दोष रहित शुद्ध सम्यक्त्ववत होवे, देवादिक भी चलावे तो चले नहीं, शकादि दोष रहित निर्मल सम्यकत्व पाले।

२३ 'चारित्र सपन्न'—सामायिक छेदोपस्थापनी-परिहार विशुद्ध सूक्ष्म समपराय-यथाख्यात ये पाच चरित्रयुक्त, (इसकालमें पहिले २ चारित्र हैं)।

२४ 'खंती'—क्षमावन्त।

२५ 'सवेग'—सदा वैराग्यवन्त रहे।

श्लोक--'सरीर मनसोगंन्तु, वेदना प्रभवाद्भयात्
स्वप्नं न्द्र जाल सङ्कल्पाद्धि तिःसंवेग उच्यते॥

अर्थात् इस संसारमें शारीरिक और मानसिक वेदनासे अति ही पीडा हो रही है जिसको देखकर, और सर्व संयोग इन्द्रजाल और स्वप्नवत् जानकर, संसारमें डरना उसका नाम 'संवेग' है।

२६ 'वेदनी सम अहीया सणीयाए'—क्षुदादिक २२ परिसह उत्पन्न होवे तो सम प्रमाणसे सहन करे।

२७ 'मरणातिय सम--अहीया सणीयाये' मरणांतिक कष्टमें तथा मरणसे डरे नहीं परन्तु समाधि मरण करे।

२७ सताइस बोलै करी त्रस कायकी हिंसा टलै १ प्रहर रात गये पीछै और दिनऊगे पहिले जोरसे बोलना नहीं क्योंकि विसमरी जागकर, मक्खी प्रमुख जीवोंका भक्षण

कर जाय तथा पाडोसी जाग्रत होय तो मैथुन पचन खडन पीसनादि अनेक क्रिया करे, १ रातको छाछ [मही] करना नहीं, ३ लीपणा नहीं बुहारना (झाडना) नही भोजन (आहार) नहीं निपजाना ४ मार्गमे रातकु (विनउपयोग) नहीं चलना ५ वस्त्र नहीं धोवना ६ स्नान नहीं करना ७ भोजन नही करना इतने काम रातको नहीं करना इनसे त्रस जीवकी घात और आत्महत्या होनेका कारण होता है ८ जगल मैदान, खुली जागा मीलता पायखानामें दिशा (टट्टी) नहीं जाना क्योंकि उसमें असख्य छमोछम (सम्मुर्च्छन) मनुष्य पैदा होकर मरजाते हैं ९ खाडेमाही फाटी जमीन ऊपर या तुस राखके ढगलेपर दिशा नहीं जाना उस में जीव मृत्यु पाते हैं, १० खुली जागा मीलतां मोरीमे नालीमे पेशाब नहीं करना

तथा स्नान नहीं करना ११ देखे विना धोबीको कपड़ा धोणे नहीं देना १२ खाट पिलंगको पाणीमें नहीं डुबाना तथा ऊपर गरम गरम पाणी नहीं डालना १३ दोवा ली प्रमुख पर्वको जो घरमें खटमलादिक जीव होय तो लीपणा छापणा नहीं करना १४ सड़ा धान सड़ी हुई कोई भी वस्तुको धूप (तड़के) में नहीं धरना, १५ आटा दाल शाग लकड़ी छाणा घट्टी ऊंखल वर्तन इत्यादि कोई वस्तु देखे विना वापरनी नहीं १६ आटा दाल शाग गोबर वगैरे वहुत दिन तक संग्रह करके नहीं रखना १७ चोमासेके कालमें घरमें वरतनादि सुकमाल सणकी तथा ऊनकी पूजणीसे पूंजे विन नहीं वापरना क्योंकि कुंथूवादिक जीव वहुत पैदा होते हैं १८ चूला पलीन्डा घट्टी ऊंखलादि चंदरवा (छत) विन नहीं राखना १९ पाणी छाणे

विना नहीं वापरना २० पाणीका जीवाणी जो जागाका पाणी होय उस जागाका पाणी सिवाय दूसरे सरोवरमे तथा विना पाणीके ठिकाणे नहीं नाखना २१ बने वहां तक हिंसक व्यापार जैसे दाणे धानका किराणेका मिल (गिरनी) विगेरह का नहीं करना २२ दूधका दहीका घीका तैलका रसका छाछका पाणी विगेरह पतले पदार्थ वस्तुके वर्त्तन खुला नहीं राखना २३ दीवा पिलसोद चूला खुला नहीं राखना २४ सडेहुये धानको पाणीमें धोणा नहीं २५ बोर भाजी मूर्ट्ट प्रमुख जोजो त्रस जीवकी वस्तु नजर आवे सो नहीं खाना २६ गायादिकके वाडेमे तथा जिहां मच्छरादिक जीवोंकी उत्पत्ति होवे वहां धूं वा नहीं करना २७ जूतेमें नाल खीले लगाना नहीं और पहले लगेहुये होवे वो नहीं पहरना उपयोग राखकर हिंसा टालना।

॥ अठाइसमो बोल ॥



२८ प्रकारे आचार कल्प—(१) मास प्रायश्चित, (२) मासने पांच दिवस, (३) मासने दश दिवस, (४) मासने पन्नर दिवस, (५) मासने वीश दिवस, (६) मासने पचीस दिवस, (७) बे मास, (८) बे मासने पांच दिवस, (९) बे मासने दश दिवस, (१०) बे मासने पन्नर दिवस, (११) बे मासने वीश दिवस, (१२) बे मासने पचीस दिवस, (१३) त्रण मास, (१४) त्रण मासने पांच दिवस, (१५) त्रण मासने दश दिवस, (१६) त्रण मासने पन्नर दिवस, (१७) त्रण मासने वीश दिवस, (१८) त्रण मासने पचीस दिवस, (१९) चार मास, (२०) चार मासने पांच दिवस, (२१) चार मासने दश दिवस, (२२) चार मासने पन्नर दिवस, (२३) चार मासने

वीश दिवस, (२४) चार मासने पचीस दिवस (२५) पाच मास, ए पचीस उपघातिक छे, (२६) अनुघातिकरोपण, (२७) कृत्स्न (सपूर्ण) (२८) अकृत्स्न (असपूर्ण)।

॥ उनतीसमो बोल ॥

२९ प्रकारे पापसूत्र—१ भूमिकप शास्त्र, (२) उत्पात शास्त्र, (३) स्वप्न शास्त्र, (४) अन्तरिक्ष शास्त्र, (जेमा आकाशना चिन्हो समाय छे), (५) अग फरकवाना शास्त्र, (६) स्वर शास्त्र, (७) व्यजन शास्त्र, (मिसा, तिल वगेरे समाय छे) (८) लक्षण शास्त्र ए आठ सूत्रथी आठ वृत्तिथीने आठ वार्तिकथी कुल चौविश, (२५) विकथा अनुयोग, (२६) विधा अनुयोग, (२७) मत्र अनुयोग, (२८)

योग अनुयोग, (२९) अन्य तीथिक प्रवृत्त अनुयोग ।

॥ तीसमां बोल ॥

३० तीस बोल करी जीव महा मोहनी कर्म बांधे, त्रस जीवने पाणी मांहि डबोयने मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बांधे १, मुख भिंचीने (बांधी) गला घोंटीने (सास रोकीने) मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बांधे २, अग्निमें प्रज्वालि धूंत्रामें घोटीने मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बांधे ३, माथे घाव घालीने मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बांधे ४, आला चांबडासे बांधीने धुप तावडामें बेठाइने मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बांधे ५, गेहला मूंगाने मारीनें हंसे तो महा मोहनी कर्म बांधे ६, अणाचार सेवीने गोपवे तो महा मोहनी

कर्म बांधे ७, आपणो सेव्यो पाप पारके माथे डाले तो महा मोहनी कर्म बाधे ८, भरी पर्षदा में मिश्र भाषा बोले तो महा मोहनी कर्म बाधे ६, राजाका बुरा चितवे राजमें धन आवता रोके राजारी राणीने भोगवे तो महा मोहनी कर्म बाधे १०, बाल ब्रह्मचारी नहीं बाल ब्रह्मचारी कहावे (कवावे) तो महा मोहनी कर्म बाधे ११, ब्रह्मचारी नहीं और ब्रह्मचारी कहावे तो महा मोहनी कर्म बाधे १२, गुमास्तो साह (सेठ) रो बुरो चितवे सेठ रो धन उडावे, खंडावे साहकी स्त्रीने भोगवेतो महा मोहनी कर्म बांधे १३, पचानु बुरा चितवे तो महा मोहनी कर्म बाधे १४, चाकर ठाकुरने, प्रधान राजाने, स्त्री भरतारने मारे सापण आपणे इन्डाने गले तो महा मोहनी कर्म बाधे १५, पृथ्वीपति राजाकी घात चितवे तो महा मोहनी कर्म बाधे

१६, एक देशरा राजा तथा साध साधवीकी घात चिंतवे तो महा मोहनी कर्म बांधे धर्मि पुरुषने धर्म करता डिगावे तो महा मोहनी कर्म बांधे १८. तिर्थंकर देवके अवगुण वाद बोले तो महा मोहनी कर्म बांधे १६, चतुर्विध संघका अवर्णवाद बोले तो महा मोहनी कर्म बांधे २०, आचार्य उपाध्यायजीका अवर्णवाद बोले तो महा मोहनी कर्म बांधे २१, आचार्य उपाध्याय-जीको सामनो करे तो महा मोहनी कर्म बांधे २२, बहु सूत्री नहीं अरु बहुसूत्री कहावे तो महा मोहनी कर्म बांधे २३, तपस्वी नहीं तपसी कहावे तो महा मोहनी कर्म बांधे २४, रोगी गीलाणकी छती-शकती वेयावच्च न करे तो महा मोहनी कर्म बांधे २५. टोला मांहि भेद पाडे तो महा मोहनी कर्म बांधे २६, हिंस्याकारी शास्त्र परुपे तो महा मोहनी

कर्म बाधे २७ देवताके मनुषके अछते काम भोगकी बछा करे तो महा मोहनी कर्म बाधे २८, ब्रह्मचर्य पाली तपस्या करी आलोइ निन्दि देवता थया छे तेहनी जो निन्दा करे तो महा मोहनी कर्म बाधे २९, देवता आवे नहीं अरु कहे म्हारे पास देवता आवे छे इम कहे तो महा मोहनी कर्म बाधे ३० ।

पाठन्तर ।

त्रीस प्रकारे मोहनीयना स्थानक—(१) स्त्री, पुरुष, नपुसकने अथवा कोई त्रस प्राणीने जलमा पेसारीने जलरूप शस्त्रे करीने मारे ते महामोहनीय कर्म बाधे ।

२, हाथे करी प्राणीना मुख प्रमुख बाधी, श्वास रुधी जीवने मारे तो महामोहनीय कर्म बाधे ।

३, अग्नि प्रजली, वाडादिकमां प्राणी
धूमाडे करी, आकुल व्याकुल करी मारे
महामोहनीय कर्म बांधे।

४, उत्तमांग जे मस्तक तेने
करी भेदे-छेदे-फाडे तो महामोहनीय कर्म बांधे

५, चामडा प्रमुखनी वाधरीए करी मस्त-
कादिक शरीरने ताणी बांधी वारंवार अशुभ
परिणामे करी कदर्थना करे तो महामोहनीय
कर्म बांधे।

६ विश्वासकारी वेष करी-मार्ग प्रमुखने विषे
जीवने हणे-ते लोकमां उपहास्य थाय तेवी
रीते तथा पोते कर्तव्य करी आनंद माने ते
महामोहनीय कर्म बाधे।

७, कपटे करी पोतानो दुष्ट आचार गोपवे
तथा पोतानी मायाए करी अन्यने पण पाश
(फास) मां नाखे, तथा शुद्ध सूत्रार्थ गोपवे तो
महामोहनीय कर्म बांधे।

८, पोते अनेक चोरी बालघात (अन्याय) प्रमुख कर्म कीधा होय, ते दोष निर्दोषी पुरुष उपर नाखे, तथा यशस्वीनो यश घटाडवा माटे अछता आल आपे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

९ परने रुडु मनाववा माटे द्रव्य भाव थी झगड़ा (कलेश) वधारवा माटे, जाण तो थको सभा मध्ये सत्य मृषा (मिश्र) भाषा बोले, तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

१०, राजनो भंडारी प्रमुख ते, राजा 'प्रधान' तथा समर्थ कोई पुरुषनो लक्ष्मी प्रमुख लेवा चाहे, तथा तेनी स्त्री विणसाडे, तथा तेना रागी पुरुषोना मन फेरवे, तथा राजने राज्य कर्तव्यथी बहार करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

११, स्त्रीओने विषे गृद्ध थई परण्या छता कुमारपणानु (हु कुंवारो छु) विरुद (नाम) धरावे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

१२ गायोनी मध्ये गर्दभ माफिक स्त्रीना विषय विषे गृद्धथको आत्मानुं अहित करनार मायामृषा बोले, अब्रह्मचारी छतां ब्रह्मचारीनुं विरुद् धरावे तो महामोहनीय कर्म बांधे (लोकमां धर्मनो अविश्वास थाय, धर्मी उपर प्रतीत न रहे, ते माटे)।

१३, जेनी निश्राए आजुविका करे छे तेनी लक्ष्मीने विषे लुब्ध थई तेनो लक्ष्मी लूंटे तथा पर पासे लूंटावे तो महामोहनीय कर्म बांधे "चिलाती चोरवत्"।

१४, जेणे द्रारिद्र पणुं (निर्धनपणुं) मटाडी मापदार (होद्दादार) कर्यो, ते महर्द्धिकपणु पाम्या पछी, इर्ष्यादोषे करी, कलुषित चित्ते करी, ते उपकारी पुरुषने विपत्ति आपे तथा धन प्रमुख आववानी अंतराय पाडे तो महा मोहनीय कर्म बांधे ।

१५ पोतानु भरणपोषण करनार राजा प्रधान प्रमुखने तथा ज्ञान प्रमुखना अभ्यास करावनार गुर्वादिने हणे तो महामोहनीय कर्म बांधे (सर्पणी जेम इंडाने हणे तेम)।

१६ देशनो राजा तथा वाणीयाना वृंदनो प्रवर्त्तावक (व्यवहारियो) तथा नगरशेठ ए त्रण घणा यशना धणी छे, तेने हणे तो महामोहनीय कर्म बांधे।

१७ जे घणा जणने आधारभूत (समुद्रमा द्वीप समान) छे तेमने हणे तो महामोहनीय कर्म बांधे।

१८, संयम लेवा सावधान थयो छे तेने, तथा संयम लीधेलो छे तेने, धर्मथी भ्रष्ट करे तो महामोहनीय कर्म बांधे।

१९, अनंत ज्ञानी तथा अनंतदर्शी एवा तीर्थंकर देवना अवर्णवाद बोले तो महा-मोहनीय कर्म बांधे।

२०, तीर्थंकर देवना प्ररुपित न्याय मार्गनो द्वेषी थई अवर्णवाद बोले, निंदा करे अने शुद्ध मार्ग थी लोकोनां मन फेरवे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२१, आचार्य उपाध्याय जे सूत्र प्रमुख शिखवे छे, भणावे छे तेवा पुरुषने हीले निंदे, खींसे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२२, आचार्य उपाध्यायने साचे मने आराधे नहीं, तथा अहंकार थको भक्ति न करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२३, अवहुश्रुत (अल्पसूत्री) थको शास्त्र-करी पोतानी श्लाघा करे तथा स्वाध्यायनो वाद करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२४, अतपस्वी थको तपस्वीनु बिरुध (नाम) धरावे (लोकोने छेतरवा माटे) तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२५, उपकारने अर्थे गुर्वादिनो तथा स्थाविर ग्लान प्रमुखनो छती शक्तिए विनय वैयावच्च न करे (कहे जे म्हारी सेवा ऐणे पूर्वे करी नहोती ऐम ते धूर्त मायावी मलिन चित्तनो धणी पोताना बोध वीजनो नाश करनार अनुकंपारहित होय) तो महामोहनीय कर्म बांधे।

२६, चार तीर्थनो भेद करे ऐवी कथा वार्त्ता प्रमुख (कलेशरूप शास्त्रादिक) नो प्रयोग करे तो महामोहनीय कर्म बांधे।

२७, पोतानी श्लाघा वधारवा तथा बीजा साथे मित्रता करवा अधर्मयोग ऐवा वशीकरण निमित्त मंत्र प्रमुख प्रयोजे, तो महामोहनीय कर्म बांधे।

२८, जे कोई मनुष्य संबधी भोग तथा देव संबधी भोगने अतृप्तपणे गाढे परिणामथी आशक्त थई आस्वादन करे तो महामोहनीय कर्म बांधे।

२९, महर्द्धिक महाज्योतिवान् महायशस्वी देवोना बल वीर्य प्रमुखनो अवर्णवाद बोले तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

३०, अज्ञानी थको लोकमां पूजा (श्लाघा) नो अर्थी वैमानिक व्यंतर प्रमुख देवने नहीं देखतो थको कहे जे हुं देखुं छुं, तेवुं कहे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

३० बोल तपस्या फलका पंचगुणो फल १ (एक) उपवासे एक (उपवास) नो फल २ (दोय) उपवासे पांच (उपवास) नो फल ३ (तेलानो) पचीसनो फल ४ (चोलानो) एकसो पचीस (उपवास) नो फल ५ (पांच) नो छव सें पचवीसनो फल, ६ (छव) नो इकतीससें पचीसनो फल ७ (सात) नो पनरे सहस्र (हजार) छव सें पचीसनो फल ८ (आठ) नो अट्ठोतर सहस्र एक सो पचीसनो फल ९ (नव) उपवासे तीन लाख नेउ सहस्र छवसें

॥ शुद्धि पत्र ॥

३० बोल तपस्याका फलका ।

१४ उपवासे १२२ क्रोड ७ लाख ३१२५ उपवासरो फल जाणजो।

१७ उपवासे- १५ हजार क्रोड २५८ क्रोड ७८ लाख ६० हजार ६२५ उपवासरो फल जाणजो।

१८ उपवासे ७६ हजार क्रोड २६३ क्रोड ६४ लाख ५३ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो।

२० उपवासे—१६ लाख ७ हजार ३४८ क्रोड ६३ लाख २८ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो।

२२ उपवासे---४ क्रोडाक्रोड ७६ लाख क्रोड ८३ हजार क्रोड ७१५ क्रोड ८२ लाख ३१२५ उपवासरो फल जाणजो।

२४ उपवासे---११६ क्रोडाक्रोड २० लाख

क्रोड ६२ हजार कोड ८६५ क्रोड ५० लाख ७८ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो।

२८ उपवासे—७४ हजार क्रोडाकोड ५०५ कोडाक्रोड ८० लाख क्रोड ५६ हजार क्रोड ६६२ कोड ३८ लाख २८ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो।

३०-उपवासे (याने मास ग्वामणगे तपस्या)---१८ लाख क्रोडाक्रोड ६२ हजार क्रोडाकोड ६४५ कोडाकोड़ १४ लाख क्रोड ६२ हजार क्रोड ३०६ क्रोड़ ६७ लाख ३ हजार १२५ (१८६२६४५१४६२३०६६७३१२५) उपवासरो फल जाणजो।

पचीस नो फल १० (दश) उपवासे, उग-णीस लाख त्रे पन सहस्र एकसो पचवीसनो फल ११ (इग्यारे) उपवासे सताणुं लाख पैसट्ठ सहस्र छवसें पचवीसनो फल १२ (बारे) उपवासे चार कोड अठासी लाख अठावीस सहस्र एकसो पचीसनो फल १३ (तेरे) उपवासे चोवीसकोड एकतालीस लाख चालीस सहस्र छवसे पचवीसनो फल १४ (चवदे) उपवासे एकसो वावीस कोड सतरे लाख इकतीससो पचीस नो फल १५ (पनरे) उपवासे छवसो दश कोड पैंत्रीस लाख पनरे सहस्र छवसो पचवीसनो फल १६ (सोले) उपवासे त्रिण सहस्र कोड एकावन कोडि पचोहत्तर लाख ७८ हजार १२५ नो फल १७ (सतरे) उपवासे पनरे सहस्र कोड वे सें कोड अट्ठावन कोड ७८ लाख ६० हजार छवसेनो फल १८ (अट्ठारे)

उपवासे छोयंतर सहस्र कोड दोयसो कोड त्रिण कोड चोणाणु लाख त्रेपन हजार एक सो पचवीसनो फल १६ (उगणीस) उपवासे तीन लाख कोड इक्यासी सहस्र कोड चार सें कोड गुणातरकोड बहोतर लाख पैसट्ट सहस्र छवसें पचवीसनो फल २० (वीस) उपवास उगणासट्ठ लाप सात सहस्र त्रिणसें अडतालीस कोडि तेसट्ठ लाख अठावीस सहस्र एकसो पचवीसनो फल २१ (इकवीस) उपवास पचाणु लाख कोडि छतीस सहस्र कोडि सात सें कोडि तयालीस कोड सोले लाख चालीस हजार (सहस्र) छव सें पचीसनो फल २२ (बावीस) उपवासे चार कोडाकोड बहोतर लाख कोड त्रयासी सहस्र कोड सातसें कोड पनरे कोड बयासी लाष एकतोससें पचवीस वास (उपवास) नो फल २३ (तेवीस) उपवासे

सेवीसे कोडाकोड चोगमी लाख कोड अट्टारे महस्र कोड पाचसे कोड उगणयासी कोड दश लाख पन्नरे सहस्र छवसें पचवीसनो फल २४ (चोवीस) उपवासे एक सो उगणीस कोडाकोड वीस लाख कोड बाणूसहस्र कोड आठ से कोड पचाण कोड पचीस लाख अठ्ठोतर सहस्र एकसो पचवीसनो फल २५ (पचीस) उपवास पाच सो छिन्नु कोडाकोड चार लाख चोसट्ट सहस्र कोड चारसें कोड सतोतर कोड त्रेपन लाख नेउ सहस्र छवसे पचवीसनो फल २६ (छवीस) उपवासे गुणत्रीसमें असीकोडाकोड तेवीस लाख कोड बावीस सहस्र कोड त्रिगणे कोडि सत्यासी कोड उगणोतर लाख त्रेपन सहस्र एकसो पचवीसनो फल २७ (सतावीस) उपवासे सवट्टे सहस्र नवसे एक कोडा कोड सोले लाख कोड इग्यारे सहस्र कोड नवसें कोड अडतीस

कोड सैंतालीस लाख पैंसट्ठ सहस्र छवसें पचवीसनो फल २८ (अट्ठाइस) उपवासे चहोत्तर सहस्र पांच सें पांच कोडाकोड असी- लाख कोड उगणसट्ठ सहस्र कोड छवः कोड घाणुकोड अड़तीस लाख अट्ठावीस सहस्र एकसो पचवीसनोफल २६ (उगणतीस) उपवासे तीन लाख बहोतर हजार पांचसें उगणतीस कोडाकोड दोय लाख कोड अट्ठाणु सहस्र कोड च्यारसें कोड इकसट्ठ कोड एकाणु लाख चालीस हजार छवसें पचवीसनो फल ३० (तीस) उपवासे अट्ठारे लाख कोडाकोड बासट्ठ सहस्र कोडाकोड छवसें कोडाकोड पैंतालीस कोडाकोड चवदे लाख कोड वांणु सहस्र कोड तीनसें कोड सतानुं लाख तीन सहस्र एकसो पचवीसनो फल। इति तपस्या पंचगुणा गुणाकारनो फल जांणवो ॥

॥ एकतीसमो बोल ॥



३१ प्रकारे सिद्धना आदि गुण—आठ कर्मनी एकत्रिश प्रकृतिनो विजय ते एकत्रिश गुण, ते एकत्रिश प्रकृति नीचे मुजब —

१ ज्ञानावरणीय कर्मनी पाच प्रकृति—१ मति ज्ञानावरनीय, २ श्रुत ज्ञानावरनीय, ३ अवधि ज्ञानावरनीय, ४ मन पर्यव ज्ञानावरनीय, ५ केवल ज्ञानावरनीय ।

२ दर्शनावरनीय कर्मनी नव प्रकृति—१ निद्रा, २ निद्रानिद्रा, ३ प्रचला, ४ प्रचला प्रचला, ५ थीणद्धी (स्त्यानर्द्धि), ६ चक्षु दर्शनावरनीय, ७ अचक्षु दर्शनावरनीय, ८ अवधि दर्शनावरनीय, ९ केवल दर्शनावरनीय ।

३ वेदनीय कर्मनी बे प्रकृति—१ शाता वेदनीय, २ अशाता वेदनीय ।

४ मोहनीय कर्मनी बे प्रकृति—१ दर्शन मो-

हनीय, २ चारित्र मोहनीय ।

५ आयुष्य कर्मनी चार प्रकृति—१ नरक आयुष्य, २ तिर्यंच आयुष्य, ३ मनुष्य आयुष्य, ४ देव आयुष्य ।

६ नाम कर्मनी बे प्रकृति—१ शुभ नाम, २ अशुभ नाम ।

७ गोत्र कर्मनी बे प्रकृति—१ उच्च गोत्र, २ नीच गोत्र ।

८ अन्तराय कर्मनी पांच प्रकृति—१ दानांतराय, २ लाभांतराय, ३ भोगांतराय, ४ उपभोगांतराय, ५ वीर्यांतराय ।

॥ बत्तीसमो बोल ॥



साधुजीकी ३२ औपमा।

३२—१ "कांसी पत्र इव"-जैसे कांसीके कटोरेमें पाणी भेदाय नहीं, तैसे मुनी मोह

मायासे भेदाय नहीं, २ 'शख इव' जैसे शख रगाय नहीं, त्यो मुनी स्नेहसे रगाय नहीं, ३ 'जीव गई इव' जैसे जीव परभवमे जावे उसकी गतिका कोई भग कर सके नही, तैसे मुनी अप्रतिबध विहारी होते हैं, ४ 'सुवर्ण इव' जैसे सोनेको काट (कीट) लगे नहीं, तैसे साधूको पाप रूप काट लगे नहीं, ५ 'भिग इव' जैसे आरीसे (काच) में रूप देखाय, तैसे साधु ज्ञान करके निज आत्मरूप देखे, ६ 'कुम्मो (काछवा) इव' जैसे किसी वनके सरोवरमें बहुत काछवे रहते थे, वो आहार करनेको बाहिर आते तब वनवासी बहुत जम्बुक (सियाल) उनको भक्ष करने आते थे, तब कितनेक काछवे तो ढाल नीचे अपने पाच ही अग (चार पग पाचमा सिर) दबा लेते थे, जो होशियार ये वो सर्व रात्रि अपनी ढालके नीचे स्थिर रहते थे, और कितनेक पाच अगमेंका एक बाहिर

निकालके देखते की जंबुक गये क्या ? उतनेमें ही वो छिपे हुवे पापी सियाल उसका अंग तोड़ उसे मार खा जाते थे, और जो स्थिर रहते वो दिन उदय भये सियाल गये पीछे, अपने ठिकाणे—सरोवरमें जाकर सुखी होते थे इसी तरह साधु पांच इंद्रीको ज्ञान रूपी ढाल नीचे; जीवे वहां तक दाव रखे, स्त्रीयादि भोगरूप सियालके तावेमें नहीं पडे, और आयुष्य पूर्ण करके मोक्ष रूप सरोवर प्राप्त करे, ७ 'पद्मकमल इव' जैसे पद्म कमल कीचड़में उत्पन्न हो, जलमें वृद्धि पाकर पीछा पाणीसे लेपाय नहीं; तैसे साधु संसारमें पैदा होते हैं परन्तु संसारके भोगोंका त्याग किये पीछे संसारके भोगमें लिपाय नहीं, ८ 'गगणइव' जैसे आकाशको स्थंभ नहीं, निराधार ठेहरा है, तैसे साधु किसीका आश्रय इच्छे नहीं, ९ 'वायूइव' हवा एक ठिकाणे रहे नहीं, फिरती रहती है तैसे साधु

भी सदा फिरते रहे, १० चन्द्रइव' चन्द्रमा जैसे सदा निर्मल हृदयके धरणाहार और शीतल स्वभावी होवे ११ 'आइच्चइव' जैसे सूर्य्य अन्धकारका नाश करे तैसे साधु मिथ्याधकारका नाश करे, १२ 'समुद्रइव' जैसे समुद्रमें अनेक नदियोंका पाणी जाता है तोभी झलकता नही है, तैसे साधु सबके शुभाशुभ बचन सहे, परन्तु कोप नहीं करे, १३ 'भारन्ड इव' भारन्ड पक्षीके दो मुख और तीन पग होते हैं, वो सदा आकाशमें रहता है, फक्त आहार निमित्त पृथ्वीपर आता है, तब पाखा फैलाकर बैठता है, और एक मुखसे चारोंही तरफ देखता है, कि कहीं मुझे किसी तरफसे उपसर्ग न हो जाय। और दूसरे मुखसे आहार करता है थोड़ी भी शका पडनेसे तत्क्षण उड जाता है, तैसेही साधु सदा सयममें रहे, फक्त आहार प्रमुख निमित्त गृहस्थके घरको जावे,

तव द्रव्य दृष्टी तो आहारके सन्मुख रखे, और अन्तर दृष्टीसे अवलोकन करता रहे कि, मुझे किसी प्रकारका दोष न लग जाय, जो किंचित् ही दोष लगने जैसा देखे तो तत्क्षण वहांसे चले जावें, १४ 'मंदरइव' जैसे मेरूपर्वत हवासे कंपायमान न होवे तैसे साधु परिसह उपसर्गसे चलायमान न होवे, १५ 'तोय इव' जैसे शरद ऋतुका पाणी निर्मल रहे तैसे साधुका हृदय सदा निर्मल रहे, १६ 'खड़गीहत्थि इव' जैसे गेंडा हाथीके (गेन्डेके) एकही सिंग रहता है, उससे वो सबका पराजय कर सक्ता है, तैसे साधु एक निश्चय नयमें स्थिर हो कर सर्व कर्म शत्रुओंको पराजय करते हैं, १७ 'गंधहत्थि इव' जैसे गंध हस्तीको संग्राममें ज्यों ज्यों भालेका प्रहार लगता है, त्यों त्यों जास्ती जास्ती सूरा हो कर शत्रु को पराजय करता है, तैसे साधु पर ज्यों ज्यों परिसह पड़े, त्यों त्यों जादा

जादा सूरा होकर कर्म शत्रुका पराजय करे, १८ 'वृषभ इव' जैसे मारवाडका धौरी बेल, लिया हुवा भार प्राण जाते भी बीचमे डाले नहीं तैसे साधु पाच महाव्रत रूप महा भार प्राण जाते भी जीने वहा तक फेंके नहीं १९ 'सिह इव' जैसे केशरी सिह किसी पशुका डराया डरे नहीं, तैसे साधु किसी पाषडियोसे चलायमान होवे नहीं, २० 'पृथ्वी इव' जैसे पृथ्वी शीत, ऊष्ण, अच्छा, बुरा सब समभाव सहन करे तथा पूजनेवाले और खोदनेवालेकी तर्फ समभाव रखे, तैसे साधु शत्रु मित्र पर समभाव रखे निंदक बदनीकको एकसा उपदेश करके तारे, २१ 'वन्ही इव' घृतके सींचनेसे अग्नि जैसे दिप्त होती है, तैसे साधु ज्ञानादि गुण करके दिप्त होवे, २२ 'गौशीष चदन इव' जैसे चन्दन काटे तथा जलावे उसको ज्यास्ती सुगध देवे, तैसे साधु परिसह

उपसर्ग उपजाणेवालेको अपना कर्म काटने-वाला जाणे समभाव उपसर्ग सहन करे फिर उसको ही उपदेश देकर तारे. २३ 'दह इव' द्रह चार प्रकारके—१ केशरी प्रमुख वर्षधर पर्वतकी द्रहमेंसे पाणी निकलता है परन्तु बाहिरका पाणी उसमें आता नहीं है; तैसे कोई साधु दूसरेको ज्ञान सिखाते हैं, परन्तु आप दूसरेके पास सीखते नहीं हैं, २ समुद्रमें पाणी आता है, परन्तु निकलता नहीं है; तैसे कितनेक साधु दूसरेके पास ज्ञान सीखते हैं, परन्तु सिखाते नहीं हैं, ३ गंगा प्रापात कुंड प्रमुखमें पाणी आता भी है और जाता भी है; तैसे कितनेक साधु ज्ञान पढ़ते हैं और पढ़ाते भी हैं, ४ आढाइ द्वीपके बाहिरके समुद्रमें पाणी आता भी नहीं है, और निकलता भी नहीं है; तैसे कितनेक साधु पढ़ते भी नहीं हैं, और पढ़ाते भी नहीं हैं. तथा जैसे द्रहका पाणी

अखट होता है तसे साधु भी अखट ज्ञानके धारक (धरणहार) होते हैं, २४ 'खिल्लीइव' जसे खुटा ठोकते एकही दिशामे प्रवेश करे, तसे साधु एकात मोक्ष मार्गके सन्मुख होकर प्रवर्ते, २५ 'शून्यगृहइव' जसे गृहस्थ शून्य (सुने) घरकी सभाल नहीं करे, तसे साधु शरीरकी सभाल नहीं करे, २६ 'दीवेद्व' जसे समुद्रमें पडे हुये प्राणीको द्वीप का आधार होता है, तसेही ससार समुद्रमे पड़े हुये प्राणीको त्रस-स्थावर सब जीवोका साधु आधारभूत अनाथो के नाथ होते हैं, २७ 'शस्त्रधारइव' जसे पाछणे (शस्त्र)की धार एकही दिशा विघ्न निवारके आगे चढती है, तसे साधु कर्म शत्रुका निकदन करते एकात आत्मकल्याणके मार्गमें चलते हैं, २८ 'सर्पइव' जसे सर्प काटसे डरे, तसे साधु कर्मबधके कारणसे डरे, २९ 'सकृणइव' जसे पक्षी रातका वासी न रखे, तसे साधु चार

ही आहार रातको पास न रखे, ३० 'मिगइव' जैसे मृग नित्य नवे स्थान भोगवे, शंकाके ठिकाणे विश्वास न करे, तैसे साधू नित्य विहारी रहे, और शंकाके ठिकाणे दोष लगने के स्थान किंचित ही विश्वास नहीं करे, ३१ 'कठइव' जैसे लकड, काटनेवालेको और पूजने वालेको दोनोको एक माफक (सम) जाने तैसे साधू शत्रु मित्रको सम (एक सरषा) जाणे, ३२ 'स्फटिक रयणइव' जैसे स्फटिक रत्न बाहिर भीतर एकसा निर्मल तैसे साधू बाह्य अभ्यंतर सरीखी वृत्ति रखे, कपट क्रिया न करे, ऐसी और भी अनेक उत्तम पदार्थोंकी ओपमा साधुको दी जाती है, जैसे पारशमणि, चिंतामणी, काम कूंभ, कल्पवृक्ष, चित्रवेली, (चित्रवेल) इत्यादि पदार्थ जिसके पास होय, उसका मनोरथ सिद्ध करे, तैसे साधूजी भी भव्यजीवों को ज्ञानादि गुण देकर उनके मनोरथ

सिद्ध करे, जैसे विन छिद्र (छेद) की झाझमें जो बैंठे उसको वो पार पहुचाती हे, तैमे साधु कनक कातारूप छिद्र करके रहित हे वो, उनके आश्रितोको, ससार समुद्रके पार करते हैं, जैसे फलित झाडको पत्थर मारनेसें वो फल देता है, तैसे साधु अपकारियों पर ही उपकार करते हैं, इत्यादि अनेक ओपमा दी जाती हैं, इत्यादि अनेक शुभ उपमा युक्त, आत्मार्थी, लुखवर्ती, महा पडित, धर्म मडित सुर-वीर-धीर सम—दम—यम—उपसमवत, अनेक तपके करनहार, अनेक आसनके साधणहार, ससार को पीठ देकर मोक्षके सन्मुख हुवे सर्व जीवों के हितार्थी, अनेका अनेक गुणके धारी, साधुजी महाराजको मेरा त्रिकाल त्रिकरण शुद्ध नमस्कार हो जो ।

बत्रिश प्रकारे योग सग्रह—(१) जे कांई पाप लाग्यु होय तेनु प्रायश्चित लेवानो सग्रह

करवो. (२) जे कोई प्रायश्चित ले तो बीजने नहि कहेवानो संग्रह करवो. (३) विपत्ति आए धर्मविषे दृढ़ रहेवानो संग्रह करवो, (४) निश्रा रहित तप करवानो संग्रह करवो, (५) सूत्रार्थ ग्रहण करवानो संग्रह करवो, (६) शुश्रूषा टालवानो संग्रह करवो, (७) अज्ञात कुळनी गौचरी करवानो संग्रह करवो, (८) निर्लोभी थवानो संग्रह करवो, (९) बावीस परिसह सहवानो संग्रह करवो, (१०) सरल निखालस स्वभाव राखवानो संग्रह करवो, (११) सत्य संयम राखवानो संग्रह करवो, (१२) सम्यकत्व निर्मल राखवानो संग्रह करवो, (१३) समाधिथी रहेवानो संग्रह करवो (१४) पंच आचार पालवानो संग्रह करवो, (१५) विनय करवानो संग्रह करवो, (१६) धृति राखवानो संग्रह करवो, (१७) वैराग्य रखवानो संग्रह करवो, (१८) शरीरने स्थिर

रालवानो स ग्रह करवो, (१६) सुविधि-सारा अनुष्ठाननो स ग्रह करवो, (२०) आश्रव रोकवानो स ग्रह करवो, (२१) आत्माना दोप टालवानो स ग्रह करवो (२२) सर्व विषयथी विमुख रहेवानो स ग्रह करवो, (२३) प्रत्याख्यान करवानो स ग्रह करवो (२४) द्रव्यथी उपाधि त्याग, भावथी गर्वादिकनो त्याग करवो (२५) अप्रमादी थवा स ग्रह करवो (२६) काले काले क्रिया करवानो स ग्रह करवो, (२७) धर्मध्यानना स ग्रह करवो, (२८) स वर योग नो स ग्रह करवो (२६) मरण आतक (रोग) उपज्ये मनने चोभ न करवानो स ग्रह करवो, (३०) स्वजनादिकनो त्याग करवानो स ग्रह करवो, (३१) प्रायश्चित लीधु होय ते करवानो स ग्रह करवो, (३२) आराधिक पडितनु मृत्यु थाय तेम आराधना करवानो स ग्रह करवो।

पाठान्तर।

१ जो दोष लगा होय सो तुर्त गुरुके आगे कहदे, २ शिष्यका दोष गुरु दूसरेके आगे प्रकाशे नहीं, ३ कष्ट पड़े धर्ममें दृढ़ रहे, ४ तपस्या करके इस लोकके (यश महिमादिक) और परलोकके (देवपद राज्यपदादिक) सुखकी वाञ्छा करे नहीं, ५ असेवन (ज्ञानाभ्यास संबन्धी) महना (आचार गोचार संबन्धी) शिक्षा (शिक्षामण) कोई देवे तो हितकारी माने, ६ शरीरकी शोभा विभूषा नहीं करे, ७ गुप्त तप करे (गृहस्थको मालुम न पड़ने देवे) तथा लोभ नहीं करे, ८ जिन जिन कुलमें भिक्षा लेनेकी भगवानकी आज्ञा है उन सब कुलोंमें गोचरी (भिक्षा लेने) जावे, ९ परिसह उत्पन्न हुए चढ़ते प्रणामसे सहन करे, क्रोध न करे, १० सदा सरल-निष्कपटपणे प्रवर्ते ११ संयम

(आत्मदमन) करता रहे, १२ समकित (शुद्ध श्रद्धा) युक्त रहे, १३ चित्तको स्थिर रखे, १४ ज्ञानाचार—दर्शनाचार—चारित्राचार--तपाचार --विर्याचार, इन पचाचारमें प्रवर्ते, १५ विनय (नम्रता) सहित प्रवर्ते, तप--जप--क्रियानुष्टान में सदा वीर्य--पराक्रम फोड़ता रहे, १७ सदा वैराग्य सहित रहे, १८ आत्मगुण (ज्ञानदर्शन चारित्र) को निध्यान (द्रव्यके खजाना) जैसा ब दोबस्त करके रक्खे १६ पासथ्या (ढिला - शिथिल) के परिणाम न लावे, सदा वर्धमान परिणामी रहे, २० उपदेश द्वारा सदा सम्वर की पुष्टी करे, २१ अपनीआत्माके जो जो दुर्गुण दृष्टि आवे उनको टालने (निकालने) का उ- पाय करता रहे, २२ काम (श द—रूप) भोग (गंध--रस- स्पर्श) का संजोग मिले लु ध न होवे, २३ नित्य यथाशक्ति नियम अभिग्रह त्याग वैराग्यकी वृद्धि करते रहे, २४ उपधी

(वस्त्र—पात्र—सूत्र—शिष्य इत्यादिकका) अहंकार—अभिमान नहीं, २५ पांच प्रमाद १ मद (जातिमदादि आठ मद) २ विषय (पांच इंद्रीका २३ विषय २४० या २५२ विकार) ३ कषाय (क्रोधादि कषायके ५२०० भांगे) ४ निंद्रा नींद कमी लेवे, ५ विकथा (स्त्रीकी--राजाकी—देशकी-भोजनकी ए ४ प्रकारकी कथा नहीं करे) यह पांच ही प्रमादको सदा वर्जे, २६ थोड़ा बोले और कालोकाल क्रिया करे, २७ आर्त ध्यान और रौद्र ध्यान वर्जकर, धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान ध्यावे, २८ मन—वचन—काया सदा शुभ काममें प्रवर्तावे, २९ मरणांतिक वेदना प्राप्त हुए भी प्रणाम स्थिर रखे, ३० संसारसुं विरक्ति भाव आये सर्व स्वजनादिक का त्यागन करे, ३१ सदा आलोयणा—निंदणा (गुरु आगे गुप्त पाप प्रकाशके अपनी आत्माकी निंदा करे, ३२ अंत अवसर जाण

सथारो करे आहार और शरीरका त्याग कर समाधि भावसे देहोत्सर्ग करे,

३२ दोष टालीने गुरु महाराजने वदणा करणी ते दोष कहे छे —

१ उकडुं बेठो वादे तो दोष २ नाच तो वादे तो दोष ३ सघलाने एकठा वादे तो दोष ४ रजो हरणो अकुस जिम राखे वादे तो दोष ५ ग्रही कपडा उ चा करीने वादे तो दोष ६ चपल पणे वादे तो दोष ७ माछलानी परे उलट पलट होयने वांदे तो दोष ८ मनमे गुण छाडी अवगुणी होय वादे तो दोष ६ कपटपणो सु वादे तो दोष १० डर तो वादे तो दोष ११ जे मुझने अमुको मान देसे यह कारण वादे तो दोष १२ साख करी वादे तो दोष १३ गर्ज करी वादे तो दोष १४ इह लोकने हितकारी वादे तो दोष १५ चोरनी परे वादे तो दोष १६ प्रतग्या हेते वादे तो दोष १७ ॥

सासतां वांद्ताही जाय (वे रीतीसे) तो दोष १८ विश्वास उपजावा हेते(अर्थे) वांदे तो दोष १९ वचन हिल तो वांदे तो दोष २० विकथा करतो वांदे तो दोष २१ दृष्टी तिरछी राखतां वांदे तो दोष २२ कोइ साधु देखे कोइ न देखे वांदे तो दोष २३ क्या करिये वांदिया विना छुटतानथी एसी जाण कर वांदे तो दोष २४ एकने घाट बांदे एकने जादारीतसुं वांदे तो दोष २५ गुरु तो नीचे आसण अने बंदणा करणे वालो उंचे आसण बेठो वांदे तो दोष २६ बेठो बेठो वांदे तो दोष २७ हस्तो हस्तो वांदे तो दोष २८ रजोहरण आगो पाछो कर तो बांदे तो दोष २९ असमाधीयो होयने वांदे तो दोष ३० गुरुनेकावस्सग्गमें बेठाने वांदे तो दोष ३१ पेली समाधी साता पूछे पछे वांदे तो दोष ३२ गुरु महाराजने रसते चालता उभा राखी वांदे तो दोष ॥

———

॥ तेंत्रीसवा बोल ॥

३३ प्रकारे आशातना—(१) शिष्य, रत्नाधिक (बड़ा) गुरुनी आगल अविनयपणे चाले ते आशातना, (२) शिष्य वड़ानी (गुरुनी) बराबर चाले ते आशातना, (३) शिष्य वड़ानी पाछल अविनयपणे चालेतेआशातना, (४) (५) (६) ए प्रमाणे वड़ानी आगल, बराबर ने पाछल अविनयपणे ऊभो रहे ते आशातना, (७) (८) (९) ए प्रमाणे वड़ानी आगल बराबर ने पाछल अविनयपणे बेसे ते आशातना, (१०) शिष्य बड़ानी साथे बाहिर भूमि जाय ने वड़ा पहेला शुचि थई आगल आवे ते आशातना (११) वडा साथे वहिर (बाहिर) भूमि जई आवी इरियापथिका पहेला प्रतिक्रमे ते, आशातना (१२) कोई पुरुष आवे ते बड़ाने बोलाववा योग्य छे तेवु जाणीने पहेला पोते

बोलावे ने पछी वडा बोलावे ते आशातना (१३) रात्रिए वड़ा बोलावे के अहो आर्य ! कोण निद्रामां छे ने कोण जग्रत छे ? तेवुं बोलतां सांभलीने उत्तर न आपे ते आशातना (१४) अशनादि वेहरी लावीने प्रथम अन्य शिष्यादिनी आगल कहे पछी वड़ा आगल कहे तो आशातना (१५) अशनादि लावीने प्रथम अन्य शिष्यादिने बतावे पछी वड़ाने बतावे ते आशातना (१६) अशनादि वहोरी (वेहरी) लावीने प्रथम अन्य शिष्यने आमंत्रण करे पछी वड़ा ने आमंत्रण करे ते आशातना (१७) वड़ा साथे अथवा अन्य साधु साथे अन्नादि वहोरी लावी वड़ाने के बृद्ध साधूने पूछया विना पोतानो जेना उपर प्रेम छे तेओने थोडुं थोडुं वहेंची आवे ते आशातना (१८) वड़ा साथे जमतां त्यां सारुं सारुं पत्र, शाक, रससहित मनोज्ञ,

उतावल थी जमे (जीमे) तो आशातना (१६) वड़ाना बोलाव्या छता साभलीने मोन रहे ते आशातना (२०) वडाना बोलाव्या छता पोताना आसने रही हा कहे, परन्तु काम बतलावसे तेवा भय थी वडा पासे जाय नहीं ते आशातना. (२१) वडाना बोलाव्या थी आवे ने कहे के शु कहो छो? ऐवु माटासाथे अविनय थी कहे ते, आशातना (२२) वडा कहे के आ कार्य तमे करो, तमोने लाभ थसे त्यारे शिष्य वडाप्रति कहे के तमेज करो तमोने लाभ थासे ते आशातना, (२३) शिष्य वडा प्रत्य कठोर कर्कश भाषा वापरे ते आशातना, (२४) शिष्य वडाने. जेम वडा शब्द वापरे तेवा शब्दो तेवोज रीते वापरे ते आशातना (२५) वडा धर्म व्याख्यान आपता होय त्यारे सभामा आई बोले के तमो कहो छो ते यथा

छे? एम कहे ते आशातना, (२६) वडा धर्म व्याख्या कहेतां शिष्य कहे के तमो भूली गया छो ते आशातना, (२७) वडा धर्म व्याख्या आपतां शिष्य पोते सारुं नं जाणी खुश न रहे ते आशातना (२८) वडा धर्म व्याख्या आपतां सभामां भेद थाय तेम अवाज करी बोली उठे के वखत थई गयो छे, आहारादि लेवा जवानुं छे विगेरे, कही भंग करे ते आशातना, (२९) वडा धर्म व्याख्या आपतां श्रोताओनां मनने नाखुशी उत्पन्न करे ते आशातना (३०) वडानुं धर्म व्याख्यान बंध थयुं न होय तेटलामां शिष्य पोते व्याख्यान शरु करे ते आशातना (३१) वडानी शय्या-पथारीने पगे करी घसे, हाथे करी आस्फालन करे ते आशातना, (३२) वडानी शय्या, पथारी उपर ऊभो रहे, बेसे, सूवे ते आशातना, (३३) वडाथी उच्च

आसने के वरावर आसने वेसवु, उभा रहेवु, सूवु वगेरे करे ते आशातना, यह ३३ गुरु आसातना जाणीजे।

पाठन्तर।

३३ गुरुकी आशातना—तीन चालणेकी—गुरुके आगे चाले १, गुरुके वरोवर चाले २, गुरुके पाछे अडतो चाले ३, ऐसी तीन आशातना खड़े रहणेकी ६, ऐसी तीन वेसणकी ६, दिशा गए गुरुसुं पहला हाथ धोवे तो आशातना १०, वडासाथ वाहारली भूमीका जायकर आया, गुरुके पहली इरियावही पडिकर्मे तो आशातना ११, गुरु प्रश्न करता होय विचमे बोले तो आशातना १२, गुरुके पास सुता होय गुरु वोलावे जागता न वोले तो आ-

शातना १३, आहार पाणी ल्यायकर गुरु थकी पहली छोटा जतिकुं देखावे तो आशातना १४, गुरु पहली छोटा जति (शिष्य) कने आलोवे तो आशातना १५, गुरु पहली छोटा शिष्य (यति) कुं आमंत्रे तो आशातना १६, गुरुकी आज्ञाविना छोटा यति तथा अनेरा साधुकुं आहार पाणी देवे तो आशातना १७, गुरु शिष्य आहार पाणी करता होय सरस सरस आपखावे निरस, निरस गुरुकुं देवे तो आशातना १८, गुरु बुलावे बोले नहीं तो आशातना १९, गुरु बुलावे आसण बेठां जवाब देवे तो आशातना २०, गुरु बुलावे तो कहे तुं क्या कहै छै तो आशातना २१, गुरुने तुंकारा देवे तो आशातना २२, गुरुने रे तुं अयोग वचन बोले तो आशातना २३, गुरुने उत्तर पडुत्तर देवे तो आशातना २४, गुरु अर्थ करता होवे तिवारे

भरी सभामे कहे इम छे इम नही तो आशातना २५, गुरु सूत्र पाठ कहेता हुवे तिवारे भरी सभामे कहे इम नहीं इम छे तो आशातना २६, गुरु कथा कहेता हुवे चेलो भली नहीं जाणे खुशी न हुवे तो आशातना २७, गुरु कथा कहेता परखदामे भेद पाडे तो आशातना २८, गुरु कथा कहेता हुवे शिष्य कहे आहारकी वेला थइ छै वखान उठा दो क्यु नही? इम कहे तो आशातना २९, गुरु कथा कही वाही कथा वणाय वणाय कर आछीतरेसु कहे तो आशातना ३०, गुरुके आसणसु ऊंचा आसण बैठ तो आशातना ३१, गुरुके बरोबर आसण करे तो आशातना ३२, गुरुके आसणकु पग लगावे तो आशातना ३३।

३३ बोल परम कल्याणका—१ तपस्या करीने नीयाणा न करे तो जीवरो परम कल्याण हुवे"

किणनी परे तामलीतापसनी परे, २ समकित नीरमल पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे श्रेणिक राजानी परे, ३ मन वचन कायानो योग शुभ प्रवरतावे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे गजसुकमालनी परे, ४ छत्ती सक्ती क्षमा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे परदेशी राजानी परे, ५ पांच महाव्रत निरमला पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे गौतमस्वामीनी परे, ६ कायरपणो छोड़े सुरपणो आदरे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे सेलक मुनीराजनी परे, ७ पांच इन्द्रियोंने वस करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे हरिकेसी मुनिराजनी परे, ८ माया कपटाई छाड़े (छोडे) तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे मल्लीनाथजीना छए मित्रनी

परे, ६ खरे धर्मनी आस्ता राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे वर्ण नामे नटनी परे, १० चरचा वारता करीने सरदहणा सुद्ध करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे केसीमुनी, गौतमस्वामीनी परे ११ दुखी देखीने करुणा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे मेघरथ राजा मेघ कुमारने पाछले हाथीरे भवनी परे १२ खरे वचनरी आसता राखे तो जीवरो परम कल्यान होवे किणनी परे आणंदजी कामदेव श्रावकनी परे, १३, अदत्तादान त्यागे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे अमरजीरे सातसे शिष्यनी परे, १४ शुद्ध मन सील पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे सुदरशण शेठनी परे, १५ ममता छोडीने समता आदरे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे कपील

ब्राह्मण (कपिल मुनि) नी परे, १६ सुपात्रने दान देवे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे रेवतीजी गाथापतणीनी परे, १७ चलीय चितने थिर करावे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे राजिमतीनी परे, १८ उत्कृष्टो तप करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे धनाजी अणगारनी परे, १९ उत्कृष्टी वैयावच करे तो जीवरो परम कल्याण होवे कीणनी परे पंथकजीनी परे, २० अनित्य भावना भावे तो जीवरो परम कल्याण हुवे किणनी परे भर्त्तेश्वर चक्रवर्त्तीनी परे, २१ उत्कृष्टी क्षमा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे अरजनमालीनी परे, २२ जिन धर्मरी आशता राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे अरणीकजीनी परे, २३ चार तीर्थने साता उपजावे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे

तीजे देवलोकरे इन्द्ररे पाछले भवनी परे, २४ उत्कृष्टो वीनो करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे बाहुबलजीनी परे, २५ उत्कृष्टि दलाली करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे कृष्ण महाराजनी परे, २६ उत्कृष्टो अभिग्रह करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे ढंढण मुनिराजनी परे, २७ शत्रु मित्र उपर सरिषा भाव राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे उदाइ राजानी परे, २८ अनर्थरो हेतु जाणीने दया पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे धर्मरुची अणगारनी परे, २९ कष्ट पड्या शीलमें दृढ रहे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे चन्दनबाला वा उणकी मातानी परे, ३० रोग आया हायत्रोह न करे तो आत्मारो परम कल्याण होवे किणनी परे अनाथिजीनी

परे, ३१ आश्रवमें संवर निपजावे तो आत्मारो परम कल्याण होवे किणनी परे संजती राजानी परे, ३२ परिसह आया समभाव वर्ते तो आत्मारो परम कल्याण होवे किणनी परे मेतार्यजीनी परे, ३३ चलिये चीत्तने थीर करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे रिट्ठनेमिजीनी परे ।

॥ चौतीसमां बोल ॥

३४ असज्झायरो सवैयो, तारो टुटे, रातिदिशा, अकाले मेह गाजे, वीज, कडके अपार, और भुमी कंपा भारी है, बालचन्द्र, जखचेन, आकाशे अगनकाय, काली धोली धुंध, और रजुघात न्यारी है, हाड, मांस, लोही, राध, ठंडले मसाण बले, चंद्र, सूर्य ग्रहण, और

राज्य मृत्यु टाली है, थानकमे मरयो पड्यो पचेंद्री कलेवर, ए वीस बोल टाल कर ज्ञानी आज्ञा पाली है, असाढ, भाद्रु, आसु, काती, चैती, पुनम जाण। इणथी लगती टालीये, पडुवा पाच वखाण॥ पडवा पाच वखाण साज सवेर मध्य न भणीये, आधी रात टोय हरे, सर्व मिल चौतीस गिणिये॥ चौतीस असज्भाइ टालके सूत्र भणली सोय। ऋषि लालचद इणपरि कहे ताके विघन न व्यापे कोय ३४।

३४ असज्भाईके नाम१ उकावाय कहता तारा तुटे तो एक पोहर असज्भाई २दिशादाहा कहता फजर और शामको दिशा लाल रगकी रहे वहा तककी असज्भाई ३ गजिया कहता गर्जना होवे तो एक मुहूर्तकी असज्भाई ४ विज्जुए कहता विजली होनेसे टोय पोहर (प्रहर) असज्भाई परंतु गाज और विजलीकी

आद्रा नक्षत्रसे स्वाति नक्षत्र तक असझाई नगिणाना और सदा गिणाना ५ निग्घाए कहता कडकेतो आठ प्रहर की असझाई ६ जुवे कहता बालचंद्र शुक्ल पक्षकी पडिवा द्वितीया त्रितीया ए तीन रातमें चंद्रमा रहे वहांतककी असझाई ७ जरकाले कहता आकाशमें मनुष्य पशु पिशाचादिक के चिन्ह दिखे वहांतक असझाई ८ धुम्मीए कहता काली धूंहर पड़े वहांतक असझाई ६ महिये कहता श्वेत धूंवर (मेगरवा) पड़े वहांतक असझाई १० ऊधाए कहता आकाशमें धूलका गोटा (दोटा) चढ़ा हुवा दिखे वहांतक असझाई ११ मंस० कहता मांस दृष्टिमें आवे वहांतक असझाई १२ सोणी कहता रक्त (लोही) दृष्टिमें आवे वहांतक असझाई १३ अठी कहता अस्थी (हडी) दृष्टि में आवे वहांतक असझाई १४ उच्चार कहता

भिष्टा दृष्टिमें आवे वहातक असझाई १५ सुसाण कहता श्मशानके चारो तरफ १०० १०० हाथ असझाई १६ राय मरणे कहता राजाके मृत्युकी दूसरो राजा बैसे उटेतक हड़ताल रहे वहातक असझाई १७ रायवुगय कहता राजाओका युद्ध होवे वहांतक असझाई १८ चदवरागे कहता चद्रग्रहण होय तो जगन ४ उत्कृष्टी ८ प्रहर खग्रास होनेसे १२ प्रहर थोड़ा ग्रहण होनेसे कमी काल समझना १६ सुरोवरागे कहता सूर्य्य ग्रहण होय तो १२ प्रहर २० उवमंतो कहता पचें-द्रियका कलेवर निर्जीव देह पड़ा होवे तो चारो तरफ १००-१०० हाथ असझाई २१ आश्विन सुदि पूर्णीमा असझाइ २२ कार्तिक वदी प्रतिपदा (प्रथमा) असझाइ २३ कार्तिक सुदि पूर्णीमा असझाई २४ मृगशीर्ष प्रतिपदा असझाइ २५ चैत्र सुदी पूर्णीमा

असझाइ २६ वैसाख वदी प्रतिपदा असझाइ २७ आषाढ सूदी पूर्णीमा असझाइ २८ श्रावण वदि प्रतिपदा असझाइ २६ भाद्र सुदि पूर्णीमा असझाइ ३० आश्विन वदि प्रतिपदा ये १०, दिन और रात संपूर्ण असझाइ पालना ३१ प्रभात ३२ दो प्रहर (मध्यान) ३३ शाम ३४ मध्य रात्री ये ४ वक्त शेषकी (छेहली) ३१-३२-३३-३४ वी, एकेक मुहूर्त असझाइ ये ३४ असझाइ टालकर सूत्र भणना ।

॥ पैंतीसमो वोल ॥



अर्हंतकी वाणी के ३५ गुण ❋।

१ सस्कारयुक्त वचन वोले, २ उच्च स्वरसे वोले, जिसको एक योजन तक वैठी हुई परिषदा अच्छी तरहसे श्रवण करती हैं, ३ सादी भाषामें परन्तु मानपूर्वक शब्दोमे न वोले, "रे,तु।" इत्यादि तुच्छकार वाचक शब्द नही वोले, ४ जैसे आकाशमें महा मेघका गर्जारव होता है, ऐसे ही प्रभुकी वाणी भी गभीर होती है, और वाणीका अर्थ भी गभीर-गहन-उडा होता है, अर्थात उच्चार और तत्व दोनोमें गभीर वाणी वोलते है, ५ जैसे गुफामे व शिखरवध

नोट— ❋ प्रभुकी वाणीके ये गुणोंकी तरफ हरएक उपदेशक को ध्यान लगाना चाहिये, युरोपीयन वक्ताओं श्रोतागणपर प्रबल असर करते हैं उसका सबब यह है कि ये लोग उपदेश देनेकी रीतिका अभ्यास करते हैं।

प्रसादमें जाकर बोलनेसे प्रति छंद अर्थात् प्रतिध्वनि होती है, ऐसे हो प्रभुकी वाणी भी प्रतिध्वनि करती है (Thundering tone) ६ सरस अथवा स्निग्ध वचन बोले, ७ रागयुक्त बोले-६ राग और ३० रागणीमें उपदेश देवे, जिससे श्रोतागण तल्लीन हो जावें, (Harmonious tone) जैसेकी वीणासे मृग और पुंगीसे सर्प तल्लीन हो जाता है, (यह सात अतिशय उच्चारके बारेमें कहा, अब अर्थ सम्बन्धी अतीशय):—८ थोड़े शब्दोंमें विशेष अर्थका समास करके बोले; इस लिये भगवान के वाक्योंको 'सूत्र' कहे जाते हैं, ९ परस्पर विरोध रहित बचन बोले; एक वक्त 'अहिंसा परमो धर्म' ऐसा कह कर, धर्म निमित्ते हिंसा करनेमें दोष नहीं" ऐसा विरोधवाला वाक्य प्रभु कभी नहीं बोलते हैं, १० जुदा २ अर्थ प्रकाशे, जो परमार्थ चला है उसको पूरा करके

फिर दूसरा प्रकाशे, परतु गडबड करे नहीं, ११ सशय रहित वचन कहे, ऐसे खुलासे से फरमावे कि सुननेवालेको बिलकुल सदेह नही रहै, १२ दोषरहित वचन बोले, अर्थात् स्वमति अन्य मति बडे बडे पडित जन भी प्रभुके वचनमें किञ्चित् मात्र दोष नहीं निकाल सके १३ सर्व को सुहाता ❋ वचन कहे कि जिसको सुनते ही श्रोताका मन एकाग्र हो जाय, १४ देश-काल उचित बोले अर्थात् बड़े विचक्षणतासे समय विचारके बोले, १५ मिलते वचन कहे, अर्थका विस्तार तो करे, परतु अट्टम सट्टम कहकर बख्त पूरा न करे, १६ तत्व प्रकाशे, जीवादि नव पदार्थका स्वरुपसे मिलता वचन कहे, तथा सारसार कहे असारको छोड़ दे, १७ सक्षेपसे कहे, अर्थात् पदके अगाड़ी दूसरा पद थोड़ेमें

नोट— ❋ वेद भी कहता है कि — ' सत्यं ब्रूहि, प्रिय ब्रूहि" अर्थात् सत्य ऐसा बोलो कि जो सुननेवालेको प्रिय भी लगे ।

पुरा कर दे, तथा निःसार बात संसारीक क्रियादिककी थोड़में पुरी करे विस्तार नहीं करे १८ बात रूप कहे-ऐसा खुला अर्थ प्रकाश करे कि छोटासा बालक भी मतलब समझ जाय; १६ स्वश्लाघा और परनिंदा रहित प्रकाशे, देशनामें अपनी स्तुती और अन्यकी निंदा नहीं करे, ('पाप'की निंदा करे परंतु 'पापी'की निंदा नहीं करे) २० मधुर वाणीसे उपदेश करे, दूध और मिश्रीसे भी अधिक मिष्टता-माधूर्यता प्रभुकी वाणीमें है, इसलिये श्रोता जन व्याख्यान छोड़कर जाना पंसद नहीं करते, २१ मर्मकारी बचन न कहे, जिससे किसीकी छानी बात खुली होवे ऐसी बात न करे, २२ योग्यता देखकर गुणकी प्रसंसा करे, खुशामद न करे, योग्यतासे अधिक गुण न कहे, २३ सार्थ धर्म प्रकाशे, जिससे उपकार होवे, तथा आत्मार्थ सिद्ध होवे ऐसा कहे, २४ अर्थ का-

तुच्छपणा न करे अर्थात् छिन्न भिन्न करके न फरमावे, २५ शुद्ध वचन कहे, व्याकरणके नियमानुसार शुद्ध भाषा प्रकाशे, ❀ २६ मध्यस्थपणे प्रकाशे अर्थात् बहुत जोरसे भी नहीं, बहुत जलदीसे भी नहीं, और बहुत धीरेसे भी नहीं, इस तरह बोले २७ श्रोताजनोंको प्रभुकी वाणी चमत्कारी लगे कि "हा हा। प्रभूके फरमानेकी क्या चतुरताई और क्या शक्ति है।" २८ हर्षयुक्त कहे, जिससे सुननेवालेको हूबहू (वैसाका वैसाही) रस प्रगमें २९ विलंब रहित कहे, बिचमें विश्राम नहीं लेवे, ३० सुननेवाला जो प्रश्न मनमें धारकर आया होवे, उसका बिना पूछे ही खुलासा हो जावे इस तरह प्रकाशे, ३१

नोट— ❀ व्याकरणका कितना जरूरत है सो इस परसे ध्यानमें लेना चाहिये, अशुद्ध वाणी में अर्थ हितकारक होनेपर भी श्रोतागणके हृदयमें बात जचती नहीं है, इस लिये उपदेशक वर्गको लाजिम है कि भगवानके गुणोंका अनुकरण करना और गुरुकी आज्ञानुसार व्याकरण भी पढ़ना।

अपेक्षा वचन कहे; एक वचनकी अपेक्षासे दूसरा वचन कहे, और जो फरमावे वो श्रोताके हृदयमें ठसता जावे, ३२ अर्थ—पद-वर्ण-वाक्य सर्व जुदे जुदे फरमावे, ३३ सात्विक वचन प्रकाशे इंद्रादिक बड तेजस्वी प्रतापी आ जावे तो भी डरे नहीं, ३४ जो अर्थ फरमाते हैं, उसकी सिद्धी जहांतक न होवे वहांतक दूसरा अर्थ निकाले नहीं, एक बात दृढ़ करके दूसरी बात पकड़े, ३५ चाहे कितना लंबा समय उपदेशमें चला जावे तो भी थके नहीं, उत्साह बढ़ता ही रहे ।

॥ छत्तीशमां बोल ॥

३६ आचार्यके छत्तीस गुण—पांच महाव्रत पाले ५, पांच इन्द्रि जिते १०, च्यार कषाय निवारे

१५, पाच आचार पाले १६, आठ प्रवचन मताको आराधे २७, नव वाड़ि ब्रह्मचर्य पाले एव ३६ ।

३६ गुण छत्तीस आचार्य—१ जाइ सपन्ने कहता जाति (माताका पक्ष) निर्मल कलकरहित, २ कुलसपन्ने कहता पिताका पक्ष निर्मल, ३ बलसपन्ने कहता कालप्रमाणे उत्तम सघेण पराक्रमके धणी, ४ रुपसपन्ने कहता समच तुर्सादि उत्तम सस्थान शरीरका आकारके धणी, ५, विनय सपन्ने कहता अति कोमलता नम्रता वन्त ६ नाणसपन्ने कहता मती श्रुति आदि निर्मल ज्ञानवन्त पटमतके जाण, ७ दसण सपन्ने कहता शुद्ध श्रधावत ८ चारित्र सपन्ने कहता निर्मल चारित्र वत, ९ लज्जा सपन्ने कहता अपवाद निन्दासे डरे १० लाघव सपन्ने कहता लाघव (हलका

पणा) दो प्रकारका, १ द्रव्यसे तो उपधी-भंड उपगरण थोडी रखे और भावे कषाय कम करे, ११ उयंसी कहता उपसर्ग उत्पन्न हुये धीर्य धरे, १२ तेयंस कहता महातेजस्वी १३ वच्चंसी कहता चतुराइसे बोले किसीके छलमें आवे नहीं, १४ जसंसी कहता यश-वन्त आचार्यके यह च्यार बोल स्वभाविक पाते हैं, १५ जिये कोहे, १६ जिय माणे, १७ जीये माये, १८ जिये लोहे, १६ जिये इन्द्रिय अर्थात् क्रोधमान माया लोभ और श्रोतादिक पांच इन्द्रिय रुप महासत्रुओंको जीतते हैं, २० जिये निंदा कहता दूसरेकी निंदा करनेसे निर्वत्तते हैं पापको निंदे परंतु पापीको नहीं तथा निद्रा अल्प, २१ जिये परिसह कहता क्षुधादिक परिसह उत-पन्न हुवे चलायमान न होवे, २२ जीविय आसमरणभय विप्पमुक्का कहता बहुतकाल

जीणेकी आश नहीं और मरनेका डर नहीं, २३ थथपहाणे महा व्रतादि वृत करके प्रधान होवे, २४ गुणपहाणे कहता चाती आदि गुण करके प्रधान होवे, २५ कारण पहाणे कहता कियावन्तके ७० गुण करके प्रधान होवे, २६ चरण पहाणे कहता चारित्रके ७० गुण करके प्रधान होवे, २७ निग्गह पहाणे कहता अनाचारका निपेध करनेमे प्रधान होवे, अखलित जिनकी आज्ञा प्रवर्ते, २८ निच्छय पहाणे कहता पट् द्रव्यादिकका निश्चय करनेमे प्रधान होवे, राजाडिक की सभामे क्षोभ न पामे, २६ विद्या पहाणे कहता रोहिणी प्रमुख विद्यामे प्रधान होवे, ३० मत पहाणे कहता विप परिहार व्याधी निवार व्यत्रोप सर्ग नाशक इत्पादि मन्त्रमें प्रधान होवे, ३१ वेय पहाणे कहता यजुरादिक चारही वेदके जाण होवे, ३२ बभ पहाणे

कहता ब्रह्मचर्यमें प्रधान होवे, ३३ णय-
पहाणे कहता नेगमादि सातनय स्थापनेमें
प्रधान होवे, ३४ नियम पहाणे कहता अभि-
ग्रहादि नियम तथा प्रायश्चित विधि जाणने
में प्रधान होवे, ३५ सच्च पहाणे कहता महा-
सत्यवन्त, ३६ सोय पहाणे कहता शुची दोय
प्रकारकी १ द्रव्यतो लोकमें अपवाद होय
ऐसा वस्त्रादि न पहरे और भावे पाप मेल
से न खरडाय ।

॥ दोहा ॥



बारबार कर जोरिकें, गुणवंतसूं अरदास ।
अल्पबुद्धि मोहि जाणकै,मति कीज्यो कोईहास्य॥
बोल लिखी ऐसे करूं, पंडित सुं अरदास ।
अधिक हीण जो मैं, कह्यो सुध भांति प्रकाश ॥

॥ ओछो अधिको आगो पाछो लिख्यो होय तेनो मिच्छामि दुक्कड ॥

॥ सेव भंते सेव भंते ॥

॥ तमेव सच्चम् ॥

शान्ति। शान्ति॥ शान्ति॥।





॥ श्री सर्वज्ञाय नम ॥

अर्हंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्व साधू णोनम

—

॥ दोहा ॥

पर द्रव्यन त प्रीति, है ससार अबोध।
ताको फलगनि चारिमे, भ्रमण कह्यो श्रुतनाथ॥
निर्मल है निज आत्मा, देह अपावन गेह।
जानि भव्य निज भावकु, यासु तजो सनेह॥
धर्म करत ससार सुख, धर्म करत निर्वान।
धर्म पथ साधे विना, नर तिर्यंच समान॥
धर्म विना सुण जीवड़ा, तुं भम्यो भव्य अनत।
मुद्द पणे भव्य ते किया, इम बोले भगवंत॥

—

॥ अथ ११ गणधरोंके नाम ॥

१ श्री इन्द्रभूतिजी
२ श्री आग्नभूतिजी
(श्री अग्निभूतिजी)
३ श्री वायभूतिजी
४ श्री विगतस्वामीजी
५ श्री सुधर्मास्वामीजी
६ श्री मंडी पुत्रजी
७ श्री मोरीपुत्रजी
८ श्री अकमपितजी
९ श्री अचलभूतीजी
१० श्री मेतारजजी
११ श्री प्रभासजी

॥ अथ १६ सतियोंके नाम ॥

१ श्री ब्राह्मीजी
२ श्री सुंदरीजी
३ श्री कौशल्याजी
४ श्री सीताजी
५ श्री कुंतीजी
६ श्री द्रोपदीजी
७ श्री राजमतिजी
८ श्री चंदनवालाजी
९ श्री सुभद्राजी
१० श्री चेलणाजी

११ श्री शिवाजी (सेवाजी)	१४ श्री सुलसाजी
१२ श्री पद्मावतीजी	१५ श्री दमयतीजी
१३ श्री मृगावतीजी	१६ श्री प्रभावतीजी

इति ११ गणधर।

१६ सतीयोके नाम समासम्।

यह ११ गणधर, १६ सतीयो उत्तम पुरुषो को हमारी त्रिकाल वारम्वार वदणा नमस्कार होजो॥

॥ नीतिके दोहा ॥

जो ताकूँ कॉटा वोवे ताहि वोइ तू फूल।
तोको फूलके फूल है, वाको है तिरसूल॥
दुरवलका न सताइये, जाकी मोटी हाय।
मुई खालके स्वास मे, सार भसम हो जाय॥
ऐसी वानी वोलिये, मनका आपा खोय।
औरनको शीतल करे, आपो शीतल होय॥

जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप ।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ क्षमा तहँ आप ॥
साँच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप ।
जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप ॥
झूठ कबहुँ नहिं बोलिये, झूठ पाप को मूल ।
झूठेकी कोउ जगतमें, करै प्रतीति न भूल ॥
संगति कीजै साधु की, हरै और की व्याधि ।
ओछी संगति क्रूर की, आठों पहर उपाधि ॥
बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखे कोय ।
जो दिल खोजो आपना, मुझसा बुरा न कोय ॥
दुखमें सुमिरन सब करें सुखमें करे न कोय ।
सुखमें जो सुमिरन करें, दुख काहेको होय ॥
संचय करिबो है भलो, सो आवे बहु काम ।
पाप न संचय कीजिये, जो अपयश को धाम ॥
बुरो माँगिबो जगत में, जाते हो अपमान ।
क्षमा माँगिबो ईश तें, भलो यही कर ज्ञान ॥
श्रम से विद्या पाइये, श्रम ही से धन होइ ।

श्रम ही से सुख होत है श्रम बिन लहे न कोइ ॥
आलस कबहुँ न कीजिये,आलस अरि सम जान
आलसमे विद्या घटे, सुख सपति की हान ॥
लोभ सरिस अवगुन नहीं, तप नहिं सत्य समान।
तीरथ नहि मन शुद्धि सम विद्या सम धन आन ॥
जामे गुन अवलोकिये, करिय ताहि स्वीकार ।
बाल वचन हूँ करिय जो होय नीति अनुसार॥
बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय ।
काम बिगाडे आपनो, जगमे होत हसाय ॥
लाख मूर्ख तजि राखिये, इक पण्डित बुधि धाम।
सर शोभा इक हसमो, लाख काक किहि काम ॥
धन ते विद्या धन बड़ो, रहत पास सब काल ।
देय जितो बाढ़े तितो, छोर न लेइ नृपाल ॥
सब परतिय जिहि मातु सम,
सब पर-धन जिहि धूर ।
सब जीवन निज सम लखे सो पण्डित भरपूर ॥
सत सगतमे बास सो, अवगुन हूँ छिपि जात ।

॥ दोहा ॥



फल कारन सेवा करे, तजे न मनसे काम ।
कहे कबीर सेवक नहीं, छै चौगुना दाम ॥
सेवक सेवा में रहे, अन्त कहीं न जाय ।
दुःख सुख सिर ऊपर सहे, कहें कबीर समझाय ॥
सेवक सेवा में रहे, सेवक कहिये सोय ।
कहे कबीर सेवा बिना, रसिक कभी न होय ॥
मेरा मुझ पर कुछ नहीं, जो कुछ है सब तोर ।
तेरा तुझ को सौंपते, क्या लागेगा मोर ॥
दुःख सुख एक समान कर, हर्ष शोक नहीं व्याप
परोपकारी नहीं कामता, उपजै शोक न ताप ॥
प्रेम भाव इक चाहिये, भेष अनेक बनाय ।
चाहे घर में वास कर, चाहे वन में जाय ॥
जोगी जंगम सेवड़ा, सन्यासी दरवेश ।
बिना प्रेम पहुंचे नहीं, दुर्लभ सतगुरु देश ॥
जहां बाज बासा करे, पंछी रहे न कोय ।

प्रेम भाव परकामीया मन कुछ गया नगार ॥
भक्ति प्रान से होत है मन द भीजे भाव।
परमारथ परतीति म यह तन जाय तो जाव ॥
साहेब का घर दूर है जसो लंबी खजूर।
चढ़ तो चाखे प्रेम रस गिरे तो चकना चूर ॥
पढ़ पढ़ के कितने मुये, पण्डित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेमका पढ़े सो पण्डित होय ॥
जब लग मरने से डरे, तब लग प्रेमी नाहि।
बड़ी दूर है प्रेम घर, समझ लो मन माँहि ॥
पानी मिले न आपको औरन बकसत खीर।
आपन मन निश्चल नहीं औरन बधावत धीर ॥
गजल—जगदीश गुण गाया नहीं
गायक हुआ तो क्या हुआ।
पितु मात मन भाया नहीं
लायक हुआ तो क्या हुआ ॥
माकर नमक जिस सेठ का
सभा में ना मुंह फेरना।

चाकर नहीं वह चोर है,
खाया नमक तो क्या हुआ ॥
मात पिता की जीते जी,
जो सेवा कुछ न बन पड़ी ।
तब मूए के पीछे,
श्राद्ध औ तर्पण किया तो क्या हुआ ॥

दोहा—जिस जोबन के कारणे,
इतना करे गरूर ।
वह जीवन पल मात्र है,
अन्त धूर की धूर ॥
अन्याई राजा मिला,
जैसे पेड़ खजूर ।
प्रजाको छाया नहीं,
फल लागे अति दूर ॥
सुख दानी जग तारनी,
जापर होत सहाय ।
बड़ भागा वह जन बसे,

भवसागर तर जाय ॥
कहना था सो कह चुके
अब कुछ कहा न जाय ।
एक रहा दूजा गया,
दरिया लहर समान ॥
॥ संग्रह किया ॥
॥ जुगराज सेठिया गाल अवस्थामे ॥

॥ ३६ बोल मूर्खरा ॥



१ विना भूख खाय सो मूरख ।
२ अजीर्णथकां खाय सो मूरख ।
३ कर्जा करके ने सुननथी चीज खरीदे ते मूर्ख ।
४ लाभके समय आलस तथा कलहादि करे ते मूर्ख ।

५ कर्जा देती वखत इतनी बाते विचारने योग्य है हैसियत संपदा धन नफा या टोटा क्षेत्र राजाका कानून चलण संगत साख सोभा प्रकृति पक्ष संपत परिवार नियत काम करता पुरुष इत्यादिक तपास करयां विगरउधार याने कर्जा देवे ते मूर्ख ।

६ सामान्य बात करते कठिन भाषा बोले ते मूर्ख ।

७ अपणी बुद्धिका गर्व कर दुसरेकी हित शिक्षाका वचन सुनके क्रोध करे ते मूर्ख ।

८ कुलमद करि (कुलका मद करके) किसी का विनय न करे ते मूर्ख ।

९ सरीर नीरोग थकां औषध (दवा) लेवे ते मूर्ख ।

१० बुढापेमें विवाह करे सो मूर्ख ।

११ निर्बुद्धि होय बडे अधिकारकी (अधिकारी होनेकी) इच्छा करे ते मूर्ख ।

१२ अन्याय करी महत्त्व (बडपन) चाहे ते मूर्ख।

१३ अपने स्वामीकी पीठ पीछे निन्दा करे ते मूर्ख।

१४ सुखके भोगनेके समय दुख और दरिद्रताको भुल जाय ते मूर्ख।

१५ वस्तु परीक्षार्थ जहर खाय ते मूर्ख।

१६ कषायके वश आत्म घात चितवे ते मूर्ख।

१७ धनवानसे और पण्डितसे वाद करे ते मूर्ख।

१८ प्रमादि हो दैवका आश्रय ले उद्यम न करे ते मूर्ख।

१९ पराया बल, धन, रूप, विद्या देखके हर्ष या ईर्षा करे ते मूर्ख।

२० प्रत्यक्ष दोषी मनुष्यका वखाण करे ते मूर्ख।

२१ आपणा घरका छिद्र परके अगाड़ी कहै अथवा पराया अवगुण प्रकाशे ते मूर्ख ।

२२ सत पुरुष त्यागी साधुकी संगत पायके त्याग पच्चखाण सेवा भक्ति न करे ते मूर्ख ।

२३ सुपात्रका योग मिलने पर दान नहीं देवे ते मूर्ख ।

२४ पोते कुकर्म करके दुजेके उपर दोष डाले ते मूर्ख ।

२५ स्वार्थी मनुष्यसे प्रीतिकी इच्छा रखे ते मूर्ख ।

२६ स्त्रीके भयसे याचक कुं वर्जे ते मूर्ख ।

२७ कृपणता वश अपयश उपार्जे ते मूर्ख ।

२८ धन उधार देके पाछो नहीं मांगे ते मूर्ख ।

२६ आमदानीसे अधिक खरच करे ते मूर्ख ।

३० अपणे घरका हिसाब आमदानी खरचा न देखे ते मूर्ख ।

३१ हिंसा करी धर्म माने ते मूर्ख ।

३२ रोगी होय कुपथ्य करे ते मूर्ख ।

३३ निर्धन और कर्जदार इनकी परीक्षा किये विगर विश्वास करे ते मूर्ख ।

३४ लौकिक व्यवहार न जाणे ते मूर्ख ।

३५ द्रव्य कमती होयके वडोकी बराबरी करे ते मूर्ख ।

३६ पिता, सेठ काम करे याने काम करता थका बेटा, गुमास्ता बैठा देखे और उनकी मर्जी माफक कामकी मदद न देवै, उनकी भक्ति विनय न करे, आला टाला करे लुकता छिपता फिरे तो मर्ख, ऐसाही वड़ेके आगे छोटा और सासुके आगे वहु जाणना ।

॥ १७ बोल प्रस्ताविकका ॥

१ जो तुमकु दुःखोका भय होय और

सुखकी अभिलाषा होय तो धर्मरूपी कल्पवृक्ष सेवो।

२ धर्मकी जड़ विनय और पापकी जड़ व्यसन (कुव्यसन) है, यह क्रोड ग्रंथका सार है।

३ जिसके पास नित्य क्षमारूपी खड्ग है उसका क्रोधरूपी वैरी कुछ नहीं कर सक्ता।

४ शोकरूपी वैरीकुं ज्यादा पास रखोगे तो तुम्हारी बुद्धि, हिम्मत और धर्म ए तीनोका जड़सें नाश हो जावेगा।

५ जैसे पुत्र विगर पालणो और वींद विगर (विना)जान शोभती नहीं तैसे हो धर्म विगर आत्मा शोभती नहीं।

६ जिके (जो जो) मनुष्य परस्त्रीकुं माता तथा बहनके सदृश (समान) समझना है और सर्व जीवोंकुं अपणी आत्मा समान गिणता है वह दुःखी नहीं होता यह बात शास्त्र द्वारा सिद्ध है।

७ शास्त्रका श्रवण श्मशान (मशान) भूमि और रोग पीडा ए तीन स्थान वैराग्य उपजणेका मुख्य कारण है।

८ बेसमजका अर्थ करनेवालेकुं शास्त्र भी शस्त्रकी तरह हो जाता है।

९ बुद्धि बढ़नेका और नया तर्क उत्पन्न होणेका मुख्य कारण मनकी शुद्धि है।

१० तुमको दुःख पड़े उस वक्त चिंता त्याग कर धय राखो क्युंकि चिंता कुछ दुःख हरणेकी दवाई नहीं है। चिंतासे चतुराई घटेगी और चतुराईके अभावे (नहीं रहनेसे) तप जप और नियम किसके आधार रहेंगे सम दम और समाधि किसकूं अवलम्बन करेंगे यासे उस वक्त धैर्य राखकर धर्म सेवण करना एहीज उत्तम है।

११ जो तुमको सब दुनियाको वशकरणा होय तो पराया औगुणमें प्रवेश न कर गुण

ग्रहण करो मीठा और हितकारी वचन बोलो और उदारता गुणकी वृद्धि करो।

१२ अपणे हसते हसते कहते हैं कि क्या तुम्हारा हाथ टूट गया? क्या तुं अंधा हो गया? ऐसे ऐसे कटू (कड़वा) वाक्य कहकर चीकणे कर्म बांधते हैं वो जब कर्म उदय आवेंगे तब रोय रोय कर भी छूटना मुश्किल हो जायगा वास्ते वचन निकालतो वक्त खूब शोच कर बोलना क्युंकि छुरीका तथा तरवारादि शस्त्रका घाव दवाइसे अच्छा होय जावे परंतु वचनका घाव मिलना कठिन है सो हरेक वक्त विचार पूर्वक बोलना।

१३ सामायिक करती वखत जिसका प्रणाम स्वजनोंके उपर और परजनोंके उपर और निंदा तथा प्रशंसामें समभाव रखेगे उसी ही का सामायिक मोक्षदायक होवेगा।

१४ जैसे राजाकी आज्ञाका भंग करणेसे

इस लोकमें मनुष्यको धन वगेरेका दड होता है तैसे ही सर्वज्ञ भगवानकी आज्ञा भग करने से जीवको परभवमें अनता भवभ्रमणरूप दड (डड) होता है।

१५ जो तुम, तुमारे प्रिय मित्र और सगा तथा सनधीके साथ प्रेम रखणा चाहते हो तो जिस वखत वह क्रोध करे तब तुम क्षमा धारण करो।

१६ जो तुमको धर्मकी जल्दी उत्पति करणी होय तो शास्त्रका बहुमान करो और अच्छा आचरण राखो।

१७ कडवा वचन कुमती, कृपणता और कुटिल स्वभाव ए च्यार दुर्गण त्यागोगे तब ही निश्चय धर्मकी प्राप्ति होवेगी।

॥ नं० १ ॥

॥ बोल शिखावणारा ॥



१ माता पिता गुरु तथा मोटा पुरुषनो विनय करवु ।

२ क्लेशने थानके मौनपणुं धारण करवु ।

३ इन्द्रियों सर्वथा वश राखवी ।

४ एक अक्षर शीखावानारने पण गुरु करी मानवु ।

५ पोताना अवगुण शोधी काढवु ।

६ महोटा पुरुष घेर (घर) आवे तो उभा थइ सन्मान देवु ।

७ दोस्तदारी मित्राचारी पण्डितो साथे राखवी ।

८ नवांनवां शास्त्र वांचवानो अभ्यास राखवु ।

९ जे आपणी सगी थती नथी तेनी साथे

वाइ अथवा बेहन आ माता कहीने बोलवानो रीवाज राखवु ।

१० पुत्र पुत्रीने नानपणथीजसारी संगत राखवी सदक्रिया तथा धर्मना मूलतत्व शिखावु ।

११ जवान अवस्थामां पांचे इन्द्रियोने वश करवी तथा राग द्वेष विषय अने कषायादिक जीतवु ।

१२ हुं मृत्युना मुखमां रह्यो छु मारु आयुष्य क्षणमात्र नथी एम जाणी धर्म आचरवुं ।

१३ सर्व वस्तुनो नाश थतो होय तो पण पातानु वचन (सत्त वचन) अवश्य पालवु ।

१४ करवु होय ते बनते प्रयत्ने ज्ञाननी अने ज्ञानीनी विनय भक्ति करवु अने लघुनीति वडीनीति स्नान मैथुन अने भोजन करती वखते शब्द उच्चारण न करवु ।

॥ न० २ ॥

॥ बोल शिखावणारा ॥



१ रुप क्रोध छक अंध न वहीजे ।
२ भांग तमाखुं अमल तजीजे ।
३ बुरीगार रो संग न कीजे
४ वेर बुराई कदे न लीजे ।
५ न्यात जातमें फंद न पाड़ीजे ।
६ सात कुव्यसनसुं अलगा रहीजे ।
७ चोरी जारीझूठ तजीजे ।
८ खोटा दगा रा वणज न कीजे ।
९ मोह मायामें निपट न कलिजे ।
१० अथिर संसार सुं विरक्त रहीजे ।
११ गृहस्थ धर्म बारे व्रत धारीजे ।
१२ हकमें चाल खरो जस लीजे ।
१३ निरलोभी निग्रंथ गुरु कीजे ।
१४ साचा सुख मोक्षरा लीजे ।

॥ नं० ३ ॥

॥ बोल शिखावणरा ॥



१ आवसग्ग करे तो पच्चक्खाण उपयोग हुवे।

२ मनमें सदेह हाय सो पूछने टाले।

३ साधर्मिकु दोष लाग्या हुवे तो एकात सिखामण दे।

४ साज सवेरे व्रत पचाखाण चितारे (समाले)।

५ जेसा प्राच्छित्त लाग्या होय तेसा दड लेवे।

६ साधर्मिसु चरचा करता बिचमे वाद न करे।

७ भगवतका मार्गमे खेंचाताण नकरे।

८ पक्की (पखी) चोमासी नफो टोटो विचारं।

९ विनय सहित अक्षर पढे तथा पढावे।

॥ न० ५ ॥

॥ बोल शिखावनरा ॥



१ मित्रसे कपट रखणो नहीं ।

२ लोहवान स्त्रीका भी विश्वास न करनो ।

३ अन्याय मार्गसे द्रव्य पैदा न करणो ।

४ बडोंके साथै वैर करणो नहीं ।

५ नीच पुरुषके संग विवाद करणो नहीं ।

६ वैरीके ऊपर पण निर्दयी न होणो ।

७ समर्थ होकर दूसरेकी आशा भंग नहीं करणी ।

८ किसीकुं झुठो कलंक न देनो,

९ किसीकुं खराब मालूम होय ऐसो वर्त्ताव नहीं रखणो ।

१० जिस ठिकाणे दुशमन ज्यादा होय वहां नहीं जाणो ।

११ चोरीकी चीज मोल लेणी नहीं ।

१२ कार्य तथा सत्कार विगर किसीके घर आणो नहीं ।

१३ माता पिताकी आज्ञा लोपणी नहीं ।

१४ सगा साथे कदापि विरोध रखणो नहीं ।

१५ कपटीके आडम्बरको विश्वास न करणो ।

१६ अति कष्ट पड्या थकां भी आत्मघात करणी नहीं ।

१७ हांसी करतॉ किसी पर क्रोध करणो नहीं ।

१८ कोई क्रोधरे वश हो कर कड़वा वचन आय कर कहे तो भी न्यायमार्ग छोडणो नहीं ।

१९ माता पिता गुरु सेठ स्वामी और राजा इणाका अवगुण बोलणा नहीं ।

२० स्नेहराग समान दुसरो उत्कृष्टो बधन नहीं और प्राणीकी हिंसा समान मोटा पापनहीं ।

२१ माता बहन और पुत्री साथे एक आसण बेठणो नहीं ।

२२ क्रोधी कृपण आलसी और व्यसनीकी संगत करणी नहीं ।

२३ धनसें बहोत प्यार होय तो भी अन्याय सु उपार्जन करणो नहीं कारण सोनेरी छूरी कोइ पेटमें मारे नहीं ।

२४ कदापी सत्य छोडना नहीं ।

॥ नं० ६ ॥

॥ बोल शिखावणारा ॥

१ अपने किसी दूसरे पुरुषपर उपकार किया हुवे तो अपणे मुखसे उसको कभी दरसाणा नहीं वदलेमें पीछी कोई प्रकारकी ईछा न रखनी ।

२ किसी पुरुषमें कोई औगुण देखके निंदा त्याग (छोड़) जहां तक हो उसका गुण ही ग्रहण करना ।

३ पर स्त्री एकली एकांतमें होय तो वहा न बैठना।

४ अजाण वस्तु जिसका नाम व गुण नहीं जाणे ऐसी न खाना न खिलाना।

५ कोई गुप्त बात अपनी या अपने ईष्ट मित्रकी या जिसको दुसरेने विश्वास जाण कर कही होवे सो कदापि जाहिर न करना।

६ कोइ भी मनमे चितवी बात ओछा मनुष्यकु मूर्खकु स्त्रीकु पागलकु न कहणी।

७ संकट आनेपर धर्म धैर्य तथा सत्य न छोडना।

८ जिस स्थानपर क्लेश तथा पापका कारण होवे त्याग करना या वहांपर मौन रखना।

९ जिस द्रव्य उपार्जनमे जीवकी जोखम धर्मकी हानि और इज्जतका भय होवे ऐसा कृत्य न करना।

१० कृतघ्नी, कपटी, निर्दयी, अतिलोभी, निर्लज्ज, कुव्यसनी और मूर्ख इनके साथ प्रीति न करना ।

११ अपनी इन्द्रियां विषय रागसे हर समय वश रखणी ।

१२ अपनी शक्ति तथा लक्ष्मी बुद्धि बल विचारके कार्य करना जिसमें दूसरोंकी सहायता न लेणी पड़े ।

१३ छतें (थकां) द्रव्य कर्जा नहीं करणा ।

१४ निर्धनता अर्थात् दरिद्रतामें भी अकार्य तथा अनर्थसे धनकी इच्छा नहीं करणी ।

१५ अपने सज्जन तथा मित्रपर संकट पड़े तो अवश्य सहायता करनी ।

१६ व्रत पच्चखान लेके निर्मला पालणा ।

१७ अग्नीका ऊंडे जलका शस्त्रका सींग तथा नखवाले जानवरका विषका जोगीका कुपात्र स्त्रीका विश्वास करना नहीं इणके

नजीक रहना नहीं प्रयोजन होवे तो मध्य भावे रहणा ।

१८ दान देनेमें गुणजनकी सेवा भक्ति करनेमें विद्या सीखनेमें धर्मकृत्य करनेमें परोपकार करनेमें आलस्य प्रमाद और कृपणता रखनी नहीं ।

१६ दुष्ट कर्जकी निर्दयी लापर कुव्यसनी निर्लज्ज इत्यादिक मनुष्यके साथ मित्रता गुमास्तगीरी पातिदारी तथा लेणा देणा वगैरहका व्यवहार करना नहीं ।

२० राजा, गुरु, माता, पिता, पञ्च, पडित, इनके सामने कपट झूठ गैर अदबी करना नहीं सरलपणे सच्ची बात करना ।

२१ बल्लभ सगा से मित्र से कुटुम्बी से लेणा देणका व्यवहार करना नहीं सुख दुःखमें सिरीहोणा भोजन, वस्त्र, आभूषणका सन्मान करणा व धर्मका उपदेश देना व सुणना ।

२२ अपने कुटुम्बके साथ विरोध करना नहीं यथायोग्य सबको राजी रखना दुःखमें साथ रहणा मिठा वचन बोलणा ।

२३ कोई सत्पुरुष अपने घरपर चला कर आवे तो आदर करना ।

२४ खोटा तोला खोटा मापा व झूठी गवाही वर्जनीय है ।

२५ मैथुन, भय, हांसी, क्रोध, लज्जा दुगंछा भोजनके समय वर्जनीक है ।

२६ राजा, तपस्वी, कवीश्वर, बैद्य अपणे घरका छिद्रका जाण रसोइया, मंत्रवादी और बडां पुरुषांके साथ विरोध करना नहीं ।

२७ अपने पास छती लक्ष्मी असंतोष रखना नहीं जगम लक्ष्मीका तीन भाग करना प्रथम भाग व्यापार दूसरा भाग वच्छ वखरा (घर वखरा) तीसरा भाग भंडारमें इस तरह तीन भाग करके धनका संतोष करनेसे समाधि

रहती है और अति लोभ तृष्णासे दुख होता है।

२८ अपना पराक्रम लक्ष्मी बुद्धि पक्ष सामग्री देखे विना कोइ भी काम मे विवादसे अथवा मानसे दूसरोंकी बराबरी करना नहीं।

२६ अपने इष्टके अनुकूल धर्मकृत्यका नित्य नेम अंगीकार किया हो सो हमेसा कल्प वृक्षकी तरह सेवन करना आंतरो पाड़नो नहीं।

३० कोई भी पुरुष अपणे गुणकी तथा हितकीवात सीखामन रूप कहे तो आदरसे सुनकर धारण करणा और उनका जस मानना।

३१ जिस गावके लोगोंसे विरोध होवे तथा राजवर्गीयोंकी नाराजगी होवे तो उस गावमे वास नहीं करना।

३२ अपनी आत्माको संसारके संयोग वियोग जन्म मरणके दुःखसे छुडानेके वास्ते मोक्ष मार्गकी खोजना करणेकी खप अवश्य करणी चाहिये ।

॥ नं० ७ ॥

॥ बोल शिखावणारा ॥

१ खोटी सलाहदे ऐसे वकीलके पास मत जावो ।

२ खोटी पक्ष मत खेंचो ।

३ मामले, मुकद्दमेके मार्ग मत पड़ो, जिद्द को छोड न्यायको पकड़ो जदी मोहके उदय कषाय वश काम पड़ जाय तो पंच डाल कर आपस करलो (मिटायलो) चिंता हैरानीसे बचो अटरनि (Attorney) के पास मत जावो, जावोगे तो खरचा देती वखत पछताना पड़ेगा ।

४ जिस स्थानमे (ग्राममे) चिता दुःख उपजतो होवे तथा मोह जागतो होवे उस ग्रामको छोड देना चाहिये, ज्ञान वृद्धिके स्थान (धर्म स्थान) जाइजे ।

५ न्याय मार्ग सुत्र सिद्धान्त अनुसार चले उसको मामला, मुकदमा कभी लग नहीं सकता यह वडोका कहना है सो सत्य है ।

६ पीठ पीछे कीणहीरी निन्दा न करणी जो सुणेतो वैर वधे ।

७ क्रोधीने छेड़नो नहीं ।

८ आपरा घररा छिद्र तथा गुप्त दुख किसही सु न कहणो ।

६ वडासु तथा मित्रसु विद्वानसु हेत वधाणो ।

१० पारका ओगुण जाणतो हुवे तो भी किणही आगे कहना नहीं ।

११ नीच पुरुषने छेड़नो नहीं छेड़ेतो रेकारा तुंकारा बोले ।

१२ अछांयां तथा उघाड़े डील (सरीर) नगन नागा न सूईजै ।

१३ तीनकाल अशुभ बात न कीजै ।

१४ संसाररा कार्य उतावलसुं न कीजै अवसर देखीजै ।

१५ सूवतां सागारी अण सण कीजै ।

१६ बिमारी रोगचालो चलतां होवै जठे न रहीजै ।

१७ टावरांरे वास्ते न लड़ीजै ।

१८ बिन छांणया पाणी न पीजै ।

१६ सुल्या धान न खाईजै ।

२० रसका भाजन तथा चराक दीवा प्रमुख उघाड़ा न राखीजै ।

२१ घट्टी, ऊंखल चूल्हा देखकर जतनासे वापरीजै ।

२२ कर्जा देनी वखत या कर्जादिया पेहला इतनी बात जरूर विचारने योग हे, हैसीयत सपदा-धन, पुजी वेपार, नफा टोटा, चेत्र, राजका कानून, चाल चलण, सगत साख सोभा सपत, परवार काम करता, प्रकृति, पत्त नियत इत्यादिक ।

२३ कुमार्ग धन खरचके न गमाईजे ।

२४ मारगमे तरुण (जवान) लुगाई रो साथ न कीजे ।

२५ बाहरे नीकलेतो गाफिल न रहीजे चोकी पेहरो दीजे ।

२६ तृपा थका घणो पाणी न पीजे ।

२७ उकडो घणो नहीं बेसीजें ।

२८ दिनरी घणी निन्द्रा न लीजे ।

२९ घरमे बावल रूख न उगाईजे ।

३० आवलीरी छाया न बेसीजे ।

३१ पाणीरो आमगो न कीजे ।

३२ रीस करके टावर रे माथेमें न दीजै ।

३३ पर द्रव्यकी अयोग इन्छा नहीं कीजै ।

३४ अनीतिसे धन भेला नहीं कीजै ।

३५ गुरु गमके विना सुत्रका उपदेश देनेको तत्पर नहीं रहीजै ।

३६ सुना उठ सामायिक कीजै ।

३७ निग्रंथ साधुरो दरसण कीजै ।

३८ धर्मरी दलाली चित्तसुं कीजै ।

३९ माय बाप सासु ने दुख नहीं दीजै ।

४० वडोंसे विनय राखीजै ।

४१ पापरे काममें आगे मत धसीजै ।

४२ धर्मरे काममें आलस न कीजै ।

४३ उपगारी हुइजै, सभोंसे भलाइ कीजै ।

४४ अण परखीयारा विश्वास न कीजै ।

४५ परने पीड़ा उपजे ते न बोलीजै ।

४६ इर्या जोयां विना न चालीजै ।

४७ सुत्र सिद्धांतरो संग्रह कीजै ।

४८ निश्चय व्यवहार दोनु मानीजे ।

४६ नवा नवा शास्त्र वाचणे पढणेरो अभ्यास उद्यम राखीजे ।

५० वालकने छोटे पणेसे भली विद्या धर्म तत्त्व शिखाईजे ।

५१ दुःखी होवे तिणरो उपगार कीजे, उपगार करता ढील न करीजे ।

५२ रूठा ने मनाईजे ।

५३ यतीगा गावमें वसीजे तो अभिरो जतन कीजे ।

५४ लेखो चोखो करता ज्ञानरी वात वाचता लिखणो करता वीचमें काइ चीज देनी नहीं काइ वात वोलणी नहीं यदी वोले ध्यान चुकावे तो काम करता होवे उसको अणगमती लागे भूल पड़े गलती आवे फेर जैसो अवसर देखे वैसो करे ।

५५ गुरु, वडाके वीचमें नहीं वोलणो ।

५६ क्रोधकी बात, चिंताकी बात, दुखकी बात, अपणे स्वार्थकी अणगमती बात, घरका झींखणा विगेरह भोजनकी वखत या भोजन करतेको न कहणा चाहिये ।

५७ ज्ञानके उद्यम करणे वासते थोडी भी टैम निकाल लेनी ।

५८ नित्य नेम मर्यादा विधि सहित शुद्ध उपयोगसे करना ।

५६ साधु, साधवीने निर्दोष आहार चढते भावसे वेहराना ।

६० किसीका दिल मत दुखावो ।

६१ क्रोधकी वखत चुपरहणा क्षमा करणी ।

६२ अपने उपर कोई अपराध करे तब क्षमा करके अन्तः करणसे माफी देना ।

६३ जल्दी उठ कर नित्य नेम करे सो पुनवान जाणीजे, मोड़ो उठे तो भूंडो दीशे दारीद्र आवे ।

६४ चिंता से रोगऊपजे, विनाकाम गपां सपाँ मारनी नहीं, फजूल टैम खोनी नहीं ।

६५ सब जीवका कल्याण होवे ऐसी शुभ भावना भाणी ।

॥ सवैया ॥

राजा चचल होय भोम पराई तके ।
पण्डित चचल होय सभामें अमृत भखे ॥
हाथी चचल होय सूंड फोजा मे सोहि ।
घोड़ा चचल होय मन असवारा मोहे ॥

॥ दोहा ॥

एता तो चचल भला राजा पडित गज तुरि ।
कवि राध कहे सुणो राव हर निश्चय चचल नार बुरि ॥

॥ सवैया ॥

फूल घणां पण सुगंद नहीं कोण जावै उस वाड़ी में ।
थोरकी लकड़ी जीव घणां कोण लेवै उस भारीको ॥
रंग घणां पण पोत नहीं कोण लेवै उस साड़ीको ।
भरतार के कहणमें नहीं चाले धरकार है उस नारिको ॥

॥ दोहा ॥

मीठा सबसे बोलिये सुख उपजे कछु और ।
बशी करण इक मंत्र है तजो बोल कठोर ॥

छपाता--गैनपाल सेठिया,
कलकत्ता ।
विक्रम संवत १९७१ बैशाख सुदी २

॥ कुण्डलिया ॥

लीलोती छोडी परी लोभ छोड़ीयो नाय ।
दूना तीना चौगुणा माड्या वहिया माय ॥
माड्या वहिया माय तोलता घटतो तोले ।
पसेरीमे पाव मेल दे अगूठा रे ओले ॥
लेता देता दामकी सो सो सोगन खाय ।
लीलोती छोड़ी परी लोभ छोड़ीयो नाय ॥
सुन साहाजी जीवण कहे है ऊको ऊसेर ।
लेता देता पाव को तें घाल्यो किस विध फेर ॥
घाल्यो किस विध फेर कसर राखी नहीं कोई ।
तोबा बार हजार इसी तूं करे कमाई ॥
साहेव लेखो मागसी देसी ऊधो टेर ।
सुण साहाजी सग्राम कहे है ऊको ऊसेर ॥

॥ कविता ॥



रती विन रिद्ध रती विन सिद्ध रती विन जोग सधे न जती को ।
रती विन राज रती विन पाट रती बिन मानुष लागे फीको ॥
रती विन भाई कह्यो नहीं माने रती विन नार गिणे ना पतीको ।
कवी गंग कहे सुण शाह अक्कबर एक रती विन पाव रतीको ॥
बातन से देवी और देवता प्रसन्न होत ।
बातन से सिद्ध और साध पति कहलात है ॥
बातन से खान सुलतान नरेश माने ।
बातन से सेण लोक लाखों ही कमाते हैं ॥
भूत और भुजंग सब बसि होत बातन से ।
बातन से पुण्य और पाप बढ़ि जात है ॥
कीरती अप कीरती होती सब बातन से ।

सो मानुषके गात बीच बात करामात है ॥

गग तरग दरियाव वहे जिन कूप को नीर पीवो न पीवो ।

जाके हृदय हर नाम वसे जिन और को नाम लियो न लियो ॥

कर्म सजोग सुपात्र मिले जिन कुपात्र को दान दियो न दियो ।

कवी गग कहे सुण शाह अकबर कपटि मित्र कियो न कियो ॥

एक को ध्यावे दूजे को रटे रस नान कटे अस लब्बर की ।

अबकी दुनिया गुनिया को ध्यावत शिर बाधत गाठ अटब्बर की ॥

जाको हरकी प्रतीत नही सो करत है आस अकब्बर की ।

श्रीपत एक गोपाल को ध्यावत नहीं मानत सक जुजब्बर की ॥

कल्पवृक्ष न पारस की परवा चिंतामणीको
हम ना करिये ।

नहीं चाह हमें पट भूषणकी रस कूप मिले
तो का करिये ॥

सुनि लीजिये सज्जन या जग में अपनी
अपनी मत पाकर हैं ।

परवा नहीं पंख हमाउ की हम चाह की
आंख के चाकर हैं ॥

तूं कुछ और बिचारत है नर तेरो बिचार
धरयो ही रहेगो ।

कोटि उपाय करे धन के हित भाग लिखो
इतनो ही लहेगो ॥

भोरकी सांझ घरि पल मांझ सुं काल
अचानक आन गहेगो ।

राम भज्यो न कीयो कुछ सुकृत पीछे नर
पछताय रहेगो ॥

जो दस बीस पचास भये सत होय हजार तो लाख मगेगी ।

कोटि अरब खरब असख्य धरापति होनेकी चाह जगेगी ।

स्वर्ग पतालको राज करो तृष्णा अधकी अति आग लगेगी ।

सुन्दर एक सन्तोष विना सठ तेरी तो भूख कभीना भगेगी ।

सुरज छीपे नही अदरी बदरीमे चद छीपे नहीं बादल छाया ।

रण चढ़ीयो रजपूत छिपे नहीं प्रीत छिपे नहीं पीठ दिखाया ॥

चंचल नारी का नैन छीपे नहीं दातार छिपे नहीं घर मगन आया ।

जोगी का भेष अनेक करो कर्म छिपे नही भभूत लगाया ॥

भूक जात भवरी (जौहरी) जवहार के परखवेमे ।

चूक जात चितारा कलम काम नहीं करती ॥
चूक जात बजाज नाप कपड़ेके फाड़वेमें ।
होनी बलवान अजा सिंह से न मरती है ॥
जोतिष पुरान बेद चूक जात उच्चारबेमें ।
मल्लाह हुसियार नाव जलहू से भरती है ॥
झूठि ना कहे उस्ताद मजा रोसके मारबेमें ।
सोच करे मूर्ख होनो हो तब टारि नाय टरती है ॥



कर्मविपाक कथाका कितनेक सामान्य कर्म बंध फलका बोल ।

संग्रह करके लिखते हैं ।

प्रश्नोत्तर ।

१ कहो पूज्य इण जीवरे सरीरमे घणा जीवारी उत्पत्ति होवै सो कीसे पापरे उदे (उदय) सु ?

उत्तर—सुण सिष्य पूरवले भवमें घणा कच्छ मच्छरो आहार कीनो तिण पापरे उदेसु ।

२ कहो पूज्य इण जीवने भणनो गुणनो नहीं आवे सो किण पापरे उदेसु ?

उत्तर—पूर्वले भव आप भणीयो नहीं पेलेने (दूसरेने) भणता अनराय दीनी तिण पापरे उदेस ।

३ कहो पूज्य जीव कालो कुद्रसण अशुभ वर्ण पामे सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव रूपरो अहंकार मद कीनो तिण पापरे उदेसुं ।

४ कहो पूज्य इण जीवने कुडो कलंक (आल) आवै सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्व भवे वारंवार कलह करे अठारमो पाप स्थानक वारंवार सेवे तिण पापरे उदेसुं ?

५ कहो पूज्य इण जीवरो बोलीयो चालीयो सुहावे नहीं सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव आपरो कियो थापीयो पेलेरो कियो उथापियो तिण पापरे उदेसुं ।

६ कहो पूज्य इण जीवने शाबाशी जस मीले नहीं सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्व भव जातरो अहंकार किनो तिण पापरे उदेसुं ।

७ कहो पूज्य इण जीवने घणो क्रोध आवे सो किण पापरे उदेसु ?

उत्तर—पर्वले भव घणो लाभ कीनो तिण पापरे उदेसु ।

८ कहो पूज्य इण जीवरे सन्सार भ्रमण मिट्यो नही सो किण पापरे उदेसु ?

उत्तर—पूर्व भवे पासा प्रतिकमणमें वि-राधना कीनी तिण पापरे उदेसु ।

९ कहो पूज्य इण जीवने देश परदेश जावे पिण लाभ हुवे नहीं सो किण पापरे उदेसु ?

उत्तर—पूर्वले भव पोते दान दियो नहीं पेलेने देता अतराय दीनी तिण पापरे उदेसु ।

१० कहो पूज्य इण जीव पांचे इन्द्री हीण पाइ सो किसे पापरे उदेसु ?

उत्तर—पूर्वले भव गाजर मूला कांदा जमिकदरो आहार कीनो तिण पापरे उदेसु ।

११ कहो पूज्य इण जीव पांच इंद्रिरो वियोग पायो सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्व भवे वनस्पतिनो छेदन भेदन घणी कीनी तिण पापरे उदेसुं ।

१२ कहो पुज्य इण जीवने घणी निद्रा आवे सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्व भवे दारु भांगरो नसो घणो कीनो तीव्र भावे अति मदिरा पान पीया तिण पापरे उदेसुं ।

१३ कहो पूज्य इण जीवरो शरीर निरोग नहीं रहे सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्व भवे घणा जीव मोसीया तिण पापरे उदेसुं ।

१४ कहो पूज्य आ जीव लूलो पांगलो होवैं सो कीसे पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव जीवांने भागसीमे घालने कुटीया पीटीया तिण पापरे उदेसुं ।

१५ कहो पूज्य इण जीवने रोग घणो आवे सो किसे पापरे उदेसु ?

उत्तर—पूर्वले भव काची कुपला तोडी तिण पापरे उदेसु ।

१६ कहो पूज्य इण जीवसु तपस्या होवे नहीं सो किण पापरे उदे सु ?

उत्तर—पूर्वले भव आप तपस्या किधी नहीं अने पेलेने (दुसरेने) करताने अंतराय दीनी तप जपरो मद कीनो तिण पापरे उदेसु ।

१७ कहो पूज्य इण जीवने लुगाइ वेटा घर सुहावे नहीं सो किण पापरे उदेसु ?

उत्तर—पूर्वले भव दान शील तप भावना भावी नहीं तिण पापरे उदे सु ।

१८ कहो पूज्य इण जीवने सीख सीखावण वाहाली (अच्छी) लागे नहीं सो किण पापरे उदे सु ?

उत्तर---पूर्व भवे आर्त्त ध्यान रुद्र ध्यान ध्यायो तिण पापरे उदै सूं ।

१६ कहो पूज्य इण जीवने भरजोबनमें दयापणो आवे नहीं सो किण पापरे उदै सुं ।

उत्तर---पूर्व भवे घणा मैला मंत्र कीना तिण पापरे उदै सुं ।

२० कहो पूज्य इण जीवने भरजोबनपणा (जवान अवस्था) में रंडापो आवे सो कीण पापरे उदय (उदै) सुं ?

उत्तर—पूर्व भवे जड़ासुं रुंख उपाड़ीया तिण पापरे उदयसुं ।

२१ कहो पूज्य इण जीवने कुटम्ब घरमें सुख देवे नहीं सो किण पापरे उदै सुं ?

उत्तर--पूर्व भवे टोगड़ा टोगड़ीने दुध छोड़ीयो नहीं अने अंतराय दीनी तिण पापरे उदै सुं ।

२२ कहो पूज्य आ जीव कांणो हुवो सो किसे पापरे उदै सुं ?

उत्तर—पूर्व भवे बोरकाचर फल फूल सूईसे विधीया अने माला किनी तिण पापरे उदे सु।

२३ कहो पूज्य जीव आंधो हुवे सो किण पापरे उदे सु?

उत्तर—पूर्वले भव दीसता जीव धानमे पीसे स्थावर चुद्र जीवोको पाणीमें डबोयके मारे मच्छरको आग लगाय कर धूवा देकर मारे तिण पापरे उदे सु।

२४ कहो पूज्य ओ जीव दुखीयो हुवो सो किण पापरे उदे सु?

उत्तर—पूर्वले भव घणी बुराई कीनी अणदिठी अणसुणी वातो कीनी तिण पापरे उदे सु।

———

॥ बोल कर्मविपाकरा ॥

सामान्य कर्मबंध फल कहते हैं ।

बोल प्रश्नोत्तर ।

१ प्रश्न—प्राणी निर्द्धन किस कर्मसें होवे ?

उत्तर—पराया धन हरणेसें ।

२ प्रश्न—प्राणी दरिद्री किस कर्मसें होवे ?

उत्तर—दान देतेको वर्जनेसे, दान सुपात्र ने न देणेसें दया न पालनेसे ।

३ प्रश्न—प्राणी धन तो पावे परन्तु भोग नहीं सके किस कर्मसें ?

उत्तर---दान देके पछतावनेसें ।

४ प्रश्न---प्राणी अकुली-निपूतियो (अर्थात् जिस पुरुषके पुत्र पुत्री न होय) किस कर्मसे ?

उत्तर---जो वृक्ष रस्तेके ऊपर हो जिनसें अनेक पशु और मनुष्य फल फूल खावे

और छाया करके सुख पावे ऐसे वृक्षोंको कटावे तो।

५ प्रश्न—प्राणी वन्ध्या (स्त्री बाँझड़ी) किस कर्मसे होवे?

उत्तर—गर्भ गलावे तथा गर्भ गलानेकी औषधि देवे तथा गर्भवती मुर्गीको (Hen) चूर करे और फूलका अन्तर कढ़ावे तो।

६ प्रश्न—प्राणी मृत वध्या (बाँझड़ी) किस कर्मसे होवे?

उत्तर—बेगण आदिका भूरथो करे तथा होले करे तथा कंदमूल खाय तथा मुर्गी आदिकके अंडे बच्चे मार खाय और उगती वनस्पति कुपला तोड़े तो।

७ प्रश्न—प्राणी अधूरे गर्भ गल गल जावे सो किस कर्मसे?

उत्तर—पत्थर मार मारके वृक्षके कच्चे फल फूल पत्ते तोड़े तथा पक्षीयोंके माले तोड़े

तथा मकड़ीके जाले उतारे तो ।

८ प्रश्न—प्राणी गर्भमेंही मर मर जाय तथा योनिद्वारमें आ के मरे किस कर्मसें ?

उत्तर–महा आरंभ जीव हिंसा करे मोटा झूठ बोले, साधुको असूझतो आहार, पानी देवे तो ।

९ प्रश्न–प्राणी गूंगा किस कर्मसें होय ?

उत्तर–देवधर्मकी निंदा करे तथा निग्रंथ गुरुकी निंदा करे तथा गुरुके पुठे मुंह मचकोड़ के छिद्र देखे तो ।

१० प्रश्न–प्राणी बहरा किस कर्मसे होय ?

उत्तर–पराया भेद लेनेका लुक छिपके वात सुनने तथा निन्दा सुणनेका स्वभाव होय तो ।

११ प्रश्न–प्राणी रोगी किस कर्मसें होय ?

उत्तर–गूलर आदि फल खाय तथा चूहे पकड़नेके पिंजरे बेचे तो ।

१२ प्रश्न – प्राणी बहुत मोटी स्थूल देह पावे किस कर्मसें ?

उत्तर – शाह होके चोरी करे तथा शाहका धन चुरावे तो।

१३ प्रश्न – प्राणी कोढ़ी (कोढ़िया) किस कर्मसे होय ?

उत्तर – वनमें आग लगावे तथा सर्पको मारे तो।

१४ प्रश्न – प्राणीरे दाह ज्वर किस कर्मसें होय ?

उत्तर – ऊट बैल गधे घोडेके ऊपर ज्यादा बोझ लादे तथा शीत वा गर्मीमें राखे तो।

१५ प्रश्न – प्राणी सिरसाम अर्थात् चित-भ्रम किस कर्मसे होय ?

उत्तर – ऊंची जाति व गोत्रका मान करे तथा छाने छाने अनाचार मद्यमासादि भक्षण करके मुकरे (नटे) तो।

१६ प्रश्न — प्राणीरे स्त्री पुरुष और शिष्य कुपात्र वैरी समान किस कर्मसे होय ?

उत्तर — पिछले जन्ममें उनसे निष्कारण विरोध किया होय तो ।

१७ प्रश्न — प्राणीरे पुत्र पाल्यापोसा मर जाय किस कर्मसें ?

उत्तर — धरोट मारी होय तो ।

१८ प्रश्न — प्राणीके पेटमें कोइ न कोइ रोग चला रहे (होता ही रहे) किस कर्मसे ?

उत्तर — खाय पीयके बचा खुचा असार निसार भोजन साधूको देवे तो ।

१९ प्रश्न — प्राणी बाल विधवा किस कर्मसे होय ?

उत्तर — अपने पतिका अपमान करके पर-पतिके साथ रमे तथा कुशीलनी होयके सती कहावे तो,

२० प्रश्न — प्राणी वेश्या किस कर्मसे होय ?

उत्तर—उत्तम कुलकी बहु बेटी विधवा हुए पीछे कुलकी लाजसे कोई अकर्त्तव्यतो न करने पावे परतु सत्सगतके अभावसे भोगकी वाञ्छा रखे तो।

२१ प्रश्न—प्राणीरे जो जो स्त्री व्याहे सो मरे जैसेकी पुरुषकी स्त्री न जीवे किस कर्मसे?

उत्तर—साधु कहाके स्त्री सेवे तथा त्यागी हुई वस्तुको फिर ग्रहे तथा खेतमें चरती हुइ गौ (Cow) त्रासे तो।

२२ प्रश्न—प्राणी नर्क गतिमें जाय किस कर्मसे।

उत्तर—सात कुव्यसन सेवे तो।

२३ प्रश्न प्राणी धनाढ्य किस कर्मसे होय।

उत्तर—सुपात्रको दान देके आनद पावे तो

२४ प्रश्न—प्राणीने मनोवांछित भोग मिले किस कर्मसे?

उत्तर — परोपकार करे तथा वड़ेकी टहल करे तो ।

२५ प्रश्न-प्राणी रूपवान किस कर्मसे होय ?

उत्तर — तपस्या करे तो ।

२६ प्रश्न — प्राणी स्वर्गमें किस कर्मसे जाय ?

उत्तर — क्षमा दया तप संयम करे तो ।

॥ कर्म विपाक धर्म कथारा बोल ॥



शिष्य कहे--कोई जीव आंखे जलमलो देखे ते किण कारण थी होय ?

गुरू कहे---जे पूर्वे घणा कुभावथी रूप निरख्या तेना प्रतापे,

शिष्य कहे--कुबड़ो थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे एकेंद्री जीवनो चूर्ण (घात) कीधो तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे---खोज्यो (खोजो) होयते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्व भवे वेदगिरीका काम कीधा तेना प्रतापे,

शिष्य कहे---जसकरता अपजस पायते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे-- जे पूर्वभवे सचीत द्रव्यादिकना ओखद वेखद घणा किना तेना प्रतापे,

शिष्य कहे—शरीरने विपे भगदर रोग उपजे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे स्वहाते करी पचेंद्रि जीवोने हणीया तेना प्रतापे,

शिष्य कहे—कठमाला रोग होय ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे-- जे पूर्वे घणा माछला मारिया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—शरीरने विपे, पाथरी (पथरी)

ते कीसा कर्मनें उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्व भवे मैथुन घणा सेवीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे---हर्ष रोग होय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे धूणी घाली घणा जीवाने सताविया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—संजोगना बीजोग थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे माया कपटाई तथा मित्र कपटाई कृतघ्नता कीधी तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे--शरीरने विषे, खाज फटणी चाले ते कीसा करमने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्वे घणा जीव ऊपर क्रोध कीधो झूठ आल दीधा तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे--कोई जीव बोलीयो अनेराने सुहावे नहीं ते किसा कर्मने उदे,

गुरु कहे -जे पूर्वभव वचनरूलानों अहंकार कीधा तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे---आरण अण कीधा अपजस अपकीरत वधे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे-- जे पूर्वे स्त्री हती तेवारे सासु नणद भोजाई देराणी जेठाणीना इरषा कीधा तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे---पुरुषलींग छेदी स्त्रीलींग पामे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे- जे पूर्वे भव सतरमो पाप स्थानक माया मासो सेवीयो तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे--मन वछित वस्तु जीव न पामे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे-- जे पूर्वे भव पचेंद्री जीवना संयोगना वीयोग कीधा तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे-- शरीर बलहीन पामे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव कुक्कड़ा ना आहार कीधा तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—कोई जीवने घणो हांसो आवे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्वे भव असन्नी (असंज्ञी) पंचेंद्री जीव हणीया हणावीया तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—कोई जीव साचो बोले अने-राने प्रतीत न ऊपजे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव कूड़ी साख भरी तेना प्रतापे।

शिष्य कहे – कोई जीवने माता भाई बहन भाणेज पुत्र कुटम्बनो वियोग थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव कुगरु, कुदेव सेवीयो हिंसामें धर्म परूपीयो तेना प्रतापे।

शिष्य कहे---मनुष्य अवतार पांमे अने

हात पगनी आगलीया छेदन पामे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे – जे पूर्वे भव भाड रूँख आदि काटीया तेना प्रतापे।

शिष्य कहे – मीर्गी भोलो आवे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे – जे पूर्वे भव लुहारनी धुँमण घुमाइ तेना प्रतापे।

शिष्य कहे – घणा मनुष्य सहित पाणी माहे नाव जहाज डुवे घणा मनुष्य एकठा डुबी मरे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे – जे पूर्वे भव पेसाव माहे पेसाव कीधो तथा घणा दिन राखीने ढोलीयो तथा ताजखाना (पायखाना) माहे उच्चारपासवन एकठा कीधा समुधानी कर्म कीधा तेना प्रतापे।

शिष्य कहे – मनुष्य मरी प्रथ्वीकाया माहे

थोड़े आउखे ऊपजे दुःखसहे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव झूठ घणा बोलिया तेना प्रतापे

शिष्य कहे – तरुणपणे दांत पड़े माथारा केस धोला थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव कवली वनस्पती हाते करी चुटी चुटावी कुटी कुटावी तेना प्रतापे।

शिष्य कहे – शरीरने विषे घणा गुमड़ा थाय भरीया नींगल होय ते कीसा करमने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव आखा फल चीरीने लुणसु भरीया तेना प्रतापे।

शिष्य कहे – दासपणो पांमे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे माखणा (लुणी) एकठो करी घणा दिनासु तपावीयो तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—नासुर रोग थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव कसाईना कर्म कीधा तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—कोई जीव गर्भ माहे ऊपजे पीछे जन्मतो वेला आडो आवे तेहने कापीने काढे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव कसाईना हातसुं दान लीधा होय तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—कोई जीव गर्भ माहे ऊपजें पछे गल तो जाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव साधुने कूडो आल दीधो, असूझतो आहार दीधो तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—कोई स्त्रीने बारह वरसरो छेडो (छोड़) रहे ते कीसा कर्मने उदे।

गुरू कहे—जे पूर्वे भव घणा पेसाब एकठा

कीधा घणा काल राखीने ढोलीया जीव मरावीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—कोई स्त्री ने तेहीज गर्भ चवीने फेर तेहीज छेडो (छोड़) मांहे ऊपजे पछे चोवीस वर्ष लगे रहे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वेभव घणा मैथुन सेवीया तीव्र भावे अने सेवन वालाने साज दीनो साधारण कर्म कीधा तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—कोईरे डीलरे तप रोग थाय तथा सगलो डील वलूँ वलूँ करे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव फल फूलना पाक, मरदन करावीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—स्त्री वांझ (वांध्या) हुवे तेकीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव फूलना अंतर करावीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे--पुरुष एक अने स्त्रीया घणी सर्व स्त्रीया वांझ (वाध्या) होय ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव घणी वनस्पतिनो रस करावीयो तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—कोई जीव चोरी करे पाकेट मारे गाठ खोले ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पुर्वे भव घणा हलालखोरना काम कीधा तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—कोई जीव जन्मतेपाण माता पितानो वियोगपामे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जेणे पूर्वे कवली वनस्पतिना अकुर छेदीया तथा छेदन वालाने साजदीनो तथा घणा जीवारा वियोग पाडीया तेना प्रतापे ?

शिष्य कहे- कोई जीव समदृष्टी हातसु करीने साधु मुनिराजने प्रतिलाभवानो मनोर्थ करे पिण प्रतिलाभे सके नहीं ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे—जे पूर्वे रोसकारी कर्कश कारी मर्मकारी भाषा बोली छानी बात प्रगट किनी घणाजीवाने दाना अंतराय दिनी तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे---कोई जीव भलोजात कुलमें जन्म पामें, पंचेन्द्रीयाना योग संयोग पुरा पड़े अने अणकिधो अणजाणीयो माथे कुड़ो आल आवे पच्छी राजा पकड़ावीने चोरंगीयो करावे पछे राज सभा मांहे वाहालो लागे जे बोले ते मानीलेवे ते किसा कर्म उदे ?

गुरु कहे---जे पूर्वे घणी अनन्तीकाय, कंद, मुल कटावीया चुरण किधा तथा गर्भ पाड़ी छानो राख्यो तथा नारकी तथा त्रियंच भव मांहे अकाम निर्जरा कीधी तेना प्रतापे ।

॥ इति कर्म कथाना बोल समाप्त ॥

रत्नावलि के दोहे।



जो जाको गुन जानही, सो तिहि आदर देत।
कोकिल अम्बहि लेत है, काग निबोली लेत॥
विद्या धन उद्यम बिना, कहो जु पावै कौन।
बिना डुलाये ना मिलै, ज्यों पंखे की पौन॥
ओछे नर की प्रीति की, दीन्ही रीति बताय।
जैसे छीलर ताल जल, घटत घटत घटि जाय॥
रहे समीप बड़ेन के, होत बड़ो हित मेल।
सब ही जानत बढ़त है, वृक्ष बराबर बेल॥
मधुर वचन से मिटत है, उत्तम जन अभिमान।
तनक शीत जल से मिटै, जैसे दूध उफान॥
समय समुझि जो कीजिये, काम वही अभिराम।
सिन्धव मांग्यो जीमते, घोड़े को कह काम॥
स्वारथ के सबही सगे, बिन स्वारथ कोई नाहिं।
सेवैं पंछी सरस तरु, निरस भये उड़ि जाहिं॥
घर घर कबहुँ न जाइये, गये घटत है जोत।

रविमण्डलमें जात शशि, हीन कला छवि होत ॥
एक दशा निवहै नहीं, जनि पछितावहु कोय ।
रवि हू की इक दिवस में, तीन अवस्था होय ॥
होय बुराई से बुरो, यह कीन्हो निरधार ।
खाड़ खनैगो और को, ताको कूप तयार ॥
बहुत निबल मिलि बल करैं, करैं जु चाहैं सोय ।
तृनगण की डोरी करै, हस्ति हुँ बन्धन होय ॥
सांच झूंठ निरणय करैं, नीतिनिपुण जो होय ।
राजहंस बिन को करै, क्षीर नीर को दोय ॥
कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर ।
समय पाय तरुवर फलै, केतक सींचहु नीर ॥
जो पहिले कीजे यतन, सो पाछे फलदाय ।
आग लगे खोदे कुआ, कैसे आगबु झाय ॥
क्यों किजै ऐसो यतन, जासों काज न होय ।
परबत पै खोदै कुआ, कैसे निकसै तोय ॥
उद्यम से सब मिलत हैं, बिन उद्यम न मिलाहिँ ।
सीधी अंगुली घी जम्यो, कबहूँ निकसत नाहिँ ॥

कहिये बात प्रमाण की, जासो सुधरै काज।
फीको थोड़े लवणसे, अधिकहि खारो नाज॥
कहै रसीली बात सो, बिगड़ी लेत सुधार।
सरस लवणकी दालमें, ज्यों नीबूरस डार॥
बुद्धि विना विद्या कहो, कहा सिखावे कोय।
प्रथम गाम ही नाहि तो, सींव कहा से होय॥
जाकी जेती पहुँच सो, उतनी करत प्रकाश।
रविज्यों कैसे करि सके, दीपक तम को नाश॥
कारज ताही को सरै, करै जो समय निहार।
कबहुँ न हारै खेल जो, खेलै दाव विचार॥
सब देखै गुण आपने, ऐब न देखे कोय।
करै उजाला दीप पर, तले अँधेरो होय॥
को सुख को दुख देत है, देत करम झकझोर।
उरझै सुरझै आपही, धजा पवन के जोर॥
भली करत लागे विलब, विलब न बुरे विचार।
भवन बनावत दिन लगै, ढाहत लगत न बार॥
विनसत बार न लागही ओछे नर की प्रीत।

अम्बर डम्बर सांझ के, ज्यों बालू की भीत ॥
आपहि कहा बखानिये, भली बुरी के जोग ।
वूंठे घन की बात को, कहैं बटाऊ लोग ॥
जो कहिये सो कीजिये, पहिले करि निरधार ।
पानी पी घर पूँछनो, नाहिन भलो विचार ॥
पीछे कारज कीजिये, पहिले यतन विचार ।
बड़े कहत हैं बांधिये, पानी पहिले वार ॥
भले वंश सन्तति भली, कबहूँ नीच न होय ।
ज्यों कञ्चन की खान में, काँच न उपजै कोय ॥
शूर वीर के वंश में, शूर वीर सुत होय ।
ज्यों सिंहिनि के गर्भ में, हिरन न उपजै कोय ॥
हीन जानि न विरोधिये, वही होत दुखदाय ।
रज हू ठोकर मारिये, चढ़ै सीस पर आय ॥
दोष लगावत गुनिन को, जाको हृदय मलीन ।
धर्मी को दम्भी कहै, क्षमाशील बलहीन ॥
खाय न खरचै सूम धन, चोर सबै लै जाय ।
पीछे ज्यों मधुमक्खिका, हाथ घिसै पछिताय ॥

उत्तम विद्या लीजिये, जदपि नीच पै होय।
पड्यो अपावन ठौर में, कञ्चन तजत न कोय॥
धन अरु यौवन को गरब, कबहूँ करिये नाहि।
देखत ही मिट जात है, ज्यो बादर की छांहि॥
बड़े बड़े को विपति में, निश्चय लेत उबार।
ज्यों हाथी को कीच से, हाथी लेत निकार॥
सेवक सोई जानिये, रहे विपति में संग।
तन छाया ज्यों धूप में, रहे साथ इकरंग॥
बहुत द्रव्य संचय जहा, चोर राजभय होय।
कासे ऊपर बीजुली, परत कहत सब कोय॥
ओछे नर के पेट में, रहे न मोटो बात।
आधसेर के पात्र में, कैसे सेर समात॥
काहू को हँसिये नहीं, हँसी कलह को मूल।
हासि हँसे दोऊ भये, कौरव पाण्डु निमूल॥
प्रापति के दिन होत है, प्रापति बारबार।
लाभ होत व्यापार में, आमन्त्रण अधिकार॥
अप्रापति के दिनन में, खर्च होत अविचार।

घर आवत हैं पाहुने, वणिज न लाभ लिगार ॥
कहैं वचन पलटैं नहीं, जे सतपुरुष सधीर ।
कहत सवै हरिचन्द्र नृप, भयो नीच घर नीर ॥
प्यारी अनप्यारी लगै, समय पाय सब बात ।
धूप सुहावत शीत में, ग्रीषम नाहिं सुहात ॥
जूवा खेले होत है, सुख सम्पति को नास ।
राजकाज नल तें छुट्यो, पाण्डव किय वनवास ॥
देखा देखी करत सब, नांहिन तत्वविचार ।
याको यह उनमान है, भेड़ चाल संसार ॥
एक एक अक्षर पढ़े, जानै ग्रन्थ विचार ।
पैंड पैंड हू चलत जो, पहुँचै कोस हजार ॥
वह सम्पत्ति किहि काम की, जनि काहू के होय ।
जाहि कमावै कष्ट करि, विलसै औरहि कोय ॥
विन कपास कपड़ो नहीं, दया बिना नहिं धर्म ।
पाप नहीं हिंसा विना, बूझो एहिज मर्म ॥
धन बंछै इक अधम नर, उत्तम वंछै मान ।
ते थानक सहु छंडिये, जिँह लहिये अपमान ॥

मेरा मेरा क्या करे, तेरा है नहि कोय।
चिदानन्द परिवार का, मेला है दिन दोय ॥
धर्म बधाये धन बधे, धन बध मन बधि जात।
मन बध सबही बधत है, बधत बधत बधि जात ॥
धर्म घटाये धन घटे, धन घट मन-घटि जात।
मन घट सब ही घटत है,
घटत घटत घटि जात ॥
यह जोवन थिर ना रहे, दिन दिन छीजत जात।
च्यार दिन की चादनी, फेर अँधेरी रात ॥
क्रोधी लोभी कृपण नर, मानी अरु मदअन्ध।
चोर जुवारी चुगल नर, आठों दीखत अन्ध ॥
शील रतन सब से बड़ो, सब रतनन की खान।
तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन ॥
ओछी सगति स्वान की, दोनू वाते दुख।
रूठो पकड़े पाव कूँ, तूठो चाटे मुख ॥
सतजन मन में ना धरें, दुरजन जन के बोल।
पथरा मारत आम को, तउ फल देत अमोल ॥

शुभतिय से संसार सुख,सुगति सुगुरु से जाण ।
शुचि मन्त्री से राज नित, सुधरै सदा सुजाण ॥
प्रायः पर की भूल को, देखे सब संसार ।
पण न विचारे निजतणी, होय जु भूल हजार ॥
गुण बिन रूप न काम को, जिम रोईड़ा फूल ।
दीसंता रलियामणां, पण नहिँ पामे मूल ॥
सुख पीछे दुख आत है, दुख पीछे सुख आत
आवत जावत अनुक्रमे, ज्यूं जग में दिनरात ॥
दुष्ट व्यसन दुक्खद सदा, कदी न करवो संग ।
धन जीवन यश धर्म नो, तुरत करे छे भंग ॥
जो मति पीछे ऊपजै, सो मति पहिले होय ।
काज न बिगड़े आपनो, जग में हँसे न कोय ॥



॥ बोल ॥

प्रश्न—पापरो बाप कांई, उत्तर लोभ,
,, पापरी माता कांई, ,, हींसा,
,, पापरो भाई कांई, ,, क्रोध
,, पापरी बहन कांई, ,, माया (कपटाई),
,, पापरो बेटो कांई, ,, मान,
,, पापरी स्त्री कांई, ,, कुमति

॥ दोहा ॥

राजा रानी छत्र पती,
हाथिनके असवार ।
मरना सबको एक दिन,
अपनी अपनी बार ॥
दल बल देई देवता,
मात पिता परिवार ।

मरती विरियां जीवको,
कोई न राखन हार ॥
दान विना निर्धन दुःखी,
तृष्णा वश धनवान ।
कहुँ न सुख संसारमें,
सब जग देख्यो छान ॥
आलस नींद कुशाणने खोवे,
चोरने खोवे खासी ।
आनो ब्याज बोरेने खोवे,
त्रियाने खोवे हांसी ॥

॥ कविता ॥

सङ्गसे पुष्प को चन्द्र मिले,
अरु संगसे लोहा स्वर्ण कहावे ।
सङ्गसे पण्डित मूर्ख बने,
अरु सङ्गसे शूद्र अमरपद पावे ॥

सङ्गसे काठके लोहतरे,
तनको सत सङ्ग ही पार लगावे।
सङ्गसे सन्तको स्वर्ग मिले,
अरु सङ्ग कुसङ्गसे नरकमे जावे॥

॥ अथ श्रावकजीरा २१ गुण ॥



१ पहले गुणे श्रावकजी धर्म करणीरे नव तत्व पचीस क्रियारा जाणकार हुवे।

२ दूजे गुणे श्रावकजी धर्म करणीरे वीषे कोईको भी साहाय्य वछे नहीं।

३ तीजे गुणे श्रावकजी देवता मनुष्य तीर्यंचरा उपसर्ग आयासु धर्म थकी डीगे नहीं।

४ चौथे गुणे श्रावकजी अनतियी मिथ्यात्वीरी सोबत करे नहीं ओर अनतीर्थारो कष्ट

देखने उणारा गुणग्राम करे नहीं अनतीर्थीरी प्रशंसा करे नहीं ।

५ पांचमे गुणे श्रावकजी लधी अटा गरही अटा पुछीअठा वीनछी अटा भणीया गुणीया ज्ञानको वार वार नीरणो करे आलस प्रमाद करे नहीं ।

६ छठे गुणे श्रावकजीरो हृदय धर्ममें रंगायमान जीण तरह तीलमांहे तेल दुधमांहे घृत पाषाणमांहे धातु लोलीभूत हुवे जीणतरह श्रावकजीरी हाडने हाडरी मीजी धर्ममें रंगायमान हुवे

७ सातमें गुणे श्रावकजी कुटम्ब परिवार पंचायतीमें बैठे उठे यही बात कहे के श्री वीतराग केवली भगवानरो धर्म सार है, नित्य है, सुखकारी पदार्थ है, बाकी सर्व संसार देह भोग असार है अनित्य है, दुःख सहित है, आगामी भी दुःखरो कारण है ।

८ आठमेगुणे श्रावकजी रो हृदय

फटीक रतनजोसो निर्मल हुवे कूड़ कपट केलवे नहीं दगा ठगा करे नहीं ।

९ नवमे गुणे घरगा बारणा खुला राखे दान देवणमें कृपण मूंजी कजूस नहीं हुवे चित्त उदार होवे ।

१० दशमे गुणे महीनेमें ६ (छव) पोसा करे।

११ इगारहमें गुणे श्रावकजी अन्तेवरमें राजारे भंडारमें तथा सेठरी दुकानमें सेठरी हवेलीमें जावे जठे प्रतीत कारीया हुवे जठे अप्रतीत हुवे उठे पाउडो भी देवे नहीं।

१२ बारमे गुणे श्रावकजी लीधा व्रत पचखाण नीधानरी परे जाबतासु पाले (राखे) दोष अतीचार लगावे नहीं ।

१३ तेरमे गुणे श्रावकजी मुनीराजने उलट (चढ़ते) भावसु उदार चित्तसु दान देवे मूंजी पणो राखे नहीं कजूस पणो राखे नहीं उदार चित्त राखे ।

१४ चौदहमे बोले श्रावकजी तीन मनोरथ नित्य प्रति चिंतवे ॥

॥ संक्षेपमे तीन मनोरथ ॥

॥ दोहा ॥

आरंभ परिग्रह तजी करी, पंच महाव्रत धार ।
अंतसमय आलोयणा, करूं संथारो सार ॥१॥
तीन मनोर्थ ए कह्या, जो ध्यावे नीत्य मन्न ।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिव सुख धन्न ॥२॥

१५ पनरमे गुणे श्रावकजी नित्य नित्य प्रत्ये नवो वीतराग केवली भगवानरो प्रकाशियो ज्ञान ध्यान सीखे आलस करे नहीं ।

१६ सोलहमे गुणे श्रावकजी आलस छोड़ने जो कोई पुरुष नवो धर्म पायो हुवे जीणने ज्ञान ध्यान नीर्जरा अर्थे सिखावे तन मन वचन आदि समस्त प्रकारे धर्मरो साहाय्य देवे ।

१७ सतरमें गुणे श्रावकजी धर्म रो उपदेश देवे चार तीर्थरा गुण ग्राम बोले।

१८ अठारमे गुणे श्रावकजी उती शक्ति तपस्या करे गोपवे नहीं।

१६ उगनीसमे गुणे श्रावकजी दो वखत कालो काल प्रतिक्रमणे करे।

२० बीसमे गुणे श्रावकजी कोईसु खार घाले नहीं क्षणमात्र कोईसु भी वैर राखे नहीं।

२१ इकवीसमे गुणे श्रावकजी रे सम्यक्तमें गुणव्रतामें कोई भी अतिक्रमादिक दोष लागे जीणरा तुरत तुरत आलोवणा करे अने शुद्ध होवे अन्त समय आया फेर आलोवणा नीन्दणाकर ने पण्डित मरण करे आराधक हुवे।

इति श्रावकजीरा २१ गुणमें जो जिन वचनासु अधिको ओछो वीपरीत लिख्यो हुवे तोणरा मिच्छामी दुक्कड़।

॥ अथ पुनः प्रकार अन्तरसु ॥

॥ श्रावकजीरा २१ गुणारा कवीत सवैया ॥



लज्जावन्त, दयावन्त, प्रशांत, प्रतीतवन्त, पर दोषके ढकै या परउपकारी है। सोम दृष्टि गुणग्राही गरीष्ठ सबीके इष्ट श्रेष्ठ पक्षो मिष्ट-वादी दीर्घ विचारी है ॥ विशेषज्ञ रसज्ञ कृ-तज्ञ धर्मज्ञ न दीन नहीं अभिमानी मध्य व्यव-हारी है। ऐसे वीनित पाप क्रियासु अनित पुनीत ऐसे श्रावक इकवीस गुणधारी है ॥१॥



॥ श्लोक ॥

धन्या भारतवर्ष सभव जना
येऽद्यापि काले कलौ,
निस्तीर्थेश नि केवले निरवधौ
नश्यन्मन पर्यवे ।
नोग्रत्सूत्र विशेष सपदि भव
दौर्गत्य दु ग्वापदि,
श्री जनेद्र वचोनुराग वशत
कुर्वंति धर्मोद्यम ॥

॥ स्वकुलप्रकाश ॥

धर्मचन्दजी तत्पुत्र प्रतापचन्द अगरचन्द भैरोंदान हजारीमल चिरू जेठमल पानमल लहरचन्द उदेकरण जुगराज गनपाल चिरंजीव कुनणमल सेठीया ॥ श्रीकल्याणमस्तु ॥

॥ श्री ॥

॥ दोहा ॥



बोल संग्रह नाम है, कीना भवि उपकार ।
गुरु मुखसे धारजो, द्वितीय भाग सुजाण ॥
गुरु समीपे जायके, लीजो अर्थ विचार ।
भणी गुणीने सिखजो, सूत्र सिद्धान्त अनुसार ॥
भैरोदान अर्ज करे, मत कीजो कोई ताण ।
सूत्र अर्थ जाणु नहीं, जिन आज्ञा परमाण ॥
बहु ग्रंथे संचे कीयो, अल्प बुद्धि अनुसार ।
भूल चूक दृष्टि पड़े, लीजो सज्जन सुधार ॥
निवासी बीकानेर का, जैन श्वेताम्बर जाण ।
ओस वंशमें सेठिया, श्रावक भैरोदान ॥
शत उनिस गुणआशि शुक्ल पक्ष वैशाख मास ।
कलकत्ते मांहे छपा, सबहुके हित काज ॥

॥ पथ्यापथ्यका विचार ॥

पथ्यापथ्यके विषयमे इस चौपाईको सदा ध्यान मे रखना चाहिये—

चैते गुड वैशाखे तेल । जेठे पन्थ असाडे बेल ॥
सावन दूध न भादौं मही ।
कार करेला न कातिक दही ॥
अगहन जीरो पूसे धना ।
माहे मिश्री फागुन चना ॥
जो यह बारह देय बचाय ।
ता घर वद्य कबहुँ न जाये ॥ १ ॥

महाभारत ग्रन्थमे लिखा है कि—

मद्यमांसाशनं रात्रौ, भोजनं कन्दभक्षणम् ॥
ये कुर्वन्ति वृथा तेषां, तीर्थयात्रा जपस्तप ॥ १ ॥

अर्थात् जो पुरुष मद्य पीते है, मास खाते

हैं, रात्रिमें भोजन करते हैं और कंद को खाते हैं उन की तीर्थयात्रा, जप और तप सब वृथा है ॥ १ ॥

मार्कण्डेयपुराण का वचन है कि—

अस्तगते दिवानाथे, आपो रुधिरमुच्यते ॥
अन्नं मांससमं प्रोक्तं, मार्कण्डेयमहर्षिणा ॥१॥

अर्थात् दिवानाथ (सूर्य) के अस्त होने के पीछे जल रुधिर के सामान और अन्न मांस के समन कहा है, यह वचन मार्कण्डेय ऋषि का है ॥ १ ॥

इसी प्रकार महाभारत ग्रन्थमें पुनः कहा गया है कि—

चत्वारि नरकद्वारं, प्रथमं रात्रिभोजनम् ॥
परस्त्री गमनं चैव, सन्धानानन्तकायकम् ॥ १ ॥
ये रात्रौ सर्वदाहारं,वर्जयन्ति सुमेधसः ॥
तेषां पक्षोपवासस्य, फलं मासेन जायते ॥ २ ॥

नोदकमपि पातव्य, रात्रावत्र युधिष्ठिर ॥
तपस्विना विशेषेण, गृहिणा ज्ञानसम्पदाम् ॥३॥

अर्थात्—चार कार्य नरक के द्वार रूप हैं प्रथम-रात्रि में भोजन करना, दूसरा-पर-स्त्री में गमन करना, तीसरा सधाना (आचार) खाना और चौथा-अनन्त काय अर्थात् अनन्त जीव-वाले कन्द मूल आदि वस्तुओं को खाना ॥१॥

जो बुद्धिमान् पुरुष एक महीनेतक निरन्तर रात्रिभोजनका त्याग करते हैं उनको एक पक्ष के उपवासका फल प्राप्त होता है ॥२॥

इस लिये हे युधिष्ठिर। ज्ञानी गृहस्थको और विशेष कर तपस्वी को रात्रि में पानी भी नहीं पीना चाहिये ॥ ३ ॥

इसी प्रकारसे सब शास्त्रोंमें रात्रिभोजनका निषेध किया है परन्तु ग्रन्थके विस्तारके भयसे अब विशेष प्रमाणोंको नहीं लिखते हैं, इस लिये बुद्धिमानोंको उचित है कि—सब प्रकारके

खाने पीनेके पदार्थों का कभी भी रात्रिमें उपयोग न करें यदि कभी वैद्य कठिन रोगादि में भी कोई दवा या खुराकको रात्रिमें उपयोग के लिये बतलावे तो भी यथा शक्य उसे रात्रिमें नहीं लेना चाहिये किन्तु सूर्य्य अस्त होनेके पहले ही ले लेना चाहिये. क्योंकि धन्य पुरुष वे ही हैं जो कि सूर्यकी साक्षीसे ही खान पान करके अपने व्रत का निर्वाह करते हैं ।



॥ चेत्य, चेइ शब्दके १-८ नाम ॥



चेत्यप्रसाद विज्ञेय १ चेत्यहरिरुच्यते २ चेत्य चेतनानामस्यात् ३ चेइसुधास्मृता ४ चेतज्ञानं समारयात ५ चेइ मानस्यमानव ६ चेत्य-यतिरूत्तमस्यात् ७ चेइमग्रउच्यते ८ चेत्यजीव-मवाप्नोति ९ चेइ भोगस्य रभन १० चेत्यभोग निवृतस्य ११ चेइ विनतनीचयो १२ चेत्य पूर्णिमाचन्द्र १३ चेइ गृहस्यारभन १४ चेत्य गृहमधाछाद्द १५ चेइ गृहस्यछादन १६ चेत्य गृहस्थभचापि १७ चेइच वनस्पती १८ चेत्य पर्वतेग्रुच १९ चेइ वृक्षस्थूलयो २० चेत्य वृक्ष-सारश्च २१ चेइ चतु कोणस्तथा २२ चेत्य विज्ञान पुरुषो २३ चेइ देहस्यउच्यते २४ चेत्य गुणज्ञोज्ञेय २५ चेइच शिवशासन २६ चेत्य मस्तकपूर्ण २७ चेइ अगहीनयो २८ चेत्य अश्वामवाप्नोति २९ चेइ खर उच्यते ३० चेत्य

हस्तीविज्ञेय ३१ चेइ दूमुखीविंदूं ३२ चेइच
शिवापुनः ३४ चैत्यंरंभानामोक्तं ३५ चेइ
मृदंगंपुनः ३६ चैत्य सार्दूल नामस्यात् ३७
चेइच इंद्रवारणी ३८ चैत्य पुरंदर ३९ चेइ
चेतनस्मृत ४० चेइ उग्रराज ४१ चेइ शास्त्र-
धारणा ४२ चैत्य क्लेशहारीच ४३ चेइ
गंधर्वस्त्रिय ४४ चैत्य तपस्वीनारी ४५ चेइ
पात्रस्यनिर्णय ४६ चैत्य शुक्लादिवार्ता ४७
चेइ कुमारिकाविंदू ४८ चैत्य वक्तारागस्य ४९
चेइ धातुरकुठितं ५० चेइ शांतवाणीच ५१ चेइ
बृद्धावरांगणा ५२ चैत्य ब्रह्मांडस्माणं ५३ चेइ
मयूरप्रोच्यते ५४ चैत्य मंगलवार्त्ता च ५५ चेइ
काकणीपुनः ५६ चैत्य पुत्रवतीनारी ५७ चेइ च
मीनमेवच ५८ चैत्य नरेन्द्र नारी च ५९ चेइ
च मृगवांनरें ६० चैत्य गुणवंती नारी ६१ चेइ
च स्मरमन्दिर ६२ चैत्य वर कन्या नारी ६३
चेइच तरूणीस्तनो ६४ चैत्य सुवर्णवर्णः नरः

६५ चेइच मुकुट सागर ६६ चेत्य सुवर्ण वर्ण जटि ६७ चेइच अन्य धातुषु ६८ चेत्य चक्रवर्ती राजा ६९ चेइच तस्यस्त्रिय ७० चेत्य व्याख्यात पुरुष ७१ चेइ पुण्यवती स्त्रिय ७२ चेइ राजमन्दिर ७३ चेत्यनगह मृगश्च ७४ चेइचयति धूर्तयो ७५ चेत्य गरुड़पक्षी च ७६ चेइच पद्मनागणी ७७ चेत्य रक्त नेत्रस्य ७८ चेइ हीन चक्षुपि ७९ चेत्य योजन पुरुषश्च ८० चेत्य वासुकी नाग ८१ चेइ पुण्य प्राप्यते ८२ चेत्य भाव शुभस्यात् ८३ चेट चूड़ कटिका ८४ चेत्यद्रव्यमज्ञानि ८५ चेइ प्रतिमास्तथा ८६ चेत्य सुभटयोर्डच ८७ चेइ द्विविधा क्षुधा ८८ चेत्य पुस्पाचूडश्च ८९ चेइच हारमेवच ९० चेत्य नरेन्द्राभर्ण ९१ चेइ जटाजूटधारक ९२ चेत्य धर्मवार्ताच ९३ चेइ विकथापुन ९४ चेइ चक्रवर्ती सूर्य्य ९५ चेइच श्रद्धाभ्रष्टा ९६ चेत्य राज्ञी मजनस्थान ९७ चेइ गमस्य गर्भता ९८

चैत्य, चैइ शब्दके १०८ नाम ।

चैत्य शुभवार्त्ताच ९९ चैइ इन्द्रजालकं १०० चैत्यत्यासनं प्रोक्तं १०१ चैइ पापमेवच १०२ चैइ रविरूदयकालं १०३ चैत्यंच रजनीपुन १०४ चैत्यंचन्द्र द्वितीयास्यात् १०५ चैइ लोकपालके १०६ चैत्यं रत्न अमोलक्यं १०७ चैइंच अनौषधिपुनः १०८ एवं सर्व चैतनानाम १०८ छे।

इति श्री अलंकरणोदीर्घः ब्रह्माण्डे चैत्य चैइ शब्द सूरेश्वर वार्तिक वेदान्त प्रोक्तः ।

